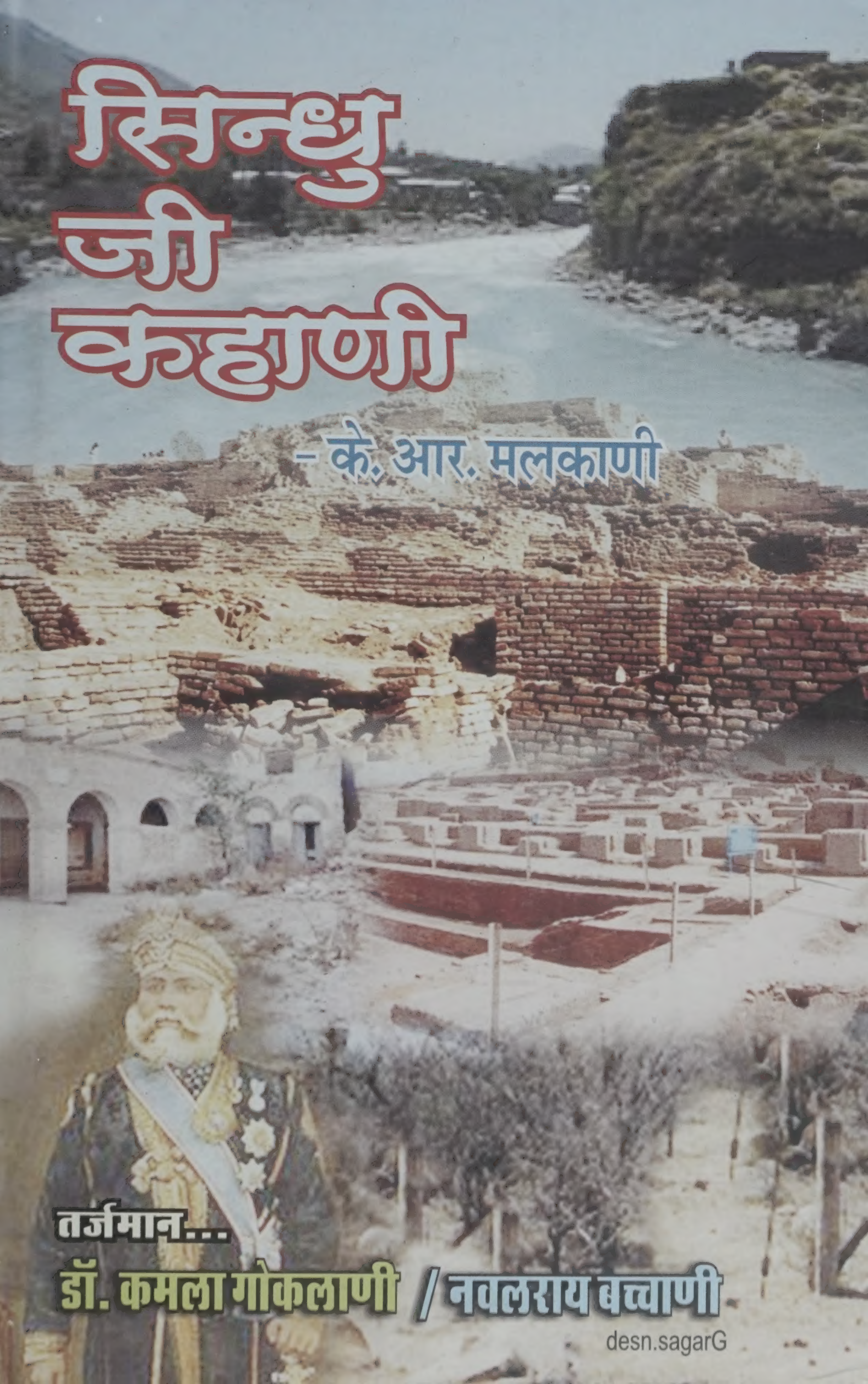

सिन्धु
जी
कहाणी
- के. आर. मलकाणी
तर्जमान...
डॉ. कमला गोकलाणी / नवलराय बच्चाणी
desn.sagarG

सिंधु जी कहाणी

[The Sindh Story जो सिंधी तर्जुमो]

लेखक :

के. आर. मलकाणी

तर्जुमान ऐं देवनागिरी लिप्यांतरणु :

डॉ. कमला गोकलाणी

श्री नवलराय बचाणी

हीउ किताब राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार) नई-दिल्ली जे माली इमदाद सां छपायो वियो आहे।

SINDH JI KAHANI

By :
K. R. Malkani

Translation :
Dr. Kamla Goklani
&
Navalrai Bachani

Ist Edition : 2005 Arabic Script
IInd Edition : 2018 Devnagiri Script

Copies : 500

Price : Rs. 300/-

Published by :
Satya Kishan Publication,
A-4, Nehru Nagar, Near Sai Baba Mandir,
AJMER - 305003 (Raj.)
Ph : 0145-2691326

Type Setting & Printed by :
Asha Printers
Sindhi Gali, Hathi Bhata,
AJMER. Ph : 0145-2626372

फ़हिरस्त

मोतीअ दाणो- के. आर. मलकाणी

(19.11.1921 - 27.10.2003)

को को माण्हू मोतीअ दाणो, का का दिल हीरनि जी खाणि,
साह सां सांढे रखिजे, तिनि जी मिठिड़ी मिठिड़ी रूह रिहाणि।

नाराइणदास मलकाणीअ जे नंढे भाउ केवल रतन मलकाणीअ जो जनमु हैदराबाद सिंध में 1921 ई. में थियो। संदसि कुटम्ब में 2 पुट अरविंद ऐं विक्रम ऐं हिक धीअ सिंधू आहिनि। 'द सिंध स्टोरी' अंग्रेज़ी भाषा में लिखी हुन हिक इतिहासकार ऐं खोजनीक जे रूप में आबरूदार मञुता हासुल कई। अख़बार नवीस जे रूप में संदसि योगदान लासानी मञियो वियो आहे। 1948 ई. में हिंदुस्तान टाईम्स में एडीटर रहियो। 'द आब्ज़र्वर' जो 35 साल सम्पादक रहियो। पांचजन्य सां बि जुड़ाव होसि। 'सिंधु जी कहाणी' जो सिंधु (पाकिस्तान) में सिंधी तर्जुमो छपियो। ऐं वरी मराठीअ में पिण तर्जुमो छपिजी चुको आहे।

मलकाणीअ सियासतदान जे रूप में पिण कौमी सतह ते सुञाणप काइम कई। जनसंघ, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ सां जुड़ाव ऐं समर्पण भाव करे हू भारतीय जनता पार्टीअ जो राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बणिजण में कामयाब वियो। 1994-2000 ई. ताईं राज्यसभा जो मेम्बर हो। पाण्डीचरी जो लेफ़्टीनेंट गवर्नर पिण नामज़द कयो वियो। राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (हायर एजूकेशन भारत सरकार) जो उपाध्यक्ष ऐं सिंधी अकादमी (दिल्ली सरकार) जो बि उपाध्यक्ष नामज़द कयो वियो। सिंधी साहित्य ऐं तइलीम जे खेत्र में नवां आयाम बर्पा कयाईं। शुरूआति 1945 खां 1947 ताईं डी. जी. सिंधु कॉलेज, हैदराबाद में लेक्चरर रहियो। 1983-90 दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली जो वाईस चेयरमन रहियो। 1961-62 में हॉवर्ड यूनीवर्सिटीअ में विज़िटिंग फ़ेलो रहियो। ॿिया किताब: 1977- मिडनाइट नाक्स, 1980- आर. एस.एस. स्टोरी, 2002 में इंडिया फर्स्ट लिखियाईं।

पालिटीकल मिस्ट्रीज़ संदसि आख़िरी किताब, जंहिं में महात्मा गांधी, डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी, इंदिरा गांधी ऐं राजीव गांधीअ जे बेवक्ताइते मौत जो बयानु आहे। इहो किताब मल्काणीअ जे ॾहनि सालनि जी खोजना जो नतीजो आहे। असां सभिनी खे अहिड़े लासानी शख़्स ते फ़ख़ुरु आहे।

एल. के. आ॒डवाणीअ सां 60 सालनि खां वधीक असों सियासत में साणु रहियो।

मलकाणीअ जे गू॒ढ़े अभ्यास, ज़हनियत, याददाश्त जे सघ खे सवें सलाम। बि॒यो को खोजनीक हज़ारहा सुफ़्हा लिखी बि एतिरी अहम ज॒ाण डि॒यण में काम्याब न वञे हा, जेतिरी किताब जे महदूद 260 सुफ़्हनि में मयसर कराए, कूज़े में दरियाहु समायो अथसि या बूंद में सागर।

किताबनि जी फ़हिरस्त में शामिल किताबनि खां वधीक लेखक जा शख़्सी आज़मूदा, राया, वीचारधारा जा बजा झलकी रहिया आहिनि।

संस्कृतीअ जा पंज वकार वेसु, वाणी, वीचार, वापार ऐं वहिंवार बेशक किताब जी सूंहं बणिया आहिनि। सिंधु जो इतिहास, सकाफ़त, अदबु बो॒लीअ जूं खूबियूं, पोखूं, वणिज वापार, सभु निहायत दिलचस्प बो॒ली ऐं वणंदड़ लहजे में मौजूद आहिनि। ख़बर नाहे, तर्जुमे में असां केतिरो वफ़ादार रही सघिया आहियूं, इहो फ़ैसिलो प्यारनि पढ़ंदड़नि खे करिणो आहे।

– डॉ. कमला गोकलाणी

परिचय

डॉ. कमला गोकलाणी
एम.ए., पी.एच.डी. (सिन्धी), एम.ए. हिन्दी
एम.एड., पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
सेवानिवृत व्याख्याता (सिंधी), चयनित वेतनमान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
पूर्व उपनिदेशक, सिन्धू शोध पीठ, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

प्रकाशित पुस्तकें- कुल 50 - पुस्तक सूची की तारांकित पुस्तकों पर प्रांतीय व राष्ट्रीय पुरस्कार।

सम्पादन- 'रिहाण' 6 वर्ष, 'वरदाई' हिन्दी 5 वर्ष, 'रचना' 5 वर्ष, 'आत्म दर्शन' एवं 'सिन्धी साहित्य सुरभि' का 1998 से लगातार, 'हिन्दू भूमि साप्ताहिक' 2007 से 2011 तक, 'तहकीक' 2017 ('सामी' विशेषांक)- सिन्धू शोध पीठ द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका।

पुरस्कार- साहित्य अकादमी द्वारा अनुवाद का राष्ट्रीय पुरस्कार, कबीर ग्रंथावली के काव्यानुवाद पर 2010 में।
सामी सम्मान- राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर।
दिल्ली सिन्धी अकादमी- 15 हज़ार शैक्षिक पुरस्कार।
राजस्थान सरकार द्वारा श्रेष्ठ अध्यापिका सम्मान 1989 ई.
एन.सी.पी.एस.एल. द्वारा 15 हज़ार और 50 हज़ार पुस्तकों पर दो बार।
अखिल भारत सिन्धी बोली साहित्य सभा द्वारा कॉलेज शिक्षा के लिए 11 हज़ार।
मारुई संस्था द्वारा गोल्ड मेडल, भारतीय अनुवाद परिषद द्वारा पुरस्कार एवं द्विवागीश उपाधि, साहित्य भूषण, नारी गौरव, सुलोचिनी लेखिका व सिन्धु-रतन उपाधियां।

विशेष- राष्ट्रीय अध्यक्ष- अखिल भारत सिंधी ब॒ोली ऐं साहित्य प्रचार सभा, अनेक अखिल भारत व राजस्थान स्तर की सरकारी, ग़ैर-सरकारी संस्थाओं पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित पद, सिंधी में पी.एच.डी. के लिए गाईड, तीन शोधार्थियों को उपाधि प्राप्त, आई.ए.एस., आर.ए.एस. के लिए मार्गदर्शन करना, अनेक कौमी मुशायरों एवं सेमीनारों का संचालन। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से नियमित प्रसारण, 130 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सेमीनारों में शोध पत्र प्रस्तुत, सक्रिय भागीदारी।

विभिन्न विश्वविद्यालयों में विषय विशेषज्ञ-

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

एम. एस. विश्वविद्यालय, बड़ोदरा

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल

अवध विश्वविद्यालय, फ़ैज़ाबाद

संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली

अध्यक्ष- विद्या समिति सुधार सभा अजमेर द्वारा संचालित विद्यालय

संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा 'सिंधी आत्म कथाओं का अभ्यास' विषय पर सीनियर फेलोशिप प्राप्त।

24-26 मार्च 2014 कराची में 'सिंध थ्रू द सेंचुरीज़' अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में शोध पत्र प्रस्तुत।

26 अप्रेल 2006 से 2 मई 2006 तक कराची में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार 'सिंध- माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल' में 'भारत में सिंधी शिक्षा की उन्नति और समस्याएं' विषय पर शोध पत्र उनके शोध ग्रंथ में प्रकाशित।

पता- 'फ़रहत', ए-4, नेहरु नगर,
साईं बाबा मन्दिर के पास, अजमेर।
फोन: 0145-2691326, 9414220370
E-mail : kamlagoklani@gmail.com

परिचय

नवलराय सेवकराम बचाणी

जन्म- 25 जुलाई 1927 ई.

शैक्षणिक योग्यता- मैट्रिक (1947 ई.)

अखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ दिल्ली से 6 वर्षीय कोर्स वैद्याचार्य 'ए' श्रेणी रजिस्ट्रेशन फिजीशियन एवं सजरी 1961 ई.

प्रकाशित साहित्य-

1. 4000 प्रतियां 1980 में हिन्दी और सिन्धी जाति सिन्धूपति सम्राट पर प्रकाशित।
2. पुस्तक श्री अमरलाल पंजड़ा, भजन, आरती आदि 1995 में प्रकाशित।
3. संघ संस्थापक परम पूज्य डॉक्टर हेडगेवार परिचय पुस्तक 1996 में प्रकाशित।
4. कुलगुरू ठकुर कीमतराय के सेवकों की डायरेक्ट्री का 1997 में प्रकाशन।
5. सिन्धू ज्ञान सागर (वृहत्त जानकारी देने का ग्रंथ) 1998 में प्रकाशित।
6. सिन्धी स्वतंत्रता सेनानी एवं वीर पुस्तक का प्रकाशन 1998 में।
7. परम पूजनीय गुरूजी गोलवेकर, सिन्ध एवं संघ 2006.
8. वृहत्त झूलेलाल ग्रंथ अधिकृत सन्त समिति कम्प्यूटर टाईप करवाकर, उपलब्ध फोटो प्रति से आज तक 40 प्रतियां 2007 से सन्तों और साहित्यकारों को भेंट।
9. 4 बार 'अचो सिन्धी सिखूं' अभ्यास पुस्तकें छपवा कर, सिन्धी सिखाने की कार्यशाला में दी।
10. 2005 में डॉ. कमला गोकलाणी और नवलराय बचाणी ने 'द सिंध स्टोरी' (मूल अंग्रेज़ी भाषा) के. आर. मल्काणी द्वारा लिखित, का सिंधी अनुवाद किया, जो राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (भारत सरकार) से आर्थिक अनुदान प्राप्त कर प्रकाशित हुई।
11. 'सिन्धी सूंहों' (रहिबर) 6 जनों की सलाहकार समिति के सहयोग से परिश्रम कर 2002 में प्रकाशित।

सम्मान-

1. राजस्थान सिन्धी अकादमी, जयपुर से सिन्धी भाषा की बहबूदी के लिए 12 फरवरी 2008 को साधू टी. एल. वासवानी पुरस्कार स्वरूप 11 हजार रुपये नकद, शॉल, श्रीफल व स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान।
2. झमटमल तोलाराम वाधवानी चैरीटेबल ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा सामाजिक सेवक के नाते 7 मार्च 2010 को मुम्बई में सम्मान।

3. माननीय सुन्दर सिंह भण्डारी चेरीटेबल ट्रस्ट, उदयपुर द्वारा उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 23 जून 2012 को सम्मानित
4. सिन्धी कार्यशालाओं के दौरान भारत के विभिन्न नगरों में कई प्रकार के सम्मान प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, माथे पर साफा, गले में पखरें, शॉल ओढ़ाकर व मालाएं आदि पहनाकर सम्मान।
5. 4 फरवरी 2014 को जवाहर रंगमंच, अजमेर में आयोजित समारोह में 'मां भारती साधक' सम्मान व 'राष्ट्र सपूत' की उपाधि।

विशेष-

1. संघ का सन् 1942 ई. से स्वयं सेवक, तृतीय वर्ष शिक्षित ओ.टी.सी. कोर्स
2. 1948 से 1953 तक रेलवे क्लर्क, दाहोद (गुजरात)
3. 1953 से 1961 तक डिवीजन रेलवे कार्यालय, अजमेर में 13 वर्ष नौकरी
4. 1964 से 6 वर्ष तक आयुर्वेद वैद्याचार्य
5. 1975 से 1977 तक 18 माह आपातकाल (इमरजेंसी) में जेल
6. 1977 से 1980 तक राजस्थान विधान सभा सदस्य विधायक जनता पार्टी
7. 1994 से 1997 तक राजस्थान सिन्धी अकादमी अध्यक्ष
8. 1979 में भारतीय सिन्धू सभा का गठन हुआ, तब से विभिन्न जिम्मेदारियां लेते हुए कुछ वर्षों से भारतीय सिन्धू सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
9. 1977 से 1980 में जब विधायक रहे, उन दिनों में 1971 के युद्ध में आये सिन्धी हिन्दुओं, विस्थापितों, 80 हजार बन्धुओं को सचिव के नाते नागरिकता दिलाई।
10. सम्पादक 'रिहाण' : राजस्थान सिन्धी अकादमी, वर्ष 1994 से 1997 तक
11. सम्पादन त्रैमासिक 'सिन्धू दूत' राज. सिन्धी अकादमी अध्यक्ष 1994 से 1997
12. आकाशवाणी पर स्वास्थ्य तथा अन्य विषयों पर कई वार्ताएं प्रस्तुत
13. अलग अलग विषयों पर गोष्ठियों में पेपर्स आदि पढ़े
14. कई स्मारिकाओं में विविध विषयों पर लेखन सामग्री प्रकाशित
15. राष्ट्रीय सिन्धी भाषा विकास परिषद (भारत सरकार) का सदस्य 2002 से 2004 तक, कई स्थानों पर निदेशक व सिन्धी पढ़ाने का कार्य किया।

पता- गली नं. 3, आनन्द नगर, कृष्ण गंज, अजमेर (राज.)
मोबाईल: 9461594580 (सुपुत्र)

डॉ. कमला गोकलाणी द्वारा लिखित पुस्तकें

मूल पुस्तकें

नं.	शीर्षक	वर्ष	भाषा	विधा
1.	हादसे खां पोइ	1984	सिंधी	कहानियां
2.	राज. जे सिंधी साहित्य जो जाइज़ो	1985	सिंधी	शोध-पत्र
3.	फ़ैसिलो थियण ताईं*	1986	सिंधी	कहानियां
4.	नज़रसानी	1989	सिंधी	शोध-पत्र
5.	मुखरित मौन	1992	हिंदी	कहानियां
6.	डायरीअ जो सचु*	1993	सिंधी	कहानियां
7.	नज़रसानी-॥*	1995	सिंधी	शोध-पत्र
8.	इज़हार*	1996	सिंधी	साहित्यिक निबन्ध
9.	अदबी तासरात	1998	सिंधी	शोध-पत्र
10.	सिंधी साहित्य में साम्प्रदायिक सद्भाव	1999	हिंदी	शोध-पत्र
11.	सिंधी शइर में कुदरत जो चिटु	2001	सिंधी	पी.एच.डी. थीसिज़
12.	अदबी कथ*	2002	सिंधी	शोध-पत्र
13.	साओ थियलु गाहु	2003	सिंधी	कहानियां
14.	शाह जो शइरु	2007	देवनागिरी	शोध-पत्र
15.	ओलह राजस्थानी ऐं सिंधी भाषा*	2010	सिंधी	शोध-पत्र
16.	तूं न अकेली	2011	देवनागिरी	कविताएं
17.	साओ थियलु गाहु	2012	देवनागिरी	कहानियां
18.	मौजूदह दौर में सृजण	2013	सिंधी	शोध-पत्र
19.	मतां करीं माठि	2014	सिंधी/देवनागिरी	कहानियां
20.	सिंधी सूफ़ी शाइरीअ में जमालियात	2015	सिंधी	शोध-पत्र

अनुवाद, सम्पादन एवं अन्य

नं.	शीर्षक	वर्ष	भाषा	विधा
21.	सच्चा साथी (अनुवाद)	1972	हिंदी	सिंधी से हिंदी उपदेश
22.	साईं हिरदाराम (अनुवाद)	1974	हिंदी	सिंधी से हिंदी उपदेश
23.	हूंदा से हयात (सम्पादन)	1987	सिंधी	जीवनी
24.	अपनी अपनी विवशता (अनुवाद)	1987	हिंदी	कहानी संग्रह (सिंधी से हिंदी)
25.	साधू हीरानन्द	1988	सिंधी	जीवनी
26.	सिंधी कविता में वेदांत (अनुवाद)	1993	हिंदी	शोध-पत्र (सिंधी से हिंदी)
27.	कबीर वचनावली (काव्यानुवाद)	2004	सिंधी	हिंदी से सिंधी

*साहित्य अकादमी (भारत सरकार) द्वारा प्रकाशित

28.	सिंधु जी कहाणी (अंग्रेजी से अनुवाद)	2005	सिंधी	एतिहासिक शोध ग्रंथ
29.	संत कबीर (काव्यानुवाद)*	2011	देवनागिरी	हिंदी से देवनागिरी
30.	आज़ादी का परवाना-शहीद हेमू कालाणी	2012	हिंदी	जीवनी (सिंधी से हिंदी)
31.	विरहाङे खां पोइ चूंड सिंधी शइर	2012	देवनागिरी	सिंधी से देवनागिरी
32.	चूंड सिंधी कहाणियूं (लिप्यांतरण)	2013	देवनागिरी	सिंधी से देवनागिरी
33.	पश्चिमी क्षेत्र की चुनिंदा कहानियां साहित्य अकादमी (भारत सरकार) द्वारा प्रकाशित	2015	हिंदी	सिंधी से हिंदी अनुवाद

पाठ्य पुस्तकें

34-39. कक्षा 10 और 11 में सहयोग (2005)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा प्रकाशित कक्षा 12 की पाठ्य पुस्तक का संयोजन (2006)

कक्षा 9, 11, 12 की सिंधी पाठ्य पुस्ताकों की संयोजिका 2016-17

40-43. राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा प्रकाशित कक्षा 5 से 8 की पुस्तकें लिखीं (1991-1995)

44. अल्प भाषी शिक्षक प्रशिक्षण हेतु सिंधी की पुस्तक लेखन में विशेषज्ञ 2016

45-50. राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल द्वारा प्रकाशित सामाजिक ज्ञान, विज्ञान, गणित की पाठ्य पुस्तकों का सिंधी अनुवाद (1992-1994)

सत्यकिशन पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें-

1.	हूंदा से हयात (जीवनी)	1987	सिंधी	रुकमणी धन्जाणी
2.	तनकीदी मज़मून (मकाला)	1985	सिंधी	पोपटी हीरानंदाणी
3.	मुंहिंजी उड़ाम (कविता)	2013	सिंधी	गीता गोकलाणी
4.	अण-सुलझियल सुवाल (कहानियां)	2015	सिंधी	गीता गोकलाणी
5.	अण-सुलझियल सुवाल (कहानियां)	2018	देवनागिरी	गीता गोकलाणी

---
* पुरस्कृत पुस्तकें

अगु अखर

फ़ख़ुर साणु चउ तूं, सिंधी आऊं आहियां,
सिंधी कौम मुंहिंजी, सिंधी मां सडायां।

सिंधु जी कहाणी असांजे प्यारे अगुवान, आलिम, दानिशवर, काम्याब पत्रकार, पाण्डीचरी जे अगूणे गवर्नर सदा-हयात के. आर. मलकाणीअ जे अंग्रेज़ीअ में लिखियल खोजना जे किताब "The Sindh Story" जो 'सिंधु जी कहाणी' उन्वान सां सिंधी तर्जुमो आहे। पहिरियों छापो सिंधी अरबीअ में सन् 2005 ई. में 'सत्यकिशन पब्लिकेशन, अजमेर' पारां छपायो वियो। हिन खां अगु सिंधु में बि बु दफ़ा किताब जो तर्जुमो छपियो हो, जंहिं लाइ बेशक उहे दाद जा मुस्तहक आहिनि। पहिरियों छापो 'रोशनी पब्लिकेशन' पारां 1991 ई. में छपियो। तर्जुमान 'वलीराम वल्लभ' हो, पर अणटर सबननि करे 'ताज जोयो' जे नाले सां छपियो, डेमी साईज़ 294 सुफ़्हा। बियों छापो 'सिंधु तहकीकी बोर्ड, हैदराबाद' पारां 'व र व' जे नाले सां मुतर्जुम जी रज़ामंदीअ खां सवाइ 2002 ई. में नाज़ सनाईअ छपारायो, जेको 222 सुफ़्हनि में पखिड़ियल आहे।

हिकु त हिंदु ऐं सिंधु जी सिंधी बोलीअ तोड़े लफ़्ज़नि जी चूंड में तफ़ावत आहे, बियो भारत में मिलणु बेहद डुखिया, किताबनि जे डे वठु जी सहूलियत घटि आहे। मलकाणी साहिब जे हिन अमुल्ह ज़हनी जाखोड़ सां लिखियल खोजना ग्रंथ खां भारत जा सिंधी बि वाकुफ़ थी सघनि, सिंधु जे गौरव जी ज़ाण हासुल करे सिंधी हुजण ते फ़ख़ुर महसूसे सघनि, इन लाइ माली तोड़े बियूं तक्लीफ़ूं सही किताबु छपारायो वियो। कीमत बि घटि रखी हुई। किताब जा पहिरियां अधु बाब मूं तर्जुमो कया ऐं पोयां श्री नवलराय बचाणीअ।

मूंखे पढ़ण जो शुरूअ खां ई जुनून जे हद ताईं शौंक रहियो आहे पर हीउ किताबु पढ़ण खां पोइ जेका ख़ुशी ऐं फ़ख़ुरु महसूस थियो, सो बयान खां परे आहे। वरी तर्जुमे जे बहाने सिंधु जे वधीक ऐं वधीक वेझो अचण जो मौको मिलियो, बिबलोग्राफ़ी वारा किताब बि हथि करे पढ़ियमि, जा वाधू हासलात आहे।

मूं वांगुरु मुंहिंजो नंढे भाउ सदा-हयात श्री रमेश नाराइणदास धन्जाणी (20 जून 1956 - 11 फरवरी 2018) पिण किताबनि पढ़ण जो शौकीन हो। डुह बोलियूं गाल्हाए सघंदो हो ऐं पंज लिखी पढ़ी सघंदो हो। अफ़्रीका में वापार हुअण करे 20-20 कलाक फ़्लाईट में उडामंदे ब टे किताब पूरा कंदो हो। आलमी अदब ऐं इतिहास जी ज़ाण रखंदड़ माहिरु। उन जडहिं अंग्रेज़ी किताबु पढ़ियो त चयाईं, ''दीदी, हीउ किताबु हूंद हर सिंधी तोड़े शऊरी पाठक पढ़े, इनजो तर्जुमो बिन्ही सिंधी लिपियुनि ऐं हिंदीअ में बि थियणु घुरिजे। गाल्हि दिल सां लगी जो अजुकल्ह सिंधी लिपि पढ़ण वारनि जो तइदाद घटिबो वञे। आङुरियुनि ते गुणण जेतिरा पाठक मस वञी बचिया आहिनि। नईं टही त गाल्हाइण खां बि वउं वञे थी। अहिड़ी हालति में शाहकार किताब देवनागिरीअ में छपाइणु निहायत ज़रूरी थी पियो आहे। पाठकनि जी बि ज़ोरदार घुर ते 'सिंधु जी कहाणी' जो देवनागिरी लिप्यांतरणु कयो वियो, जंहिं खे छपाइण लाइ वरी बि राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद (भारत सरकार) माली इम्दादु अता करे हौसला अफ़ज़ाई कई आहे।

अजु किताब डिसण लाइ भाउ रमेश असांजे विच में कोन्हे पर यकीनन संदसि आत्मा खे शांति ऐं खुशी मिलंदी।

किताबु तव्हांखे पसंद अचे त वाह-वाहीअ जा हकदार बेशक मल्काणी साहिब रहंदा। का ऊणाई हुजे त तर्जुमान जे नाते असां ज़िम्मेदारी महसूस करे तव्हांजे रायनि ऐं रहबरीअ जो इंतज़ार कंदासीं।

- डॉ. कमला गोकलाणी

16.2.2018

शुभकामना संदेश

भारत सरकार जे मानव संसाधन विकास मंत्रालय तरफ़ां राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद जी स्थापना 26 मई 1994 जे डीं‍हुं कई वेई हुई। तडहिं खां परिषद तरफ़ां भारत में सिंधी भाषा जे विकास वाधारे लाइ मुख़्तलिफ़ योजनाऊं ज़ोर शोर सां हली रहियूं आहिनि। हिननि योजनाउनि में हिक ख़ास योजना आहे "Financial grant for Publication of books." हिन स्कीम में लेखकनि खे किताब छपाइण लाइ सिंधी भाषा विकास तरफ़ां माली मदद डिनी वेंदी आहे।

मशहूर अदीब, पत्रकार, राजनेता श्री के. आर. मलकाणी साहिब पारां अंग्रेज़ीअ में लिखियल किताब "The Sindh Story" (1984) जो सिंधी भाषा जे अरबी फ़ारसी सिंधी अखरनि में तर्जुमो श्री नवलराइ बचाणी ऐं डॉक्टर कमला गोकलाणी गडिजी कयो हो, जेको साल 2005 में सिंधी भाषा विकास परिषद जी माली मदद सां ''सिंधु जी कहाणी'' उन्वान सां छपियो हो। हिन सागिए किताब में देवनागरी सिंधी लिपीअ में शायइ करण वास्ते माली मदद साल 2016-17 में डिनी वेई आहे।

सिंधी साहित्य संसार में मानाइते दादा श्री नवलराय बचाणी ऐं मानवारी दादी डॉक्टर कमला गोकलाणी जो हिकु अहम स्थान आहे। बई अदीब वरह्यिनि खां सिंधी भाषा ऐं साहित्य जे विकास लाइ जाखोड़ करे रहिया आहिनि। बिन्ही अदीबनि सिंधी अदब जा घड़ा भरिया आहिनि। बिन्ही लेखकनि तरफ़ां देवनागरी सिंधी अखरनि में उल्थो कयल किताब ''सिंधु जी कहाणी'' अव्हां जे हथनि में आहे। हिन किताब जी मदद सां सिंधी पाठक सिंधु जी कहाणी समझी ऐं पढ़ी सघंदा। मां हिन महत्वपूर्ण किताब जे शायइ थियण ते साईं बचाणी साहिब ऐं साईंण डॉक्टर कमला गोकलाणी साहिबा खे दिल जी गहिरायुनि सां वाधायूं डियां थो ऐं उमेद करियां थो त अहिड़ा अनेक किताब हू छपाईंदा रहंदा ऐं सिंधी बोली ऐं अदब खे मालामाल कंदा रहंदा। मुंहिंजूं अणखुट शुभ-कामनाऊं।

- डॉ. रविप्रकाश टेकचंदाणी

6.3.2018

निदेशक
राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

मुहागु

सन् 1947 ई. जी पछाड़ी हुई, विरहाङो थी चुको हो ऐं हिंदू वड॒े तादाद में पंहिंजे वतन खे ख़ैर-आबाद चई रहिया हुआ। हिक ड॒ींहुं असां कुझु कारकुन हैदराबाद में तिलक चाढ़ीअ तां हेठि लही रहिया हुआसीं त ओचितो हिक बु॒ढी मुसलमान औरत असांजे साम्हूं बीही रही ऐं ड॒ुखा॒रे लहिजे़ में पुछण लग॒ी: ''अदा, अव्हीं बि हलिया वेंदव छा?''

हिक ड॒ींहुं मां पंहिंजी बालकनीअ में बीठो होसि। हिकु मुसलमानु ख़ुशीअ मां हिक वड॒ी फ्रेम कयल तस्वीर खणी पिए वियो। हू पंहिंजी ख़ुशी झले न सघियो ऐं हलंदे बीही रहियो ऐं तस्वीर मथे खणी मूंखे ड॒ेखारींदे चयाईं: ''हीअ तस्वीर इझो हाणे ख़रीद कई अथमि। हिन ग्रूप में असांजे ग॒ोठ जो वड॒ेरो मुइज़ज़ सेठि बि शामिल आहे।'' इहा तस्वीर हिन लाइ यादगीरीअ जी निशानी आहे।

हिक ड॒ींहुं शहर जे बस में सफ़र पिए कयुमि। मुहड़ वारियूं सीटूं औरतुनि लाइ महफ़ूज़ हुयूं। ओचितो मुहड़ वारी सीट ते वेठल हिक मुसलमान औरत ड॒िठो त संदसि पाड़ेसिरी हिकु हिंदू बीठो हो। हूअ उथी बीठी ऐं खेसि पंहिंजी सीट ते विहण लाइ ज़ोरु करण लग॒ी। पर बु॒ढो विहण खां इंकार करे रहियो हो ऐं चई रहियो हो त हू इएं ही ठीक हो। हूअं बि इहे सीटूं औरतुनि लाइ महफ़ूज़ हुयूं। संदसि इंकार अजायो वियो, जो उन्हीअ औरत खेसि दर्द भरिए लहिजे़ में चयो, ''मूंखे ख़बर आहे, तूं पिण हलियो वेंदें।''

मूंखे पक नाहे त 1947 ई. जे हिंदुस्तान में केतिरनि हंधनि ते अहिड़ा वाक्आ थिया हूंदा।

''सिंधु कहाणी'' राजाउनि ऐं लड़ायुनि जी आखाणी नाहे। हीअ हिक ख़िते, उन जे रहाकुनि ऐं संदसि कल्चर खे समुझण जी कोशिश आहे। जंहिं करे इहो सभु मुमकिन थी सघियो आहे।

मुंहिंजे दिल में हिन किताब जो वीचार पैदा करण लाइ मां भारतीय सिंधू सभा जो ऐं अहिड़ी सोच खे उभारण लाइ पंहिंजी भेण गोपीअ जो थोराइतो आहियां। मां उन्हनि घणनि दोस्तनि जो पिण थोराइतो आहियां, जिनि किताब, तस्वीरूं ऐं कीमती मालूमात मुहैया कई। उन सिलसिले में मां मोहिनी

मनसुखाणी, राम़कृष्ण आडु़वाणी, प्रोफ़ेसर के. एन. वासवाणी, शेवकराम कर्मचंद, उत्तमचंद ईसराणी, विश्नू शहाणी, प्रोफ़ेसर डी. एल. काका, गोपाल गुरुबक्षाणी, गोपाल मित्तल, राम केसवाणी, प्रेम डा॒सवाणी, प्रोफ़ेसर एम. पी. लखाणी, लक्ष्मीचंद रूपचंदाणी, नारायण वाधवाणी ऐं गोबिंदराम चेलाणीअ जो थोराइतो आहियां।

नाना वाघ जे ठाहियल सेठ नाऊंमल ऐं सर बार्टल फ्रेअर जे स्केचनि लाइ ऐं के. बी. कुमार जे ठाहियल सिंधु जे नक्शे लाइ पिण थोराइतो आहियां।

मां डॉक्टर मुरलीधर जेटले जो ख़ास थोराइतो आहियां, जंहिं पंहिंजे सिंधु जे किताबनि जो ख़ज़ानो मूं लाइ फ़राख़ दिलीअ सां खोले छडि॒यो ऐं गहिरे अभ्यास लाइ मुंहिंजी हिमत्थ ब॒धाई। संदसि मदद खां सवाइ हीउ किताब मौजूदा सूरत में न अची सघे हा। नेहरू मेमोरियल लइब्रेरी जो डाक्टर हरिदेव शर्मा, हेड आफ रिसर्च एण्ड पब्लीकेशन डिवीज़न, मुख़्तलफ़ तरीकनि सां घणो मददगार थियो। दीनदयाल रिसर्च इंस्टीट्यूट जो श्री देवेन्द्र स्वरूप अंग अखर मयसर करे डि॒यण में हमेशा हर वक्त तैयार रहियो।

सीताराम गोयल, झमटमल वाधवाणी, गंगू कृपालाणी ऐं अरूण शुक्ला समूरो मसौदो नज़र मां कढियो ऐं घणा कीमती मशवरा डि॒ना।

मूं ते थोरो DRI लइब्रेरीअ जे श्री जनार्दन जो संदसि तहकीकी मदद लाइ ऐं विजय गुप्ता, राजेश बंसल ऐं अम्बीका धर्मपाल जे तकिड़ी ऐं सुठी टाईप करे डि॒यण लाइ पिण आहे।

बि॒ए छापे में दुरुस्तियुनि लाइ पढ़ंदड़नि जे सलाहुनि ऐं रायनि लाइ हेठिएं पते ते आजियां कई वेंदी।

बी-51, न्यू रोजन्द्र नगर,
नई दिल्ली-110060

के. आर. मलकाणी
रखड़ी ब॒ंधन, 1984 ई.

पेशि लफ़्ज़

मुंहिंजो दोस्त केवल मलकाणी हिकु पत्रकार, आलिम ऐं हिंदुस्तान जे तवारीख़ जो ज़हीन शागिर्द आहे। सिंधु में पैदा थियण करे इहा अजीब ग़ाल्हि नाहे त हिन पंहिंजे पोरिहये जो गुपल हिसो ऐं तारीख़ी ज़ाण पंहिंजे जनम भूमीअ जे वसीअ मंज़र ते पेशि करण लाइ वक्फ़ (सफली) कई आहे। पर जंहिं ग़ाल्हि मूंखे अजब में विधो आहे, सा इहा त संदसि ख़्वाहिश आहे त मां हिन दिलपसंद किताब जे बारे में पेशि लफ़्ज़ लिखां। मां मञां थो त संदसि हुकुम मूंखे पड़ायो बि आहे त डेज़ारियो बि आहे। मुंहिंजी ब़ी दावा कीअं बि हुजे ऐं जेके ब़ियनि सियासतदाननि वांगुरु, मुंहिंजूं बल्कि थोरियूं आहिनि, पर तारीख़ जे गहिरे अभ्यास या तारीख़ जे पेशकश में मुनासिब सहूलियत हुजण जी दावा बिलकुल नाहे। मां समुझां थो त इहा ख़ुशि कंदड़ ग़लत-फ़हमीअ जी ग़ाल्हि आहे। पर पोइ बिं उन मां लुत्फ़ु अचे थो। पर इहा दावा, इहो ख़्याल ईंदे ई ख़तम थी वञे थी त उन जी पूराईअ लाइ कुझु पोरिहये जी ज़रूरत हुई। वकालत जे पेशे ऐं सियासी मशग़ूलियुनि में घणो रुधल हुअण करे, इहो कमु कुझु डुखियो लग़ो। पर पोइ न समुझ में ईंदड़ हादसो थियो। डाक्टरनि मुंहिंजे दिल खे बीमार ज़ातो ऐं नेठि मूंखे मुकमल आराम करण जी सलाह डिनाऊं। इलेक्ट्रो कार्डियोग्राम मशीन सां मुंहिंजे दिल जी तार ग़ुंढियल रही ऐं मां मसौदे जे पहिरिएं बाब ''सिंधू दिव्य दरियाह आहे'' खां वठी आख़िरी बाब ''नईं सिंधु'' ताईं वीह बाब पढ़ी वियुसि। इहो चवण में असुल वधाउ नथो करियां त हरहिक लफ़्ज़ मां लुत्फ़ु वरितुमि ऐं पक सां उन्हीअ अभ्यास मुंहिंजे जबिरे कद खे सहण जोग़ो बणायो। मञां थो त सिंधु बाबत मुंहिंजी मालूमाति में घणा ख़ाल हुआ त सिंधु छा हुई, इहा छा थी सघे थी ऐं मुस्तकबल में अञा छा थी सघंदी, से हिन किताब भरिया आहिनि। मां केवल जे फ़ख़ुर में जंहिं खे आम तरह ''सिंधियत'' चयो वञे थो। हिसेदार आहियां, मां संदसि पोरिहये ऐं खोजना जी न्यारी तख़लीक खे बेहद साराहियां थो ऐं उन्हीअ जे अभ्यास लाइ ब़ियनि खे पिण दिली सिफ़ारिश करियां थो। मूंखे उम्मेद आहे त हीउ किताब सरकारी तोड़े ख़ानगी लइब्रेरीअ में जाइ वालारींदो। मंझांउसि हरिको मज़ो माणींदो, उहे पिण जेके अस्पताल में बिस्तरे दाख़िल नाहिनि।

हिन किताब जे छपाईअ जे दौरान, भारत हिक यादगार दौर मां गुज़िरी रहियो आहे। हुकूमत जूं वागूं आदर्श खां वांझियल माण्हुनि ऐं उसूलनि खां ख़ाली सियासतदाननि जे हथनि में हलियूं वेयूं आहिनि। कौमी ढांचो संगीन बीमारियुनि में मुबतला आहे। सवें बदि-उनवान वापारी, दलाल ऐं मालिक मुल्क में इएं फहिलिजी विया आहिनि, जीअं बुखी माकड़ि फ़सुल खे खाई चटु कंदी आहे। जंहिं खे (फ़सुल खे) ग़रीब अवाम अञा ताईं पैदा करे रहियो आहे। ग़रीब एडा बुखायल आहिनि, जो हकल ते हांउ हारियो छडीनि ऐं अमीर सारो डींहुं जावा करण में रुधल आहिनि। दानिश्वर ऐं सच जा सौदाई इख़्लाकी मुश्कुनि ऐं निड़ीअ जे अजीब अधरंग में वठिजी ख़तरनाक हद ताईं चुप आहिनि। बिए तरफ़ हिन वक्त, हिन किताब जी पधिराई लेखक जे अंदरूनी तवाज़नि जी एडी साख भरे थी, जो तवाज़नि जो शऊर अंदरूनी ज़ाण में वाधारो आणे थो। मुमकिन आहे त लेखक गीता जे असली उपदेश मुताबिक प्रेम सां पोरिहयो करे, फ़ैसिलो ज़ाणणहार ईश्वर ते रखियो हुजे। सुभावीक तौर ते मां सभिनी खां वधीक इन्हीअ करे खेसि साराहियां थो।

मलकाणीअ जो हीउ किताब हिकु तारीख़ जो किताब आहे। तारीख़ लाज़मी तौर ते हिक कहाणी हूंदी आहे। पर जिते कहाणी विंदुर ऐं मौज लाइ लिखी वेई आहे, जंहिं जो कुझु मवाद घणो करे सच जे उबतड़ि हूंदो आहे, उते तारीख़ अहिड़े नकाद खे नथी कबूले सघे। तारीख़ जो हर किताब पंहिंजे दौर जे ज़हनी आराइश जो हिसो थिए थो। मथिसि साबित्युनि भरियो हुजण जी मुहर लगल हुअणु घुरिजे ऐं जिते हकीकत मुमकिन न हुजे, उते ग़लतीअ खे ज़ाहिर करणु घुरिजे। उन खां सवाइ उहो वाकिअनि जो साबतियुनि भरियो दस्तावेज़ छोन हुजे, पर उहो बेकार खां बि बदितर थींदो। जेकडहिं मंझिसि उन्हनि वाकिअनि जे इज़हार कंदड़ किरदारनि जा वीचार, उमंग ऐं इरादा पेशि कयल न हूंदा। हीउ मुल्कु वाकिअनि खे दस्तावेज़ बणाइण में कडहिं बि शाहूकार न रहियो आहे। हिते ज़बानी इंतज़ार जी हिक रवायत हावी आहे, तंहिं करे कहाणी लिखण खे तारीख़ चवणु आसान कम न आहे।

सिंधु ऐं हिंदु जे ज़िंदगीअ में अरबनि जे सिंधु खे फ़तह करण जी हिक वडी घटना थी हुई। अठीं सदी ईस्वीअ जे शुरूआत में सिंधु जा फ़ातिह कहिड़े

किस्म जा माण्हू हुआ? मुहम्मद बिन कासिम ऐं संदसि सिपाही पका अरब हुआ ऐं बहितरीन मुसलमान हुआ। पक सां उहे सदियूं पोइ, पंहिंजनि पोंयनि खां वधीक इंसान दोस्त ऐं तहज़ीब याफ़्ता हुआ। उहे पका तोहीद परस्त हुआ ऐं पैग़म्बर जे पैग़ाम में संदनि पको वेसाहु हो। जेको कुझु वक्तु अग॒ु में 7 जून 632 ई. ते फ़ोत (लाड॒ाणो) करे चुको हो। अरबिस्तान ऐं रेगिस्तान जे उन्हीअ मौजुज़े जो हवालो हिते निस्बत बि रखे थो त ज़ाहिर बि आहे। इस्लाम जो पैग़म्बर तारीख़ जे हिक ग़ैर मामूली शख़्सियत जो मालिक हो। हू ख़ुदि बेहद मज़हबी हो ऐं संदसि रहिणी कहिणीअ जे आदतुनि पंहिंजे पोइलग॒ुनि ते ज़रूरु गहिरो असर छड॒ियो हूंदो। ऑला मरतबे ऐं सियासी ताकत हासिल करण खां पोइ बि संदसि रहिणी कहिणी परहेज़गारीअ सां सरोबार हुई। संदसि घर कचियुनि सिरुनि जो ठहियल झूपिड़ीअ नुमा हो ऐं फ़र्नीचर में फ़र्श ते विछायल तड॒ी ऐं उन्हीअ ते रखियल कुझु विहाणनि खां वधीक न हो। हू पंहिंजा कपड़ा पाण सिबंदो हो, पंहिंजी जुती घणो करे पाण मरम्मत कंदो हो, बाहि पाण ब॒ारींदो हो ऐं फ़र्श पाण ब॒ुहारींदो हो। संदसि गुज़रान खजीअ ऐं जवनि जे मानीअ ते हूंदो हो। हू रुग॒ो कड॒हिं कड॒हिं खीर ऐं मखण खाइण जी अय्याशी कंदो हो। हू निहठो ऐं सुलछिणो हो। शानाइतो ऐं सबुर वारो हो। हू ग़रीबनि जी सार संभाल लहंदो हो ऐं निहायत ग़रीब माण्हुनि जे मौत ते संदनि पोयनि सां जनाज़े में पिण शामिल थींदो हो। हू पंहिंजे कुटंब ते विरले, पाण ते थोरो ऐं ज़रूरतमंदनि ते ख़ैरात में घणो ख़र्च कंदो हो। हुन जड॒हिं नएं निज़ाम जी शुरूआत कई त अरबिस्तान कबाइली रेगिस्तान हो ऐं जड॒हिं वफ़ात कयाईं त उहो हिकु मज़बूत मुल्कु हो।

हुन जेको निज़ाम जारी कयो, उहो पंहिंजे निसबत में बेरियाई बहादुरी ऐं समाजी फ़ख़ुर ते ब॒धल हो। मकानी आबहवा उते हवस लाइ बुख ऐं गर्मी पैदा कई हुई। संदसि कानून में शादीअ खां सवाइ हवसि खे घटाइण ऐं अंदरूनी ताकतुनि खे वधाइण ते ज़ोरु ड॒िनल हो। खेसि निकाह में आयल ड॒ह ज़ालूं ऐं ब॒ कनीज़ूं हुयूं। उहो उन वक्त जे लिहाज़ खां हिक नुमाइंदह सुधारो हो। पाण जेसताईं हिन दुनिया में मौजूद हो, तेसताईं मुसलमाननि पंहिंजे ज़ालुनि खे पाण खां अलग॒ न कयो हो। ज़ालूं ऐं मर्द पाण में उन नएं निज़ाम तहत आज़ादीअ

सां मिलंदा हुआ। घिटियुनि में आज़ादीअ सां घुमंदा हुआ ऐं मस्जिदुनि में गडिजी नमाज़ पढ़ंदा हुआ। जडहिं पैग़म्बर जी ज़ाल आयशा खां पुछियो वियो त हूअ पंहिंजो मुंहुं छो न थी ढके, तडहिं हुन वराणियो, "जीअं त अल्लाह जो वडो कर्म आहे, जंहिं मूंखे अहिड़ी सूहं अता कई आहे, इनकरे मुंहिंजी इहा ख़्वाहिश आहे त अवाम बि उन सूहं खे डिसे ऐं अल्लाह पाक जी साराह करे।" हू पाण अण-पढ़ियल हो ऐं कडहिं बि कुझु न पढ़ियो, पर हुन अरबी अदब में सभ खां मशहूर ऐं ऑला किताब पेशि कया आहिनि। हुन पंहिंजे पोइलगुनि में इलम लाइ तड़फ पैदा कई। हुन ऐलान कयो, "उहो जेको इलम जी गोल्हा में पंहिंजो घर छडे थो, उहो खुदाई रस्ते ते हले थो ऐं आलिम जी मसु, शहीद जे रत खां वधीक पवित्र आहे।"

पैग़म्बर इस्लाम जी तब्दीली न कई पर ज़ाती तरह मुख़ालिफ़ मज़हबी पोइलगुनि जे रतोछाण में मुबतला न थियो। हुन पाण कडहिं बि जंगियुनि करण में अगिराई न कई। अरबनि खे पसंद ईंदड़ फ़ौजी अगिरायूं ऐं साम्राज्यवाद जी हवस पोइ जूं गाल्हियूं आहिनि, जिनि जा आम तरह माली कारण हुआ। सिंचाईअ जा ग़ैर तरकी याफ़्तह तरीका ऐं वीरान ज़मीन वधंदड़ आबादीअ खे ज़रख़ेज़ ज़मीन लाइ हवस खे जनम डिनो। इन खां सवाइ सियासी कारण पिण हुआ। रोम ऐं ईरान जूं हुकूमतूं जंग ऐं गडियल बर्बादीअ में थकिजी चुकियूं हुयूं। बे-वाजिबी ढलुनि ऐं बदि-इंतज़ामी ऐं हमलनि भरि वारियुनि बादशाहियुनि अरबनि जे दिलियुनि में सिंध खे फ़तह करण जी बे-रोक ख़्वाहिश खे जागाए छडियो।

705 ई. में वलीह अवल तख़्त ते वेठो। संदसि हुकुमरानीअ जो दौर डहनि सालनि ताईं हलियो। अल हजाज बिन यूसुफ़ संदसि गवर्नर ऐं अरबस्तान जो हाकिम हो। बिए ख़लीफ़े जे दौर में ई अरबनि जी दिल सिंध ते हिरखी वेई हुई। उन सठ सतर साल पोइ जे अर्से दौरान संदनि डह काहूं नाकाम थी चुकियूं हुयूं। 'चचनामे' में लिखियल आहे त हिन आख़िरी काह जो मकसद इस्लाम जे प्रचार ऐं फहिलाव लाइ न पर मुल्कगीरी ऐं माल जी हवस हो। खुटल ख़ज़ाने में घणो माल थींदो। शिकस्त खाधल माण्हू सौग़ातूं ऐं ढलूं डींदा। गुलाम ऐं औरतूं हासिल थींदियूं। मलकाणीअ सिंधयुनि ऐं अरबनि

जे मुकाबिले जो ड॒ाढो दिलिचस्प बयान कयो आहे। उन वक्त सिंध जो हुकुमरान 'राजा ड॒ाहर' चच जो पुट हो, जेको हिक चालाक ब्राह्मण हो ऐं कंहिं तरह उन वक्त जे हाकिम राइ सहासी जे मौत खां पोइ संदसि राणीअ सां प्रीत जा पेच पाए, राजाई हथि कई हुआईं। हुन चालीह साल राजु॒ कयो। संदसि ड॒ींहंनि में अरबनि पहिरियों हमलो देबल ते कयो, जेको घणो करे कराचीअ जे ओभर में चालीह मील पेर हिक नंढे ग॒ोठ भंभोर जे भरिसां हो। अरबनि जो हमलो नाकाम थियो, तंहिं करे हजाज पंहिंजे सत्रहनि सालनि जे नौजवान नाठीअ मुहम्मद बिन कासिम खे तफ़्सीलवार हिदायतूं ड॒ेई, लश्कर जे सिपहसालार जे हैसियत सां सिंध ते, राजा ड॒ाहर जे ड॒ींहंनि में हमले करण लाइ चाढ़े मोकिलियो। मलकाणीअ लिखियो आहे त सिंधु खे कड॒हिं बि शिकस्त जो मुंहुं न ड॒िसिणो पवे हा, जेकड॒हिं सिंधियुनि जी पाण में हिक ब॒िए जे ख़िलाफ़ साज़शुनि ऐं ग़दारियुनि जी धुम मतल न हुजे हा। राजा ड॒ाहरु हमले खे नाकाम करे छड॒े हा, पर खेसि संदसि ग़ल्तियुनि मारायो।

सेप्टम्बर 1979 ई. में 'पाकिस्तान बचायो ड॒ींहं' जे मौके ते अंग्रेज़ी अख़बार 'पाकिस्तान टाईम्स' में मुहम्मद बिन कासिम' ते हिक मज़मून छपियो हो, जंहिं में खेसि 'फ़ौजी माहिर' जे हैसियत सां ब॒िन्ही लश्करनि ड॒ांहं संदसि रवैये खे बे-रिया इंसाफ़ वारो ड॒ेखारियल हो। तारीख़ी हकीकत, बहरहाल अयामकारियुनि लाइ पारातो आहे। जीअं पाकिस्तान में मौजूद आहे। नैशनल कमीशन ऑफ हिस्टारीकल एंड कल्चरल रिसर्च जे चैयरमन मथिएं मज़मून जे लेखक खे धिकारियो आहे, जंहिं मां संदसि तिखो लहिजो ज़ाहिर आहे-

जड॒हिं कंहिं हीरो जी शख़्सियत खे उभारिणो (High Light) हुजे त तुज़-महावरेदार ब॒ोलीअ खे इस्तेमाल करण ज़रूरी आहे। ''फ़ातह'' ऐं ''बचाउ कंदड़'' ऐं ''हिंदुस्तानी लश्कर'' बहादुरीअ सां विढ़ियो, पर चुस्त न हुअण करे ''हथियार फिटा कंदड़ दुश्मन ते ग़ालिब पइजी न सघियो'' जहिड़ा घणा बयान मज़मून में ड॒िसिजनि था। इहो मज़मून हेठि ड॒िनल कुझ बयाननि सां वधीक ख़राब थियो। ''जेकड॒हिं राजा ड॒ाहरु सिंधूअ जो बहादुरीअ सां बचाउ करे हा त हुन नंढे खंड जी तारीख़ बिलकुल मुख़्तलिफ़ हुजे हा।'' ख़बर नाहे

लेखक हीरो जी फ़तह खे साराहे रहियो आहे या मुख़ालिफ़ जे शिकस्त ते अफ़्सोस करे रहियो आहे।

इन में को अजब नाहे त पाकिस्तान में ताज़ो स्टील-मिल ऐं आस-पास जे खेत्र जो नालो मुहम्मद बिन कासिम जे नाले पुठियां रखियो वियो आहे। हू पंहिंजे अयामकारीअ जो हीरो आहे।

मूं खे पक नाहे त सिंधियुनि जे दिल में राजा ड॒ाहर लाइ का इज़्त या सम्मान आहे या न। पर गुमान ग़ालिब आहे त मलकाणी ग़लत आहे। बहरहाल इहो चवण घुरिजे त अज़ीम सिंधी अगु॒वान जी. एम. सैय्यद पंहिंजे किताब ''सिंधूअ जी साञह'' में बिलकुल साफ़ नमूने मुहम्मद बिन कासिम खे फ़ातह ऐं सिंध जे मुहाफ़िज़ जे हैसियत सां उभारण लाइ सरकार जी ख़िलाफ़त कई आहे। हू बंदरगाहनि, रोडनि, लाइब्रेरियुनि ऐं कॉलेजनि ते संदसि नालो रखण लाइ सख़्तीअ सां मना थो करे। हू खेसि ज़ालिम ऐं ग़दार अरब थो कोठे, जंहिं सिंध खे कॉलोनी बणायो ऐं हज़ारें माण्हुनि ते ग़ुलामी मढ़ी। हू गु॒स्से ऐं मासूमनि जे क़तल ड॒ांहं ध्यान छिकाए थो, जंहिं ते पाकिस्तानी तारीख़दाननि ड॒ोहारियुनि जहिड़ी माठ रखी आहे।

इन में को शक़ नाहे त सिंधु जे सरहद पार, बाकी हिंदुस्तानियुनि खे अरबनि जे फ़तह जी ख़बर हुई। इन्हीअ ग॒ाल्हि संदनि सांतीके वजूद जे माठे पाणीअ में को तहरक न आंदो। उते ज़िंदगी हमेशा जियां हलंदड़ हुई, खेनि नको मुल्क विञाइण जो अहिसास हो ऐं न नएं ख़ौफ़ जे फ़ितरत जी ज॒ाण हुई। सिंध जे फ़तह खे हिक वधीक धाड़े वांगुरु दर-गुज़र कयो वियो। अटिकल पंज सौ सालनि खां पोइ 1192 ई. में मुहम्मद ग़ौरी ऐं संदसि फोरू टोला हिंदुस्तान में आया। सज॒ो उत्तर हिंदुस्तान ग़ौरी घराणे जी हिक शाख़ बणिजी वियो। हिंदुस्तान में इस्लामी ताकत पंहिंजा पेर खोड़ण आई हुई। पंज सदियूं लंघे वयूं, पर मुल्कु सुजागु॒ न थियो। हुन पाण खे कुझ करण या मरण लाइ तैयार न कयो। इहा निहायत शर्म जहिड़ी अफ़्सोस-नाक कहाणी आहे।

ड॒िसिजे थो त हिंदुस्तान अवाम अहिंसा ऐं शांतीअ जा तर्फ़दार हुजण करे सदाईं हमदर्दी जा सतायल रहिया आहिनि ऐं उन्हनि हमलो कंदड़नि सां मुकाबिलो करण जो कम पेशेवर सिपाहियुनि ते छड॒े ड॒िनो हो। बाकी रहियल

माण्हुनि सां कंहिं बि पंहिंजे वतन जे बचाव लाइ आड॒रु बि न खंईं। हमला कंदड़नि जी अखि हिंदुस्तान जी बे-बहा दौलत ऐं उतां जी नाज़ुक ऐं ख़ूबसूरत औरतुनि में हुई। संदनि कंहिं बि मुकाबिलो न कयो। जेकड॒हिं कंहिं भरपूर मुकाबिलो कयो त उहे सौमान पसंद राजपूत हुआ, जेके क़दीम ज़माने जे फ़ातहनि ''हूणनि'' जो औलाद आहिनि। पर इहो बहादुरीअ भरियो मुकाबिलो बि पाण में निफ़ाक जे करे आरिज़ी साबित थियो। इहो निफ़ाक पुराणे तोड़े मौजूदा हिंदुस्तान जे हिंदुनि जी दाइमी बीमारी आहे।

कुझु सदियुनि खां पोइ जड॒हिं उत्तर में मुसलमाननि जो ज़ोरु घटियो। हिंदुनि जे मुख़ाल्फ़त जे करे न, पर मुसलमाननि जी पाण में अण-बणति करे, त ड॒खण हिंदुस्तान जे हिक शहर विजय नगर जी सल्तनत में हिंदू जाग्रता जी कुझु झलक नज़र आई। हिंदू तहज़ीब ऐं आज़ादीअ जो इहो आख़िरीनि किलो पिण 1565 ई. में तबाह कयो वियो। हमेशह वांगुरु मुसलमाननि विजय नगर जो ख़ूबसूरत शहर, जेको उन ज़माने में हिंदुनि जो हिकु मिसाली शहर समुझियो वेंदो हो, नास करे छड॒ियो।

हिंदुस्तानी हिंदुनि जे शिकस्त जी ज़िल्लत भरी तारीख़ में, मलकाणी सिंध जे हाकिमनि-सूमिरनि ऐं समन जे कारनामनि में आथतु थो ग॒ोल्हे, जेतोणीक मलकाणीअ जी खोजना इहो ग॒ोल्हे ई न सघी आहे त उहे कड॒हिं ऐं कीअं मुसलमान थिया। पर ज़ाहिर आहे त सिंधु जा मुसलमान, बाकी समूरे हिंदुस्तान जे मुसलमाननि खां मुख़्तलफ़ आहिनि, जेके सचु पचु अज॒ु ड॒ींहं ताईं पाण खे इएं रखंदा पिया अचनि।

अरबनि सतीं ऐं अठीं सदीअ में इस्लाम पखेड़ियो। उन्हनि पंहिंजे पैग़म्बर जे हिदायतुनि जी पेरवी कई ऐं इल्म जे खोजना जो लुत्फ़ थे माणियो। हिननि काग़ज़नि जो इस्तैमाल चीनियुनि खां हासिल कयो ऐं बग़दाद में पहिरियों काग़ज़ ठाहिण जो कारख़ानो खोलियाऊं। उहे जिते बि विया, तितां हिसाब, कीमिया, तबी, ज्योतिष ऐं उते मौजूद हर इल्म जी ज॒ाण हासिल कयाऊं। केतिरियुनि ई मस्जिदुनि में लाइब्रेरियूं हुयूं, त किनि शहरनि में वडे॒ तादाद में लाइब्रेरियूं हुयूं। जड॒हिं मंगोलनि बग़दाद खे तबाह कयो, तड॒हिं छटीह वड॒ियूं लाइब्रेरियूं हुयूं ऐं नंढियूं ख़ानगी लाइब्रेरियूं त लातइदाद (बेशुमार) हुयूं। हिक

मुसलमान हकीम, बुख़ारा जे सुल्तान जे दरबार में रहण जी दावत कबूल करण खां इनकरे ई इंकार कयो जो खेसि पंहिंजे कुतबख़ाने खे ढोइण लाइ चार सौ उठनि जी ज़रूरत हुई। मस्जिदुनि मां एतिरा आलिम तइलीम हासिल करे थे निकिता, जेतिरा उन्हनि जा थंभा हुआ। उन्हनि पंहिंजे ज़बानी चतुराईअ सां माण्हुनि जूं दिलियूं जीते वरितियूं। मुल्क में बेशुमार इल्म ऐं डाहप जा गोल्हाऊ, जाग्राफ़ीदान, तारीख़दान ऐं धर्म विद्या जा ज़ाणू फहिलियल हुआ। शहज़ादनि जे महफ़लुनि में शइर, अदब ऐं फ़लसफ़े जो ज़िक्र हूंदो हो। को बि अमीर अदब ऐं फ़न जे वाधारे खां इंकार न कंदो हो। हारायल माण्हुनि जे पुराणनि कल्चरनि ऐं रस्म रवाज खे हाज़िर दिमाग़ अरब शौक सां पाण में जज़्ब करण जा ख़्वाहिशमंद हुआ। इहो इस्लाम जो बुलंद गौरव हो।

पोइ इस्लाम जे तारीख़ जे कंहिं दौर में शायद कंहिं इहो फ़ैसिलो थो कयो डिसिजे त कुरान खां सवाइ बियो को बि किताब पढ़ण लाइक न आहे। नतीजन खुदि मुख़त्यार सोच ते पाबंदी पइजी वेई ऐं इतहाद (जिते कुरान जो साफ़ आदेश न हुजे, उते पंहिंजे मर्ज़ीअ सां मोज़ून रस्तो गोल्हणु) ऐं कोशिश करण जा दर हमेशा लाइ बंद थी विया। जदीद मुसलमान सुधारकनि जूं उहे दर खोलण जूं कोशिशूं नाकामयाब वेयूं पर जदीद जंगजू (Militant) इस्लाम जे दुनिया में का बि ख़ातिर ख़्वाहि कामयाबी थींदी नज़र नथी अचे। एतिरे कदुरु जो मुहम्मद इकबाल शुरूआती इकबाल जे ख़तम थियण खां अगु पंहिंजे ललकारींदड़ किताब "Reconstruction of Religion thought in Islam" में रुगो मज़हबी फ़िक्र जे पुनर्निर्माण खे समुझायो आहे पर इस्लाम में मज़हबी फ़िक्र जे पुनर्निर्माण खे चङीअ तरह न समुझायो आहे। हिन सलाह डिनी त मौजूदा वक्त में इस्लाम खे नएं सिर समुझियो वञे। पर इन सोच जे नतीजे लाइ हिन को बि अमली कमु न कयो। अफ़सोस इन्हीअ गाल्हि जो आहे, जो हू पहिरियों शख़्सु हो, जंहिं जुदा मुस्लिम राज जो तस्सवुर पेशि कयो, जेको पोइ पाकिस्तान जे नाले सां वजूद में आयो। उन खां अवलि अकबर जे अयामकारीअ में, थोरे अरिसे खां सवाइ इस्लाम खे मुल्क जे मज़हब सां मिलाइण जी गंभीर कोशिश न कई वेई। अकबर इहाई कोशिश कई, जेका गुरूनानक कुझु वक्त अगु कई हुई। सोरहीं सदीअ में हिंदुस्तान जे एकता जा हामी इहे ई ब अज़ीम

शख़्स हुआ। अज़ोके सियासी मंज़र जी इहा ड॒खोईंदड़ हकीकत आहे त सिख पंथ ते इंदिरा गांधी ऐं संदसि पैदा कयल ख़ौफ़नाक फ़िरके परस्तनि जा हमला थी रहिया आहिनि ऐं अकबर अज़ीम ते रजअत पसंद आलिमनि जा हमला थी रहिया आहिनि। मलकाणी इन हकीकत ते हक ते फ़ख़ुरु थो करे त अकबर सिंधु में ज॒ाओ हो ऐं इहा ग॒ाल्हि अहमियत खां ख़ाली नाहे त घणो करे हर सिंधी हिंदू गुरूनानक जो पोइलग॒ आहे। पर ड॒खोईंदड़ सचु इहो आहे त पैग़म्बर इस्लाम जो ड॒सियल सच्चो इस्लाम या त उन सां गड॒ ई ख़तम थी वियो या तुर्त उन खां पोइ, हकीकी दग॒ संदसि पोइलग॒नि वरितो। जंहिं अकीदे खे हिन वजूद ड॒िनो ऐं जंहिंजो प्रचार कयो, उहो हिंदुस्तान में पंहिंजे असुल ऐं निज शिकिल में पहुतो ई कोन। हिंदुस्तान तोड़े परड॒ेह जा अज़ोका बुनियाद परस्त मुसलमान जेकड॒हिं अजीब न त अणज॒ाण ज़रूर आहिनि। उहे चवनि था त उहे हिक अहिड़े इस्लामी सिरिश्ते में मोटणु चाहीनि था, जेको हिक इस्लामी रियासत हुजे। पहिरीं सूरत में सियासत इस्लामी रूह मुताबिक आहे ऐं पोईं सूरत में सियासत ऐं मज़हब इस्लाम जे कुल जोड़ जो हिस्सो आहिनि। अहिड़ीअ तरह पोयों वधीक सख़्त ऐं वधीक सच्चो इस्लामी आहे, पर खेनि बुनियादी मसइले जी ज॒ाण न आहे। संदनि ज़हन में कहिड़ो इस्लाम आहे, जंहिं ड॒ांहुं हू मोटी वञणु चाहीनि था? छा इहो इस्लाम पैग़म्बर जो इस्लाम आहे या पोइ जे वक्तनि जो भ्रष्ट इस्लाम आहे? उन्हनि मुइजज़ माण्हुनि इन्हीअ जो जवाब सोचियो पिण नाहे। मंझाउनि घणनि जे ज़हन में रुग॒ो हिक ग॒ाल्हि आहे त मुल्क जो कानून कुरानी हुकमनि मुताबिक हुअणु घुरिजे। पर उहे के बि सादा नतीजा कढण खां इंकारी आहिनि, जेके अण-टर तौर ते पोइ निकिरंदा। असुलोको इस्लाम ख़ानदानी बादशाहत जी इजाज़त नथो ड॒िए। अवाम खे हकु हो त पंहिंजो ख़लीफ़ो चूंडीनि ऐं हटाईनि। इन्हीअ मय्यार मूजिब का बि इस्लामी रियासत, हकीकी इस्लामी रियासत जी दावा नथी करे सघे। हिंदुस्तान कंहिं बि ड॒ींहं ते पाकिस्तान या सऊदी अरब खां वधीक इस्लामी आहे। पर आलिमनि पंहिंजे महदूद ज॒ाण खे वेकिरो करण जी कबूलियत ड॒ेई छड॒ी आहे। उन्हनि हर बेलग़ाम रियासत जो बचाउ कयो। संदनि ज़ाहिरी दलील इहो आहे त इस्लाम अल्लाह जे हाकमियत खे कबूल करे थो ऐं अवाम जे हाकमियत

खे नथो मञे। तंहिंकरे जिनि मुल्कनि ते बादशाहनि ऐं डिक्टेटरनि जूं हुकूमतूं आहिनि, उहे हकीकी इस्लामी आहिनि। उहे कानून में बियूं जेके तब्दीलियूं आणणु चाहीनि था, उहे आहिनि इस्लामी सज़ाऊं डियणु। भारतीय लोक सभा खे इहा सलाह डेई सघिजे थी त मुसलमान डोहारियुनि खे मुकरर हिंदुस्तानी कानून जे तजवीज़ कयल आम इंसानी सज़ाउनि जे बदिरां उज़िवा कपिण, ख़सी करण ऐं फटिका हणण जी सज़ा चूंड करण जो हक डिनो वञे।

बुनियाद परस्तनि खे अञा हिक बिए अहम सुवाल जो जवाब डियणो आहे। खेनि कहिड़े किस्म जे तइलीम जी ज़रूरत आहे? छा तइलीम हासिल करण लाइ इल्म ऐं रोशनी खेनि जिते बि मिले, हासिल कई वञे या कुरान शरीफ़ खां सवाइ हर ज़रीए खे लिकायो वञे ऐं ग़ैर कानूनी करार डिनो वञे? मूं अगु में चयो आहे त इस्लाम पंहिंजे शानदार दौर में कीअं समूरी दुनिया जे इल्म जा दरवाज़ा पाण लाइ खोले छडिया हुआ। बुनियाद परस्ती रुगो ज़हनी ऊंदाही पैदा करे थी। मुसलमाननि खे, हकीकत में सभिनी मुल्कनि जे सभिनी शहरियुनि खे, संदनि नंढपुण खां इहा सिख्या डिनी वञे त हर मज़हब में ख़ालिस शइ गंद जे ढेर सां सदाईं गडु हूंदी आहे। हकीकी सेक्यूलिरज़्म कडहिं बि कंहिं मज़हब ते ज़रूरी सिख्याउनि सां बेजोड़ न हूंदी आहे, जेतोणीक उहा इत्फ़ाकी अमलनि, अजायनि वहमनि ऐं शकनि सां टकिराइजी सघिजे थी। को बि मुल्क पंहिंजो पाण खे इस्लामी जम्हूरी या हिंदू राष्ट्र चई सघे थो। जेकडहिं इहो पंहिंजे अल्पसंख्यक रइयत खे मुकम्मल आर्थिक ऐं सियासी इंसाफ़ मयसर करे ऐं खेनि पंहिंजे मर्ज़ीअ सां पंहिंजे ख़ुदा खे नाकबूल करण या हासिल करण जी छूट हुजे। सेक्यूलरइज़्म मज़हब खे रद्द करण जी घुर नथो करे, पर उन जी मुकम्मल हिमायत, मञुता ऐं इज़्ज़त जी तकाज़ा करे थो। हिन जूं घरू नीतियूं ऐं सियासी पार्टियुनि (जेके समुझनि थियूं त संदनि वजूद आहे) जा घोषणा पत्र ठोस आर्थिक ऐं सियासी ज़रूरतुनि ते बीठल हुअणु घुरिजनि। पर इहे हरगिज़ हरगिज़ मज़हबी अल्पसंख्यकनि जा वोट हासिल करण जी नियत ते बीठल न हुअणु घुरिजनि। परडेही नीति, अंतर्राष्ट्रीय कानून ऐं इख़्लाकियत तोड़े अमल, मुल्क जे रोशन आईंदह वारे फ़ाइदे ते बीठल हुअणु घुरिजे। मकानी वोट बैंकूं कडहिं बि बियनि मुल्कनि सां तालुकात जो संतोषजनक

बुनियाद न हूंदियूं आहिनि। इहा अफ़्सोस जी ॻाल्हि आहे त असांजा ओलह एशिया जे हरम संभालींदड़ शेख़नि सां दोस्ताना नाता आहिनि, पर पंहिंजे वजूद लाइ विढ़ंदड़ फिलिस्तीनियुनि सां गॾु नाहिनि। लीबिया जे पाॻल गद्दाफ़ीअ सां आहिनि, पर ईज्पिट जे हुस्न मुबारक सां न आहिनि। हिक पार्टीअ जे डिक्टेटरशिपुनि सां नाता आहिनि, पर सेक्यूलर जमहूरियतुनि जे बेवकूफ़नि सां नाहिनि। रुॻो कूड़ो सेक्यूलरइज़्म ई इन्हीअ वहशियानी बेहूदगीअ खे समुझाए सघे थो। उहो आख़िरी, सुठो, आरज़ी हल आहे, पर डिघे सफ़र में हमेशा कौमी यक वजूदगीअ खे शिकस्त ॾींदड़ ऐं तबाह कंदड़ आहे। मुंहिंजे रोशन ख़्यालीअ जे मुख़्तलफ़ नज़रिए ऐं निफ़ाक हिन मुल्क खे विरहाए छॾियो आहे। असां धारियनि खे उन्हनि जे शोषण लाइ ॾोही ठहिरायो पर असांखे शर्म अचणु घुरिजे, जो उहे अॼु बि पाण वधीक तेज़ फ़हम ऐं ज़हरी सूरतुनि में मौजूद आहिनि। इन्हीअ ॻाल्हि मुल्क खे कमज़ोरु ऐं हीणो बणाए छॾियो। काश सिंधी शाइर शाह अब्दुल लतीफ़, जेको समूरी दुनिया जे शाइरनि जो शहज़ादो आहे, सचल सरमस्त ऐं सामीअ सां हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान जे असरदार नौजुवाननि खे, संदनि जोॻी उमिरि में वाकुफ़ करायो वञे हा ऐं मज़हबी ॻांढापे जे हिक नएं दौर खे आंदो वञे हा। कंहिं अज़ीम शाइरीअ जो बारीक लुत्फ़ तर्जुमे में ख़तम थियो वञे, पर सिंधु जो हीउ अमुल्हु ख़ज़ानो, कंहिं बि कीमत ते समूरे नंढे खंड जे अमली वरिसे जो हिकु हिस्सो थियणु घुरिजे। सिंधु जा उहे अज़ीम शाइर पहिरियां ॿ मुसलमान ऐं हिकु हिंदू आहिनि, पर संदनि काराइतियुनि तख़्लीकुनि में मज़हबी नफ़रत, तंगदिली ऐं निफ़ाक जो हिकु लफ़्ज़ु बि कंहिं ॻोल्हे न लधो आहे। मंझांउनि हरिको पंहिंजे आसपास जे मज़हबी धाराउनि खां मुतासिर थियो, हरकंहिं उन्हनि जो गहराईअ सां असर कबूल कयो ऐं शानदार कायनात ऐं रूहानी एकता जे हासलाति खे यकवजूद कयो।

हिन सदीअ दौरान, जॾहिं असां सभु गुलाम हुआसीं ऐं मुल्क जी एकता तमाम ज़रूरी हुई, तॾहिं इकबाल कुझु मुतासिर कंदड़ शाइरी कई। पर लिबरल मग़रबी तइलीम जे बावजूद, जेका असांजे टिन्हीं शाइरनि वटि न हुई, हिन पोइ

तंगदिली ऐं फ़रिके परस्तीअ जे नूअ में शाइरी कई। हू पंहिंजे 'शिकवा' (ख़ुदा ते मुसलमाननि जी शिकायत) में चवे थो-

मुश्किलें उमते मरहम की आसां कर दे
मरबे माया को हम दोशे सुलेमां कर दे
जिंस नायाब मुहब्बत को फिर अरज़ां कर दे
हिंद के देर नशीनों को मुसलमां कर दे
जूए ख़ूं में चकद अज़ हसरते देरीनए मा
मी तपद नाल बि नशतर कदह सीनए मा।

(जिनि माण्हुनि खे तो नवाज़ियो, उन्हनि जो बार हल्को करि। ग़रीब पस्त हाल माण्हुनि खे मथे खणु ऐं सुलेमान जे कुल्हनि सां मिलाइ। मुहब्बत जी महांगी जिंस खे सस्तो करि। जीअं सभेई ख़रीद कनि ऐं विकिणी सघनि। हिंदुस्तान जा माण्हू, जेके अञा मंदरनि जा पूजारी आहिनि, तिनि खे मुसलमान बणाइ। असां ड॒ाढो भोगि॒यो आहे; डि॒सु केडो॒ रतु वही छुड़ियो आहे! दिल जी दांहं बु॒धु, जेका कात सां कुठल आहे।)

हिंदुनि खे मुसलमान करण जो ख़्याल कडहिं॒ बि शाह या सचल जे दिल में न आयो।

इकबाल पंहिंजे 'जवाब-शिकवा' (खु॒दा जे शिकायत जो जवाब) में चवे थो-

शोर ये हो गया दुनिया से मुसलमां नाबूद
हम ये कहते हैं कि थे भी कहीं मुसलमां मौजूद
वज़्अ में तुम हो निमाज़ी तो तमदुन में हनूद
ये मुसलमां हैं जिन्हें देख के शरमाये यहूद
यूं तो सैय्यद भी हो, मिर्ज़ा भी हो अफ़ग़ान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसलमान भी हो।

(चौबो॒ल मतल आहे त दुनिया मां मुसलमान ख़तम थी विया आहिनि। असां इहो पुछूं था त किथे बि कंहिं सच्चे मुसलमान जो वजूद आहे? तुंहिंजी रहिणी कहिणी ईसायुनि जहिड़ी आहे ऐं तुंहिंजो कल्चर हिंदुनि जहिड़ो आहे। जेकडहिं॒ को यहूदी तो जहिड़े मुसलमान खे डि॒संदो त शर्मिंदो थींदो। तूं ई

सैय्यद बि आहीं त मिर्ज़ा ऐं अफ़ग़ान पिण। तूं इहो सभु कुझ आहीं पर इहो बुधाइ त तूं मुसलमान बि आहीं?)

कंहिं बि इस्लामी मुल्क में मज़हबी गांढापे जो सुवाल इस्लाम जे अल्प संख्यकनि जे नज़रिए सां गुंढियल आहे ऐं उन जो नज़रियो मुकमल तोर ते इस्लामी आहे। त ज़ाहिर आहे त अल्प संख्यक सां कडहिं बि बराबरी ऐं इंसाफ़ वारो वहिंवार नथो थी सघे। पाकिस्तान में अहमदियुनि सां, ईरान में बहाइनि सां, कंहिं हद ताईं मिश्र में कापटन सां इहो वहिंवार हिकु अफ़्सोसनाक तजुर्बो आहे। जेकडहिं इस्लामी मुल्क पंहिंजे अल्प संख्यकनि सां अहिड़ो सलूक कनि था त छा इहो विसारे सघनि था त दुनिया जे ग़ैर मुस्लिम मुल्कनि में 750 मिल्यनि मुसलमाननि जो चोथों हिस्सो अल्प संख्यक आहिनि। इहो रुगो ज़ाती मफ़ाद quid pro quo थींदो त जेसताईं मुस्लिम मुल्कनि में ग़ैर मुसलमाननि सां मुकमल बराबरीअ जो वहिंवार न रखियो वेंदो ऐं हर लिहाज़ खां यकसां इंसाफ़ जो लफ़्ज़ु लागू न कयो वेंदो, तेसताईं उहे ग़ैर मुस्लिम मुल्कनि में मुस्लिम अल्प संख्यकनि (थोराईअ वारा) सां सागिए वंहिवार जी उमीद नथा रखी सघनि। इन मां इहा मुराद नाहे त हिंदुस्तान में मुस्लिम अल्प संख्यकनि खे गारंटी तोर गिरवी रखियो वञे त जीअं समूरी दुनिया जे मुसलमान मुल्कनि खां सुठे सलूक जी पक मिले। पर किथे बि ग़ैर मुस्लिम अल्प संख्यकनि सां जेकी बि थिए थो, उन जो अण-वणंदड़ रद-अमल सवलाईअ सां टारे नथो सघिजे। ख़ास करे जेसताईं हिंदुस्तान में अल्प संख्यक इन्हीअ खे सख़्तीअ सां रदि ऐं इन्हीअ जी निंदा नथा कनि।

थी सघे थो त ताज़नि तारीख़ी वाकअनि जो सबक कटर माण्हुनि मां किनि गंभीर ऐं जवाबदार माण्हुनि खे मञाए विझे। इस्लाम जे दिल जी हैसियत रखंदड़ अरब मुल्क खे 1967 ई. में इज़राईल खां शिकस्त खाइणी पेई। इहा शिकस्त एडी ज़िलत भरी हुई, जो न रुगो लड़ाईअ में हिस्सो वठंदड़ मुल्कनि मिसिर, जार्डन ऐं सीरिया इहा ज़ाती तोर ते महसूस कई पर सभिनी मुस्लिम मुल्कनि, अरबनि तोड़े ग़ैर अरबनि महसूस कई। उन खां पोइ 1972 ई. में सभ खां वड़े इस्लामी मुल्क पाकिस्तान जा ब टुकरा थी विया। नफ़रत, तल्ख़ी, अवामी सदमो ऐं जंग खे इस्लाम जो बंधन बि रोके न सघियो। सूबाई भावना

जी छिकताण ताकतवर साबित थी। आर्थिक कुवतूं मज़हब ते हावी पइजी वेयूं। हाणे बेवकूफ़ाना जंगि ख़ुमैनीअ जे ईरान ऐं सद्दाम जे इराक विच में हिक ईंधिजंदड़ ऐं जारी रहंदड़ जंगि आहे। हाणे त विढ़ंदड़ धुरियुनि खां इहा ग॒ाल्हि बि विसिरी वेई आहे त असल में वेढ़ छा ते आहे। पर ब॒ई धुरियूं हिक ब॒िए जे रतोछाण में रुधल आहिनि। ब॒िन्ही मुल्कनि जे नौजवाननि खे ब॒ पाग॒ल शख़्स, जेके मुसलमान ऐं बुनियाद परस्त मुसलमान आहिनि, पंहिंजे अहम ख़ातिर ख़तम करे रहिया आहिनि। इहो वड॒ो ऐं साफ़ सबकु आहे। इस्लाम रुग॒ो पुर अमन, गड॒िजी हलण ऐं पंहिंजे तिखनि कंडनि खे अंदर वराए रखण सां ई, बिना ठाह या असुली रूह खे विञाइण खां सवाइ, वधी वीझी सघे थो। शाल सिंधी इन्हीअ मसइले ते कम करे ऐं सुधारो आणे अहिड़ो ई मिसाल पेशि कनि।

अमेरीका जे जज होम्स खां मकानी रेल गाड॒ीअ जे सफ़र दौरान टिकेट कलेक्टर टिकेट जो पुछियो। जज टिकेट लाइ खीसे में हथु विधो, पर टिकेट न मिलियसि। टिकेट कलेक्टर, जंहिं जज खे सुञातो थे, तंहिं खेसि चयो त का ग॒ाल्हि कान्हे। पर होम्स ड॒ांहुंसि ड॒िसंदे चयो, "न नौजवान, मूंखे टिकेट ग॒ोल्हणु घुरिजे, जो मूंखे याद नाहे त मूंखे वञिणो किथे आहे।" सो मां पाण विसारे वेठो आहियां त हीउ रुग॒ो पेशि लफ़्ज़ आहिनि। इहे पढंदड़नि खां माफ़ी ऐं लेखक जे हिन दिलचस्प कम लाइ थोराइतो थींदे ख़तम थियण घुरिजनि।

बम्बई **राम ज॒ेठमलाणी**

30 आगस्ट 1984 ई. पार्लियामेंट जो मेम्बर

सिंधु जी कहाणी

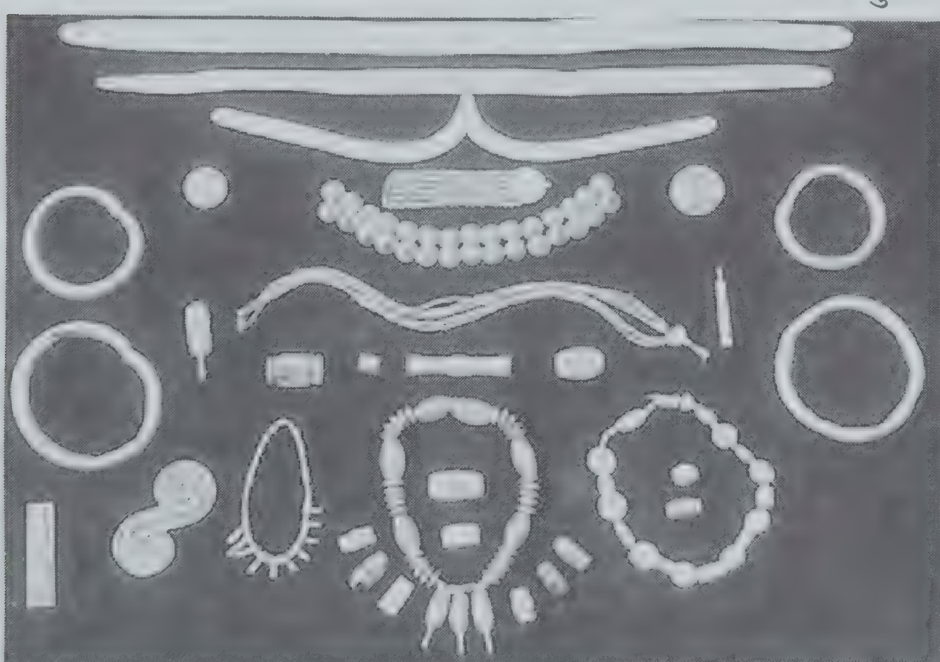
[The Sindh Story जो सिंधी तर्जुमो]



मुअनि जो दड़ो जे वक्त जो
डांस कंदड़ छोकिरीअ जो बुत



मुअनि जो दड़ो जे वक्त जो
गुलनि फुलनि वारी
नारंगी शाल पातल बुत



मुअनि जो दड़ो जे वक्त जा कुझु ज़ेवर
जिनि आर्क्यालाजिस्ट खे बांड स्ट्रीट जी याद ड॒ियारी



हैदराबाद सिंधु जो मीरनि जो कुबो



मुअनि जो दड़ो जे वक्त जो ठहियल शाही टैंक जो नज़ारो



हैदराबाद में ठहियलु मंघु ऐं बाडगीर



सिंधु नदीअ जे ब॒ेट ते ठहियलु साध ब॒ेला मंदर, सक्खर



कराची कांग्रेस (1931) में गांधीजीअ सां गडु नारायणदास बेचार, पंडित एम. एम. मालवीय, डाक्टर चोइथराम ऐं बीठल जमशेद



अटिकल सौ साल पुराणो फोटो- (खाबे खां साजे) गुप्ताजी, साधू हीरानंद, दयाराम गिदूमल, मेठाराम, दयाराम जो भाउ ऐं ताराचंद (हीरानंद जो भाउ)



इष्टदेव झूलेलाल



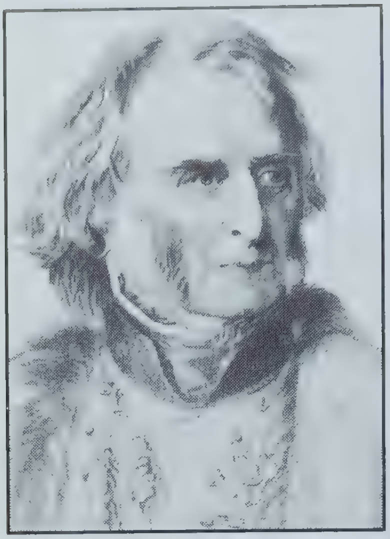
भग॒त कंवरराम

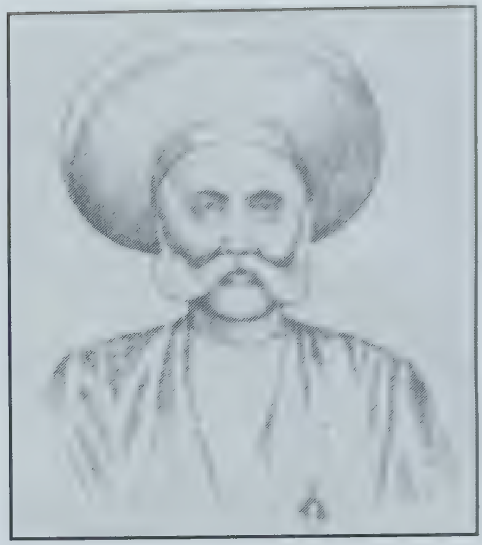


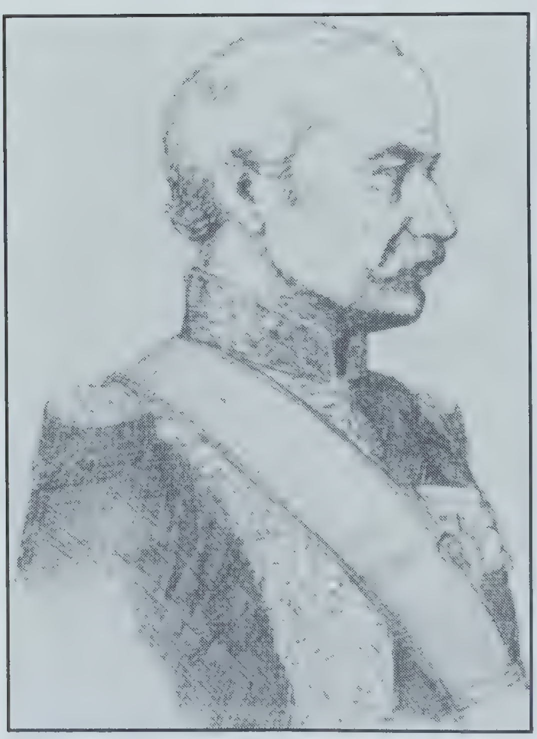
शाह अब्दुल लतीफ़



शेख़ अय्याज़


सर चार्ल्स नेपीअर


सेठ नाऊंमल


सर बारले फ़िरेरे



एशिया जी पहिरीं टपाल टिकिली
कीमत अधु आनो
जेका ईस्ट इंडिया कम्पनीअ जे
नाले सां सिंधु में
1852 ई. में जारी कई वेई



पहिरीं लाईन (खाबे खां साॼे) : आचार्य कृपालाणी, अल्लाह बख़्श, जी.एम. सैय्यद
ॿीं लाईन (खाबे खां साॼे) : आचार्य गिदवाणी, ॼेठी सिपाहीमलाणी, ॼेठमल परसराम
टीं लाईन (खाबे खां साॼे) : जयरामदास, प्रोफ़ेसर घनश्याम, एन. आर. मलकाणी
चोथीं लाईन (खाबे खां साॼे) : गजपाल पुरी, हेमूं कालाणी, भाई प्रताप



साधू नवलराइ



ऋषि ड॒याराम



साधू वासवाणी



पीर पाग॒ारो



बाबा हरनामदास, साध-बे॒ला



दादा लेखराज, ओम मंडली

1

सिंधू दिव्य दरिया आहे

शुरूअ शुरूअ में रुगो 'लफ़्ज़ु' हो। पहिरियों लिखियल लफ़्ज़ु 'वेदु' चयो वञे थो ऐं 'वेदु' हक़ ते हिंदुस्तानी सभ्यता जे हिंदोरे 'सिंधूअ' ते मोहित हो:

''सिंधू जडहिं पंहिंजे सघ सां वहे थी त सभिनी नदियुनि खे पोइते छडे वञे थी.... संदसि गजगोड़ धरतीअ खां सजी आसमान ताईं वञी पहुचे थी। हूअ पंहिंजी बेअंत कुवत, विजु जे वराके सां गडु लगाए थी... जीअं गायूं खीरु खणी पंहिंजे वछिड़नि डांहुं डोड़ंदियूं वेंदियूं आहिनि, तीअं बियूं नदियूं गजगोड़ कंदे वञी सिंधूअ सां मिलंदियूं आहिनि। जीअं सूरमो राजा बियनि सूरमनि जी अगुवानी कंदो आहे, तीअं सिंधू बियनि नदियुनि जी अगुवानी कंदी आहे। सिंधू भलनि घोड़नि में शाहूकार, सोन में सर्सु, पोशाक में शानदार ऐं माल ख़ज़ाननि में ख़ुशहाल आहे।''

सिंधू एतिरी त ज़िंदह ऐं दिव्य आहे, जो खेसि 'बेजान' कोठे नथो सघिजे ऐं तंहिंकरे सिंधू हिक 'जानदार' शख़्सियत आहे!

जडहिं ऋषि आकाश ऐं धरतीअ जो नालो जपींदा आहिनि त उहे सिंधूअ जो नालो पिण जपींदा आहिनि। वेदनि में गंगा जो ब भेरा ज़िकुरु थियल आहे, पर सिंधूअ जो टीह भेरा ज़िकुरु अचे थो।

इहा महान सिंधू नदीअ ई आहे, जंहिं 'सिंध' ऐं 'हिंद' खे पंहिंजो नालो डिनो। हिंदुस्तान जी तारीख़ ऐं जाग्राफ़ीअ में इहो सभ खां क़दीम नालो आहे। जडहिं शिव पंहिंजी ज़ाल सतीअ जो कपियल जिस्म धरतीअ जे मथां खणी लंघियो थे त संदसि हिंगल (सिंदूर) डिनल सींधि वारी सिसी, जंहिं हंध ते किरी पेई हुई, उहो अजु बि 'हिंगलाज' सडिजे थो, जेको कराचीअ जे भरिसां सिंध-बलूचिस्तान जे सरहद ते आहे। उन्हीअ पवित्र हंध ते- जिते राम, सीता ऐं लक्ष्मण पिण पंहिंजा पेर घुमाया हुआ। सिंध जो सूफ़ी संत कवी शाह अब्दुल लतीफ़ भिटाई जोगियुनि सां गडिजी वियो हो। जडहिं ओभर ऐं ओलह पाकिस्तान मुल्क हो त बंगलादेशी हिंदुनि लाइ ओलह पाकिस्तान डिसण जो हिकु वडो सबबु हिंगलाज हो।

सिंधु दशरथ जे हुकूमत जो हिस्सो हूंदी हुई। जड॒हिं कैकई शोक घर में वेही रही त दशरथ खेसि चयो हो, ''मुंहिंजे राज॒ तां सिज नथो लहे। सिंध, सोवीर, सौराष्ट्र, अंग, बंग, मगध, काशी, कौशल सभु मुंहिंजा आहिनि। मंझिनि अकीचार अमुल्ह शयूं पैदा थियनि थियूं, जेकी वणेई मूंखां घुरी वठु।''

पर कैकईअ खे पंहिंजे पुट भरत लाइ राज॒ गदीअ खां सवाइ बि॒यो की कीन घुरिबो हो। बाकी गा॒ल्हि तारीख़ी वीर गाथा आहे। जड॒हिं सीता खे रावण भजा॒ए वियो त राम बांदरनि खे संदनि गो॒ल्हा करण लाइ बि॒यनि हंधनि खां सवाइ सिंध में, उतां जे बहतरीनि तारुनि घोड़नि सां रवानो कयो। पोइ जड॒हिं राम पंहिंजो बनवास ख़ैर सां पूरो कयो त सिंधू-सूरवीर (सिंध ऐं मुलतान) भरत जे हवाले कयाईं, जंहिं पोइ पंहिंजो राजु॒ उत्तर खां गंधार (जेको महाभारत में धृतराष्ट्र जी ज़ाल गांधारीअ जे शहर जे तोर ते मशहूर आहे) ताईं वधायो। जंहिं खे हाणे कंधार कोठियो वञे थो। पिशावर (पशकलावती ऐं टैकसिला (तक्षशिला) जा शहर संदसि पुटनि बु॒धाया हुआ।

सिंधु 'महाभारत' जे धुंधलियल रोशनीअ मां उभिरे थी। खेसि 'पाप पूर्ण प्रदेश' (गुनाहगार परगु॒णो) कोठियो वञे थो। उन्हीअ जे पोयां हिक कहाणीअ आहे। सिंध जे राजा जयद्रथ, कौरवनि जे राजकुमार दुर्योधन जी भेण दुशाला सां शादी कई हुई। हू तंहिं करे कौरवनि जो तर्फ़दार ऐं पांडवनि जो दुश्मन हो। पर जयद्रथ लाइ इहो चयो वञे थो त हुन धृतराष्ट्र ऐं भीष्म वांगुरु पांडवनि ऐं कौरवनि जे विच में तबाही आणींदड़ चौपड़ रांदि जी मुख़ालिफ़त कई हुई।

जयद्रथ जी पांडवनि सां अण-बणति जूं पाड़ूं पुराणियूं हुयूं। द्रोपदीअ जे स्वयंवर में हू हिकु नाकाम उम्मीदवार हो। जड॒हिं पांडव पंहिंजो वक्त बनवास में गुज़ारे रहिया हुआ, तड॒हिं जयद्रथ द्रोपदीअ खे अकेलो डि॒सी, साणुसि गा॒ल्हाइण जो कोशिश कई हुई। द्रोपदीअ खांउसि मासूमियत ऐं सादगीअ सां सिंधू सौवीर जे रहवासियुनि जो हाल अहिवाल पुछियो हो। जड॒हिं द्रोपदीअ डि॒ठो त जयद्रथ जे नियत में खोट आहे त खेसि उतां हलियो वञण लाइ चयाईं। तंहिं ते जयद्रथ खेसि ज़ोरीअ खंयो। जड॒हिं अर्जन ऐं भीम खेसि द्रोपदीअ खे खणी वेंदे झलियो ऐं द्रोपदीअ खे खांउसि छडा॒यो त भीम सज़ा तौर पंजनि हंधनि तां संदनि वार कटे छडि॒या, जीअं हू मसख़िरो नज़र अचे। हू खेसि मारण वारो हो, पर पंहिंजे वडे॒ भाउ युधिष्ठर जे चवण ते त इएं करण

सां संदसि सौटि विधवा थी वेंदी ऐं संदसि चाचो धृतराष्ट्र ऐं चाची गांधारी दुखी थींदा, खेसि छडे डिनाईं।

महाभारत जी लड़ाईअ में जडहिं द्रोपदीअ जो पुट अभिमन्यु मारिजी वियो त जयद्रथ संदसि जिस्म खे पेर सां थुडो हंयो। तंहिं ते अर्जन कावड़ि में अची क़सम खाधो त हू सिंधूपति जयद्रथ खे सागिए डींहं ते सिज लहण खां अगु मारींदो। जयद्रथ लड़ाईअ जे मैदान मां भजण चाहियो पर डाढी देरि थी चुकी हुई ऐं हू ज़िलत भरियो मौत मुओ।

हिंदुस्तान में शिवाजी, प्रताप ऐं गुरू गोबिंदसिंह जे वक्त ताईं राजाई झंडे में कुझ कदुरु भगुवा या केसरी (गेड़ू) रंग जी लहर हूंदी हुई। इहा सागी गाल्हि महाभारत जे वक्त में पिण रवाज में आई। फ़र्कु रुगो झंडे ते निशानीअ जो हो। दिलचस्प गाल्हि इहा आहे त जयद्रथ जे झंडे ते निशानीअ तौर अछो सूअर हो, जंहिंजो शिकार करणु अजु बि राजपूत पसंद कंदा आहिनि।

जयद्रथ जे पसंदीअ जी बी शइ खीर ऐं कढ़ियल खीर हो, जंहिं खे सिंधीअ में खीरणी चइबो आहे। जयद्रथ खे मारण जो वचन करण जे ऐलान वक्त अर्जन चयो हो, ''जयद्रथ बेशक माइट आहे, पर हू अकेलो आहे, हू खीर ऐं खीरणीअ ते पलियो आहे, पर मां खेसि पंहिंजे तीरनि सां परण (टुकर टुकर) करे छडींदुसि।''

इन्हीअ मां नतीजो कढी सघिजे थो त 'महाभारत' में सिंधु खे गुनाहगार संदसि रहवासियुनि जे करे न पर संदसि राजा जे करे कोठियो वियो आहे। (सागिए सबब जे करे राजा करण पिण शिवालय जे मद्रा जो राजु सागियनि लफ़्ज़नि में ज़िक्र कयो आहे)। महाभारत जे भीषम-पर्व हिस्से में सिंधूअ खे अज़ीम मुहाफ़िज़ (बचाउ कंदड़) कोठियो वियो आहे, जंहिं खे डींहं रात याद करण घुरिजे। ज़ाहिर आहे त सघारी सिंधू नदी देश जे बचाअ जी सरहद हुई। महाभारत जो अनुशासन-पर्व हिस्सो मौत बइदि सुर्ग वञण लाइ सिंधू सनान जी सलाह डिए थो।

इहा डाढी दिलचस्प गाल्हि आहे त भगुवत गीता सिंधु सां वाबस्त हिक पुराणी नसीहत ते बधल आहे! हिक भेरे सिंधु जे राजा सोवीर जे नौजवान राजकुमार संजय खे शिकस्त डिनी। संजय दिलशिकस्तो थी पियो ऐं पंहिंजे राजु पाट खे विसारण चाहियो, पर संदसि सूरह माउ विदुला हिमथ बधाए खेसि विढ़ण लाइ रवानो कयो। हुन खेसि चयो त ''पंहिंजे ख़ानदान डांहुं डिसु,

अवाम डांहुं पंहिंजी ज़िम्मेदारीअ खे याद करि, धर्म खे ऊचो रखु ऐं शान मान सां ज़िंदह रहु या शान मान सां कुर्बान थी।'' जडहिं पांडव दिलशिकस्त थी पिया हुआ ऐं विढ़ण खां नाबुरी वारे वेठा हुआ त संदनि माउ कुंतीअ कृष्ण खे विदुला जी याद डियारी हुई ऐं उहा पंहिंजे पुटनि खे बुधाइण लाइ चयो हुआईं, जीअं उहे दिल बधी विढ़ण लाइ तैयार थियनि। नतीजनि गीता जहिड़ो अमर ग्रंथ वजूद में आयो। दुहशला पिण मोट में सिंध सां चङा पेर भरिया। जीअं त हिंदुस्तानी सभ्यता जो मकर्जु सिंधूअ खां गंगा डांहं वहंदड़ थी वियो हो, तंहिं करे ज़ाहिर आहे त सिंधु खे सरंदी पटीअ ते हैसियत सां वरी वरी धारियनि हमलनि जो मुकाबिलो करिणो ई पियो। दुहशला खे सिंध जे जतन ऐं मुब्द कबीलनि जे विच में न ख़तम थींदड़ मुकाबिलनि जो डुख हो। तंहिं करे हिन पंहिंजे भाउ दुर्योधन खे सिंधु जे समाजी सभ्यतिक ज़िंदगीअ में हम-आहंगी ऐं चुस्ती आणण लाइ ऐं कुझ ब्राह्मण मोकिलण लाइ चयो। दुर्योधन सिंध में टीह हज़ार ब्राह्मण मोकिलिया, उहे ब्राह्मण ई हुआ, जिनि पोइ सिकंदर जो मुकाबिलो करण लाइ पुठीअ जे कंडे (करंघे) जी हैसियत हासिल कई, पर इहो घणो पोइ थियो।

कालीदास रघुवंश में चवे थो त राम पंहिंजे मामे युद्धाजत जी सलाह ते सिंध जो राजु भरत जे हवाले कयो हो। राम जे तड़ डाडे राघव जे हिणकंदड़ घोड़नि सिंधूअ जे किनारनि ते विश्राम कयो हो।

संस्कृत जे हिक बिए कवि भास जो नाटक 'अविमार्क' राजकुमार अविमार्क ऐं सिंधू सोवीर जी राजकुमारी कुरंगीअ जे मुहब्बत जी दास्तान ते बधल आहे।

'भविष्य पुराण' में चयल आहे त उज्जैन जे महाराजा विक्रमादित्य जे पोटे शालिबहानन सिंधस्तान में पंहिंजो राजु काइम कयो ऐं सिंधूअ ते पंहिंजी सरहद मुकरर कयाईं।

यारहों जैन तीर्थंकर अंश नाथ सिंधी हो, जेको बंगाल में चालाणो करे वियो।

जैन दक्षण्य चहन (अठीं सदी) में सिंधियुनि जे बारे में चयल आहे त ''उहे शानदार आहिनि, संदनि चाल वणंदड़ नरम ऐं धीमी आहे, उहे रागु संगीत ऐं नाच जा कोडिया आहिनि ऐं पंहिंजे वतन सां मुहब्बत कंदड़ आहिनि।''

हिक डंद कथा मूजिबु चवनि था त महात्मा बुद्ध सिंधु में पंहिंजा पेर घुमाया हुआ। हिन सिंधु जी सख़्त आबहवा ऐं ख़ुश्क ऐं मिटीहाणी सरज़मीन डिसी 'भिक्षुअनि' खे पेरनि में जुत्ती पाइण जी इजाज़त डिनी हुई, जिनि लाइ बियनि हंधनि ते जुत्ती पाइण ते पाबंदी हुई। हिन नरम कपड़ा इस्तैमाल करण जी बि इजाज़त डिनी हुई, जेके बियनि हंधनि ते पाइण ते पाबंदी हुई। रोरक या रोरका (मौजूदा रोहिड़ीअ जे भरिसां अरोड़ या अलवर) जो राजकुमार स्थोरतस हिन सर-ज़मीन ते ई संदसि पोइलगु बणियो।

जडहिं महात्मा बुद्ध पंहिंजे वतन कपिल वस्तूअ जे चौधारी रथ में चकर डिनो हो त चयो वञे थो त कंवल जे रंग जहिड़ा चार शानदार घोड़ा सिंधू देश मां आया हुआ। हेल ताईं तारीख़ी बुद्ध स्तूप सिंधु में ई मिलिया आहिनि। इन गाल्हि में बि वधाउ न आहे त जडहिं ज़ुल्फ़कार अली भुट्टो पाकिस्तान जो सदर थियो हो त पंहिंजी आफ़ीस में बुद्ध जी मूर्ति सजाए रखी हुआईं।

'दिव्य वदन' (तिब्बती ज़बान) में लिखियल आहे त बुद्ध राज ग्रह में आहे। उन वक्त जम्पू द्वीप (उत्तर हिंदुस्तान) में ब शहर आबाद हुआ। पाटलीपुत्र ऐं रोरका। जडहिं रोरका औज ते रसे थो त पाटलीपुत्र जो ज़वाल थिए थो। जडहिं पाटलीपुत्र औज ते रसे थो त रोरका जो ज़वाल थिए थो। इहो रोरका सिंधु जो शहर आहे जो मगध जे शहनशाहत जे गादीअ जे हंध पाटलीपुत्र जो मुकाबिलो करे थो। जडहिं बिम्बसार मगध जो राजा हो त हिन सोवीर जे राजा 'दरियान' डांहुं बुद्ध जी उहा तस्वीर मोकिली हुई, जेका नायाब हुई। उन वक्त सिंधु जा ब ताकतवर वज़ीर हीरो ऐं भेरू हुआ, जिनि जा नाला अञा ताईं सिंध में आम आहिनि।

चंद्रगुप्त मौर्य पहिरीं सिंधु ऐं पंजाब खे फ़तह कयो। उन्हीअ हंध तां हिन नंद खे भजाए कढियो। पाटलीपुत्र ते कब्ज़ो कयो ऐं मौर्य राज जो पायो विधो।

कश्मीर जी कदीम शाही तारीख़ 'राज तरंगिणी' में सिंधु ऐं सिंधियुनि बाबत घणेई हवाला डिनल आहिनि। कव्य जो पुट सिंधू कश्मीर जे हाथियुनि जी फ़ौज जे अगुवानीअ ताईं रसियो। हू राणी दीदा जो सलाहकार हो। कश्मीर में 'सिंधू गज' (सिंध जे हाथीअ) जो हिकु वडो सन्मान हो। इन मां ज़ाहिर आहे त सिंध सभिनी गाल्हियुनि जो सचु पचु मर्कज़ु हुई।

2

सिंधू माता

वेदनि ऐं पुराणनि में सिंधु खे देवताउनि ऐं राजाउनि जे नालनि सां सड़ियो वियो आहे। पर कदीम सिंधु जी धरती, उतां जे कल्चर ऐं माण्हुनि बाबत छा चयल आहे? ब़ाहिरीं दुनिया कदीम हिंदुस्तान खे कदीम सिंधु ऐं उन सां लग़ंदड़ सामूंडी किनारनि मार्फ़त सुञाणंदी हुई ऐं उन्हनि जा हितां जे कौम बाबत अजीब वीचार हुआ।

महान यूनानी इतिहासकार हेरो डोट्स (Hero Dotus) लिखियो आहे- हिंदुस्तानी सभु कबीला जिनि जी मूं निशानदेही कई आहे, जानवरनि वांगुरु खुलिए आम संजोग़ कनि था। संदनि चमड़ीअ जो रंग साग़ियो घणो करे एथोपिया वारनि जहिड़ो आहे। संदनि वीरज (Seman) ब़ियनि माण्हुनि जहिड़ो अछो न पर संदनि चमड़ीअ जहिड़ो कारो आहे। इहा साग़ी ख़सूसियत एथोपिया जे रहाकुनि जी पिण आहे। संदनि मुल्क ईरान खां घणो परे ड॒खण में आहे ऐं उतां जा रहाकू कड॒हिं बि दारा जे अधीन न रहिया आहिनि। स्टार्बो (Starbo) लिखियो आहे- ''हिंदुस्तानियुनि खे कड॒हिं बि कंहिं धारिएं हमलावर शिकस्त ड॒ेई फ़तह न कयो हो।''

वड॒नि कदीम इतिहासकारनि जी इहा तसदीक ब॒ुधी सुठो लग़ो त हिंदुस्तानियुनि खे उन वक्त ताईं कंहिं धारिएं हमलावर फ़तह न कयो हो। जेतिरे कदुरु खुलिए आम संजोग़ जो तालुक आहे त ज़ाहिर आहे त हेरो डोट्स तारीख़ खां अग़ु वारे उन दौर जो हवालो ड॒िए थो, जड॒हिं माण्हू अञा घर अड॒े उन्हनि में रहणु न सिखिया आहिनि। असांखे शेक्सपीअर छो थो ब॒ुधाए त एलीज़बेथी दौर में अंग्रेज़ आबादीअ जी अक्सरियत 'कणिक जे ब॒नियुनि' में मुहब्बतुनि जा पेच पाइण पसंद कंदी हुई।

पर कारे वीरज तां याद आयो त जड॒हिं गुज़िरियल सदीअ में चीनियुनि ब॒ुधो त अंग्रेज़ चवनि था त दिल छातीअ जे खाब॒े पासे आहे त खेनि पक हुई त संदनि पंहिंजूं दिलियूं साज॒े पासे हूंदियूं, जो उहे अंग्रेज़नि खां बिलकुल निराला हुआ।

यूनानी वड्डा फ़नकार ज़रूर हुआ पर वैज्ञानिक सोचु संदनि लोक भाव खां ओपरो हो। हिकु दफ़ो यूनानी दार्शनिक ज़ालुनि जे ड्डंदनि जी ग्गणप ते बहस करण लाइ गड्डु थिया। जीअं त मर्दनि खे ब्बटीह ड्डंद हुआ ऐं ज़ाल मर्द खां घटि दर्जे जी आहे, इनकरे फ़ैसिलो कयाऊं त मर्दनि जी भेट में खेनि ड्डंद बि घटि हुआ याने अठावीह। उन्हनि मां कंहिं बि इहा रिथ पेश न कई त कंहिं ज़ाल जो वात खोलाए ड्डंद ग्गणिया वञनि।

बहरहाल बुज़ुर्ग हेरो डोट्स खे इहा ख़बर न हुई त संदसि पंहिंजी अज़ीम यूनानी तहज़ीब सिंध जे लाड़ वारे हिस्से जे माण्हुनि ऐं ओभर भोनोच जे सामूंडियुनि जी पाण में शादीअ जो नतीजो हुई। अज़ीम यूनानी शाइर होमर (Homer) लीमनास (Lemnos) ब्बेट ते संतियुनि (Sintians) जी निशानदेही कई आहे, जेके अजीब ब्बोली ग्गाल्हाईंदा हुआ। (Illiad : 594)

पोकोक (Pococke) जंहिं खे 'यूनान ते हिंदुस्तान' जो असर मौज़ूअ ते सनद समुझियो वेंदो आहे, लिखे थो, ''सिंधूअ जे छोड़ वटि फुड़त, चतुर ऐं जांबाज़ ख़लासी जेके उन्हीअ लड्ड पलाण खां वठी लाग्गीतो ज़मानिनि खां पंजाब जंगजोर रहाकुनि सां गड्डु रहंदा पिए आया, पंहिंजी धरतीअ तां धिकिजी परे यूनानियुनि जे देस में वसण लाइ आया। दरिया जे किनारे खां वठी कोरी (Coree) ताईं पखिड़ियल सामूंडी किनारे ते वसियल वापारी उन्हीअ लड्डपलाण में लग्गल आहे। उन्हीअ लड्ड पलाण जा असर तहज़ीब ते पिया आहिनि ऐं जंहिंजे फ़न जे वड्डियुनि तहरीकुनि ज़हन में साराह ऐं डप जा गड्डियल जज़्बा भरे छड्डिया आहिनि। मकरान जे सामूंडी किनारनि ते रहंदड़ उन्हनि माण्हुनि ईरानी तार जे छोड़ मां लंघे अमान, हैड्रामिंट ऐं यमन जे बंदरगाहनि ते लंगर हणी ग्गाड़हे समुंड मां जहाज़ हाकारे ऐं पोइ अरड्डे नहर मां अग्गभरो थी, जेका अजूबनि जे सर-ज़मीन खे आबाद करे थी- मिस्र, नोबिया ऐं हबश जूं बादशाहतूं ड्डिनियूं। उहे माण्हू उन्हीअ साग्गिए नसुल मां आहिनि, जिनि उन्हीअ बैठकियत खे लाग्गीतो सदियूं पोइ हीला ऐं उन जे ब्बेटनि में तहज़ीब फहिलाई। तंहिंकरे उहो तालुक जेको यूनानी इतिहासकार एतिरे कदुरु लाग्गीतो पेशि कनि था त मिस्र में एथेंस तोड़े बेनोटिया ऐं यूनान जे ब्बियनि हिस्सनि में काइम आहे, पूर्ण रीत सुभावीक (कुदरती) आहे। हकीकत में असांखे अहिड़नि माण्हुनि मां

इहाई उम्मेद रखणु घुरिजे, जिनि पंहिंजे अबाणे वतन जी पवित्र अग्नी एं धर्म गुरुनि जी आजियां करे संदनि एडी वडी इज़्ज़त एं अहतराम कयो।

अहिड़ीअ तरह सिंधू एं हेला जे जाबलू चोटियुनि जो रहाकू जड़हिं हेला में वसियो, एथेंस में उन्हनि जो सुधिरियल वंश थियो, जेको जेतोणीक यूनानी सडिजण में आयो, पर पंहिंजे ज़ोक मज़हब एं साहित में पंहिंजे अबनि डाडनि वांगुरु सिंधी हो।

जीअं ई पढ़ंदड़ मूं सां गडिजी कोर्नथस (Cornthus) जे वापारी एं ख़ुशहाल कौम जे गोल्हे लधल अफ्रीका जे कालोनियुनि जे जाग्राफ़ियाई तरकीअ मां हलंदो त खेसि उन्हीअ टि-पासाएं तालुक लाइ जेको मिस्र यूनान एं सिंधूअ जे सर-ज़मीन खे पाण में गुंढे थो, शक जी का गुंजाइश न रहंदी। इहो पुराणो तकरार आहे त सिंधूअ जो क्लासीकी नालो अबासीन (Abusin) यूनान में कोई इंडस (Coi-Indus) (Cornthus) सडिजण में आयो, जंहिंजी माना आहे कोरी इंडस (Cori Indus) जा रहाकू।

तारीख़ में उन्हनि माण्हुनि खे फोइनीशंस (Phoenicians) तौर सुञातो वञे थो। इतिहासकार हमेशह अजब खाईंदा हुआ त मग़रबी तहज़ीब जा उहे अबा किथां आया? पर हाणे इहो तय थी वियो आहे त Vadic Pan's (जेके हिंदुस्तान में वाणिक, वाणिया एं बनिया कोठिजनि था) ओलह में Paniks याने Panic नसल या नोइनीशंस चवाइण में आया।

जेतोणीक गाड़हे समुंड खे भोनोच समुंड सां गुंढींदड़ मौजूदा सुईनर नहर जो तड़हिं वजूद न हो, पर उन ज़माने में हिकु वाहु हूंदो हो, जेको नील नदीअ जे इंतहाई ओभर तरफ़ हिक मिठे पाणीअ जी नहर खे गाड़हे समुंड सां मिलाईंदो हो। उहे कदीम रहाकू उन्हीअ नहर वसीले गाड़हे समुंड खां नील नदीअ मां थींदा, भोनोच समुंड ताईं वेंदा हुआ। असांजा उहे फोईशंस एतिरो अगिते निकिरी विया जो फोईनेश्या नाले मुल्कु काइम कयाऊं, जिते अजु कल्ह लिबनान जा बंदरगाह आहिनि।

चयो वञे थो त Panis लोकनि राजा खे मारे विधो हो, तंहिंकरे खेनि परडेह में आबाद थियण लाइ सिंध छडिणी पेई हुई, पर उहे पवित्र अग्नी एं

बह्मण पाण सां गडु वठी विया हुआ। ऐंसाईकिलोपीडिया ब्रिटेनका मूजिबु "फ़ोईनेशंस जो चवणु आहे त संदनि पुराणा शहर ख़ुदि देवताउनि काइम कया हुआ ऐं संदनि नसुल टेटीह हज़ार वर्हिय पुराणो हो।" हिते कदीम हिंदुस्तान जे हिक युग खां बिए युग जे तहज़ीब जा पड़ाड़ा चिटा आहिनि ऐं सिंध जूं कदीम वापारी रवायतूं पिण मिलनि थियूं।

हीअ महान् नंढिड़ी सिंध कंहिं जहिड़ी हुई?

सभिनी कदीम तहज़ीबुनि जो जनमु दरियाउनि जे वादियुनि में थियो हो। उन वक्त कदीम माण्हूअ लाइ जबल ऐं समुंड वडीअ डुखियाईअ जो सबब हुआ। ज़ाहिर आहे त सिंधू तहज़ीब घणो करे एतिरी पुराणी आहे, जेतिरी ख़ुदि सिंधू जेका भूंइ विद्या सां तालुक रखे थी, न कि तवारीख़ सां।

शुरूआती माण्हूअ खे पंहिंजे जियापे लाइ न रुगो दरियाह जो पाणी घुरबल हो पर खेसि बियनि अनासरनि खां बचाव जी पिण ज़रूरत हुई। तंहिंकरे इहो विश्वास कयो वञे थो त सिंध जे एराज़ीअ में पहिरियाईं इंसानी रिहाइश खीरथर जबलनि जे ओलह में दरियाह जे भरिसां शुरू थी। हिन क्षेत्र में जाबलू गुफ़ाऊं दरियाह जे भरिसां बचाव मयसर कनि थियूं। तंहिंकरे इहो को इत्फ़ाक न आहे त सिंधु जे तहज़ीब जो ताज, मुअनि जो दड़ो, सिंधू दरियाह ऐं खीरथर जबलनि जे विच में आहे। कदीम लकी तीर्थ पिण सागी जाबलू एराज़ीअ में मिले थो।

जाग्राफ़ियाई तारीख़ी ऐं सांस्कृतिक तौर ते सिंधु हमेशह हिंदुस्तान जो हिस्सो रही आहे। वसीअ जाबलू बलूचिस्तान जो बायाबान सिंधु खे असिराइते नमूने ईरान खां जुदा करे थो, पर कछ ऐं राजस्थान जा नंढा बयाबान पिण तारीख़ी तौर ते सिंध जे कुझु हिस्से खे ओभर खां जुदा कनि था। उन्हीअ बीहक सिंधु खे पंहिंजी हिक जुदा सुञाणप ऐं शख़्सियत डिनी आहे। अहिड़ीअ तरह कदीम सिंधु अलगि थलगि मुल्कु हो, जंहिं में न रुगो बलूचिस्तान ऐं कछ शामिल हुआ, पर मुलतान बि शामिल हो। 1947 ई. में मुल्क जे विरहाङे ताईं जडहिं सिंधी बम्बईअ में पहुता त मरहटनि सिंधियुनि खे मुलतानियुनि जे रूप में ज़ातो थे।

पोइ सिंधु ओभर वारो वहुकिरो अख़्त्यार कयो ऐं उभिरंदे वहिकुरे कछ में वञी थे छोड़ कयो, जेको अॻे ई समुंड हेठि हो। इहा बिलकुल अजीब ॻाल्हि नाहे त हड़प्पा (जंहिं खे वेदनि में हरि योपिया चयो वियो आहे), जेको सिंधु जे उत्तर (पंजाब) में आहे ऐं लोथल जेको सिंधु जे ॾखण (गुजरात) में आहे, मुअनि जे दड़े वारी साॻी तहज़ीब जा मालिक हुआ। ॿियनि सभिनी रिकार्डनि जी भेट में मुअनि जे दड़े जा खंडहर कदीम सिंधु जे शानदार माज़ीअ जी वॾी कसौटी आहिनि।

अॼु जॾहिं पाकिस्तान में सिंधी देश भॻत पंहिंजे परॻिणे खे ‘सिंधू माता’ सॾीनि था त उहे महज़ कदीम हकीकत खे वरजाईनि था। सिंधु न रुॻो सिंधियुनि जी माउ आहे, पर कदीम यूनान ऐं कदीम मिसिर जी पिण माउ आहे।

3

अमर 'मुअनि जो दड़ो'

1918 ई. खां 1922 ई. ताईं हिंदुस्तान जे पुरातत्व विभाग॒ (Archacological Department) जे राखल दास बैनर्जी सिंधु ऐं पंजाब जे ब॒हिराड़ियुनि में सिकंदर जे गुज़रगाह जे कंहिं आसार मिलण जी उम्मेद में पिए धूड़ छाणी। पर अहिड़ो को आसार कोन मिलियुसि, जेतोणीक यूनानी फ़ातह आम माप खां वड॒ा पंहिंजा हथियार हिंदुस्तान जे सर-ज़मीन में दफ़न कया हुआ त जीअं ईंदड़ नसलुनि खे ख़बर पवे त यूनानी सिपाही केड॒ा कदावर सूरमा हुआ। पर राखल खे नंढा वड॒ा घणेई पुराणा दड़ा मिलिया, जेके ब॒ुद्ध जे दौर सां वाबस्ता हुआ। उन्हनि मां सभिनी खां वड॒ो ब॒ुद्ध द्वार जे स्तूप वारो दड़ो हो, जेको हाणे लाड़काणे जे भरिसां 'मुअनि जे दड़े' जे नाले सां ज॒ातो वञे थो।

हिन दड़े जो 'मोहन' याने 'श्री कृष्ण भग॒वान' सां को वास्तो नाहे। सिंधी ज़बान में हीउ दड़ो 'मुअनि जो दड़ो' सडि॒जे थो, जंहिंजी माना आहे मरी वियलनि या मुअलनि जो दड़ो। रवायत आहे त हिन दड़े में केतिरा माण्हू दफ़न थियल हुआ, जड॒हिं कि जुज़वी खोटाईअ मां पतो पियो त उते को बि लाश न हो। हथाईं हिकु मुकम्मल अज़ीम शहरु पधिरो थी पियो। हकीकत में इहो हिकु शहर न पर घटि में घटि सत शहर आहिनि, जेके हिक ब॒िए मथां अडि॒यल आहिनि। स्तूप ते बीही ओभर ड॒ाहुं डि॒सिबो त परे खां सिंधू हिक चांदीअ जहिड़ी रिबन वांगुरु नज़र ईंदी। सिंधू पाण सां हर साल लट जा अंबार खणी ईंदी आहे ऐं हर सदीअ दौरान आसपास जे ज़मीन जी ऊचाईअ में सतनि इंचनि जो वाधारो थींदो आहे। मुअनि जे दड़े जा सत शहर पंहिंजे सतर फुटनि जी ऊचाईअ सां लग॒भग॒ ब॒ारहनि हज़ार वर्हिनि जी तारीख़ पेशि कनि था।

समूरो शहर पकियुनि सिरुनि जो जोड़ियल आहे। इहो ड॒ेखारे थो त उतां जी तहज़ीब न रुग॒ो ऑला तरकी याफ़्ता हुई, पर साबित करे थी त उन ज़माने में वड॒ा ब॒ेला मौजूद हुआ, जिनि मां वड॒े अंदाज़ में ब॒ारण जो काठ हासिल थींदो हो। इन मां इहो बि ज़ाहिर आहे त उन वक्त सिंध में घणो मींहुं पवंदो हो। हकीकत में आग॒ाटियुनि मुहिरुनि ते उकिरियल चीतनि, गेंडनि ऐं हाथियुनि जे शिकिलियुनि मां झंगली ज़िंदगीअ जे शाहूकारीअ जो ड॒सु मिले थो।

ब॒ाहिरियनि मुल्कनि जे आसार-कदीम जे आग॒ार्टनि हंधनि में घणो ज़ोरु देवताउनि ऐं बादशाहनि ते हूंदो आहे। उते वड॒ा मंदर ऐं शानदार महिलात हूंदा आहिनि। पर हीउ शहर ज़ाहिर ज़हूर हिकु लोक राज॒ु ऐं बेशक बराबरीअ वारो लोक-राज॒ु हो।

जीअं त उन में को बि महिलात न आहे, तंहिंकरे समूरा घर पक्का (चङीअ तरह अड॒ियल) ऐं समूरियुनि सहूलियतुनि सां भरपूर आहिनि। घिटियूं वेकिरियूं ऐं सिधियूं आहिनि, घर खुलियल ऐं हवादार आहिनि। हर घर खे पंहिंजी खुही ऐं हौज़ आहे। जेको फ़ालतू पाणीअ खे मर्कज़ी नालियुनि जे सिरश्ते में मोकिले थो। सभ खां अजीब ग॒ाल्हि इहा आहे जो सभु नालियूं ढकियल आहिनि। जीअं त उन्हीअ ख़ित्ते में सीमेंट वांगुरु चूने जो इस्तैमाल न थींदो आहे, तंहिंकरे सिरूं अहिड़ीअ तरह जोड़ियल ऐं हिक ब॒िए सां ठहिकाए बीहारियल आहिनि जो उन्हनि खे ग॒ंढण लाइ सीमेंट जी ज़रूरत ई न हुई।

इन्हीअ ग॒ाल्हि अज॒ु जे शहरी रिथा जोड़ींदड़नि खे हैरत में विझी छड॒ियो आहे। बर्तानवी रिहाइशी घरनि जे हिक माहिर बी. एस. टाऊनरो (B. S. Townro) ब॒ी महाभारी लड़ाईअ जे ख़तम थियण ते चयो हो त सिंधू माथिर में दफ़न थियल शहर घटि में घटि पंज हज़ार वर्हिय पुराणा आहिनि। उन्हनि जी जड॒हिं खोटाई कई वेई त ड॒िठो वियो त उन्हनि जी बाकाइदे रिथाबंदी थियल हुई ऐं पाणीअ जे नेकाल जो बंदोबस्त थियल हो। हर कंहिं वड॒े घर में सनान करण जी जाइ हुई। आग॒ाटा वेदनि जा पुस्तक इमारत साज़ीअ जे तरकीअ जी आम ज॒ाण ऐं शहरी इंतज़ाम हलाइण जे हुनर में हिंदुस्तान जे अवाइली माण्हुनि जे इल्म ऐं होशियारीअ जो ठोस सबूत पेशि कनि था। जड॒हिं असां सिंधू घाटीअ जे पंज हज़ार साल पुराणी शहरी तहज़ीब ते वीचार करियूं था त अज॒ु जे मसइलनि खे मुंहुं ड॒ियण लाइ असां में निहठाई अचियो वञे। यूरोप ऐं उत्तर अफ्रीका ऐं पोइ वारनि सालनि दौरान ड॒ूर ओभर में बमबाज़ीअ में तबाह थियल असांजे शहरनि जे नएं सिर तरकीअ जे मसइलनि खे मुंहुं ड॒ियण लाइ असां हिंदुस्तान खां सबुरु ऐं ड॒ाहप ब॒ई सिखी सघूं था। फ़कति जेके ब॒ चित्र लधा आहिनि, उन्हनि मां हिकु नर्तकीअ जो आहे ऐं ब॒ियो नारंगी कपड़ा ओढियल हिक माण्हूअ जो बुत आहे। हिते अंतर्राष्ट्रीय वापार जो हिकु शाही ऐं भरियो भाग॒ियो बंदरगाह हो, पर उहो एतिरो त महफ़ूज़ ऐं अमन वारो

हो, हिति को बि हथियार न लधो आहे। हिक थुल्ही दीवार, जा पहिरीं कंहिं किले जो खंडहर थे समुझी वेई, उहा पोइ पब्लिक स्टोर जो हिकु हिस्सो निकती। पुरातत्व वेता सर मूर्तमीर वेहलर चवे थो, "इहो हिक रिहाइशी बैंक ऐं ख़ज़ाने जो कम कंदड़ मर्कज़ हो।"

मशहूर फ़िलासाफ़र आलडस हकसले (Aldous Huxlay) मुअनि जे दड़े जी ख़सूसियत खां एडो मुतासिर थियो हो जो लिखियो अथसि, "सिंधू घाटीअ जी तहज़ीब एडी शाहूकार ऐं तरकी याफ़्ता हुई, जेडी संबर ऐं मिस्र जी। पर सिंधू घाटीअ जी सभ्यता लड़ाईअ खां अण-वाकुफ़ु हुई। उन्हनि दफ़न थियल शहरनि मां न को हथियार मिलियो आहे ऐं न चौधारी दीवार हुजण जो डस मिले थो। इहा हकीकत सभ खां वडी ऐं अहम आहे।" इन्हीअ मां साबित थिए थो त उतां जा रहवासी गुतियल शहरी तहज़ीब जूं सहूलियतूं माणींदा हुआ, जिनि लाइ खेनि वक्त बि वक्त कत्ल आम सूरत में कीमत अदा करिणी बि पवंदी हुई।

उहो शहर बे हथियार इन्हीअ करे न हो, जो वटिसि हिफ़ाज़त लाइ की कीन हो, पर इहो इन्हीअ करे हो, जो इहो हिकु अंतर्राष्ट्रीय (आल्मी) तिजारती ऐं शाहूकार शहर हो। हकीकत में सर जान मार्शल जेको उन वक्त पुरातत्व विभागु जो डइरेक्टर जनरल हो, निशान देही कई आहे त पुराणा ज़ेवर एडा त सुठा घड़ियल ऐं पालिश थियल आहिनि, जो लगे थो त पंज हज़ार वरिहय आगाटे घर बदिरां बांड स्ट्रीट (लंदन) जे सर्राफ़ वटां आया आहिनि।

हिन शहर खे हथियारनि जी इन्हीअ करे बि ज़रूरत न हुई, जो उहो कानून, इंतज़ाम ऐं इंसाफ़ वसीले महफ़ूज़ हो। हीउ उहो शहर हो, जंहिंखे हथियारनि जी ज़रूरत न हुई, पर पंहिंजे प्यारनि बारनि लाइ घणेई रांदीका ठाहिया हुआऊं, जेके खोटाईअ वक्त सीटियूं वजाए ऐं टपा डेई रहिया हुआ।

शुरूअ में किनि ओलह वारनि इहो साबित करण जी कोशिश कई त हीउ सिंधी शहर आर्यनि तबाह कयो हो पर इहा शाहिदी इहो डेखारण लाइ जल्दु तबदील कई वेई त हिंदुस्तान जे बियनि आगाटनि शहरनि वांगुरु हीउ शहर खुदि आर्यनि जो शहर हो। हिते शिव पशुपतीनाथ ऐं काली आहिनि। लिंग ऐं पिपर जी पूजा आहे ऐं मंदर जे चोटीअ वारे स्तूप जे साम्हूं यात्रियुनि जे सनान जी रस्म पूरी करण लाइ वडो तलाव आहे।

फ़तह ऐं तबाहीअ जे नज़रिए खे पोइ इंसानी तवारीख़ जे माहिरनि (Anthropologists) रद्द कयो। जडहिं उन्हनि इहो डिठो त अजु जे सिंधियुनि वांगुरु मुअनि जे दड़े जे रहिवासियुनि जूं सागियूं डिघे मथे वारियूं खोपड़ियूं आहिनि। ज़ाहिर आहे त सिंधु जी मकामी ख़सूसियत खे तब्दील करण लाइ फ़ातहनि जो तादाद तमाम थोरो हो।

रुगो प्रइमिड ऐं चीन जी अज़ीम दीवार खां पोइ इंसान द्वारा ठहियल दुनिया जो सभ खां वडो अजूबो मुअनि जो दड़ो ई आहे। हकीकत में इहो एतिरो जीअरो जागंदो आहे, जो खेसि मुअनि जो दड़ो सडण न जुगाए।

जेसताईं असां उतां जी लिपि पढ़ूं ऐं उन्हीअ शहर जो असुल नालो गोल्हे लहूं, तेसताईं उन्हीअ जो सही नालो अमर सिंधु दड़ो हुअण घुरिजे। उहो सिंधु में सभ खां पवित्र हंधु आहे। उहा ई समूरे इंसान ज़ात जी तीर्थ यात्रा या पूजा जी जाइ आहे।

4

सिकंदर जो वाटरलू - सिंधु

वेदनि ऐं वीर रस काव्यनि खां पिण वधीक सिंधु जी शिकिल सिकंदर (Alexander) जे तारीख़ी हंधनि में तमाम चिटी नज़र अचे थी।

बर्तानवी इतिहासकार सिकंदर खे दुनिया जो फ़ातह था कोठीनि। "जेको जंहिं बि हंधि पहुतो, ड॒िठाईं ऐं फ़तह कयाईं।" हिंदुस्तान जे दर्सी किताबनि में खेसि अ॒जु ताईं इहो मशहूर कयो वियो आहे त हू हिंदुस्तान जे राजा पोरस (पोरव) खे लड़ाईअ में हाराए सोभारो थियो हो। पर सिकंदर जे पंहिंजे यूनानी इतिहासकारनि जा दस्तावेज़ ब॒ी ग॒ाल्हि था ब॒ुधाइनि। ब॒ी महाभारी लड़ाईअ जे मशहूर रूसी फ़ौजी कमांडर मार्शल ज़्हूकोफ़ (Marshall Zhukof) इंडियनि मिलेट्री अकेडमी देहरादून में कुझ वरिह्य अ॒गु चयो हो त हिंदुस्तान सिकंदर खे शिकस्त ड॒िनी हुई।

पंजाब में पोरस सिकंदर सां काफ़ी ख़राब हलत कई। हकीकत में पोरस खेसि तड॒हिं ई मात ड॒िनी हुई, जड॒हिं चयो हुआईं त "असां हिक ब॒िए सां कहिड़े कारण जंग जोटियूं, जड॒हिं तुंहिंजे हिते अचण जो मकसदु असांजे पाणी ऐं खाधे खसण जो न आहे। छा ही उहे शयूं आहिनि, जिनि ते ड॒ाहा माण्हू ज़रूरी तोर विढ़ंदा आहिनि? जेतिरे कदुरु ब॒ियनि दौलतुनि ऐं मिल्कियतुनि जो तालुक आहे, जेके दुनिया जे नज॒रुनि में अहमियत वारियूं आहिनि, जेकड॒हिं मां उन्हनि सां तोखां वधीक नवाज़ियल आहियां त मां उन्हनि में तो सां हिस्सेदारी करण लाइ तैयार आहियां। पर जेकड॒हिं कुदरत मूं खां वधीक तो ते महरबान आहे त मूंखे तो मथां अहिसान करण में को एतिराज़ कोन्हे।"

पोरस जे इन्हीअ सुवाल जो जवाब सिकंदर वटि न हो। हथाईं धमकाईंदे अभिमान विचां चयाईं, "मां विढ़ंदुसि ऐं तो सां जंग कंदुसि, पोइ भले खणी तूं केतिरो बि मरवत वारो छोन हुजीं। मूं मां तूं चङाईअ जी उमीद न रखु।" पर पोरस खे सिकंदर मां चङाई हासिल थी। जंग नतीजे फ़ैज़ साबित थी। यूनानी हिंदुस्तानियुनि जे सूरह्याईअ खां एतिरो डिज॒ी विया जो सिकंदर जे कावड़ि भरियल ख़्वाहिश ऐं अरमान भरियल दांहं जे बावजूद उन्हनि अगि॒ते

वधण खां इंकार करे छडि॒यो। अज़ीम यूनानी इतिहासकार प्लूटार्च (Plutarch) लिखे थो त ''पोरस सां उन्हीअ आख़िरीन मुकाबिले में मकदूनियुनि जे हिमथ जो पलउ खांउनि छडा॒इजी वियो ऐं खेनि अगि॒ते वधण खां रोके छडि॒यो। सिंकदर न रुगो॒ पोरस खे पंहिंजे फ़तह कयल बादशाहीअ जी पंहिंजे पारां हुकूमत संभालण जी आछ कई पर मुख़्तलिफ़ ख़ुदि मुख़्तयार कबीलनि जी वाधू ज़मीन बि हवाले कई, जिनि खे हुन आण मञाई हुई।'' लड़ाईअ खां पोइ पोरस सिकंदर खां बी॒णो ताकतवर थी उभिरियो ऐं संदसि सोन जे ख़ज़ाने में इज़ाफ़ो थियो। इहा हुई पोरस जी सिकंदर ते 'सोभ।' पर सिंध में मथिसि जेका मुसीबत नाज़िल थियणी हुई, उहा उन खां वधीक ख़राब हुई।

सिकंदर ईरान, अफ़ग़ानस्थान, उत्तर ओलह हिंदुस्तान सां लड़ायुनि में एतिरा दुश्मन पैदा कया हुआ, जो पंहिंजे वतन डां॒हं सागि॒ए रस्ते तां वरण जी हिमथ ई कान कयाईं। इनकरे हुन सिंध जे रस्ते सफ़र करण जो फ़ैसिलो कयो, पर मुलतान में माला लोकनि हुन लाइ मुसीबत पैदा करे छडी॒।

जडि॒हिं सिकंदर जे लश्कर नएं जंगी नारे ''अला ला ला लालाई!'' सां सिंध फ़तह कई त सिंधी ज़ाहिरी तरह डिजी॒ विया। म्यूज़ीकिंस (Musicanus) सिंदीमन (Sindemana) ऐं पटाला (Patala) जिनि खे गज़ेटियर आफ़ सिंध (Gazeteeir of Sind 1968) जे मुसंफ़ डाक्टर एच. टी. सोरले, आई.सी.एस. अलूर, सेवहण ऐं हैदराबाद कोठे थो, तिनि जा हाकिम भजी॒ विया।

बटाला यूनानी बो॒लीअ जे पतन (Patan) लफ़ज़ जी बिगड़ियल सूरत आहे, जंहिं जी माना आहे दरियाह जो कपु या समुंड जो किनारो। पर थोरे वक्त गुज़रण खां पोइ उन्हनि पंहिंजे हवासनि ते काबू पातो ऐं सिकंदर खे डा॒ढी सेखत डि॒नी। सिंधु जो अगू॒णो कमिशनर ऐं Sindh Before Muslim Conquest जो मुंसिफ़ एच. टी. लेम्बिर्क (H. T. Lambrik) निशान देही करे थो त ''सिंधु में हिक गु॒झी कुवत हुई, जंहिं धारियनि सां मुकाबिलो करण जो हौसलो पैदा कयो। इहो असल में ब्राह्मण जो असरु हो।'' सिंधु में दुशहला जा आबाद कयल टीह हज़ार ब्राह्मण बेकार न थिया।

सिकंदर वतन डां॒हं मोटंदे पंहिंजे दोस्तनि सां इहा गा॒ल्हि कई त ''हुननि हरहंधि मूं ते हमलो कयो, हुननि मुंहिंजो कुल्हो ज़ख़्मी कयो, टंग ते धिको

ड॒िनो, छातीअ में तीरु हंयो ऐं कंध ते ज़ोरदार धकु हंयो।'' हिक डीं॒हुं यूनानी लश्करगाह में इहा गा॒ल्हि पखिड़िजी वेई त सिकंदर मरी वियो। खेसि टेक डे॒ई इएं विहारियो हुआऊं, ज॒णु जीअरो हुजे।

ब्रह्मणनि सिंधी राजा सेबास खे उथण ऐं जंग जोटण लाइ हिमथ ब॒धाराए तैयार कयो। सिकंदर उन्हीअ लाइ खेसि कड॒हिं बि न बख़्शियो। मकानी माण्हुनि में ड॒हकाउ विझण लाइ हुन संदसि समूरे जथे खे कतल करे छड॒ियो। पर ब्रह्मणनि जे इलम, लियाकत ऐं जज़्बे खां एतिरो त मुतासिर थियो जो हू ड॒हनि ब्रह्मणनि खे हिरासत में विझी पाण सां गडु॒ वठी वियो। सिकंदर जे सवालनि ऐं संदसि जवाबनि जा जेके तफ़सील प्लूटार्च (Plutarch) लिखिया आहिनि, उहे पढ़ण वटां आहिनि। हुन लिखियो आहे :

पहिरिएं ब्रह्मण खां पुछियाईं त ''सभिनी माण्हुनि में घणा माण्हू मुअल आहिनि या जीअरा?'' त हुन वराणियो, ''ज़िंदह, छाकाणि त जेके मरी विया आहिनि, से आहिनि ई कोन।'' बि॒ए खां पुछियाईं, ''सभ खां वडा॒ जानवर धरतीअ जे आहिनि या समुंड में?'' त हुन वरंदी ड॒िनी, ''धरतीअ ते, छो त समुंड त धरतीअ जो हिस्सो आहे।'' हुन टिएं ब्रह्मण खां पुछियो, ''सभ खां वधीक चालक जानवर कहिड़ो आहे?'' तंहिं ते हुन वराणियो, ''उहो अञा इंसान गो॒ल्हे न लधो आहे।'' हुन चोथें ब्रह्मण खां पुछियो, ''बु॒धाइ, तो सेलस खे कहिड़ो दलील ड॒िनो हो जो हू विढ़ण लाइ तैयार थी वियो।'' हुन बु॒धायो त ''इन्हीअ खां सवाइ बि॒यो कुझ बि न हो, या त शान सां मरे या शान सां जीए।'' पंजें ब्रह्मण खां हुन पुछियो, ''ज॒मार कंहिंजी वडी॒ आहे, रात जी या डीं॒हं जी?'' आलिम वराणियो, ''डीं॒हुं ज॒मार में वडो॒ थींदो आहे, घटि में घटि हिक डीं॒हं जो ई सही।'' इन्हीअ जवाब मां सिकंदर खे पूरी तरह मुतमइन न ड॒िसी हुन अगि॒ते चयो, ''तोखे पंहिंजे अजीब सवालनि जा अजीब जवाब मिलनि था त उन में तोखे अजब न खाइण घुरिजे।''

हुन बि॒ए खां पुछियो, ''पाण वणाइण लाइ माण्हूअ खे छा करण घुरिजे?'' जवाब मिलियुसि, ''पंहिंजे पाण खे घणे डप में मुबतला करण खां सवाइ बेहद ताकतवरु हुअण घुरिजे।'' सतें ब्रह्मण खां इहो पुछण ते त ''माण्हू देवता कीअं थो बणिजे?'' हुन जवाब ड॒िनो त ''नामुम्किनि खे मुम्किनि करे डे॒खारण सां।'' अठें ब्रह्मण खेसि चयो, ''ज़िंदगी मौत खां वधीक ताकतवरु

आहे, छो जो उहा घणियुनि मुसीबतुनि खे सहारो डि॒ए थी।'' ऐं आख़िर आलिम खां जडहिं पुछियाईं त ''तुंहिंजे ख़्याल पटांदर हिक माण्हूअ खे केतिरो वक्त जीअण मुनासिब आहे?'' त जवाब मिलियुसि, ''जडहिं मौत ज़िंदगीअ लाइ वधीक ज़रूरी हुजे।''

मोट में उन्हनि आलिमनि सिकंदर खां पंहिंजा सवाल पुछिया। दंदरामस (डां॒द मणीअ) सिकंदर खां पुछियो त ''तो एतिरनि डू॒राहनि हंधनि ते अचण लाइ एडो॒ डिघो सफ़रु छो कयो?'' कलानवेस (कल्याण) सिकंदर सां ग॒ाल्हाइण खां तेसीं इंकार करे छडि॒यो जेसीं हुन पंहिंजो पाण खे उघाड़ो न कयो ऐं पोइ खेसि निहठाईअ सां ध्यान सां बु॒धाईं। कल्याण पोइ सिकंदर खे चयो त ''तुंहिंजो डू॒रांहे हंधनि ते भिटिकण न तुंहिंजे लाइ मुनासिब आहे ऐं न ई तुंहिंजे मुल्क लाइ।'' प्लूटार्च लिखे थो, ''कलानेवस फ़र्श ते जानवर जी घुंजियल सुकल खल इहो डे॒खारण लाइ विछाई त उहा इएं सिधी न थींदी, पाण उन्हीअ जे विच ते थी बीठो। उन्हीअ तफ़सील जी माना इहा हुई त खेसि पंहिंजे शहंशाहियत जे विच में, गादीअ वारे हंध ते घणो घारण घुरिजे ऐं न की उनजे सरहदुनि ते।''

पर सिकंदर लाइ सिंधु में ज़िंदगी आलमनि सां उन्हनि मंज़रनि जे भेट में कुझ वधीक हुई, जो डु॒खिया डीं॒हं त अञा अचिणा हुआ। जडहिं हुन सघारी सिंधूअ खे डि॒ठो त समुझियाईं त नील नदीअ जो मुंढ ग॒ोल्हे कढियो अथसि! सिंधूअ में रुग॒ो मागरमछनि जी मौजूदगी इन्हीअ ग॒ाल्हि जी पक डि॒यारी हुई जो उहे नील में पिण मौजूद हुआ। संदसि लश्कर बेहदि ख़ुशीअ मां तूतारा वज॒ाईंदो सिंधूअ में काहे पियो, जो खेसि पको आसिरो हो त हाणे हू मिसिर पहुची वेंदो पर सुतत ई हुन पाण खे समुंड में पातो। उते चौमासे ऐं सामूंडी वीरयुनि बि॒न्ही संदसि मतियूं मुंझाए छडि॒यूं। उहे वीरियूं संदनि वतन लाइ ओपरियूं हुयूं, जेको चौधारी समुंड सां घेरियल ऐं भोनोच समुंड जे भरिसां आहे।

हुन पंहिंजो लश्कर बि॒नि हिस्सनि में विरिहायो। अधु सिकंदर जे महंदारीअ में सिंधु जे हेठाएं हिस्से ऐं ब्लूचिस्तान जे सामुंडी किनारे तां थींदो, ईरान डां॒हुं उसहियो ऐं बि॒यो अधु जंहिं जो अगु॒वान नीअरकस (Nearchus) हो, समुंड रस्ते राही थियो। जल्दु ई बि॒न्ही जो हिक बि॒ए सां राबतो (डे॒ठ वेठ या सम्पर्क) टुटी पियो ऐं हर कंहिं इएं समुझियो त बि॒यो रस्तो जल्द ख़तम

थी वियो! ख़ुश्कीअ जे रस्ते पाणीअ जी अणाठ घणनि खे चरियो करे छ<u>डि</u>यो। जीअं ई खेसि पाणीअ जो तलाउ थे मिलियो त मुंझी थे पिया ऐं एतिरो त पाणी थे पीताऊं जो आफिरजी मरंदा विया! चालीह हज़ार यूनानियुनि मां जेके सिंधु मां ख़ुश्कीअ रस्ते रवाना थिया हुआ, ईरान पहुचण ताईं रु<u>गो</u> पंद्रहां हज़ार वञी बचिया। सिकंदर जो जदीद जीवनी लेखक **रोबिन लेन पोल** (Robin Lane Pole) लिखे थो त ''उन्हनि सभिनी इहो तस्लीम कयो त समूरे लश्कर जूं एशिया में पेशि आयल मुसीबतूं जेक<u>ड</u>हिं ग<u>डु</u> कजनि त मकरान में पेशि आयल मुसीबतुनि सां भेटे नथियूं सघिजनि। ऑला अमलदार ज़िंदह हुआ ऐं सिकंदर पिण ज़िंदह हो, पर खेसि बेइज़्तो थियणो पियो, जंहिं खां सवाइ <u>बि</u>यो चारो न हो। सिकंदर उहा पंहिंजी पहिरीं शिकस्त <u>ज़ा</u>ती हुई।''

ज़ाहिर आहे त सिकंदर जो हिंदुस्तान जो चकर अहिड़ो ई 'कामयाब' थियो हो, जहिड़ी नेपोलियन जी रूस ते फ़तह। बहरहाल हुन इन्हीअ ख़्याल खां पंहिंजो पाण खे <u>ड</u>ढु <u>डि</u>नो त असीरिया जी राणी सेमीरामिस (Semiramis) जंहिं सिंध फ़तह कई हुई, रु<u>गो</u> वीहनि साथियुनि सां वापस बची भ<u>गी</u> हुई ऐं ईरान जो साइरस (Cyrus) रु<u>गो</u> सतनि साथियुनि सां बची निकितो हो।

पर सिकंदर जी हिंदुस्तान जी मुहम मुकमल रूप सां नाकामयाब न थी हुई। हुन हिंदुस्तान जे हाथीअ खे ओल्ह में वाक़ुफ़ु करायो हो। हू व<u>डे</u> तरे वारियुनि <u>बे</u>ड़ियुनि खां <u>डा</u>ढो मुतासिर हो, जेके सिंधूअ में ओभारो तोड़े लहवारो अनाज खणी वेंदियूं हुयूं। तिनि खे हुन यूनान में वाक़ुफ़ु करायो। त<u>ड</u>हिं यूनानियुनि वरी गर्म मसाले खे ओल्ह में पंजूणो वधीक वाक़ुफ़ु करायो। ईरान जे बादशाही महिलात सूसा (Susa) जे थम्भनि जे अ<u>डा</u>वत में पंजाब जो शीशम (Sisoo) इस्तैमाल थींदो हो। इन्हीअ में शक नाहे त हू ख़ुदाई हाकिम (God King) लाइ अंब बि खणी वञे हा, पर उहे घणा खाइण सां संदसि दस्त बीठा ई न हुआ, तंहिं करे हुन पंहिंजे लश्कर में अंब खाइण ते बंदिश विझी छ<u>डी</u> हुई।

अंबनि जो खटो मिठो तर्जुबो रु<u>गो</u> सिकंदर ताईं महदूद न हो। ज<u>ड</u>हिं जी. डी. बिरला (G. D. Birla) अलफ़नसो अंबनि जो टोकिरो रूस जे अ<u>गू</u>णे वज़ीरे-आज़म ख़रूशचोफ़ लाइ सूखिड़ी तोर खणी वियो त हुन शुक्रगुज़ारी मञींदे इहो चई मोटाए छ<u>डि</u>यो त रूसी माण्हुनि जे पेट खे इहा अजीब शइ भाइं नथी पवे।

यूनानियुनि वटि सिंधु जे बारे में बुधाइण लाइ घणियूं ई ग़ाल्हियूं हुयूं। एडमिरल नीअरकस जंहिं यूनानियुनि जी समुंड रस्ते वापसीअ महल अगुवानी कई हुई, निशानदेही कंदे लिखियो आहे त सिंधी माण्हू डिघा ऐं सन्हा आहिनि ऐं वधीक डिघो लगुण लाइ थुल्हे तरे वारे चमड़े जी जुती पाईंदा आहिनि। संदनि बाहिरियों डेखाउ नकी अजुकल्ह जो आहे, न वरी उधारो वरितल या बाहिरां अमद कयल आहे।

सिकंदर ख़ुदि सिंधियुनि खे सघारो, संजमी ऐं ब्रादरीअ जे मानीअ में हम-शरीक पातो हो। ज़ाहिरि आहे त लंगर जो सिलसिलो सिखनि जो शुरू कयल नाहे। हुन इहा बि निशानदेही कई आहे त ''सिंधी जंग खे धिकारीनि था ऐं दवा दरमल जा चाहींदड़ आहिनि याने तंदुरुस्ती ऐं डिघी ज़मार जी साइंस।''

यूनानियुनि ऐं सिंधियुनि बिन्ही में जेका बी ग़ाल्हि हिक जहिड़ी आहे, उहो आहे सिंधी भूंडो या बुजो। इहो अमल हथ जी तिरी आङुरियुनि समेत खोले, कंहिं जे मुंहं साम्हूं डेखारे इलामती तरह लानत फटकार विझण जो मख़सूस सिंधी इशारो आहे। जडहिं क़बरस (साइप्रस) जे यूनानी रहाकुनि बर्तानवियुनि खे साइप्रस मां लोधे कढण थे चाहियो त उन्हनि बर्तानवी झंडे 'यूनियन जैक' साम्हूं सागीअ तरह हथ जे ख़ास इशारे सां लानत मलामती करे साड़ियो हो। सागीअ तरह जडहिं पाकिस्तानी अवाम आज़ादीअ लाइ ज़ोरदार घुर करे रहियो हो ऐं सेप्टम्बर 1983 ई. में ज़िया-उल-हक़ सिंध जो दौरो करे रहियो हो त संदसि आदरभाव सागिए मलामती इशारे सां कयो वियो हो।

प्रोफ़ेसर डेमटराइंस लोकातोस (Prof. Demetrisc Loukatos) जो चवण आहे त यूनान जो इहो इशारो आगाटे वक्त खां वठी इस्तैमाल में ईंदो आहे ऐं इहो रोमी (Romans) ऐं बालकनी (Balkaninas) ऐं अलबानवी (Albanians) लोकनि में बि पखिड़िजी वियो। यूनान में मूजा (Moudja) लफ़्ज़ खे बूजा उचारियो वेंदो आहे जो यूनानी ज़बान में म जो उचार ब में बदिलिजी वेंदो आहे ऐं बूजा लफ़्ज़ सिंधी बुजा या भूंडे जे वेझो आहे।

इहो मौज़ूअ डाक्टरेक्ट जे थीसिस लाइ बहितर आहे, जंहिं में इहा गोल्हा कजे त इहो सिंधु जे पारां सिकंदर लाइ सूखिड़ी हुई या बियो कुझ बि हो? या छा इहो असांजा पणी लोक जिनि खे (Phoensans) कोठिजे थो, हज़ारें वरिहय अगु यूनान खणी पहुता हुआ?

5

ड॒ाहर जी हकीकत

(ड॒ाहरसेन बाबत सच्चाई)

इस्लाम जो पैग़म्बर सिंधु ऐं हिंदु खां वाकुफ़ हो। संदसि ज़ालुनि मां हिक जो नालो हिंद हो, जंहिं लाइ हू चवंदो हो, ''शाल अल्लाह हिन हिंद ऐं संदसि मुल्क मथां महिरबान हुजे, जंहिंजे नाले पोयां हूअ सडि॒जे थी!'' जड॒हिं खेसि ज॒ाण मिली त यमन ते धारियनि जो कब्ज़ो थी वियो आहे त उमालक संदसि इहो सुवाल हो त सिंधियुनि कब्ज़ो कयो आहे या हब्शियुनि।

अरबिस्तान में घणेई हिंदुस्तानी जत रहंदा हुआ। मंझाउनि कंहिं हिकिड़े पैग़म्बर जी ज़ाल आइशा खे बीमारीअ मां छड॒ायो हो, जेका खेसि संदसि नौकरियाणीअ जे जिन्न कढण जे टोणनि फीणनि वसीले लग॒ल हुई।

जत पंहिंजी सींध मथे जे विच मां कढंदा हुआ, जंहिंजो नमूनो पैग़म्बर खे एड॒ो वणंदो हो जो पाण बि साग॒ियो नमूनो अख़्त्यार कयो हुआईं। अरबिस्तान में सिंधी जतनि जे थुल्हे तरे वारी जुती ड॒ाढी मशहूर थी। असां मां घणा उहा 'जूता' नाले सां सुञाणनि था। सिंधीअ में अञा ताईं उहा जुती सडि॒जे थी।

अरब वापारियुनि घणो अग॒े ब॒ुधायो हो त हिंदुस्तान में दरिया मोती आहिनि, जबल याकूत आहिनि ऐं वण ख़ुशबूइ आहिनि।

हकीकत में अरब ऐं सिंधी ऐं ब॒िया उल्हंदे घाट वारा हिंदुस्तानी हिक ब॒िए खे चङीअ तरह सुञाणंदा हुआ। अरबनि जे विश्वास मूजिबु आदम ऐं हवा हिंदुस्तान में रहंदा हुआ ऐं हिंदुस्तान 'जन्नत निशान' हूंदो हो। उहे हिंदुस्तान जे मोरनि ऐं हाथियुनि, काफ़ूर ऐं संदल ते अजब खाईंदा हुआ। इस्लाम खां अग॒ु अरबनि जो मज़हब घणो तणो हिंदू धर्म जहिड़ो हो, याने फ़ितरत सां हम आहंग मज़हब (Pamtheistic) हो। सन् 53 हिजरीअ में जड॒हिं अरबनि सिसली फ़तह कई त उतां जे मकानी सोन जे मूर्तियुनि खे कब्ज़े में कयाऊं, जेके पोइ सिंधु जे राजा खे विकियाऊं।

जडुहिं दुनिया में इस्लाम ज़ाहिर थी सभिनी डिसाउनि में पखिड़ियो त उनजो हिंदुस्तान में पखिड़जणु अणटर हो। अफ़्सोस जी गाल्हि इहा आहे, जो उन ज़माने में हिंदुस्तान बहितर सूरत में न हो। हर्ष खां पोइ उत्तर हिंदुस्तान जी हालति उबतड़ि हुई ऐं सिंध ते उन ज़माने में हिक मतभेद वारे घराणे हुकूमत कई।

सिंधु जो राजा राइ सहासी चित्तौड़ जे राजा जो भाउ हो। खेसि को बि औलाद कोन हो। संदसि राणी 'सुहंदी' ब्रह्मण वज़ीर चच जे प्रेम में गिरफ़्तार थी पेई। जडुहिं सहासी मरी वियो त सुहंदीअ हुकूमत जे सभिनी दावेदारनि खे माराए छडि़यो ऐं पोइ चच सां शादी करे छडि़याईं। इन्हीअ गाल्हि रइयत खे धधिको रसायो।

पर चच पाण खे हिकु कामयाब हाकिम साबित कयो। हिन मुलतान खे सिंध सां मिलायो ऐं सिंध जी सरहद कश्मीर ताईं मुकरर कयाईं। सिंध जो देवदार ऐं कश्मीर जो बुहण अहिड़ीअ तरह पोखियाईं, जीअं बिन्हीं जूं टारियूं हिक बिए सां विचुड़ी वञनि। सागीअ तरह ईरान जी सरहद चिटी करण लाइ हिन खजीअ जा वण पोखाया। उहे अजु जे जदीद सरहद जे बेसमेंट जे थंभनि खां यकीनन वधीक ख़ूबसूरत हुआ।

चच खे सुहंदीअ मां ब पुट थिया। डाहर ऐं डाहरसेन। चच खे बी ज़ाल मां हिक धीअ बाई नाले पिण हुई। डाहर अलवर में उत्तर सिंधु ते राजु थे कयो ऐं डाहरसेन नवाबशाह जे ब्रह्मण आबाद में सिंधु जे हेठिएं इलाके ते हुकूमत थे कई। जडुहिं बाई लाइकु थी त जोतषीअ अगुकथी कई त हूअ अलवर जे किले खां कडुहिं बि बाहिरि न वेंदी ऐं संदसि घोट सिंधु ऐं हिंद जो राजा थींदो। उन्हीअ ते वज़ीर बुद्धीमान (डाहो) पर हिन हालत में बिल्कुल बुद्धी हीण (बेवकूफ़) साबित थियो। डाहर खे पंहिंजी माटेली भेण सां शादी ऐं पंहिंजो पाण खे हुकूमत खे बचाइण लाइ वेनती कयाईं। उन्हीअ सलाह वठण करे हू कंहिं बि आम माण्हूअ वांगुरु गिला जो शिकार बणियो। बीहर सोचण खां पोइ हिन अलामती तौर ते बाईअ सां शादी करण कबूल कई। हिन खेसि शादीअ जी मुंडी पेशि कई। तलवार संदसि हंज में रखियाईं ऐं पंहिंजी पोती संदसि मथे ते ढकियाईं। डाहर जे इएं करण सां याने पंहिंजी माटेली भेण सां शादी करण करे चाहे उहा इलामती हुई 'डाहरी' लफ़्ज़ जी सिंधीअ में माना छसो या बेवकूफ़ मुकरर थी।

पर डाहर जे हक में चयो वेंदो आहे त माटेलनि भाउरनि ऐं भेनरुनि ऐं सौटियुनि जे विच में शादियूं आगाटाई राजाई तारीखुनि में अजातल न हुयूं। मिस्र जे फ़ोऊन ऐं ईरान जा अगूणा शहंशाह आम तरह पंहिंजे माटेलियुनि भेनरुनि या सौटियुनि सां इन्हीअ बुनियाद ते शादियूं कंदा हुआ त शाही घराणे जे शहज़ादे जी कंहिं बि बी औरत सां शादी हिक सच्चे शहज़ादे लाइ मुनासिब न हुई ऐं बियनि शाही ख़ानदाननि मां शादी करण करे संदनि सालनि जे विच में दुश्मनियूं थी पवंदियूं हुयूं। ऐं बाई त रुगो डाहर जी माटेली भेण हुई।

पर डाहर जी बाईअ सां शादीअ माण्हुनि में चौबोल पैदा कयो ऐं संदनि दिलियुनि में फेटारो पैदा कयो। अरबनि जे हमले वक्त सिंध जी सूरत हाल इहा हुई, पर साराह जोगी गाल्हि इहा आहे त जीअं ई मालूम थियो त सिंधु वारनि मर्दाना मुकाबिलो कबूल कयो।

कंहिं अरब सरदार जडहिं कंहिं सिंधी वापारीअ खां सिंधु जे बारे में पुछियो त हुन वराणियो, "पाणी तमाम थोरो आहे। मेवो बेकार आहे। चोर खे चोरीअ जी सज़ा नथी मिले। थोरो लश्कर बिल्कुल मारिजी वेंदो। वडो लश्कर बुखूं काटे मारिजी वेंदो।" अरब सरदार उन्हीअ जवाब में अरबी हमले खे बे हिमथ करण लाइ हिक सिंधीअ जी हुब अलवतनी जी कोशिश जाती। पर अरबनि रत जो सवाद चखे डिठो हो ऐं उहे ईरान खां मोराको ताईं फहिलिजी चुका हुआ। खेनि पंहिंजे फ़ैसिले तां हटाइणु सवलो न हो। अजोके खोजना जे बुनियाद ते मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद पंहिंजे किताब 'इंसानियत मौत जे दरवाज़े ते' (Humanity at Death's Door) ऐं मौलाना नदवी पंहिंजे किताब 'अरब व हिंद के तालुकात' (Indo-Arab Relation) में लिखनि था 638 ई. खां 711 ई. ताईं अरबनि सिंधु ते ख़ुश्की तोड़े सामूंडी रस्ते पंद्रहं हमला कया हुआ, पर रुगो आख़िरी भेरे 711 ई. में मुहम्मद बिन कासिम पंहिंजे हमले में कामयाब थियो।

'चच नामो' जेको सभ खां विश्वास जोगो ऐं घणो करे सिंधु जे अहवाल जो अरबी हमलनि जे बारे में सनदी तफ़्सील में आहे, बयान थियल आहे त 638 ई. में ख़लीफ़े हज़रत उमर सिंध ते सामूंडी हमले लाइ सेना खे मोकिलियो, पर उहा हिंदुस्तान डांहुं मुड़ी वेई। चच नामे में बियनि असी सालनि दौरान छहनि बियनि वडनि ज़मीनी ऐं सामूंडी हमलनि जो ज़िक्र मथे

मिले थो, जिनि जा महन्दार हाकम (सेनापति) अब्दुला, राशिद, मुंज़िर, सीनान ऐं बज़ील हुआ ऐं जे मारिजी विया।

ख़लीफ़ो हज़रत उस्मान पंहिंजे अयामकारीअ में सिंधु में अरबनि जी शिकस्त करे एतिरो त फ़िक्रमंद हो जो हुन सिंधु ते इन्हीअ करे वधीक हमलो करण जी पाबंदी विधी त उतां जो पाणी मेरो आहे, उतां जी ज़ममीन पथरीली आहे ऐं उतां जा मेवा खट्टा (ज़हरीला) आहिनि।

इहा ड॒ाढी दिलचस्प ग॒ाल्हि आहे त 'मुश्क ऐं मोतियुनि' जी सर-ज़मीन तड॒हिं ओचितो 'मेरी ऐं पथरीली' थी पेई, जड॒हिं खेसि सेखत ड॒ियण जी का वाह न निकिती। सिंधी अंगूर खट्टा थी पिया।

इहा ग॒ाल्हि विरहाङे खां अग॒ु ऐं पोइ मुसलमाननि जो हिंदुनि ड॒ांहुं मुख़तलफ़ रुख़ु याद ड॒ियारे थी।

विरहाङे खां अग॒ु हिंदू धोती पाईंदड़, कांइर, दाल पीअंदड़ ऐं पापड़ चब॒ाड़ींदड़ हुआ। पर विरहाङे खां पोइ जड॒हिं हिंदुनि इहो ड॒ेखारियो त हू बि वराए वार करे सघनि था त उहे ख़तरनाक बणिजी विया।

कीअं बि जंगि लाइ ख़्वाहिश ऐं माल मिलकियत जी लालच अरबी रूह खे चकु पातो ऐं ख़लीफ़े हज़रत अलीअ बि सिंधु ते पंहिंजो लश्कर चाढ़े मोकलियो पर पोइ हज़रत अलीअ जे मौत जो बु॒धी उहो दिलशिकस्तो थी वापस मोटी आयो। उन खां पोइ जे ख़लीफ़े माव्य हिकु वड॒ो ज़मीनी लश्कर रवानो कयो, जंहिं वटि खाध ख़ोराक जो सामान एतिरो त पियल हो जो खेसि मंज़िल ते बाहि ब॒ारण जी बि ज़रूरत न पेई। पर सिंधी लश्कर खेनि अहिड़ा टोटा चब॒ाया जो संदनि सिपहसालार अब्दुला पंहिंजे मौत खां अग॒ु रहम जोग॒ी रड़ि करे चयो, "पैग़म्बर जे साथियुनि जा औलादो, पंहिंजा मुंहं सच्चे मज़हब खां असुल न फेरियो त जीअं अव्हांजो ईमान कंहिं शक खां आज़ाद रहे ऐं अव्हां आज़ादीअ जी इज़्ज़त हासिल करे सघो।" पर अरबनि मकरान में रुग॒ो जन्नत वञण जे आसरे ते विढ़ण ऐं मरण जे बदिरां भज॒ण ऐं ज़िंदह रहण खे तरजीह ड॒िनी।

बि॒ए वड॒े हमले जो महन्दार सीनान वल्द सलीम हो, जंहिंजे जनम जे मौके ते पैग़म्बर पाण हली आसीसा ड॒िनी हुई। हिन मौके ते सीनान पंहिंजे

पैग़म्बर खे फ़तह लाइ दुआ कंदे पंहिंजे ख़्वाब में डि॒ठो। पर वलादत तोड़े ब॒ी दुनिया मां कयल दुआउनि को असर न डे॒खारियो ऐं ब॒धिया जे मकाम ते सिंधियुनि खेसि मारे छड॒ियो।

पोइ 680 ई. में गवर्नर ज़ियाद मुंज़िर जारवडबन बिन बज़ाहर खे सिंध वञण ऐं फ़तह करण लाइ मुकरर कयो। पर हू जीअं ई दरब॒ार में पंहिंजे हंध तां उथियो थे त काठ जे टुकर में संदसि जबो फासी फाटी पियो। इराक जे गवर्नर अब्दुला इन्हीअ ग॒ाल्हि खे अपसोण समुझी रड़ि करे चयो, ''मुंज़िर पंहिंजे सफ़र तां न मोटंदो ऐं मरी वेंदो।'' ऐं वाक़िए इएं ई थियो।

उन्हीअ मौके ते हजाज खे इराक़ जो गवर्नर मुकररु कयो वियो, जेको ज़ुलम ऐं बे-रहमीअ करे बदिनाम हो। हाणे सिंधु फ़तह करण सिधीअ तरह संदसि फ़र्ज़ु हो। संदसि ज़ुल्मनि खां तंग इलाफ़ीअ नाले हिक अरब सरदार पंहिंजे पंज सौ माण्हुनि खे साणु वठी सिंधु भज॒ी वियो ऐं ड॒ाहर खेसि पनाह डि॒नी। उन्हीअ खां सवाइ हजाज जी इहा पिण दावा हुई त सिंधी सामूंडी डाकुनि अरब बे॒ड़नि खे लुटियो आहे, जेके लंका खां अची रहिया हुआ। हुन उन्हनि ब॒िन्ही वाकियनि खे सिंधु ते हमलो करण लाइ नओं बहानो बणायो। ख़लीफ़े वलीद बे-दिलीअ सां मंज़ूरी डि॒नी। हजाज वडे॒ लश्कर सां बज़ील खे सिंध ते चाढ़े मोकिलियो। पर ड॒ाहर जे पुट जयसिंह खेसि शिकस्त डे॒ई क़तल करे छड॒ियो। हाणे हजाज धमिकी डि॒नी, ''चीन जे हदुनि ताईं कंहिं बि काफ़िर खे जीअरो न छड॒ियो।'' हुन पंहिंजे नजूमियुनि जे अग॒कथियुनि जे बुनियाद ते पंहिंजे भाइटिये ऐं नाने मुहम्मद बिन कासिम खे सिपहसालार बणाए सिंध ते चाढ़े मोकिलियो। अहिड़ीअ तरह जोतषियुनि खे न रुग॒ो ड॒ाहर मञियो पिए पर हजाज जो पिण मंझिनि विश्वास हो।

ख़लीफ़े वलीद खे सिंधु जे रतोछाण में एतिरी दिलचस्पी न हुई, हुन हजाज खे लिखियो, ''उन्हीअ मुल्क जा माण्हू चालाक आहिनि ऐं खुदि मुल्क बि ड॒ूराहों आहे, असां खे लश्कर ऐं जंग लाइ हथियारनि ऐं ओज़ारनि ऐं नाणे जे सूरत में वडी॒ कीमत अदा करिणी पवंदी। इहो मामलो असां लाइ वडी॒ मुसीबत जो बाइसु आहे। तंहिं करे असां खे इन्हीअ ग॒ाल्हि तां हथु खणण घुरिजे, जो हर भेरे लश्कर वञे थो घटिबो ऐं मुसलमाननि जो वडो॒ तादाद मारिजी वञे थो। तंहिं करे इन्हीअ मुहिम ते न सोचि।'' पर हजाज ''इस्लाम

जी इज्ज़त'' लाइ दुआ घुरी ऐं बज़ील जे मौत जो बदिलो वटण लाइ सम़ूरे इराक़ जी दौलत ख़र्च करण जो कसम खाधाई।

711 ई. में नजूमियुनि जे मुक़ररु कयल हिक शुभ डींहं ते मुहम्मद बिन कासिम इराक़ी, शामी ऐं ब़ियनि अरबी सिपाहियुनि जे सिपहसालार जी हैसियत सां सिंध ते हमलो करण लाइ रवानो थियो। संदसि घोड़नि ऐं उठनि खे अहिड़ियूं झलूं पारायूं वेयूं हुयूं, जीअं उहे शींहं ऐं हाथीअ वांगुरु ड़िसण में अचनि।

जड़हिं अरबी लश्कर देबल (देवल ऐं देवालिय- देवता जो मंदिर) जो घेरो कयो त लड़ाई ड़हनि डींहंनि ताईं जारी रही। जेतोणीकि उहो अलूर, सेवहण, नेरण कोट (हैदराबाद) या ब्रह्मण-आबाद वांगुरु वड़ो शहर न हो। पनाह गाह ड़िनल मंदिर तड़हिं फ़तह थी सघियो, जड़हिं हिक हिरासियल ब्रह्मण ब़ाहिरि निकिरी अची अरबनि खे ब़ुधायो त जेसताईं हू मंदिर जे चोटीअ ते लहराईंदड़ डिघे ग़ाढ़े झंडे खे हेठि न केराईंदा, तेसताईं किले जा रहवासी मुकाबिलो कंदड़ पेश न पवंदा। जड़हिं इएं कयो वियो त देबल जो रखिवालो ख़ास ब़ोधी अची पेश पियो। उन खां पोइ क़त्ल-ए-आम थियो ऐं अहिड़ी तरह मुकाबिलो ख़तम थियो।

जड़हिं अरबनि वटि खाधो तोड़े चारो खुटण लग़ो त नेरवण कोट जे रखवाले भंडारकान समानी शहर संदनि हवाले कयो। समानी या शमनी जेको ब़ुद्ध धर्म जो पोइलग़ु हो ऐं ब्रह्मण जे बराबर हो, ब़ोधी हुअण जे हैसियत सां चयाईं त हू अमन पसंद आहे ऐं इन्हीअ ग़ाल्हि में संदसि का दिलचस्पी न आहे त मुल्क ते केरु थो हुकूमत करे। उन्हनि सेवहण जे गवर्नर बजीराइ खे हिक हफ़्ते खां वधीक शहर जे बचाअ खे जारी रखण न ड़िनो। जड़हिं अरबनि खे इहा ज़ाण न मिली त सिंधू दरिया कीअं पार कजे त किले जे रखिवाले मोकह वल्द बेसायह (मोको पुट वसायो) तख़्त ऐं मुल्क जे लालच में ब़ेड़ियूं ऐं खाधो ख़ोराक खेसि मुहिया करायो। हाणे जोतषियुनि अग़कथी करण शुरू कई त ''अरबनि जी फ़तह अण-टरु आहे।'' पर ड़ाहर खे अञा बि पंहिंजे सोभ जी पक हुई। अरब इलानीअ जी सलाह जे उबतड़ि हुन अरबनि खे लड़ाई करण लाइ दरिया पार करण जो वझु ड़िनो त ''मतां इएं न समुझनि त असां जूं मतियूं मुंझी वेयूं आहिनि ऐं असीं कमज़ोर ऐं बे-हिमथ थी विया आहियूं।''

जीअं ई सिंधियुनि ऐं अरबनि जे विच में जंगि छिड़ी त इलानीअ जो हिकु साथी अबीदु अरबनि वटि हलियो वियो ऐं खेनि डाहर जे मंसूबे बाबत ज़ाण बुधायाई। इन्हीअ जे बावजूद सिंधी लश्कर एड़ी जवान मर्दीअ सां विढ़ियो जो चच नामे में लिखियल आहे त आख़िरी यारहें डींहं ते इस्लामी लश्कर जूं वायूं बताल थी वेयूं ऐं उन्हीअ हालत में संदनि सेनाऊं छिड़ विछड़ थी वेयूं।

आम तोर इहा ग़ाल्हि मञी वेई त अरब हाराए वठी भगा हुआ। उन वक्त मुहम्मद बिन कासिम एडो मुंझी पियो जो पाणीअ जी घुर कयाई। उन्हीअ मौके ते देश द्रोही मोकह पंहिंजे माण्हुनि सां उते पहुची वियो ऐं अरबनि जे लश्कर सां मिली वियो। साग़िए वक्त इहा दांहं पइजी वेई त सिंधी लश्कर में राजकुमारियुनि जो घेरो कयो वियो आहे। इन्हीअ ग़ाल्हि मूंझारो पैदा करे छडियो। अरबनि डाहर खे "नसे मन - नसे मन" (याने मां हिते आहियां, मां हिते आहियां) रड़ि कंदे बुधो, जीअं हू पंहिंजे माण्हुनि खे बुधाए ऐं उहे दिल न लाहिनि। पर पोइ हिकु तीरु डाहर जे हाथीअ जे होदे में वञी लगो, जंहिं उन खे बाहि में वकोड़े छडियो। जल्द ई बियो तीरु संदसि दिल में खुपी वियो ऐं पोइ सभु कुझ ख़तम थी वियो। उहा 16 जून 712 ई. जी विस्पत जी शाम हुई। चोहतर सालनि जे दौरान (636-712 ई.) नवनि ख़लीफ़नि जे दौरनि में इन्हीअ पंद्रहीं काह खां पोइ अरबनि सिंध फ़तह कई हुई। उहो हिंदुस्तान जे तारीख़ में सभ खां दुखदायक डींहुं हो।

डाहर जी ज़ाल राणी लाडीअ खे कब्ज़े में कयो वियो। लाडीअ अरबनि जे लश्कर में फ़ात्हनि ऐं मकानी माण्हुनि जे विच में इएं डेखारण जी कोशशि कई, ज़णु त हूअ सदिमो बर्दाशित करे वेई आहे। डाहर जी ज़ाल 'बाई' उन्हनि चंडालनि ऐं गांइ खाईंदड़नि जे हथ अचण खां बचण ख़ातिर सती थी वेई। मुकाबिलो पोइ बि जारी रहियो।

पर देबल में पहिरिएं शख़्स जे इस्लाम कबूल करण सां ई हिंदुस्तान में मुस्लिम मसइलो पैदा कयो वियो हो। उन्हीअ शख़्स जो नालो मौलाना इस्लामी रखियो वियो ऐं खेसि शाही सरदार सां गडु डाहर खे न्यापो पहुचाइण लाइ मोकिलियो वियो। चच नामे में ज़ाणायल आहे त जडहिं उहे बई डाहर जे दरबार में पहुता त शाही सरदार झुकी सलाम कयो पर नएं मुस्लिम झुकण या सलाम करण खां इंकार करे छडियो। डाहर खेसि सुञातो ऐं खांउसि दरयाफ़्त

आदाब बजा न आणण जो कारण पुछियो। जंहिं ते उन्हीअ नएं मुस्लिम वराणियो त मज़हब मटाइण सां हिनजी वफ़ादारी 'इस्लाम जे बादशाह' सां आहे। मज़हब मटाइण सां ज॒णु कौमियत बदिलिजी वेई ऐं पाकिस्तानी मनोवृत्तीअ जनमु वरितो हो।

जड॒हिं ड॒ाहर जो कपियलु कंधु हजाज खे पेशि कयो वियो त हिकिड़े दरब॒ारी शाइर चयो, "असां घणियुनि मुसीबतुनि खां पोइ सिंधु ते सोभ हासिल कई आहे.... मुहम्मद बिन कासिम जे माहिराना हकूमत अमले ड॒ाहर खे नेठि दोखो ड॒ेई फासाए विधो। ख़ुशियूं मल्हायो जो गुनहगारनि जी दुर्गत थी आहे। संदनि दौलत आंदी वेई। हाणे हू आननि वांगुरु फिसी पिया आहिनि ऐं संदनि ख़ूबसूरत ऐं मुश्क जहिड़ियूं औरतूं असांजे हरमनि में सुतियूं पेयूं आहिनि।"

इहो सभु कुझु कीअं ऐं छो थियो?

बुनियादी नुक्तो इहो आहे ऐं इन्हीअ में को शक नाहे त को बि मुल्कु हमेशा दुनिया जे बुलंदीअ ते काइमु नथो रहे। माण्हुनि जूं किस्मतूं फिरंदियूं रहनि थियूं ऐं उन ज़माने में सिंधु पंहिंजे सही हकीकत में न हुई। चीन जो अज़ीम सैलानी ह्यूनसांग पूरा सतर वरिहय अग॒ु सन् 641 ई. में सिंधु में आयो हो ऐं चङियूं ग॒ाल्हियूं न ड॒िठियूं हुआईं। हिन लिखियो आहे-

"सवें संघ (आराम घर) आहिनि, जिनि में ड॒ह हज़ार पूज॒ारी रहियल आहिनि, टीहारो खनु देव मंदर आहिनि, जिनि में मुख़तलफ़ विश्वास रखंदड़ माण्हू गड॒ु थींदा आहिनि। उन्हनि जो राजा शूद्र (शो-तो-लो) ज़ात मां आहे। हू सुभाव खां ईमानदार ऐं सच्चो आहे। हू बुद्ध जे कानून में विश्वास रखंदड़ आहे.... सिंधू दरिया जे किनारे सां मैदानी घिमियल हेठाहीं ज़मीन ते हज़ारें घर आबाद आहिनि। उहे बेहस ऐं होड॒ी तबियत वारा माण्हू आहिनि ऐं फ़कति रतोछाण कंदा आहिनि। उहे रुग॒ो माल चारण जो कमु कनि.... औरतूं ऐं मर्द ब॒ई पंहिंजा वार नंढा रखाईनि।"

जेतोणीकि उन वक्त जो हुकमरान चच नाले ब्राह्मण हो पर ह्यूनसांग खेसि शूद्र (शो-तो-लो) इन्हीअ करे कोठे थो, जो हिन बाकाइदगीअ सां तख़्त हथि न कयो या हिन हिंदुस्तानी मुख्य धारा खां अलगि॒ मुश्किल सरहदी सर-ज़मीन ते हुकूमत कई थे। के आलिम 'शो-तो-लो' मां शूद्र न पर 'कशूद्रक' जी माना वठनि था, जेको मर्कज़ी सिंध में हिकु आग॒ाटो लोक राज॒

हो। ब॒िया वरी 'शो-तो-लो' खे शूद्र बिलकुल नथा समुझनि, पर चवनि था त इन्हीअ जो मतिलबु श्रोत्रिय ब्राह्मण आहे। राजा ब्राह्मण ज़ात जो हो, पर ब॒ोद्धी एतिरा घणा हुआ जो उहे समाजी मेल खे ख़राब कंदा हुआ। समाजी छिकताण जे करे माण्हुनि जो मिजाज़ होड॒ी ऐं रतोछाण ड॒ांहुं माइलु हो। घणा ब॒ोद्धी वापारी हुआ ऐं मुकाबिलो करण बदिरां अमन सां रहण पसंद कंदा हुआ।

इन्हीअ आम पस्तीअ खां अलग॒ि के ख़ास सबब बि हुआ। इन्हीअ में को शकु नाहे त राजाई घराणे जे बारे में केतिराई मतभेद हुआ। ब॒ी ग॒ाल्हि इहा हुई त ड॒ाहर पंहिंजे मकानी लश्कर में बुज़दिली ऐं ग़द्दारीअ खे रोके ऐं सेखत ड॒ेई न सघियो हो। इन्हीअ खां सवाइ ब॒ोद्धियुनि जी शकी हालति हुई, जिनि सहूलियत सां बुज़दिलीअ खे अमन पसंदीअ जे लबादे सां ढके छड॒ियो हो। चाहे ड॒ाहर खेनि अहम उहिदनि ते मुकरर करे छड॒ियो हो। इन्हीअ में का अजब जी ग॒ाल्हि नाहे त अरबनि, जिनि ईरान खे 641 ई. में सिंधियुनि जे मदद जे बावजूद फ़तह करे वरितो हो ऐं ड॒ूराहें मुल्क स्पेन में 711 ई. में दाख़िल थी विया हुआ, 712 ई. में सिंधु जी तड॒ा-वेड़ह कराए छड॒ी। उत्तर हिंदुस्तान जे कनौज जी हुकूमत सिंधु जी मदद करे सघी थे। जीअं फ्रेंकनि स्पेन जी मदद कई हुई। पर 647 ई. में हर्षा जे मौत खां पोइ खेसि ब॒ियनि जी मदद त ठहियो पर पंहिंजी मदद करण जी पिण हिमथ न हुई। सिंधु मुकाबिलो कयो ऐं अकेले शिकस्त खाधी।

पाकिस्तान में ड॒हनि जुल्दनि में शाया थियल सिंधु जी सरकारी तारीख़ पढ़णु दिलचस्पीअ खां ख़ाली न थींदी। डाक्टर मुमताज़ हुसैन पठाण मुताबिक अरबनि जा पेशि कयल हमले जा सबब कूड़ा आहिनि। संदनि सामूंडी डाकुनि जी अरबनि जे जहाज़ लुटण जी ग॒ाल्हि खे हू जुड़तू थो समुझे। हू वधीक चवे थो, "अरबनि जे फ़तह खां पोइ अरब कैदियुनि खे देबल मां हथि कयो वियो। इहा ग॒ाल्हि पिण कूड़ी आहे, जंहिंजी तारीख़ी शाहिदी नथी मिले ऐं समकालीन ज़रीअनि में ज॒ाणायल हकीकतुनि जे उबतड़ि आहे।" हू इन्हीअ जा बि हकीकी सबब लुट मार ऐं वेढ़ाक अरबनि खे ब॒िए कंहिं हंधि मसरूफ़ रखण जी ज़रूरत समुझे थो। माली खोटि जी पूराई ऐं पंहिंजो ख़ज़ानो भरण लाइ हजाज नवनि मन्सूबनि ते पंहिंजो अमल कयो। उन्हनि हमलनि जो ख़ास मकसद सियासी सबबनि जी प्रेरणा थी सघे थो। अरब पाण में विढ़ंदा रहनि,

उन जे बदिरां संदसि नियत अरबनि जे कुवतुनि खे नयुनि मशगूलियुनि ड॒ांहुं मोड़ण जी हुई। डाक्टर पठाण खे इन्हीअ ग॒ाल्हि जो को शक नाहे त उहो सिधो संओं ज़्यादती ऐं उरह ज़ोरावरीअ जो मामलो हो। ''सिंधु जी फ़तह हजाज जे अगु॒वाट सोचियल समुझियल रिथा में शामिल हुई, जंहिं लाइ के मइमूली बहाना घुरबल हुआ।'' हकीकत में हजाज पंहिंजे माण्हुनि खे चीन जे सरहदुनि ताईं वधण जो हुकुम ड॒िनो हो।

डाक्टर पठाण इहो बि सोचे थो त अलफ़ासी, जंहिं सिंधु में हिक भाज॒ोकड़ जे रूप में पनाह वरिती हुई, तंहिं अरब हाकिमनि जे मुख़्फ़ी एजंट जो कमु कयो थो ड॒िसिजे, जेतोणीक हू पाण खे हजाज जा दुश्मन ड॒ेखारींदा पर त बि हू अहम ख़बरूं अरबनि ताईं पहुचाईंदा हुआ ऐं खेनि सिंध मथां हमलो करण लाइ भड़काईंदा हुआ।

डाक्टर पठाण ब॒ोद्धी शमनियुनि खे ड॒ोही थो ठहिराए, जिनि ड॒ाहर सां वेसाह घाती कई। हू चवे थो त जड॒हिं ड॒ाहर जे राज॒ में किनि तबकनि सां ग़ैर बराबरीअ वारो सलूक कयो वेंदो हो त अरबनि जे हुकूमत में संदनि भागु॒ वधीक फिटो। अगु॒ में अवाम खे सिल्क जा कपड़ा पाइण या घोड़नि ते चढ़ण जी बंदिश हुई। हाणे अरबनि खेनि वधीक हुकुम ड॒िनो त उहे पंहिंजो मथो न ढकीनि ऐं अरबनि जी मौजूदगीअ में पेरें उघाड़ो हलनि। ब॒ोद्धियुनि खे पिण हुकुम ड॒िनो वियो त उहे कंहिं बि अरब सिपाही वापारी या जांबाज़ जी ख़ातिर तवाज़ह घटि में घटि टिनि ड॒ींहंनि लाइ कनि।

घणियुनि हालतुनि में त अरब महिमान पंहिंजे मेज़बाननि जे ज़ालुनि ऐं धीअरूनि खे भज॒ाए वञण में कामयाब थी विया। अरबनि सिंधु में ब॒ारणु ब॒ारे छड॒ियो हो। एतिरे कदुरु जो पंहिंजी खल बचाइण ख़ातरि जिनि इस्लाम कबूलियो, तिनि खे मवाली कोठियो वियो ऐं हिंदुनि वांगुरु खांउनि जज़ियो वसूल कयो वियो। अहिड़ीअ रीत केतिराई माण्हू पंहिंजे असुलोके मज़हब में तुर्त मोटी आया। ज़ोरी थियल मुसलमाननि खे शुद्धि करण (वापस मोटाइण) जो मौको अमल में आणण लाइ कुझु पाक करण जूं रस्मूं अदा करे ''देवल स्मृति'' उचारियो वियो। एतिरे कदुरु जो अजु॒ सिंधी मुसलमाननि लाइ इन ग॒ाल्हि में को अजब न रहियो आहे त ड॒ाहरसेन हीरो आहे ऐं मुहम्मद बिन कासिम हचारो।

अरबनि जे फ़तह जे ब॒िनि सालनि अंदरि अरबनि जो असर देबल ऐं आसपास जे सामूंडी पटीअ ताईं महदूद रहिजी वियो। ड॒ाहर जो पुट जयसय पाणु बचाइण लाइ मुसलमान थियो। रुग॒ो इज़्ज़त लाइ जीअण ख़ातरि ब॒ीहर हिंदू थियो। उन्हीअ ते अरबनि हिकु वड॒ो लश्कर पंजवीहनि वर्हियनि खां पोइ सालिम जे सिपहसालारीअ हेठि चढ़ाईअ लाइ मोकलियो। जयसय जंहिंजी मदद संदसि माउ लाड॒ी ऐं चित्तौड़ जो सघारो ब॒ापा रावल (739-753 ई.) करे रहिया हुआ ऐं जंहिं खे हरित स्वामीअ जी आशीर्वाद हासिल हुई, हिन अमन जो अहदनामो तड॒हिं सही कयो, जड॒हिं सालिम हथियार फिटा कया। पंहिंजे धीअ माया जी शादी बापा रावल सां करायाईं ऐं अरबनि खां इहो वचन वरिताईं त उहे हिंदुस्तान ते वरी कड॒हिं बि काह न कंदा। इहो ज़ाहिर आहे त पोइ वारियुनि सदियुनि दौरान अरबनि कड॒हिं बि हिंदुस्तान ते काह कान कई।

पर सूरमनि खां वधीक अरबनि जे सिंधु ते फ़तह वारे अरिसे में सूरमियुनि जो वड॒ो हिस्सो आहे। उहे सूरमियूं ड॒ाहर जूं धीअरूं सूर्य देवी ऐं परमल देवी हुयूं। मुहम्मद बिन कासिम खेनि ख़लीफ़े वलीद जे हरम लाइ मोकलियो। 'चच नामे' में ज॒ाणायल आहे त ख़लीफ़ो संदनि सूंहं ऐं दिल फ़रेब अदाउनि ते मोहित थी पियो। पर राजकुमारियुनि ख़लीफ़े खे चयो त कासिम संदनि अग॒ेई असमत लुटे चुको आहे। इहो ब॒ुधी ख़लीफ़ो तपी बाहि थी वियो ऐं हुकुम ड॒िनाईं त मुहम्मद बिन कासिम खे कत्ल कयो वञे ऐं संदसि लाश खे ढग॒े जी खल में सिबाराए आंदो वञे। जड॒हिं हुकुम जी पोइवारी थी त राजकुमारियुनि सच्ची कई त हिननि इहा कहाणी रुग॒ो सिंधु ऐं हिंदु जे राजा जी तबाही ऐं पंहिंजे अबनि ड॒ाड॒नि जे राजाउनि जे ख़ात्मे जो बदिलो वठण लाइ घड़ी हुई। गुस्से में आयल ख़लीफ़े खेनि ईज़ाउ ड॒ेई मारण ऐं संदनि लाशनि खे टिगरमन दरिया में उछिलाइण जो हुकुम ड॒िनो। अहिड़ीअ तरह सिंधु जे शिकस्त जो कंहिं हद ताईं बदिलो वरितो वियो।

अरबनि सिंधु में सभ खां अवलि देबल मंदर खे कैदख़ाने में तब्दील कयो। जल्दु ई समूरी सिंधु अरबनि जो कैदख़ानो थी पेई। सिंधु जे लुट-मार अरबनि जी ऐराज़ियुनि में इज़ाफ़ो आंदो। वीह हज़ार सिंधी गुलाम तोर विकिया विया, जेके घणो करे बोरची ऐं ख़ज़ांची हुआ। उते हुननि ख़ास करे सिंधी चांवरनि जे भत (भक्त-संस्कृत) (भात-हिंदी) खे मक़बूल (लोकप्रिय)

बणायो। बि॒यनि वरी यकितारे ऐं कंझियुनि जे मदद सां पंहिंजे सुरीले गा॒इण सां अरबनि जूं दिलियूं मोहे छ॒डि॒यूं। बि॒या घणा सिंधी अरबनि जे कारोबार में जोगा॒ लेखारी (अकाऊन्टंट) थिया। सिंधी लेखारी कारोबार जे कामयाबीअ जी ज़मानत हो। घणा सिंधी वैद्य (मकानी वेजु॒ या हाकिम) ओलह एशिया में डा॒ढो मशहूरु थिया। उन्हनि मां हिक माणक नाले वैद्य ख़मीफ़ी हारून अलरशीद खे नौबनो कयो, जडु॒हिं कि मकानी ऐं यूनानी हकीम आसिरो लाहे वेठा हुआ। बि॒ए मौके ते माणक, ख़लीफ़े जे प्यारे सौट इब्राहिम खे सुरजीत कयो, जंहिं खे हकीमनि मुअलु पधिरो कयो हो। घणा मकानी हिंदू फ़न ऐं साइंसूं सिंधु मां अरबी सर-ज़मीन ते पहुचण लगि॒यूं। हितां जो तारनि जो इल्मु, हिकमत ऐं हिसाब अरबनि जे हथां यूरोप पहुता। हिन वक्त ताईं 1, 2, 3,- अरबीअ में हिंदुसि (हिंदुसा) जे तोर ते (रूप में) जा॒ता वञनि था। पंच तंत्र जूं डा॒हप वारियूं आखाणियूं अरबीअ जे कलीलिय दमना जे उनवान सां तर्जुमो कयूं वेयूं।

एतिरे कदुरु जो अरबी लिपी अरबनि जे सिंधु फ़तह खां कएं सदियूं अगु॒ हिंदुस्तान खां आई हुई। माहिरनि मुताबिक बा॒वीहनि हर्फ़नि मां सोरहं हर्फ़ अशोक जे दौर जे ब्रह्मी लिपीअ मां सिधीअ तरह वरितल आहिनि। उहे बिल्कुल मुख़्तलिफ़ इन्हीअ करे नज़र था अचनि, जो उहे ख़रोंशी (गडु॒हिन जे चपनि वांगुरु) नमूने में साजे॒ खां खाबे॒ लिखिजण में आया। डाक्टर पठाण लिखे थो, ''एतिरे कदुरु जो अरबी लिपी जेका निबाताईननि खां उधारी वरितल समझी वञे थी, घणे भाङे हिंदू नागरी लिपीअ खां असर वरितल आहे।''

हिंदू असर हेठि अज़ीम शामी शाइर अब्दुल अब्दुलाउल मिसरी हिंदू थी हिंदू धर्म जे ज़ेर असर गोश्त जे बदिरां निबादात (भाजि॒यूं) वापराईंदो हो। हिलाज सिंध में आयो त दांहं कयाईं, अनाअलहक़ (अहम ब्रह्म अस्मी - मां सचु आहियां) त सूरीअ ते टंगियो वियो। एतिरे कदुरु जो हिक अरब सिंधी इश्क जो दास्तान वजूद में आयो। लोआई मुहम्मद जे वारिसनि मां हो, खेसि ऐं संदसि ज़ाल खे आसिम नाले हिक पुट हो। उहो कुटंब सिंधु जे सामारह नाले जाइ ते वसी वियो, जिते हुन हिंदुनि जे मंदिर जी मरमत में हिस्सो वरितो। आसिम सीता जी मुहब्बत में गिरफ़्तार थियो, जेका मंदिर जे पूजा॒रीअ जी धीअ हुई। पर लोआईअ आसिम खे हिंदू थियण जी इजाज़त न डि॒नी ऐं न ई

पूज॒ारीअ सीता खे मुसलमान थियण जी मोकल ड॒िनी। आख़रि हिंद ब॒िन्ही खे सनेबा (मशहूर सिंधी अगु॒वान जे. एम. सैय्यद जो अबाणो ग॒ोठ सन) वठी आई। ब॒िन्ही पंहिंजे पंहिंजे मज़हब में रहंदे शादी कई। जड॒हिं सीता मरी वेई त आसिम पंहिंजो पाणु संदसि चिख्या में उछिलाए कु॒र्बान कयो।

पर ब॒ी तरह सिंधियुनि ऐं अरबनि जा नाता घणो सुठा न हुआ। अरब जुदा बस्तियुनि में रहंदा हुआ, ख़ास करे ब्रह्मण-आबाद जे जाड़ शहर मंसूरह में, जड॒हिं त आम माण्हू पंहिंजे नमूने मुक़ामी वड॒ेरनि जे राज॒ में रहंदा हुआ। सिंधी बग़दाद में थी गुज़िरियल वाक़अनि खे डप विचां ड॒िसंदा हुआ। हिन वक्त बि सिंधी ब॒ोलीअ में बग़दाद जी माना आहे 'जु॒ल्म जी इंतहा' मुहम्मद ग़ज़नवीअ जे सिंध जे फ़तह सिंध में अरब गवर्नरनि जे लांढ जो ख़ात्मो आंदो ऐं अहिड़ीअ तरह मक़ामी राजपूत नसल जे सूमरनि खे अगि॒यां वधण जो मौको मिलियो। अजु॒ हिंदुस्तान में अरबनि जे टे सौ साल डिघे अर्से ताईं कयल राज॒ जो को निशान बि नाहे। ब्रह्मण-आबाद ऐं मंसूरह जा जाड़ा शहर जेके हाणे रुग॒ो 'ब्रह्मण-आबाद' जे नाले सां ज॒ाता वञनि था, एतिरे कदुरु पूरीअ तरह तबाह थी विया, जो पुरातत्व विज्ञान जे माहिर रिचर्डसन मूजिबि ''हरहिक घर जे हेठां वीह बैरल बारूद रखिजे त बि खेसि मुकम्मल तोर तबाह न करे।''

सिंधु जे किरदार ते अरबी असर जे बारे में डाक्टर पठाण बिल्कुल चिथर करे थो। हू साल 1978 ई. में लिखे थो, ''सिंधी माण्हू अरब मनोवृतीअ जो पुतलो आहे। फ़ारिग़ वक्त जो ज़िदी हो, ओतिरो ई डिज॒िणो आहे ऐं ताकत जो मुकाबिलो नथो करे सघे। अरब वांगुरु हू घणियुनि छोकिरियुनि सां शादियूं करण जो शौकीन आहे ऐं जिस्मानी लाग॒ापा केतिरियुनि छोकिरियुनि सां रखंदो ऐं रखी सघंदो आहे, जिनि खे सरेतियूं चयो वेंदो आहे। ग़ज़ोह में अरबनि जूं मइसूल वांगुरु औरतूं भज॒ायूं (चोरायूं) वेंदियूं आहिनि... इन्हीअ करे सिंध में औरतूं ड॒ोह ऐं रतोछाण जो कारण आहिनि।'' हू वधीक चवे थो, ''नफ़सियाती ख़ूबियुनि में हिकु सिंधी अरब जो भाउ आहे, जेको हर वक्ति इंतज़ामी ऐं दोखेबाज़ हूंदो आहे। सच्चे अरब वांगुरु हू चालाक, मुनाफ़ो चाहींदड़ ऐं बेमिसल साज़िशी आहे।'' डाक्टर पठाणु एतिरे कदुरु बि लिखे थो त कु॒रेशी (मुहम्मद जो घरू नालो) जी अरबीअ में माना आहे, ''सामूंडी शैतान'' ''नाजायज़ फ़ाइदो खणंदड़।''

प्रोफ़ेसर हुमायूं कबीर चयो हो त हिंदुस्तान जी हुकूमत इसराईल जे बर्ख़िलाफ़ अरबनि जी हिमायत करे थी, जड॒हिं त हिंदुस्तान जो अवाम अरबनि जे ख़िलाफ़ इसराईल जी हिमायत करे थो। हुन इन्हीअ जो करण ब॒ार्वीह सौ वरिहय अग॒ु अरबनि जी सिंधु ते सोभ ज॒ाणायो आहे। हू बिल्कुल दुरुस्त आहे। नसली यादगीरीअ अरब फ़तह खे नकी विसारियो आहे, न ई माफ़ कयो आहे। सिंधी मुसलमान पिण घणो अग॒ु वारी अरबनि जी काह लाइ हिंदुस्तानियुनि वांगुरु ख़िलाफ़त में शामिल आहिनि। अज॒ु उहे सिंधी सिंधू देश जे 'ड॒ाहरसेन' जी इज़्ज़त कनि था ऐं मुहम्मद बिन कासिम खे हिक हमलावर जे हैसियत में ड॒िसंदे उन खां नफ़रत कनि था।

सिंधु जो अज़ीम बुज़ुर्गु शख़्स जी. एम. सैय्यद ऐं ''आज़ाद सिंध'' हलचल जे पोयां तहरक में आणींदड़ जज़िबो हकीकत में ड॒ाहर जे तदबीर ऐं बहादुरीअ जे बारे में बेख़ुदी आहे। सैय्यद मुताबिक ड॒ाहर त पैग़म्बर जे ड॒ोहिटे हज़रत इमाम हुसैन खे पनाह ड॒ियण जी इच्छा कई, जंहिं जी शादी हिक सिंधी छोकिरीअ सां थियल हुई, जंहिंखे पंहिंजे घर में आज़ारियो वियो हो। हू सिंध ड॒ांहं वञी रहियो हो ऐं रस्ते ते कर्बला जे मुक़ाम वटि रोकियो वियो ऐं खेसि निहायत बेदर्दीअ सां क़त्ल कयो वियो। सिंधी इमाम हुसैन लाइ रोअंदा आहिनि ऐं राजा ड॒ासरसेन लाइ बि हंजूं हारींदा आहिनि।

6

झूलेलाल

1017 ई. जे शुरूअ में जडुहिं मुहम्मद ग़ज़नवी सोमनाथ जी लुट-मार करे मोटियो थे त हुन सिंधु जो रस्तो इख़्तियार करण जो फ़ैसिलो कयो, पर सिंधु में जतनि खेसि अहिड़ा टोटा चबाया, जो पोइ सागिए साल सिंधियुनि खे सेखत डियण लाइ खेसि ख़ास तौर ते काह करिणी पेई। उन्हीअ काह जो मज़हबी कारण इहो हो जो मुहम्मद सुन्नी हो ऐं बग़दाद जे ख़लीफ़े जे असर हेठि हो ऐं सिंध जा मुसलमान मिसिर जे शिय्या राजाउनि क़रमणयुनि (Karmations) खां मुतासिर हुआ, जेके कमबतह अल्लाह मां हजरासोद (मुक़दस कारो पथर) बि पट खणी विया हुआ। हिंदुस्तान में क़रमणी अधु हिंदू हुआ। उन्हनि पैग़म्बर जे नाठीअ ऐं चोथें ख़लीफ़े हज़रत अली रज़ खे विष्णूअ जो डुहों अवतार ज़ातो हो।

ज़ाहिरी तरह मुहम्मद जी इहा काह का ख़ास काम्याब न वेई पर सहयोगी मुसंफ़ इहो नथा बुधाइनि। पोइ जा खुशामदी इतिहासकार इहा दावा कनि था त मुहम्मद सिंधियुनि खे दरियाई वेढ़ि में वडी शिकस्त डिनी हुई, जंहिं में इल्ज़ाम तौर संदनि 1400 बेड़ियुनि, सिंधियुनि जे 4000 बेड़ियुनि खे बोड़ियो हो। उहे इतिहासकार इहा पिण दावा कनि था त मुहम्मद जी जनम-पत्री पैग़म्बर जहिड़ी हुई, जेका पोइ हुननि खे मुंझाए सघे थी।

पर फ़तह जी दावा ते इतिहासकारनि जो इख़्तलाफ़ आहे। उहे निशानदेही करे चवनि था त मुहम्मद जो लश्कर ज़मीनी हो ऐं कडुहिं बि जल थल वासी न रहियो हो।

हू इहो पिण बुधाइनि था त मुहम्मद हिन खां अगु कडुहिं बि बेड़ियूं इस्तैमाल न कयूं हुयूं ऐं इहो बि त एतिरियूं बेड़ियूं सिंध पंजाब जे दरियाउनि खे गडु कजनि त बि न मिलंदियूं।

मुहम्मद जे पोइलगनि जी दावा आहे त मुहम्मद जे बेड़ियुनि जे तरे में लगल लोही कात जहिड़नि कंढनि सिंधी बेड़ियुनि खे तबाह करे ऊंधो करे

छड़ियो हो। इतिहासकार पुछनि था : मुहम्मद जे लोही कंढेदार बेड़ियुनि इन्हीअ अमल में पाण ऊंधे थियण खां सवाइ सिंधी बेड़ियुनि खे कीअं ऊंधो कयो हूंदो!

पर ड़िसिजे त मुहम्मद केतिरनि ई सिंधियुनि खे गुलाम बणाए पाण सां गडु वठी वञण में काम्याब थियो हो। अजु यूरोप जे सठ लख ख़ाना-बदोश (जिपसीज़) में खेनि सिंतीस (Sintis) जे तौर ते सुञातो वञे थो।

पर इतिहास जे शागिर्दनि खे टे नुक्ता ध्यान में रखणु घुरिजनि। मुहम्मद, जंहिं 1000 ई. ऐं 1026 ई. दौरान सतरहां भेरा क़ाहियो। सिंध जे काह खां पोइ वरी कड़हिं काह न कयाईं। जेतोणीकि हिन पोइ बि ब़िया पंज वर्हिय हुकूमत कई। ब़ियो फ़रमती अजु बि इस्माईली खोजनि (ख़ोजन) जी सूरत में मौजूद आहिनि। जिनि सां 1937 ई. ताईं 'हिंदू शहरी कानून' (Hindu Civil Law) लागू रहियो। जिनि मां मौजूदा सिंध जा मशहूर अगुवान जहिड़ोकि मुहम्मद अली जिन्नाह ऐं आग़ाख़ान थी गुज़िरिया आहिनि। टियों महमूद जे हमले सिंध में अरबनि जे वजूद खे ख़तम करे छड़ियो। जंहिं खां पोइ राजपूत नस्ल जा सूमरा सिंध जा ख़ुदि-मुख़्त्यारकार हुकमरान थी उभिरिया।

सूमरनि में पहिरियों वडो नालो यारहीं सदीअ जे शुरूअ में राजा दलूराइ जो हो। लोक कहाणीअ में राजा दलूराइ खे बदि किरदार शख़्स तौर याद कयो वियो आहे। हर नईं कुंवारि खे 'सुहाग रात' साणुसि गुज़ारिणी पवंदी हुई। अकीदो इहो आहे त भगुवान पंहिंजो कहर मथिसि नाज़ल कयो ऐं 'दलूराइ जी नगरी' नास कयाईं। कंहिंखे ख़बर नाहे त दलूराइ जे गादीअ जो उहो हंध कहिड़ो हो। पर मकानी माण्हू सिंध में हर वड़े भड़े (खंडहर-ढेर) खे 'दलूराइ जी नगरी' था बुधाईनि।

मुम्किन आहे विचें अहद जे मआशरनि में इंसानी तारीख़ जी पुराणी राइज रस्म 'राजा सां सुहाग रात' वांगुरु दलूराइ 'पहिरीं रात' मल्हाईंदो हुजे। (कुझु वक्तु अगु केराला जे किनि ज़ातियुनि जा घोट कुंवार जो 'कुंवारप जो पर्दो' फाटण सां रत वहण खे तशदद तस्सवुर करे इहा 'रतोछाण' पेशे वारनि खां कराईंदा हुआ।) उन रीत मुमकिन आहे त अवामी कबूलियत उन्हीअ खे मथाहें दर्जे जी इख़्लाकियात ज़ातो हुजे। छाकाणि त अवाइली दौर जो को जोड़ो सूमरनि जो मुख़ालिफ़ ऐं संदनि दुश्मन साहितीअ (विचोले) जे सहतनि जो

घणघुरो- दलूराइ खे उन्हीअ अमल करे निंदीदो हुजे ऐं ॿिया ज़रीआ खेसि ऊच ऐं इंसाफ़ पसंद राजा जे तौर ते साराहींदा हुजनि।

इहा दिलचस्प ॻाल्हि आहे त अलवर ऐं ब्रह्मण आबाद जा फिटल आसार, जेके हिक ॿिए खां सवें मेल परे आहिनि, ॿई 'दलूराइ जी नगरी' समुझिया वेंदा आहिनि। पर हाणे ख़बर पेई आहे त ब्रह्मण आबाद, दलूराइ खां पंजाहु वर्हिय अॻु 662 ई. में धरतीअ धुॿण सबब बर्बाद थी वियो हो ऐं अलवर टे सौ वर्हियनि खां पोइ दरियाह जे पेट मटाइण सबब बर्बाद थी वियो हो!

इतिहासु वाकिअनि जे दास्तान खां ॿियो बि घणो कुझु आहे। इहो माण्हुनि जे उम्मेदुनि आरज़ूअनि ऐं ख़ौफ़नि जो इज़िहार पिण आहे। दलूराइ जे नगरीअ जी कहाणी माण्हुनि जे दिलियुनि ऐं दिमाग़ में किरियल इख़्लाक्यत खे रद्द करण ऐं आला इख़्लाकी कदुरनि जे हिफ़ाज़त जो हिकु इंसानी तरीको आहे।

सूमरनि सिंधु ते घणो करे 1315 ई. ताईं लॻभॻ टे सौ वर्हिय हुकूमत कई। पर उहे केरु हुआ? के मुसलमान लेखक इहो समुझनि था त मंझिनि घटि में घटि को अरबी ख़ून ज़रूर हो। पर आलिमनि खे को शक नाहे त जाड़ेजा पिण राजपूतनि वांगुरु परमार हुआ। 'तारीख़ ज़ाहिरी' मुताबिक सूमरा हिंदू हुआ। सोरले (H. T. Sorley) मुताबिक सूमरा पोइ मुसलमान थिया। पर कॾहिं? इहा कंहिंखे बि ख़बर नाहे। हू चवे थो त उहे जाड़ेजनि (राजपूतनि) वांगुरु आहिनि। "जिनि लाइ हिक भेरे राउ ख़ुदि पक सां चयो हो त ॿिनि हज़ार जाड़ेजनि मां टे बि अहिड़ा न हुआ, जिनि खे इहा ख़बर हुजे त संदनि मज़हब कहिड़ो हो।"

ज़ाहिर आहे त सूमरा हिंदू हुआ, जिनि ते कुझु इस्लामी असर हो, जेके पोइ नाले मात्र मुसलमान थिया ऐं पंहिंजो हिंदू कल्चर काइमु रखियाऊं।

एॾे वक्त जे फ़ासले ते सूमरा हाकिमनि, राजपाल, भूंगर ऐं दोदे खां वठी हमीर नंगर ऐं चनेसर ताईं जे औसर (तरकी) ऐं ज़वाल जे मामले में वञण जी ज़रूरत नाहे। एतिरे कदुरु जो हिकु नुहरो दोदो पिण हो, जंहिं अलाद्दीन जे फ़ातह लश्कर जे सिपहसालारनि खे सिंधियुनि जी ख़िलजियुनि सां बेरुख़ीअ तौर खाॿे हथ सां खीकारियो हो। पर बादशाहनि जे तारीख़ुनि खां वधीक चिटा

माण्हुनि जा उहे रिज़्मय दास्तान आहिनि, जेके संदनि समाजी ज़िंदगी ऐं कल्चर ते घणी रोशनी विझनि था। अरनोल्ड टॉइन बी (Arnold Toynbee) पंहिंजी रचना 'तारीख़ जो मुतालो' (Study of History) में लिखे थो- ''तारीख़, नाटक ऐं नाविल वांगुरु डुंद कथा जे सूरत में सृजे थी, जेका परूड़ण ऐं इज़हार जो अवाइली तरीको आहे। जंहिं में जीअं परियुनि जे आखाणियुनि में हूंदो आहे, जेके नौजुवान डिसंदा आहिनि। हकीकत में तस्वीर में का बि लीक कढियल न हूंदी आहे।'' मिसाल तौर इलियड जे बारे में चयल आहे त ''जेको बि उहा तारीख़ तौर पढ़ंदो त डिसंदो त उहा कल्पनाउनि सां भरी पेई आहे। पर सागीअ तरह जेको उहा बि अफ़साने तौर पढ़ंदो त डिसंदो त उहा तारीख़ सां भरी पेई आहे।'' सिंधी लोक कहाणियुनि सां सागी गाल्हि लागू थिए थी। जेके तारीख़ ऐं कहाणीअ खे पाण में जोड़े अदब पैदा कनि थियूं, जेको ज़िंदगीअ खे गहिराईअ सां पधिरो करे थो ऐं मुकम्मल रूप सां पधिरो करे थो।

सिंधु जी सभ खां आगाटी कहाणी 'राइ डियाच' जी आहे, जंहिंजो हंधु लाड़ खां सौराष्ट्र ताईं पखिड़ियल आहे। अरबनि जे फ़तह खां पोइ सिंधु जा समा राजपूत सौराष्ट्र (सिंधीअ में- सोरठ) डांहुं लडे विया हुआ। यारहीं सदीअ जे पहिरिएं डहाके में राइ देवास (डियाच) जेको समन जे 'चुदा' नुख मां हो, झूनागढ़ जे गिरनार में राजु कंदो हो। संदसि भेण खे जडहिं पुटु ज़ाओ त जोतिष्युनि चयो त हीउ वडो थी पंहिंजे मामे जो कंधु कपींदो। पर हूअ पंहिंजे बार जी सूंहं ऐं मासूमियत खां एडो मुतासिर थी, जो खेसि टोकरीअ में विझी दरियाह में वहाए छडियाईं। टोकरी राजा अन्नीराइ जे राज में हिक चारण खे हथि आई, जंहिं बार जो नालो बीजल रखियो। बीजल वडो थी माहिर रागी बणियो। उन वक्त गिरनार में रतने कुंभार जी धीअ सोरठ जो मङिणो अन्नीराइ सां थियो। जडहिं जञ रस्ते तां लंघी त राइ डियाचु रस्तो रोके सोरठ खे खणी वियो ऐं वञी साणुसि शादी कयाईं।

अन्नीराइ पंहिंजे इन्हीअ बेइज़्ज़तीअ ते डाढो कावड़ियो। हुन कीमती हीरनि ऐं जवाहरनि जे भरियल थाल्ह जे इनाम डियण जो ढंढोरो घुमायो त इहो उन्हीअ खे डिनो वेंदो, जेको संदसि बेइज़्ज़तीअ जो बदिलो वठंदो ऐं राइ डियाच जो सिर वढे आणे डींदो। बीजल जी ज़ाल, जंहिं खे पक हुई त संदसि मुड़िसु पंहिंजे मोहींदड़ आवाज़ वसीले का बि शइ आणे सघे थो, तंहिं उहो जवाहरनि जो थाल्हु इहो वाइदो करे वरितो त इएं ई थींदो।

बीजल जे घर अचण ते संदसि ज़ाल चयो त वञी राइ डियाच जे दर ते सैन हणु एं जडहिं राजा खेसि कुझु घुरण लाइ चवे त खांउसि संदसि सिरु घुरी वठिजि। बीजल इएं ई कयो। राजा बहादुरीअ ऐं सख़ा सां पंहिंजो सिरु डियणु कबूलियो ऐं चयाईंसि- "जेकडहिं मूं वटि सवें सिर हुजनि हा त तुंहिंजे हिक सुर तां कुर्बान करियां हा।" सिंधु जे महाकवि शाह अब्दुल लतीफ़ इन्हीअ कहाणीअ खे पंहिंजे 'सुर सोरठ' में अमर करे छडियो आहे। इन्हीअ कहाणीअ जा चार नुक्ता आहिनि। न्याउ ज़रूर कयो वञे, किस्मत जो लिखियो अण-टरु आहे, गुह गुठा औरत जी मौतमार कमज़ोरी आहिनि ऐं माण्हूअ ते संगीत जी सघ सभ खां प्रबल आहे।

उन्हीअ सागिए दौर जी हिक बी कहाणी आहे 'लीला चनेसर' चनेसर ठटे जे भरिसां देवल कोट जो सूमरो हाकिम हो। संदसि ज़ाल जो नालो लीला हो, जंहिं सां संदसि डाढी दिल हुई। लखपत जे सोलंकी राजा राइ खंघार जी धीअ कौंरू जी दिल चनेसर सां अड़िजी वेई, पर खेसि हिरखाए न सघी। इनकरे सिटाउ सिटियाईं ऐं नौकरियाणीअ जो वेस करे लीला वटि वञी संदसि बान्ही थी। कुझु वक्त खां पोइ लीला खे हिकु कीमती हार इन्हीअ शर्त सां डियणो कयो त हूअ खेसि चनेसर सां हिक रात घारण जी इजाज़त डींदी। हार जे लालच में ऐं इन्हीअ उम्मेद ते त चनेसर शराब जे नशे में कौंरूअ ऐं लीला में फ़र्कु न समुझंदो, लीला इहा आछ कबूल कई। पर चनेसर हकीकत समुझी वियो। हुन लीला खां मुंहुं मोड़े छडियो ऐं कौंरूअ सां शादी कई। हीअ कहाणी औरत जे गुहिणनि तोड़े मामूली शयुनि ते हिरखण जे कमज़ोरीअ तां पर्दो खणे थी। हीअ कहाणी इन्हीअ गाल्हि ते ज़ोरु थी डिए त मालिक खे पोइ खणी उहो संसारी हुजे या रूहानी, सवलाईअ सां बेवकूफ़ बणाए नथो सघिजे।

शाहु पंहिंजे सुर लीला चनेसर में लीला खे मुख़ातिब थी चवे थो-

"तो जो भांयो हार, सो सूरनि जो सगिड़ो।"

लीला पछिताउ ज़ाहिरु कंदे चवे थी-

"अला डाही म थियां! डाहियूं डुख डिसनि।"

शाहु पछाड़ीअ में लीला खे सलाह डींदे चवे थो-

"लीला लुछु म एतिरो, उथी अङण सोरि,
अवो डाडो घोरि, पाण मृधो पिरियुनि तां।"

पर उन्हीअ दौर जी नायाब सिंधी रिज़्मय कहाणी 'उमर मारुई' आहे। मारुई ग॒ोठाणी नींगरी आहे, जेका पंहिंजे सङिणे (मंगेतर) खेत सिंह सां मङियल आहे। जड॒हिं उमर कोट या अमर कोट जे सूमरे हाकिम उमर खे संदसि सूंहं जी ख़बर पवे थी त हू खेसि ज़ोरीअ खणी अची पंहिंजे किले में कैद करे थो रखे ऐं खेसि शादी करण लाइ हिरखाए थो। मारुई इंकार करे थी। हूअ अमीराणा खाधा खाइण ऐं को बि ग॒हिणो पाइण कबूल नथी करे। एतिरे कदुरु जो पंहिंजे वारनि में तेल बि नथी विझे। खेसि डपु आहे त संदसि अबाणनि खेसि विसारे छड॒ियो आहे, जो मतां उहे समुझंदा हुजनि त थर जे भिटुनि जे भेट में हाणे महिलात छड॒णु नथी चाहे। इएं हूअ पंहिंजे अबाणनि ड॒ांहुं न्यापा थी मोकिले। पोइ हिक ड॒ींहुं हूअ उमर खे चवे थी त हूअ ब॒ाहिरि घुमण लाइ वञणु थी चाहे। इन्हीअ ग॒ाल्हि ते उमर सोचे थो त हाणे मारुई ख़ुशि आहे ऐं मथिसि राज़ी थी आहे। पर हूअ उमर जे कोट मां छोटिकारो पाए ब॒ाहिरि वञी पंहिंजे वतन पहुचे थी, जिते संदसि अचण ते ख़ुशियूं कयूं वञनि थियूं।

मारुई असांखे सीता जी याद ड॒ियारे थी, जेका लंका में कैद हुई। इहा ग॒ाल्हि काफ़ी दिलचस्प आहे, जो रावण तोड़े उमर ब॒ई मुअतबर शख़्स हुआ, जिनि पंहिंजा इरादा बेवस औरतुनि ते न मढ़िया।

मारुई पंहिंजी ग॒ाल्हि ते अटल आहे त हूअ ग़रीब आहे। पंहिंजे मुड़िस सां मुहब्बत अथसि, अग॒े ई मङियल आहे ऐं मुहब्बत या दौलत या ब॒िन्हीं सबबनि करे कंहिं धारिएं सां शादी न कंदी। संदसि पंहिंजे ग़रीब वतन ऐं ग़रीब माण्हुनि सां मुहब्बत असांजे दिल में भलारे थर वञण ऐं उते रहण जी ख़्वाहिश थी जाग॒ाए। संदसि पंहिंजे वतन लाइ थर बेकरारी सिंधी अदब खे देश प्रेम जी शाइरी अदा कई आहे।

शाह जी मारुई चवे थी-

"हेक जीअं न ज॒ायास, ब॒ियो ज॒ापंदे जे मरां!...."

"पटौला पंवहार खे उमर! आछि म तूं...."

"ईअ न मारुनि रीत जीअं सेण मटाइणु सोन ते...."

"मुयाई जीयांसि जे वञे मढु मलीर ड॒े...."

काश! मां ॼमां ई न हा।

या जेकॾहिं ॼमां हा,

त हिन बदिनामीअ जे बदिरां ओॾी महिल ई मरी वञां हा।

ऐ उमर, हिन ग़रीब छोकरीअ खे पंहिंजा रेशमी कपड़ा पाराए खिलहणाब न करि।

असां ग़रीब ज़रूर आहियूं,

पर पंहिंजा वर सोन ते न मटाईंदा आहियूं।

ऐ उमर, जॾहिं मरां त मुंहिंजो लाश मुंहिंजे वतन उमाणिजु।

जिते मां ॿीहर जीअरी थी पवंदसि....

'उमर मारुई' हुब अलवतनीअ जो हिकु डिघो राॻु आहे। उन खां वधीक इहो ''स्व धर्म'' असांजे ज़िंदगीअ जे कदुरनि ऐं ज़िंदगीअ जे असलूब लाइ हिक दलील आहे। 'उमर मारुई' अॼु जे कौम परस्तनि लाइ उत्साह जो जीअरो जाॻंदो वसीलो आहे।

पर डिघो ऐं यादगार 'सूमरनि जो दौर' दोदे ऐं चनेसर जे इतिहासिक छिकताण में सांढियल आहे।

तेरहीं सदीअ जे पछाड़ीअ में जॾहिं भूंगर राउ मरी वियो त मुख्य अमीरनि संदसि लोहारिणि ज़ाल मां जनमु वरितल वॾे पुट चनेसर बदिरां ॾाॾे पोटे ज़ाल मां पैदा थियल नंढे ऐं हुअणहार पुट दोदे खे तख़्त ते विहारण जो फ़ैसिलो कयो। माटेले भाउ दोदे खे पॻ जी लालच न हुई ऐं हिन एतिरे कदुरु चयो त हू नाले में राॼु कंदो पर हकीकी हाकिम चनेसर हूंदो, पर उन्हीअ जे बावजूद नंढे भाउ जे रस्मी राॼ तिलक चनेसर जे माउ ऐं ज़ाल खे इएं नाराज़ करे विधो, जीअं कैकई ऐं मंथरा राम जे राॻ गद्दीअ ते विहण करे नाराज़ थियूं हुयूं। उन्हनि चनेसर खे भड़िकाए देहलीअ मां अलाउद्दीन ख़िल्जीअ खे मदद लाइ वठी अचण लाइ रवानो कयो। 1296-1300 ई. में सिंधु ऐं खिल्जियुनि विच में वॾो मुकाबिलो थियो। हिकु वॾो लश्कर गुजरात जे रस्ते सिंधु पहुतो। लश्कर एॾो वॾो हो, जो सिंधी चारणनि चयो आहे-

''एतिरो पाणी पीताऊं, जो साबरमती सुकी वेई।''

ख़िल्जियुनि न रुगो दोदे खे तख़्त तां लाहे चनेसर खे उन ते विहारणु थे चाहियो, पर हिननि भूंगर राउ जे टीं डाडे पोटे ज़ाल मां पैदा थियल ज़ाल भागी (बाघी) जो सङु अलाउद्दीन लाइ घुरियो। पर सङ जे उन्हीअ घुर खे रद्द कंदे सूमरनि चयो- ''तूं तुरिकु असीं सूमरा, अहिड़ी जोड़ न जुगाए।'' पोइ जंग लगी ऐं बिन्हीं धुरियुनि जो नुक्सान थियो। दोदे जो पुटु भूंगर बियों ऐं चनेसर जो पुटु नंगर नहरू 'नहरू' पिण दोदे जे तरफ़ां बहादुरीअ सां विढ़िया ऐं मारिजी विया। सबड़ अबड़े, जेको सूमरनि जो सरदार हो ऐं सूमरनि जो तरफ़दार हो, अलाउद्दीन जे पुट सैय्यद ग़ाज़ी सालार खे मारे छडियो। जडहिं दोदे खे नेज़े में टंगे मथे उभो कयो वियो त भरिसां बीठल चनेसर खे चयाईं, ''आऊं अञा बि तोखां मथे आहियां!''

इन्हीअ विच में जडहिं संदसि वतन ऐं माण्हुनि ते ख़िल्जियुनि हमलो कयो त चनेसर बीहर सोचण ते मजबूर थी पियो। सिंधु जे ख़िलाफ़ डाढायुनि जे करे हाणे खेसि अलाउद्दीन लाइ नफ़रत थी पेई। समुझियो थो वञे त अलाउद्दीन सां विढ़ंदे मारिजी वियो हो।

हिन दास्तान जो सभ खां अहम पहलू इहो आहे त सिंधु में ख़िल्जियुनि जे ख़िलाफ़ इहा आम माण्हुनि जी जंग हुई। एतिरे कदुरु जो हारी ऐं नारी, धन्नार ऐं गुंवार, चारण ऐं फ़कीर, मुहाणा ऐं मीर बहर, कुंभर ऐं कोरी, सभु कुडी उन्हीअ जंग में काहे पिया। उन्हनि सभिनी जो नारो हो, ''तलवार असांजो हरु आहे।''

सूमरियूं महल माड़ियूं छडे गुझी तरह समन जे साम में रहण लाइ निकिरी वेयूं। अलाउद्दीन जडहिं उते पहुतो त कारीअ वारा कख डिठाईं। हू परेशान ऐं ना-उम्मेद थी मोटी वियो।

अजु डींहं ताईं सूमरनि जी सूरहियाई ऐं सूमरियुनि जी सूंहं ऐं पवित्रता जे साराह जा गीत गाता वेंदा आहिनि। दोदे जे शहादत खे अञा ताईं हर साल चेट महिने में मेले जे सूरत में मल्हायो वेंदो आहे। टे सौ वर्हिय आगाटा उहे गीत अजु बि सिंधी माण्हुनि जे चपनि ते आहिनि।

''सिंधु सूमरनि जो साहु आहे
वगॖह कोट ख़ुदा जो पंहिंजो कोट आहे!
शाल संदसि शानु ज़रो बि झको न थिए
ओ दोदा!
जसु हुजे तुंहिंजी माउ खे
जंहिं तोखे जनमु ॾिनो
सिंधु जा सूरमा अॼु बि दुश्मननि सां
सीनो सुपर आहिनि
ऐ ख़ुदा, खेनि सोभारो कजि
शाल हिन भलारी भूंइ ते
अमन ऐं ख़ुशहाली हुजे....''

सूमरनि असांखे वीहीं सदीअ में सिंधु जो आइला वज़ीर अल्लाह बख़्श सूमरो ॾिनो, जंहिं मरण घड़ीअ ताईं विरहाङे जी मुख़ाल्फ़त कई ऐं सूमरनि जे दौर जूं सिंधी माण्हुनि जे दिलियुनि में वसंदड़ ॿ प्यारियूं शख़्सियतूं आहिनि- **झूलेलाल** ऐं **लाल शहबाज़**।

कलंदर **लालु शहबाजु** 1143 ई. में हाणोके अफ़ग़ानिस्तान जे मरवंद शहर में ॼाओ हो। संदसि असुल नालो पीर उस्मान शाह हो। हू सिंधु में अची सेवहण में रहियो, जेको आॻाटे शिव मंदर जे करे मशहूर हो। हू पहिरियों नाले वारो मुसलमान हो, जंहिं सिंधु में मुहब्बत ऐं सबुर जो प्रचार कयो, तंहिंकरे हू हिंदू मुसलमान ॿिन्हीं में हिक जहिड़ो प्यारो थियो। खेसि शहबाज़ इन्हीअ करे चवंदा हुआ जो हू पंहिंजो पाण खे शहबाज़ जी सूरत में तब्दील करे पंहिंजे दोस्त शेख़ फ़रीद गंज शुकर खे कट्टर मुलनि जे फाहीअ तां लाहे पाण सां खणी आयो हो। खेसि लाल लिबास पाइण करे लालु कोठियो वेंदो हो, जेको हू समूरी ज़िंदगी पाईंदो रहियो। लाल शहबाज़ सिंधु जो पहिरियों अहम सूफ़ी संत आहे। हिंदू खेसि महाराजा विक्रमादित्य जे भर्तहरीअ जो अवतार मञींदा आहिनि। जंहिं लाइ चयो वञे थो त हुन शिव जी पूॼा उन हंध ते कई हुई, जिते अॼु कल्ह लाल शहबाज़ जी मजार आहे।

ॿी मुक़द्दस (पवित्र) शख़्सियत झूलेलाल आहे, जेको उॾेरोलाल ऐं अमरलाल ऐं लाल साईंअ जे नालनि सां सुञातो वञे थो। ॾहीं सदीअ में

जड॒हिं अरबनि जो ज़वाल (पतनु) शुरू थियो ऐं सूमरा उसिरी रहिया हुआ त ठटे जे तइसबी हाकिम मिर्ख शाह हिंदुनि खे मुसलमान थियण जो हुकुम ड॒िनो हो। परेशान माण्हू सिंधूअ जे किनारे ते गड॒ु थिया ऐं बचाव लाइ वरुण देवता ते गड॒िजी सामूहिक प्रार्थना कयाऊं। ड॒ंद कथा मूजिबु हिकु सुहिणो जुवान जंगी घोड़े ते चढ़ी दरिया मां निरवार थियो, जंहिं केतिरा ई करिश्मा ड॒ेखारिया ऐं माण्हुनि खे सकाफ़ती नस्ल कशी (सांस्कृतिक ज़वाल) खां बचायाईं। संदसि दर्शन नसरपुर में करायो वेंदो आहे, जिते संदसि लाइ मञियो वञे थो त ब॒ालक जे रूप में रतनराइ लोहाणे ऐं संदसि ज़ाल देवकीअ खे सोने झूले या पींघे में भग॒ुवान कृष्ण वांगुरु ज॒ाओ हो। ब॒ियनि हंधि खेसि लहिराईंदड़ अछी ड॒ाड़हीअ सां गुरूनानक वांगुरु पर पाणीअ जी पैदावार मछीअ ते वेठल ड॒ेखारियो वेंदो आहे। पर ज़ाहिरी तरह हू हिकु नौजुवान अग॒ुवान हो, जंहिं हज़ार वर्हिय खनु अग॒ु सिंध जे हिंदुनि खे मुसीबत खां बचायो हो। अज॒ु ताईं संदसि मान में मंदर जोड़ाया वेंदा आहिनि ऐं संदसि शान में पंजड़ा ग॒ाता वेंदा आहिनि। वेझिड़ाईअ में रूना लैला जे सुरीले आवाज़ में ग॒ातल गीत 'दमादम मस्त कलंदर' हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान में हिक जहिड़ा मकबूल आहिनि।

ओ लाल! मुंहिंजी पति रखियो सदा झूलेलाल!....

(ओ सिंध जा साईं झूलेलाल, सेवहण जा साईं लाल लिबास वारा कलंदर तूं वड॒े शान वारो आहीं, मूं ते शाल तुंहिंजी महिर हुजे!

तुंहिंजी मजार हमेशा चइनि मशालुनि सां रोशन आहे ऐं हाणे मां तुंहिंजे मान में पंजीं मशाल रोशन करण आई आहियां।

शाल तुंहिंजो ऊचो नालो ऐं हिंद ऐं सिंध में वज॒ंदो रहे, शाल तुंहिंजे शान में घिंड ज़ोर सां वज॒ंदो रहे।

ओ साईं, शाल तूं हमेशा हर हंधि काइमु रहीं। मुंहिंजी वेनिती आहे त अलीअ जे सदिके मुंहिंजी ब॒ेड़ीअ खे ज़िंदगीअ जे दरिया मां पार लंघाइजि।)

7
सोनहिरी दौर

सूमरनि ऐं संदनि उमराउनि गडिजी ख़िल्जियुनि जे हमले जो मुकाबिलो कयो, पर उन्हीअ मुकाबिले सिंधु में सियासी कुवतुनि जो तवाज़न पूरीअ तरह सां बदिलाए छडियो। सूमरनि जो घणो रतु वहियो। सागिए वक्त समन जी हिमथ ऐं किरदार बहादुर ऐं चिटो थी बीठो। तंहिं करे अख़्त्यार लाइ बिन्हीं जे विच में छिकताण अणटर हुई। जीअं त सूमरनि वटि अगेई अख़्त्यार हो, तंहिंकरे देहली सरकार जो साणुनि साथ हो। देहली सरकार त मुलतान ऐं गुजरात जे राजाउनि खे बि हिदायत करे छडी हुई त उहे सूमरनि जी हिमायत कनि। पर समन जे फ़ाइदे में वधीक अनासर कम करे रहिया हुआ।

सूमरनि जे हुकमरानीअ जी सर-ज़मीन डखण ओभर सिंध हो, जडहिं त सुमा सूबे जे घणे हिस्से में पखिड़ियल हुआ ऐं समा अदद में सूमरनि खां वधीक हुआ। (मिसाल तौर 1901 ई. जी आदमशुमारीअ मूजिबि समा 732897 हुआ, जडहिं त सूमरा 102753 हुआ, जेको अदद जे लिहाज़ खां वडो फ़र्कु आहे।)

सिंधू पंहिंजो वहकिरो घटि में घटि 1250 ई. खां बदलाईंदी रही आहे। इहा ओलह डांहुं अलोर, ब्रह्मण-आबाद, अमरकोट, वागह कोट ऐं सूमरनि जे रोपाह खां परे ऐं समन जे सेवहण ऐं ठटे जे शहरनि डांहुं फिरंदी (मुंतकिल) रही आहे। सदियुनि खां रोहिड़ीअ जे टकिरीअ मां पथर खोटे, दरिया रस्ते सूमरनि जे शहर अमरकोट डांहुं अडावत जे कम लाइ मोकिलिया वेंदा हुआ। हाणे इहो सिलसिलो ख़तम थी वियो हो। तमाम जल्दी ओभर में वहंदे असलूको वाहु जेको मकानी तौर ते हाकिड़ो (घघर) ऐं महराण जे मुख़्तलिफ़ नालनि सां ज़ातो वेंदो हो, नंढे खां नंढो थींदो वियो। एतिरे कदुरु जो उहो 'उभिरंदे नारे' जे नाले सां सडियो वञे थो। नारा कैनाल जा अकेला यादगार सामूंडी मांगरमच्छ आहिनि। जडहिं उहो वाहु थर ऐं कच्छ मां वही अरबी समुंड में छोडु कंदो हो, तडहिं 'रत्नाकर' जे नाले सां सुञातो वेंदो हो। ज़ाहिर आहे त जडहिं दरिया समुंड डांहं वहंदे विच में सुकी वियो त मांगरमच्छ उन वक्ति उते फासी रहिजी विया।

हकीकत में आगाटे अलोर खां जेको रोहिड़ीअ जे ओभर में छह मील पर आहे, रोहिड़ीअ ऐं सखर जे विच वारे लक डांहं दरिया जे वहकिरे तं तब्दीलीअ खे तारीख़ी नतीजनि जो जाग्राफ़ियाई सिलसिलो आहे। रोहिड़ी ऐं सखर जे विच वारी टुकिरी हाणे सिंधु में बखर जो टाकिरो बेट थी पियो आहे। अलोर जो किलो हाणे डही पियो आहे ऐं उन्हीअ जाइ ते सिंधु जे बचाअ लाइ हिक मज़बूत किले जे अडावत लाइ उतां जूं सिरूं ऐं पथर मोकिलिया विया आहिनि। उन वक्त खां वठी सदियुनि ताईं ठटो डखण में ऐं बखर उत्तर में सिंध जा ब थंभा थी पिया।

सिंधूअ जे वहकिरे जे तब्दीलीअ सूमरनि जे किस्मत ते तबाहीअ जे हद ताईं असरु कयो। उन जे उबतड़ि समन जे किस्मत ते उज्जवल तजलेदार असरु पियो। इन्हीअ में को अजब नाहे त सूमरा उन्हीअ डींहं लाइ दुआ घुरंदा हुआ त कडहिं हाकिरो अलोर वटां वहंदो (समन खे मथभरो छडे सुकाए अलग कंदो) कडहिं उहे समन डांहं पाणीअ जी पैदावार जहिड़ोकि मछी, बीह ऐं लोढ़ सूखिड़ीअ तौर मोकिलींदा हुआ।

"हेक वहंदो हाकिड़ो, भजंदे बंध अरोड़,
बीह मछी ऐं लोड़ह समे वेंदा सूखिड़ी।"

पर दरिया पंहिंजो उलहंदियों वहुकिरो काइम रखियो। थकल सूमरा भिटनि ऐं चारणनि वटि बे-माना थी पिया। जिनि हाणे नवनि अमीरनि समन जे सख़ाव्त जे साराह जा गीत गाइण शुरू कया हुआ।

आख़िरी सूमरनि जे हिक अजीब मायूस भट चयो आहे, "जेकडहिं बाकी दुनिया असांजे फटिकार जी अधु हक़दार आहे त सूमरा सजीअ जा हक़दार आहिनि।" जेतिरे कदुरु समन जो वास्तो आहे त शाह लतीफ़ पिण चयो आहे, "जडहिं उहे नाराज़ आहिनि, तडहिं बि डियनि था, जडहिं उहे ख़ुशि आहिनि त पाण अगे खां वधीक डियनि था। हू बिन्ही हालतुनि में डाढा सुठा आहिनि।" इहो पिण मुम्किनि आहे त मारवाड़ जे सरहद खां अलग डखण ओभर जे वार्यासे इलाके में रहण करे सूमरा बेहदि कंजूस हुआ, तंहिंकरे उन वक्त जे 'सुधि समाअ जे माण्हुनि' (भटनि ऐं चारणनि) पिण समन जे उभिरंदड़ सिज खे सलाम करण खे तरजीह डिनी।

1315 ई. में वक्त बि वक्त लगुल लड़ायुनि खां पोइ आख़िरकार समनि खे सोभ हासिल थी, जडहिं देहली सरकार फडो विधो त समनि सेवहण में मर्कज़ जे गवर्नर मलिक रतन खे मारे विधो। सागिए साल समनि अवलि पंहिंजे शहर सामोई में राजधानी काइम कई पर जल्द ई उहा ठटे डांहुं खणी विया, जेका पोइ गादीअ जे हंध जे हैसियत सां हाकारिजण लगी।

इहा समूरी तरक्की देहलीअ जे सुलतान मुहम्मद तुग़लक़ जे बर्दाश्त खां बाहिरि थी। हुन जल्द ई वडो लश्कर वठी सिंधु ते काह कई। इलियट (Elliot) ऐं डासन (Dawson) संदनि चवण बयान कंदे चवनि था, "शल ख़ुदा मूंखे बीमारीअ खां नौबनो करे जीअं मां ठटे जे माण्हुनि खे नीचो निवायां। जेकडहिं ख़ुदा मूंखे पंहिंजो कयो त पोइ इहा ख़्वाहिश हमेशा मुंहिंजे दिल में रहंदी।"

सिंधु जे मुहिम दौरान मुहम्मद सिंधु जो लज़ीज़ पलो घणे तइदाद में खाईंदो हो। (संस्कृत में मछीअ खे पलो चवनि, बेंगालीअ में हलशा ऐं अमेरीकीअ में शाद चवनि)। उहो एतिरो त लज़ीज़ आहे जो सिंधीअ में खिल चर्चे में चइबो आहे–

"पलो सीरे खां भी भलो,
सीरे में न साउ,
पलो गोडा खोड़े खाउ।"

इहा ई उमीद रखी सघिजे थी त मुहम्मद तुग़लक़ पले खाइण करे न मुओ हो, पर हुनजो मौत सिंधु में थियो हो, खेसि ठटे जे भरिसां दफ़िनायो वियो।

खांउसि पोइ फ़ीरोज़ तुग़लक़ तख़्त ते वेठो। हू मुहम्मद तुग़लक़ जी बेइज़्ज़ती बर्दाश्त करे न सघियो। दरबारी इतिहासकार लिखनि था, "जडहिं हू उन्हीअ हंध (ठटे) जे बारे में गाल्हि कंदो हो त हू पंहिंजी डाढ़ीअ ते हथ घुमाईंदो हो ऐं अजब खाईंदो हो त सद-अफ़सोस जो खांउसि अगियों सुलतान मुहम्मद शाह तुग़लक़ इहो फ़तह करण में नाकाम थियो।"

तंहिं करे थोरे वक्त गुज़रण बइदि फ़ीरोज़ वडे लश्कर सां सिंधु ते काह कई, पर हुन लाइ बि शहर ते कब्ज़ो करण डुखियो थी पियो। कुझ वक्त लाइ गुजरात में साही पटण खां पोइ हुन जडहिं शहर जो घेरो कयो त सिंधी लश्कर अधु फ़ारसी अधु सिंधीअ फ़तह जो नारो हंयो–

"बाबर कित पीर पठो
हिक मुओ ब॒यो ठटो।"

पीर पठो राजा गोपीचंद जो सिंधी मुसलमाननि जो नकुल रूप (Version) हो, जेको पोइ सिंधु जे ढेढनि जो पीरु थियो।

1365 ई. में फ़ीरोज़ शाह वरी सिंधु ते काहे आयो। हुन समन जे सरदार ब॒ांभणिये (ब्रह्मण लाइ सिंधी लफ़्ज़) ऐं संदसि चाचे ज॒ाम जोणे खे पाण सां देहली हलण लाइ ज़ोरु भरियो। जड॒हिं त ब॒ांभणिये जे भाउ ज॒ाम तमाची ऐं जोणे जे पुट ज॒ाम तोग॒ाची गडि॒जी सिंध ते राज॒ु कयो। देहलीअ में फ़ीरोज़ शाह जोणे खे भिंभलाए संदसि भाइटिये खे पोयां छड॒े 1375 ई. में ठटे जो गवर्नर करे वापसि मोकिलियाईं। ठटे में जोणे ज॒ाम तमाचीअ खे गिरफ़्तार कयो ऐं खेसि देहलीअ ड॒ांहुं मोकिले, देहली सरकार जे नुमाईंदे जी हैसियत सां सिंध ते हुकूमत करण लग॒ो। उहो सिंधियुनि लाइ घणो कुझ हो। मइज़िज़ शेख़ हमाद इहो चवंदे ब॒ुधो वियो, "जोणो बेवकूफ़ आहे, ओ ज॒ाम तमाची महरबानी करे मोटी अचु, ठटो तुंहिंजो आहे, अल्लाह पिण तो ते महरबान आहे।" ब॒ियो आलिम नूह इहो चवंदे ब॒ुधो वियो, "वञु ऐं वञी जोणे जो क़तल करि ऐं ज॒ाम तमाचीअ खे हाकिम बणाइ।" घणे वक्त गुज़रण खां अग॒ु ज॒ाम तमाची हाकिम थियो ऐं सिंध जे सोनहरी दौर जे शुरूआत थी।

उन्हीअ दौर में सिंधु ऐं गुजरात दोस्तीअ जे नातनि में ग॒ंढियल हुआ ऐं पंहिंजी आज़ादी काइम रखण जी साग॒ी कोशशि में साथी रहिया। केतिरनि ई शहज़ादनि जूं शादियूं हिक ब॒िए जे मुल्कनि में थियूं।

सिंधु में समनि जे दौर जे ख़ुशहालीअ जो बयान 'तारीख़े ताहिरी' तरंग में अची करे थी, "जेके ज़मीनूं ग़ैर आबाद हुयूं, हाणे चङीअ तरह पोखिजण लग॒ियूं। ज़मीन जो अहिड़ो को बि टुकरो न रहियो, जंहिं ते हरु न हलियो हुजे। ठटो ओभर जी मंडी बणिजी वियो। सिंधु इल्म ऐं दौलत में ब॒ियो इराक़ बणिजी वेई।" हिक आग॒ाटे उकर (पथर या टामे जे उकिरियल) में चयल आहे, "हरहंधि खूह ऐं वण हुआ, माण्हू एड॒ो ख़ुशि हुआ जो ब॒ुढा दाइमी तरह जवान थी विया।" "रैयत राज़ी एह जही जो ब॒ुढा नित जवान।"

समा केरु हुआ? चोटीअ जे इतिहासकार समाजयाती भेरूमल मेहरचंद आॾवाणीअ मुताबिक, समा यादव नसल मां हुआ। अरबनि जे सिंधु फ़तह करण खां पोइ मंझाउनि घणा लड़े वञी गुजरात में आबाद थिया। (सोरठ जो राइ ॾियाच समो हो) पर चोॾहीं सदीअ जे अवाइल में (शुरूआत में) मंझाउनि घणा कुझ कदुरु सूमरनि जे मदद में ख़िलजियुनि सां मुकाबिलो करण लाइ वापसि मोटी आया। एच. टी. सोरले मुताबिक ''इन्हीअ में को शक नाहे त समा जादव कुल जा राजपूत हुआ ऐं घणो करे इहाई कौम हुई, जंहिं खे सिकंदर महान सामबोस (Sambos) करे ॼातो हो। उहे 1381 ई. खां अॻु मुसलमान न थिया हुआ ऐं संदनि पोयां कच्छ जा समेजा ऐं जाड़ेजा करे ॼाता वञनि था।''

इन्हीअ जी माना त समा सिंध जा हाकिम थियण खां पोइ घटि में घटि चइनि ॾहाकनि ताईं हिंदू रहिया। उहे कॾहिं, छो ऐं कीअं मुसलमान बणिया, इहा ख़बर नाहे, पर ॾिसिजे थो त इस्लामी दुनिया जी छिक ओलह एशिया ऐं उन जे भरि वारनि तोड़े उत्तर हिंदुस्तान में इहो कम कयो। पर इस्लाम उन्हनि ते पंहिंजो ध्यान मर्कूज़ कयो। रस्मी मुसलमान नालनि खां जुदा उन्हनि खे पंहिंजा रवायती नाला ॾियण ते ज़ोरु ॾिनो (अॼु बि थाईलैण्ड में कंहिं बि शहरीअ जो कहिड़ो बि मज़हब हुजे, हू पंहिंजे ॿारनि जा नाला संस्कृत जे फ़हिरस्त मां ॻोल्हे रखंदा आहे, जेका मंदर में रखियल हूंदी आहे।)

पर सभिनी चङियुनि ॻाल्हियुनि जो कीअं बि ख़ातिमो थियणु घुरिजे। जॾहिं बाबर पंहिंजो वतनु समरकंद ऐं बुख़ारा विञायो त हू हिंदुस्तान ते चढ़ाई करे आयो। रस्ते ते 1516 ई. में हिन पहिरीं ईरान ऐं हिंदुस्तान ॿिन्हीं जो दरवाज़ो कंधार (कौरवनि जी माउ गांधारीअ जो पुराणो गांधार देश) फ़तह कयो। अरग़ून, जेके कंधार मां तड़िजी निकिता हुआ, बदिले में 1521 ई. में सिंधु ते काहे आया। लड़ाईअ में ॼाम नंदी (निज़ाम अल्दीन) जो पुट दरिया ख़ान विढ़ंदे मारिजी वियो। उहे अरग़ूननि चंगेज़ ख़ान ऐं संदसि कबीले मां हुआ। सिंधी पंहिंजे घोड़नि तां लही पटिकनि ऐं कमरबंदनि जा संदिरा ॿधी, सिर तां आहो खणी लड़ाई लड़िया। पर मंझाउनि को बि जीअरो न बचियो।

सिंधियुनि जे शिकस्त जो नुमायां अनासर मज़हबी कटरपणो हो, जेको समन जो आख़िरी ॾींहुं साबित थियो। मख़दूम बिलावल, जेको वॾ घराणो हो,

जंहिं आज़ाद ख़्याल मकतब फ़िक्र पेश कयो.... संदसि सरपरस्त दरिया ख़ान हो, जेको ख़ुदि हिकु मुदबर सिपाही हो। पर जडहिं ज़ाम नंदीअ जे गादीअ तं ज़ाम फ़ेरोज़ वेठो त परम्परावादी गिरोहु मथे उभिरी आयो। उन्हनि बिलावल खे तेल जे घाणीअ में पीड़ाए छडियो। इन्हीअ गाल्हि सिंधियुनि जूं दिलियूं टोड़े छडियूं।

समन जे शिकस्त खां पोइ बखर में समन जे गवर्नर काज़ी कादन, जेको सिपाही, मुदबर आलिम ऐं सूफ़ी संत हो, दस्तंदाज़ी कई ऐं जेतिरो मुमकिन थी सघियो, अरगूननि खे अमन ऐं आराम ग्गं हुकमरानीअ जे हवाले करायाईं। शाह बेग अरगून मुग़लनि जे मदद सां सिंधु त कब्ज़ो कयो। उन्हीअ दबाव हेठि हिंदू राजाऊं उत्तर खां धिकिजी लाड़ डांहुं आया, जेके उते समूरो वक्तु पंहिंजी आज़ादी काइमु करियो वेठा हुआ। सिंधु खे वरी पुराणी चविणी याद डियारी वेई- ''जडहिं कडहिं सिंधुड़ी, तोखे कंधारां जोखो।''

समनि जो दौर ज़ाम तमाचीअ जे रूमानवी दास्तान सां याद कयो वेंदो हो। हिक डींहुं जीअं ई हू (ठटे जे भरिसां) कींझर ढंढ ते शिकार करे रहियो हो त संदसि नज़र हिक ग़रीब मुहाणी छोकिरी 'गंदरी' (गंदी, मेरी) ते पेई। हिन संदसि नालो 'नूरी' रखियो ऐं खेसि पंहिंजे महल में वठी वञी महाराणी बणायाईंसि। सभिनी मुहाणनि तां समूरियूं ढलूं ऐं महसूल माफ़ कयाईंसि ऐं पोइ आराम सां रहण लगो। इहो वाक़ओ कौरवनि जे डाडे शान्तनू जी याद डियारे थो, जेको सत्यवतीअ जे प्रेम जी गिरफ़्त में आयो, जेका हिक मुहाणी हुई।

पर समनि जे दौर जो सभ खां वडो रूमानवी दास्तान 'ससुई पुन्हूं' जो आहे। ससुईअ ब्रह्मण घराणे में जनमु वरितो हो। जडहिं पिणसि खे संदसि जनम पत्रीअ मां पतो पियो त धीणसि जो लेख कंहिं धारिएं सां लिखियल आहे त हिन खेसि टोकिरीअ में दरियाह में लोड़हे छडियो। उहा टोकिरी भंभोर में कंहिं धोबीअ खे हथि लगी। हू अगे ई बे-औलाद हो। तंहिंकरे खणी पंहिंजी धीअ जे रूप में पालणु शुरू कयाईं। शिकिल जी सुहिणी हुअण करे संदसि नालो ससुई (शशि माना चंड) रखियो वियो। जडहिं वडी थी त संदसि सूंहं जी हाक परे परे ताईं फहिलिजी वेई। बलूचिस्तान जे केच मकरान जो वापारी शहज़ादो पुन्हूं भंभोर में अची निकितो। पहिरीं नज़र सां बई हिक बिए ते मोहित थी पिया। पुन्हूंअ वणिज वापार छडे वापस वरण खां नाबुरी वारे छडी ऐं

ससुईअ सां शादी करे पाण धोबी बणिजी उते ई रही पियो। पुन्हूंअ जो पीउ डाढो नाराज़ थियो। हुन पंहिंजे बियनि पुटनि खे पुन्हूंअ खे वापस वठी अचण लाइ उमाणियो। जडहिं ससुई निंड में सुम्हियल हुई त पुन्हूंअ जे भाउरनि पुन्हूंअ खे उठ ते बधो ऐं पंहिंजे वतन डांहुं रवाना थिया। पोयां जडहिं ससुई निंड मां सुजाग थी त खेसि हकीकत जी ख़बर पेई। उन्हीअ साइत ससुई बि पेरें उघाड़ी संदसि पोयां रवानी थी।

डिघे वीरान रस्ते में हिक बकिरार खेसि मेरीअ अखि सां डिठो। ससुईअ धरती माता खे हिफ़ाज़त करण लाइ बाडायो। जंहिं ते धरती फाटी पेई ऐं ससुई मंझिसि समाइजी वेई। पोइ जडहिं पुन्हूं होश में आयो त उतां पंहिंजे भाउरनि खां पाण छडाए भंभोर डांहुं रवानो थियो। रस्ते ते खेसि ससुईअ जे पुजाणीअ जी ख़बर पेई। चयो वञे थो त खेसि ससुईअ सां मिलाइण लाइ सागी जाइ ते धरती वरी फाटी पेई ऐं पुन्हूं पंहिंजी ससुईअ सां हमेशा लाइ मिलियो। पोइ बिन्हीं जे विच में रुगो बसर जे छिलिके जेतिरी विछोटी रहिजी वेई।

शाह जे शाइरीअ में ससुईअ जा विर्लाप कंहिं बि सिंधीअ खे लुड़िक लाड़ण लाइ काफ़ी आहिनि। उहे लुड़िक वृंदावन जे झंग में कृष्ण लाइ गोपियुनि जे तलाश खे पोइते छडीनि था। ससुई पार कढंदे चवे थी, ''आऊं न सुमी आहियां न सूमरी, आऊं त ब्रह्मण आहियां, शास्त्र पढ़िया आहिनि, आऊं पंहिंजे पुन्हूंअ खे गोल्हे लहंदसि ऐं संदसि धोबिणि थी गुज़ारींदसि।'' माण्हू चवनि था त चरख़ो चोरि, आऊं चरख़ो चोरियां थी, पर हिक बि तंदु नथी निकिरे। जेकी निकिरे थो, उहे रत जा लुड़िक आहिनि, जेके चरख़े खे पुसायो था छडीनि।

ओ वण, अव्हीं डिघा न थियो ऐं ओ जबल एडो ऊचो न थीउ। मुंहिंजूं अखियूं सुकण डियो त जीअं आऊं पंहिंजे पुन्हूंअ जे पेरनि जा निशान डिसी सघां।

अजु आऊं पंहिंजा कपड़ा गेडूआं रंङीदसि। आऊं जोगिण थियणु चाहियां थी। आऊं पंहिंजे पुन्हूंअ लाइ कननि में जोगियुनि वारा कुंढल पाईंदियसि.... ही पंधु बियनि पंधनि वांगुरु नाहे। आऊं चाहियां थी त दांहूं करे रुआं, पर पोइ माण्हू चवंदा त आऊं चरी आहियां। माण्हू मुंहिंजे मुहब्बत जे करे मूं ते इलज़ाम

मड़हींदा, पर पोइ छा थियो? सच्चा मुहब्बती टकरियुनि ते टुटी पवण सां फ़िक्रमंद न थींदा आहिनि।

अड़े ओ सिज! तूं मुंहिंजे महबूब सां मिलण खां अगु ई लहीं थो। ठीक आहे, पर खेसि बुधाइजि त आऊं रस्ते में ई मरी वेई आहियां। अड़े ओ जबल, तूं मुहब्बतियुनि खे आथतु डिजि ऐं संदनि पेरनि खे न डुखोइजि!....

ऐं पोइ ससुई ऐं जबल बुई गडिजी पुन्हूंअ लाइ रुना। एतिरे कदुरु जो गुगदाम संदनि दिल जूं दांहूं बुधी डही पिया....

जेके पंहिंजनि पिरियुनि लाइ मौत जो ज़ाइको चखीनि था, पिरीं उन्हनि जे हंज में आहिनि.... ससुईअ जा सूर रुगो तेसताईं जारी रहिया, जेसताईं ससुईअ पाण खे पुन्हूंअ खां धार समुझियो। जंहिं साइत ससुईअ इहो ज़ातो त ससुई ऐं पुन्हूं हिकु ई हुआ त संदसि सभेई सूर ख़तम थी विया।

समनि जे दौर में सिंध अहिड़ियूं अदबी ऐं सकाफ़ती (सांस्कृतिक) ऊचायूं माणियूं! ब सदियूं पोइ, शाह लतीफ़ 'सुर बिलावल' में उन्हनि जी साराह जा ढुक भरे गाईंदो रहियो–

''ओ ज़ाम लाखा! आऊं बदज़ेबी ओड आहियां। मूं पंहिंजी झूपड़ी तुंहिंजे बाझारे अझे हेठि अडी आहे। तूं असां बेअझनि जो बचाउ कजि। इएं थो लगे त ख़ुदा ख़ुदि ज़ाम बखरे खे पंहिंजे हथनि सां जोड़ियो आहे। लगे थो हिकिड़े बखरे खे जोड़ण में तमाम घणी मिट्टी कतब आई हूंदी....''

8

अकबर जी विलायत - दिल पसंद सिंधु

अरबनि जे अठ सौ वर्हिय अवाइली दौर खां पोइ जॾहिं बाबर अरग़ूननि खे सिंधु में हेठि धिकियो त सिंधु पहिरियों भेरो धारियनि जे हुकमरानीअ हेठि आई। कुझु वक्त खां पोइ तुरख़ान पिण घिड़ी आया ऐं ॿिन्हीं धारियनि गिरोहनि सिंधु खे विरहाए पाण में खंयो। पोइ वारनि 180 सालनि दौरान सिंधु मुग़लनि सां सभिनी लाहनि चाढ़नि खे मुंहुं ॾिनो। जॾहिं शेरशाह हुमायूं खे शिकस्त ॾिनी त हुमायूं भॼी अची सिंधु मां निकितो। पर अरग़ूननि जो रवैयो उन्हनि ॾांहुं थधो हो। हुमायूं हिक कुंड खां ॿीअ कुंड ताईं पनाह लाइ भिटकंदो रहियो। हिक दफ़े हिन मक्के वञी फ़कीर थी गुज़ारण जो पिण सोचियो पर संदसि साथियुनि खेसि चयो त खेनि विच में छॾे न वञे। "असांजो छा थींदो?" हुन खांउनि पुछियो। उहे मक्के वञण लाइ तैयार न हुआ। उन्हीअ मौके ते टेटीहनि वर्हियनि जो जुवान हुमायूं, चोॾहनि वर्हियनि जी हिक अरग़ून सिंधी छोकिरी हमीदा बानूअ जे मुहब्बत में दीवानो थी पियो ऐं सिंधु जे पाट ॻोठ में 1541 ई. में साणुसि शादी कयाईं। अमरकोट जे राणे बरसल, हुमायूं जे साथियुनि खे पंहिंजे किले में पनाह ॾिनी, जिते 14 आक्टोबर 1542 ई. ते खेसि अकबर ॼाओ। उहो सिंधु तोड़े हिंदु लाइ हिक यादगार ॾींहुं हो।

पर जॾहिं अकबर सिंधु जे लाड़ वारे हिस्से खे पंहिंजी हुकूमत सां मिलाइण चाहियो त जानी बेग़ मिर्ज़ा जे अॻुवानीअ हेठि सिंधु जे माण्हुनि संदसि लश्कर जो मुकाबिलो कयो। जानी बेग़ मिर्ज़ा पंहिंजे सिंधी माउ जे करे मुकमल तरह सिंधी थी वियो हो ऐं सिंधी ॿचो जे नाले सां सुञातो वेंदो हो। हू पंहिंजी छोकिरी बाज़ीअ जे बदिनाम आदत जे बावजूद अवाम में बेहदि मक़बूल हो।

अकबर जे मोकिलियल पहिरिएं शख़्स मुहम्मद सादिक़ ख़ान शिकस्त खाधी। उन खां पोइ जॾहिं अकबर पंहिंजे वज़ीर आज़म ख़ान ख़ानां मिर्ज़ा अब्दुल रहीम जे हथ हेठि हिक वॾो लश्कर चाढ़े मोकिलियो, तॾहिं सिंधु 'विलायत दिल पसंद' जे नाले सां सॾिजण में आई। अकबर उन्हीअ काह खे

एतिरी घणी अहमियत डि॒नी हुई, जो हू ख़ान ख़ानां खे रवानो करण लाइ पंहिंजे समूरनि दरबा॒रियुनि समेत लाहौर में रावीअ जे किनारे ते हली आयो हो। हिन भेरे वरी मुग़ल लश्कर जे रसद जा रस्ता बंदि करे मथिसि घेरो एं॒डो॒ सोड़हो कयो वियो, जो उहे मानी ग॒भे लाइ मोहताज थी पिया। अहिड़ियुनि हालतुनि हेठि परेशान मुग़ल सिपहसालारु उन वक्त जे असरदार मज़हबी अगु॒वान क़ाज़ी उस्मान दरबे॒लाईअ वटि वियो ऐं संदसि पेरनि ते किरी पियो। हू तेसताईं उतां न उथियो, जेसताईं क़ाज़ी फूंड विचां इहो चयो, "फ़तह अब्दुल रहीम जी ऐं मुल्क जानी बेग जो।" याने अरगू॒न हुकमरानीअ कंदा पर मुग़लनि जे बादशाहीअ हेठि।

इन्हीअ गा॒ल्हि लड़ाईअ जो रुख बदिले छडि॒यो, अहिड़ीअ तरह अरगू॒न 'सिंधी ब॒च्चो' अहिड़ो सिंधी कौम-परस्त निकितो जो जड॒हिं कएं वर्हिय पोइ हुन डू॒राहें हंधि ख़ानदेश में चालाणो कयो त खेसि संदसि वसीयत मूजिबि ठटे में दफ़्नायो वियो।

जड॒हिं शाहजहां पंहिंजे पीउ जहांगीर सां हथु अटिकायो त कुझ वक्त पंहिंजे बचाव में ठटे में गुज़ारियो हुआईं। पोइ जड॒हिं हू बादशाह थियो त हुन ठटे में हिक शाही मस्जिद जोड़ाई, जंहिं खे "आसमान जो महल" कोठियो वियो। ओरंगज़ेबु पिण कुझ वक्त लाइ सिंधु ते लाड़ वारे हिस्से जो गवर्नर थी रहियो हो।

जड॒हिं ओरंगज़ेब पंहिंजे भाउ दाराशिकोह खे शिकस्त डि॒नी त दाराशिकोह पिण भजी॒ सिंधु में आयो हो, पर सख़्त दिल अरगू॒ननि उन्हनि हरदिल अज़ीज़ शहज़ादे खे पकड़े अंधो बणायो ऐं खेसि ज़ंजीरुनि में जकिड़े देहलीअ मोकिलियाऊं। जयसिंह डा॒हुं लिखियल ख़त में शिवाजीअ लिखियो हो त जेकड॒हिं देहलीअ जे तख़्त ते विहे हा त हिंदुस्तान में सभु कुझ ठीक थिए हा। इहा बदिकिस्मती हुई जो दारा खे सिंधु में अरगू॒ननि बे-मानो कयो।

डी ले (Dc Lact) जे लफ़्ज़नि में "ठटो डिघे अर्से खां हिंदुस्तान जो वडे॒ में वडो॒ वापारी मर्कज़ थी रहियो हो।" ऐं मोरलैंड (Morcland) चयो त इहो दुनिया जे आदमशुमारीअ ऐं वापार जे वड॒नि मर्कज़नि मां हिक हो। जड॒हिं राणे प्रताप चित्तौड़ विञायो त कुझ अर्से लाइ अमरकोट में पनाह वरिती हुआईं। उते हुन ठटे नगर जे बारे में एतिरो घणो बु॒धो जो हुन ठटे ते कब्ज़ो करे सिंधु ते

हुकमरानी करण चाही, पर अमरकोट जे राणे खेसि पंहिंजे अबाणे वतन शानदार मेवाड़ ते ध्यान ड॒ियण लाइ चयो ऐं ब॒िए कंहिं ख़्याल में वठिजण खां पासो करण लाइ चयाईं।

1655 ई. जे छितयुनि लड़ायुनि में ईसा ख़ान अरग़ून पोर्चोगीज़नि खे मदद लाइ सड॒ियो। हकीकत में उहो तबाहीअ ड॒ांहं कदमु हो। उन्हनि मां 700 पोर्चोगीज़ 28 जहाज़नि में अची पहुता, पर ईसा खेनि कुझ बि रकम अदा करण खां इंकार कयो जो संदसि लड़ाई उम्मीद खां अग॒ु ख़तम थी वेई हुई। पोर्चोगीज़नि पंहिंजी मदद पाण कई ऐं ठटे मां 'वीह लख रुपयनि जे कीमत जो सोन लुटियो, जेको एशिया जे वड॒नि माल ग़नीमत (माल जे लुट) मां हिक हो।' उन खां सवाइ हुननि जुम्मे जे ड॒ींहुं मक़ानी जामा मस्जिद में बाहि लग॒ाई ऐं अठ हज़ार निमाज़ियुनि खे जीअरे साड़े मारे छड॒ियो।

पर पोर्चोगीज़नि जी पहुचायल तबाही, ठटे जे ख़ुशहाल शहर खे घणो नुकसान पहुचाए न सघी, उहो पोइ बि उद्योग वापार ऐं तहज़ीब जे वड॒े मर्कज़ जे हैसियत सां जारी रहियो।

अरग़ूननि ऐं तुरख़ाननि जे समूरे वक्त दौरान सिंधु में सफ़ा ऊंदहि अंधकार न हो। अज़ीम सिंधी रोमानवी दास्तान ''सुहिणी मेहार'' पंजाब जो साग॒ियो ''सोहिणी-महिवाल'' इन्हीअ दौर सां वास्तो रखे थो। सुहिणी- जीअं नाले मां ज़ाहिर आहे, शहदादपुर जे तुला नाले हिक कुंभर जी धीअ हुई। बुख़ारा जो हिकु वापारी इज़्त बेगु संदसि इश्क में गिरफ़्तार थी पियो ऐं पंहिंजो वापारु ऐं वतनु विसारे दरिया जे ब॒िए भरि ते रही पियो।

उते माण्हू खेसि साहड़ कोठींदा हुआ, पर मेंहूं चारण करे मेहार (महीवाल) जे नाले सां सुञाणंदा हुअसि। हर रोज़ सुहिणी रात जो घड़े जे सहारे दरिया तरी पार करे मेहार सां मिलण जो वचन पूरो कंदी हुई। हिक ड॒ींहुं संदसि निराण खे इन्हीअ ग॒ाल्हि जी ख़बर पइजी वेई, जंहिं पक्के घड़े जे एवज़ि कच्चो घड़ो रखी छड॒ियो। सुहिणी जीअं ई दरिया में घिड़ी त कच्चो घड़ो टुटी पियो ऐं हूअ परभरो वहंदड़ दरिया में हथ पेर हणण लग॒ी। संदसि दांहं ते मेहार बि ज़ोरदार वहंदड़ दरिया में काहे पियो ऐं ब॒ई दरिया जे लहरुनि जो बखु बणिजी विया। पर उन वक्त सुहिणीअ जेकी चयो, सोचियो ऐं महसूस कयो, उन खे शाह लतीफ़ 'सुर सुहिणी' में अमर करे छड॒ियो।

''मुंहिंजूं महिणा ड्रींदड़ सखियूं जेकड्रहिं मुंहिंजो इश्क डिसनि त उहे पंहिंजे कांधनि जे भरि में जेकर सुम्हनि ई न।''

जंहिं खे बिया कुधाई था समझनि, सा मुंहिंजे लाइ वड्रे शान जी गाल्हि आहे...

जेके इश्क जे नशे में चूरु आहिनि, उन्हनि लाइ घड़ो हिक बोझ आहे...

हिते मूंखे महिणनि खे मुंहुं डियणो पवे थो ऐं उते मूंखे मिलण जो वचन पूरो करिणो आहे। हिति थी वहिदे जी वीर, हुति सतों डीअनमि सरतियूं...

महबूब केतिरियूं ई चाहींदड़ बुडंदे डिठियूं आहिनि, पर मूं खुदि खे समुंड में बोड़े छडियो पंहिंजे लुड़कनि सां। (सहसें साहड़ बोड़ियूं, मुंध बोड़ियो महराण...)

अड़े दरिया! मां कयामत जे डींहु तो ते दांहींदियसि, तोखे पंहिंजे महबूब अगियां तमाम हेठाहींअ ताईं झुकिणो पवंदो...

ऐं किनारे जे कमज़ोर घाट ते बीही तोखे पंहिंजे महबूब खे सडिणो पवंदो...

सिंधु उन्हीअ दौर में 'पंच रतन' पैदा कया। अबू-अलफ़ज़ल ऐं अबू-अल्फ़ेज़ी असुल में सेवहण जा रहाकू हुआ ऐं अकबर जे नवनि रतननि मां हुआ। हकीकत में अबू-अल्फ़ेज़ी शहंशाह जो साजो हथ हो। अबू-अल्फ़ेज़ी ऐं अकबर जी ख़्वाहिश हुई त अकबर खां पोइ जहांगीर जे बदिरां, संदसि पुट ख़ुसरो तख़्त ते विहे। इन्हीअ गाल्हि खे रोकण लाइ जहांगीर अबू-अलफ़ज़ल खे माराए छडियो। इन्हीअ वाकिये अकबर जी दिल टोड़े विधी ऐं हू जल्दु ई मरी वियो।

उन्हीअ दौर में सिंधु जो बिगो शख़्स जंहिं तारीख़ में जाइ वरिती, उहो सरमद फ़कीर हो। सरमद फ़कीर हिक यहूदीअ जे हैसियत सां आरमीना में ज़ाओ हो। हिन समूरे ओलह एशिया जो सफ़र कयो। इस्लाम अख़्तियार कयाईं ऐं हिक तरक्की कंदड़ वापारीअ जे हैसियत सां ठटे में रही पियो। उते हिक डींहु हुन हिक मुशायरे में हिक हिंदू छोकिरी अभिचंद खे बुधो, जंहिंजी मुहब्बत संदसि ज़िंदगीअ खे पूरीअ तरह बदिलाए छडियो। अभिचंद जी सूंहं ऐं आवाज़ जी कशशि सरमद जे दिल खे मोहे छडियो ऐं हू बई गडु रहण

लगा। जल्द ई सरमद ग़ाइण लग़ो, ''मां काफ़िर आहियां ऐं मुसलमान नाहियां।'' हिते मिजाज़ी मुहब्बत जो क्लासिकी वाकियो रूहानी मेलाप जे दर्जे ताईं वञी पहुतो।

पोइ सरमद जैन दिगम्बर साधूअ वांगुरु पंहिंजा सभु कपड़ा फाड़े छड़िया। माण्हुनि जा मेड़ संदसि इल्हामी ग़ाल्हियूं ब़ुधण लाइ चौधारी गड़ु थींदा हुआ। जड़हिं हू देहलीअ वियो त संदसि मुरीदनि में दाराशिकोह पिण हो। खेसि शाहजहां सां वाक़ुफ़ करायो वियो, जंहिं खेसि घटि में घटि ब़ियनि ख़ातिर कपड़ा पाइण जी गुज़ारिश कई। जीअं टे सदियूं पोइ चर्चिल जे कोठियल ''उघाड़े फ़कीर इंग्लैंड जे बादशाह खे मञण खां इंकार कयो हो, तीअं सरमद पिण खेसि न मञियो।''

जड़हिं दारा पंहिंजी विरासत जी जंग ओरंगज़ेब खां हाराई त ओरंगज़ेब सरमद ते कड़ी नज़र रखी। हुन अवल चयो त सरमद खे न रुग़ो ओघड़ न ढकण जे ड़ोह में सज़ा ड़िजे, पर इन्हीअ ख़्याल त सरमद दारा खे दुआ कई आहे, संदसि दिल में ब़ियाई पैदा थिए। सरमद देहलीअ में अख़्लाक जे अख़्तियार जो वड़ो मर्कज़ बणिजी पियो। इन्हीअ हकीकत ओरंगज़ेब खे आपे खां ब़ाहिरि करे छड़ियो। तंहिं करे हुन फ़ैसिलो कयो त सरमद जे ओघड़ न ढकण, संदसि करिश्मनि ऐं संदसि समूरो कलमो पढ़ण खां इंकार करण, मजमूए तौर खेसि गुनहगार बणाए छड़ियो हो, तंहिं करे हू क़तल थियण जे लाइक़ आहे।

ईश्वर जी खोज में जीअं हिंदू 'नेती नेती' (न हीउ न हू) चवंदा आहिनि तीअं सरमद 'अला अल्लाह' (को बि अल्लाह नाहे, चई रुकिजी वेंदो हो) ऐं अग़िते 'मुहम्मद रसूल अल्लाह' (को बि अल्लाह नाहे, सवाइ अल्लाह जे ऐं जंहिंजो पैग़म्बर मुहम्मद आहे) न चवंदो हो।

शाही फ़रमान ते सरमद जी सिसी देहलीअ जे जामा मस्जिद में कपी वेई, जिते अजु बि संदसि कब्र मौजूद आहे। पर संदसि इलाही पाग़लपणो ईंदड़ सदियुनि ताईं याद कयो वेंदो। सरमद चयो, ''सरमद खे दीन जी शिकस्त ते को बि ड़ुखु नाहे, मूं पंहिंजो दीन इलाही अखियुनि जे इशारे ते कुर्बान कयो आहे।''

संदसि क्लासिकी जुमिला आहिनि-

''सरमद, तो वड्डो नालो ऐं शोहरत तड्डहिं हासिल कई, जड्डहिं तूं कुफ़्र (यहूदियुनि) मां इस्लाम में दाख़िल थिएं, पर अल्लाह ऐं रसूल में कहिड़ी चुक थी हुई जो हाणे तूं राम ऐं लक्ष्मण जो चेलो थी पियो आहीं?''

इहो उर्दूअ में इझो हीअं आहे-

सरमद तेरा दुनिया में बड़ा नाम हुआ
जब कुफ़्रि से तू माइल-इस्लाम हुआ
अल्लाह व नबी में बुराई क्या थी
क्यों फिर के मुरीद लक्ष्मण व राम हुआ

सिंधु जो ब्बियो दर्वेश ठटे जे भरिसां झोक जो इनायत सूफ़ी हो, जंहिं खे देहली निशानो बणायो। हू गेड़ूरता कपड़ा पाईंदो हो। संदसि दर्वेशीअ करे केतिरा ई माण्हू वटिसि छिकिजी ईंदा हुआ, जंहिं करे पुराणे ख़्याल वारनि मुलाउनि में साड़ु पैदा थियो। जीअं त पंहिंजे ख़ैराती ज़मीन ते हारियुनि सां सुठो सलूक कंदो हो, तंहिं करे उन पसगरदाईअ जा ज़मींदार खांउसि इनकरे शकी थियण लग्गा जो हू माण्हुनि में इंसाफ़, बराबरीअ जा ख़्याल फूके रहियो हो। ब्ब रजअत पंसदि कौमूं गड्डिजी हिन दर्वेश सूफ़ीअ जे ख़िलाफ़ देहली हुकूमत जा कन भरण लग्गियूं ऐं जड्डहिं खेसि ठटे में दावत ड्डेई घुरायो वियो त उते खेसि क़तल कयो वियो। उन खां अग्गु शाह इनायत मुग़लनि ऐं सिंध में संदनि अरगून गवर्नरनि सां मुकाबिलो करण लाइ यार मुहम्मद कल्होड़े खे दुआ कई हुई। उन खां पोइ इनायत जे ब्बिनि मुरीदनि देहलीअ जे मुग़ल बादशाह फ़र्ख़ सेर खे अंधो करे संदसि मौत जो बदिलो वरितो।

ब्बियो अण-लभु रतन महामती प्राणनाथ हो। गुजराती पीउ ऐं सिंधी माउ जे हिन पुट पंहिंजो वक़्त ब्बिन्ही सूबनि में घारियो ऐं ब्बिन्ही ज़बानुनि में शाइरी कयाई। जड्डहिं 1679 ई. में ओरंगज़ेब हिंदुनि ते जज़िया (फ़ी माण्हूअ ते टैक्स) मढ़ी, तड्डहिं महामती देहलीअ वियो, जिते संदसि ब्बारहां चेला, ड्डह हिंदू, ब्ब मुसलमान, महामतीअ जे मुहब्बत ऐं अमन जी शायरी जामा मस्जिद जे पसगरदाईअ में ग्गाइण लग्गा। एतिरे कदुरु जो हिक ड्डींहुं जड्डहिं ओरंगज़ेब घोड़े ते चढ़ी जामा मस्जिद ड्डांहुं नमाज़ पढ़ण लाइ वञी रहियो हो त उन्हनि खेसि रस्ते ते रोकियो। जड्डहिं बादशाह संदनि ग्गाल्हि न ब्बुधी त महामतीअ पंहिंजे

चेलनि सां गड्रिजी ब॒हिराड़ीअ में पेरे पंधि निकिरी पियो ऐं सरकारी उरह ज़ोरावरीअ ख़िलाफ़ मलामत कयाईं। संदसि वाणी (शायरी) संदसि पछाड़ीअ जे दौर जी बहतरीनि शायरी आहे। पोइ महामती नाथ नंदेला हीरो छत्रसाल जो सियासी गुरू थियो।

ड्रिसण में ईंदो त गांधीअ पंहिंजो उत्साह रस्कनि या टालसटाइ जे भेट में महामतीअ खां वधीक पातो हो। गांधीअ जी माउ पुतली ब॒ाई प्राणनाथी हुई। हूअ नौजवान गांधीअ ऐं कस्तूरब॒ा खे संदसि शादीअ खां पोइ प्राणनाथ जे मंदिर वठी वेई, जिते मूर्तियूं रखियल न हुयूं। (निज आनंद सम्प्रदाय) गांधीअ जो 'सत्याग्रह', महामती जे 'सदा ग्रह' वांगुरु हो। 'डांडी मार्च' महामतीअ जे देहलीअ खां सिंधु ऐं गुजरात जे 'पद यात्रा' वांगुरु हुई। एतिरे कदुरु जो गांधीअ जूं प्रार्थनाऊं गड्रिजाणियूं महामती नाथ जे हिंदू-मुस्लिम जे गड्रियल प्रार्थनाउनि जे गड्रिजाणियुनि जो नकुल (प्रतिकृति) हुयूं।

तारीख़ पंहिंजो पाण खे वरजाए सघे थी।

9

ब॒ ख़ज़ाना

जीअं जीअं मुग़ल सल्तनत ओरंगज़ेब जे आख़िरी सालनि में टुकरा टुकरा थियण लगी॒, तीअं तीअं मुग़लनि जा मुकररु कयल अमलदार पिण छिड़विछड़ थियण लगा॒, संदनि जाइ कल्होड़नि जे मकानी घराणनि वरिती।

कल्होड़ा इज्ज़तदार सैय्यद हुआ, जिनि जी दावा हुई त उहे अबासी ख़िलाफ़त जे दौर में अरबिस्तान खां आया हुआ। पर हज़ार वरिहनि खां पोइ को बि लड॒ आयल नाहे ऐं इहा हकीकत आहे त संदनि अबो डा॒डो॒ जद अमजद को ओढाणे नाले हो। इहो ई संदसि मकामी असुल नसल जी तसदीक कंदे नज़र अचे थो।

सदियुनि खां कल्होड़नि पंहिंजे मज़हबी हैसियत सां ज़मींदारी ज़ोर जोड़ियो हो। एतिरे कदुरु जो हुननि गंदाबाह जी ज़मींदारी हासिल कई हुई। हू इन्हीअ हैसियत सां सिंध बलूचिस्तान ख़िते में बोलान ऐं ब॒ियनि लुकनि जी संभाल कंदा हुआ। (Lord Clive) क्लाइव लिखे थो त ''ओरंगज़ेब जे मौत सां शहंशाहियत डही अची पटि पेई, जो खांउसि पोइ सहारो डि॒यण वारो को बि कोन बचियो।''

सिंधु में इहा हाकमियत मियां यार मुहम्मद हथि कई, जेको कल्होड़ा ख़ानदान मां हो। संदसि हथियारबंद फ़कीरनि ताजे ऐं जादे- मुग़ल सिपहसालार अमीर शेख़ जहां खे मारे विधो ऐं बखर जे गवर्नर अलहियार ख़ान खे लोधे कढियो। ओरंगज़ेब जे पुट मइज़ाअलद्दीन जेको लाहौर जो गवर्नर हो, अवलि त कल्होड़नि खे सेखत डि॒यण जो सोचियो, पर जल्द ई महसूस कयाईं त अख़्तियारी फ़ैसिलो सूर्हियाईअ जो बहितर हिस्सो थींदो, तंहिं करे कल्होड़े खे सिंधु जो गनर्वर मुकररु कयाईं।

कल्होड़नि सिंधु खे यकजाइ कयो, जेका अगु॒ में अरग़ून ऐं तुरख़ान अमीरनि में विर्हायल हुई। हुननि सूबे खे मुकामी घराणे जो हुकमरान पिण डि॒नो, जंहिं जूं ज़मीन में पाड़ूं हुयूं। पर हू अञा पूरीअ तरह वाग॒ संभाले न सघिया हुआ, जो नादिरशाहु पंहिंजे तूफ़ानी हमले सां सूबे ते अची कड़िकियो।

हिन ईरानी हमलावर 1739 ई. में देहलीअ खे लुटियो ऐं मुग़लनि खे अटक खां अगि॒ते ऐं सिंध जे हिंदुस्तानी सर-ज़मीन जी हुकमरानी संदसि हवाले करिणी पेई। नादिरशाह हिकदम कल्होड़े हाकिम खे काबुल में हाज़िर थियण जो हुकुम डि॒नो। पर हू न उते हाज़िर थियो, न ई को जवाब मोकलियाईं। हुन नादिरशाह जे कहर ऐं दहशत खां परे रहण में ई बहितरी ज॒ाती। हुन इहो बि सोचियो त नादिरशाह खे देहलीअ जे लुट-मार मां घणो माल हासिल थियो आहे, तंहिं करे हू मिस्कीन नंढिड़ी सिंध खे लुटण लाइ ख़ास काहे अचण जी तकलीफ़ न वठंदो। पर नादिरशाह इनजे उबतड़ि सोचियो, खेसि ख़बर हुई त जेकड॒हिं हिक गवर्नर बची वियो त बि॒या बि सागि॒यो रस्तो अख़्तियार कंदा, इनकरे हू यकदम सिंधु लाइ निकितो। डिनल कल्होड़ो हाकिम हिकदम अमरकोट जे किले में पाण खे बंद कराए वेही रहियो, पर कल्होड़े हाकिम खे पंहिंजे हिक करोड़ रुपयनि जे ख़ज़ाने खे लिकाइण जो वक्त ई न मिलियो जो 1741 ई. जे शुरूअ में नादिरशाह उते वञी कड़कियो। नादिरशाहु दहशत जो बि॒यो नालो हो। जड॒हिं संदसि पुट नासिर शादी करे रहियो हो त नादिरशाह खे पंहिंजे सतनि पीढ़ियुनि जा नाला बु॒धाइणा हुआ। माण्हुनि समझियो त नादिरशाह पंहिंजे अबनि ड॒ाड॒नि जा नाला वठण में परेशान थी वेंदो जो संदनि का बि हैसियत कान हुई, पर नादिर तरतीब वार बु॒धाईंदो वियो, "नासर अबन नादिर, अबन शमशेर, अबन शमशेर, अबन शमशेर, अबन शमशेर, अबन शमशेर, अबन शमशेर।" अहिड़ीअ तरह माओ जी इहा सोच त "ताकत बंदूक जे नालीअ मां निकिरे थी" का नईं नाहे, इहा घटि में घटि नादिर जेतिरी पुराणी आहे।

उन्हीअ नादिर अबन शमशेर कल्होड़े खां साफ़ साफ़ पुछियो त तूं छो भज॒ी विएं त हुन सचाईअ सां वराणियो, "असां हमेशा हिंदुस्तान जे शहंशाह जा वफ़ादार रहिया आहियूं, असां सवलाईअ सां पंहिंजूं वफ़ादारियूं मिटाए न सघंदा आहियूं।" नादिर खे जवाब वणियो ऐं खेसि सिंध जे गवर्नर जे हैसियत सां बहाल कयाईं। पर नादिर खेसि चयो त मूंखे बु॒धण में आयो आहे त कल्होड़नि वटि बि कीमती हीरा आहिनि। कल्होड़े हाकिम इन्हीअ ग॒ाल्हि जी तसदीक कई ऐं कणिक जे अटे जी गू॒ण ऐं गिह जो दबो॒ पेशि कंदे चयाईं, "इहे असांजा हीरा आहिनि, जेकड॒हिं कंहि वटि इहे शयूं आहिनि त खेसि बि॒ए

कंहिं शइ जी ज़रूरत ई न रहंदी, पर जेकड॒हिं कंहि वटि इहे शयूं नाहिनि त पोइ खेसि ब॒ी का शइ हासिल न थींदी।''

नादिर ड॒ाढो ख़ुशि थियो। हुन पोइ ठटे शहर खे डि॒सण जी ख़्वाहिश ज़ाहिर कई। उते संदसि ऐं संदसि फ़ौज जे ऐश व आराम जो सोरहनि डीं॒हंनि लाइ इंतज़ाम कयो वियो। रवाने थियण वक्त हू पाण सां हिक करोड़ रुपयनि जो ख़ज़ानो खणी वियो ऐं हर साल वीह लख रुपयनि जे सालियानी ढल जी चमाट सिंध जे मुंहं ते हणी वियो। हू कल्होड़नि जे कुतब ख़ाननि जा अणलभ किताब ऐं दस्तख़त पिण पाण सां खणाए वियो। संदसि सुठी चाल-चलगत जी पक जे तौर ते पाण सां ई कल्होड़ जा शहज़ादा ऐं 12000 माण्हुनि ते आधार रखंदड़ सिंधी लश्कर पिण खंयो ऐं तड॒हिं बि माण्हुनि हुन खे वेंदे डि॒सी राहत महसूस कई। कल्होड़नि जे शहज़ादनि पोइ फ़सादनि सां भरियल ईरान में तरसण जो पंहिंजो मुसीबत भरियो दास्तान बयान कयो आहे।

शुरूअ में जड॒हिं नादिरशाह देहलीअ जे लुट-मार तां मोटियो हो त पाण सां केतिरा ई मथुरा जा ब्रह्मण बांदी बणाए ईरान में ग़ुलामनि जे तौर विकिणण लाइ खंया हुआईं। इहा ख़बर शिकारपुर जी हिक माईअ तख़्त ब॒ाईअ खे पेई। हुन पंहिंजे मुड़िस केवलराम भोज॒वाणीअ खे उन्हनि सभिनी जो भुंग भरे डि॒यण लाइ चयो। नादिरशाह जे रस्ते में ईंदड़ सेठ जे सभिनी कारोबारी शाख़ुनि खे हिदायतूं मोकिलियूं वेयूं त 100 खां 250 रुपया फ़ी ब्रह्मण जे हिसाब सां डे॒ई बदिनसीब ब्रह्मणनि खे आज़ाद करायो वञे। भुंग (चोरी थियण जानवरनि जे एवज़े तौर चुकायत रकम) ते छड॒ायल सभिनी ब्रह्मणनि खे पोइ कुझ रोक रकम डे॒ई घरनि डां॒हं रवानो कयो वियो।

पर हिक जे पुठियां बि॒यो आज़ारु पैदा थींदो वियो। नादिरशाह जे वफ़ात खां पोइ अफ़ग़ान नसल जो अहमद शाह अब्दाली मंज़र-आम ते आयो। 1752 ई. में देहलीअ जे सफ़दरगंज, मुग़लनि ऐं मरहटनि जे विच में ठाह कयो, जंहिं ते सभिनी हिंदू देवताउनि जी तसदीक कराई वेई त जीअं गडि॒जी अब्दालीअ जो मुकाबिलो करे सघनि। इन्हीअ ठाह मरहटनि खे पंजाब-गुजरात ऐं सिंधु जे चोथ जो हक़ डि॒नो। पर उन्हीअ ठाह जे अमल में अचण खां अग॒ु ठीक बि॒ए साल 1753 ई. में अब्दालीअ सिंध खे फ़तह कयो ऐं सूबे में अफ़ग़ान हुकूमत काइम कयाईं। कल्होड़ो हाकिम नूर मुहम्मद हिकदम पोयां अब्दालीअ सां जीअं

बहितर समझे, तीअं मुहं ड̱ियण लाइ दीवान गिदूमल खे छड̱े जैसलमेर भज̱ी वियो, जिते चालाणो कयाईं।

गिदूमल अब्दालीअ खे थधो कयो। हुन खेसि ब̱ ब̱ोरियूं मिटीअ जूं पेशि कयूं, जंहिं लाइ चयाईं त इहे कंहिं बि सोन या जवाहरनि खां वधीक कीमती आहिनि, जो इन्हनि में सिंध जे औल्यावनि जे दरगाहुनि जी ख़ाक आहे। हुन तेरहं लख रुपयनि जी घटायल ढल ड̱ियण जे शर्त ते कल्होड़े खे गवर्नर जे उहिदे ते बहाल करण लाइ अब्दालीअ खे राज़ी कयो।

सिंधु हिकु भेरो वरी सुख जो साहु खंयो मस हो त मददख़ान नाले हिक ब̱ियो अफ़ग़ान अची कड़कियो। उन वक्त जा लेखक लिखनि था, "उहे अफ़ग़ान विछुनि ऐं नांगनि जहिड़ा आहिनि। उहे जेतिरो आज़ारींदड़ आहिनि, ओतिरो ई नीच आहिनि। ग़रीबनि ऐं बे-मददगारनि ते बिजलीअ वांगुरु कड़िकनि था। सघारनि खां बिजलीअ वांगुरु वडं वञनि था। इहे फाटल ग̱ूणियूं बि पाण सां खणी वेंदा आहिनि।" हिक अर्से खां सिंधी कंहिं बि मुसीबत खे मददख़ान जे अचण सां मंसूब (बयान) कंदा आहिनि।

उत्तर खां कल्होड़नि जे अचण ते पुराणनि हिंदू उमराउनि ड̱खण जो रुख रखियो। 'दोदे चनेसर' जी पुराणी चविणी "सुमा, सोढा ऐं सूमरा सिंध जे ड̱खण में राज̱ कनि था।" हाणे सची न रही हुई। सोरले लिखे थो, "अमरकोट ऐं ककरोला ऐं ब̱ियनि नंढनि हंधनि ते हिंदू हाकिम थोरो की घणो ख़ुदिमुख़्तयार कुवत जा मालिक हुआ। उत्तर सिंध जे रहाकू कल्होड़नि ऐं टालपुरनि खे लाड़ में आम तरह सराई कोठियो वेंदो हो। संदनि औसर हिंदुनि जे ख़ुदिमुख़्तयारीअ खे तब्दील करे छड̱ियो। सराई जड̱हिं शिकारपुर में सखर खां अगि̱ते रवाना थिया त उहे ड̱खण ऐं ओभर ड̱ांहं विया ऐं हिंदुनि जी आज़ादीअ खे ख़तम करे छड̱ियाऊं।" इन्हीअ ग̱ाल्हि जे करे सिंध ऐं कच्छ जे विच में लड़ायूं लगि̱यूं, जिनि में सिंध पंहिंजी वड̱ी हैसियत करे अगि̱री रही। आख़िर में ग़ुलाम शाह कल्होड़े सिंधूअ जे हिक शाख़ जे पाणीअ खे कच्छ में वही वञण खां रोकण लाइ 'अल्लाह बंद' नाले बंद ब̱धायो। उन्हीअ बंद रुगो̱ हिक आग̱ाटे ज़िलज़िले जे नतीजे खे ज़ोरु वठायो, जंहिं उन्हीअ एराज़ीअ में पाणीअ जे वहकिरे खे हिक नंढे छंडण में तब्दील करे छड̱ियो हो। उन्हीअ ग̱ाल्हि सिंध ऐं कच्छ जे विच में बेरुख़ी पैदा कई, जंहिं करे कच्छ वारनि हाणे पंहिंजो पाण

खे गुजराती समुझण शुरू कयो। जेतोणीकि उहे हर लिहाज़ खां सिंधु खे वेझो आहिनि। सिंधु जे फ़ातह चार्लस नेपियर खे इहो लिखिणो पियो त सिंधु ऐं कच्छ ज़िंदगी, शहरी, मज़हबी, तिजारती ऐं फ़ौजी लिहाज़ खां पाण में गडु आहिनि।

संदनि नाता ख़ास करे ॿोलीअ जे लिहाज़ खां वेझा आहिनि। कच्छी गुजरातियुनि जे भेट में सिंधियुनि खे वेझा आहिनि। अहिड़ो दिलचस्प ख़्याल ॿीं लोक सभा (1957-62) में ॾिसण में आयो। प्रेम जी भाई असर जेको कच्छी हो ऐं महाराष्ट्र में रहंदो हो, भारती जनसंघ (B.I.S.) पार्टीअ जे टिकेट ते चूंडिजी आयो। संदसि ज़ाल खे अंग्रेज़ी, हिंदी तोड़े मराठी नथे आयूं। प्रेम जी भाईअ जी ज़ाल पंहिंजे मुड़िस जी ग़ैर-मौजूदगीअ में वटिनि ईंदड़ माण्हुनि खे कच्छीअ में जवाब ॾींदी हुई। आॾवाणी सिंधी हुअण सबबि संदसि ॻाल्हि समुझंदो हो ऐं जंहिंखे हू पोइ हिंदीअ में तर्जुमो करे ॿुधाईंदो हो! पर सिंध जे हुकुमराननि जी कच्छ-दुश्मन नीतीअ जे करे इहे सभु सिंधी कच्छी नाता टुटी पिया।

नादिर, अब्दाली ऐं कच्छ जे लड़ाईअ खां पोइ कल्होड़नि बहितर नमूने हुकूमत जो इंतजाम संभालियो। नवां वाह खोटाया विया, जंहिंकरे ज़रई पैदावार में वाधारो आयो। मछी एॾे वॾे तादाद में मरंदी हुई जो उहा सुकाइण खां पोइ घोड़नि खे खाराई वेंदी हुई। आदमशुमारी वधी वञी टीहनि लखनि ताईं पहुती, जॾहिं त खांउनि अॻूणनि हुकुमराननि अरग़ूननि जे ॾींहंनि में उहा वीह लख हुई ऐं खांउनि पोइ जे हुकुमराननि टालपुरनि जे ॾींहंनि में रुॻो पंद्रहां लख वञी बची। ज़मीन जी ढल मुग़लनि जे ॾींहंनि में पैदावार जे 1/3 हिस्से मां घटिजी, 1/3 ऐं 1/5 जे विच में वञी पहुती, जंहिंजो मदार ज़मीन ऐं फ़सल ते हो।

कुझु वक्तु अॻु ईस्ट इंडिया कम्पनीअ ठटे खे ''लंडन जेॾो वॾो शहर'' कोठियो हो, हाणे मंझिसि पंजाहु हज़ार घर हुआ, जंहिं मां घणा पथर ऐं गच मां अॾियल हुआ, जिनि खे वॾा विरांडा ऐं वक्ते टे चार माड़ा हुआ। सिंध जो सोटी कपड़ो ''ओभर जी समूरी पैदावार जो गुल'' हो। ठटे जे अंतर्राष्ट्रीय वापार ''सिंध खे कौमुनि में हिकु मुकाम ॾिनो हो'' शहर में 400 स्कूल ऐं 4000 ॿेड़ियूं हुयूं। गुड़, अंगूरनि, कतल, मश्क, मिसिरी, गुलाब ऐं केसर मां शराब ठाहियो वेंदो हो, जिनि जा प्याला पी सिंधी माण्हू मौज में ईंदा हुआ ऐं मस्त थींदा हुआ। सोग्ले चवे थो- ''तानपुरे ऐं ढोलक जो संगीत सिंध जे हर घर मां ॿुधण में ईंदो हो।''

कल्होड़नि जेका सिंधु खे व॒डी सूखिड़ी ड॒िनी, उहा हुई हैदराबाद जो शहर, उहा पुराणे शहर नेरोण कोट (नारायण जी सर-ज़मीन) हुई। अरबनि जे फ़तह खां पोइ उहो शहर ख़तम थी चुको हो, जेको पोइ 'नेरोण काफ़र' नाले सां हिकु व॒डो कब्रस्तान थी वियो। मुसलमान उते दफ़न थियण में व॒डी सआदत (शुभ) समुझंदा हुआ। पर ग॒ुलाम शाह कल्होड़े जे कब्र खे, जंहिं में शहज़ादनि ऐं पीरनि जूं कब्रूं शामिल हुयूं, ज़मीन सां यकसार करण जो हुकुम कयो, जेको अज॒ु जे डिज॒िणनि शहरी रिथाबंदी कंदड़नि लाइ हिकु रोशन मिसाल आहे। हिन पोइ शाही किले जी अड॒ावत लाइ गिदूमल खे नाणे जूं ब॒ेड़ियूं भराए मोकलियूं, जंहिं उहो किलो रुग॒ो ब॒िनि वर्हियनि (1768-70 ई.) में जोड़ाए रास करायो, जंहिं जे नालो दखन में हैदराबाद जे निज़ाम सां ख़सूसी नाता काइमु करण लाइ खेसि ख़ुशि करण जी कोशिश में 'हैदराबाद' रखियो वियो पर ब॒ई हैदराबाद हिक ब॒िए खां एतिरो दूर हुआ, जो हिक ब॒िए जी मदद करण खां कासिर हुआ।

किले जे उत्तर वारे दरवाज़े खां टकरीअ जे चोटीअ ते मेल खनु डिघी बाज़ार काइमु कई वेई। पहिरियों हिस्सो भाईबंद वापारियुनि ऐं पोयों हिस्सो हिंदू आमिल सरकारी कामोरनि खे ड॒िनो वियो। आमिल गिदवाणी कुटंब खे जंहिंजो व॒डो गिदूमल व॒डो वज़ीर हो, किले जे बिलकुल भरिसां रहायो वियो। सिंध जो हीउ नओं गादीअ जो शहर जंहिंजे ओलह में सिंधू हुई ऐं ओभर में फुलेली हुई, हिक व॒डे बाग़नि जे शहर जे सूरत में उभिरियो।

कल्होड़नि जे हुकमरानीअ जे दौरान ब॒ियो पुराणो शहर वरी उसरियो उहो हो शिकारपुर, जेको हाणे न रुग॒ो उत्तर-ओलह हिंदुस्तान जो पर विच एशिया जो नाणियाती (माली) गादीअ जो हंधु थियो हो। किनि माण्हुनि जो ख़्याल आहे त उहो शहर कल्होड़नि जे सौटनि दाऊद पोटनि ब॒धायो हो ऐं उन्हीअ जो नालो शिकारपुर इन्हीअ करे रखियो वियो जो टालपुर मीर शिकार जा शौकीन हुआ। पर ब॒ियनि जी राइ इहा नाहे। इहे निशानदेही कनि था त शिकारपुर शिकार जे शौकीन टालपुरनि जे मंज़र आम ते अचण खां अग॒ु ई उते मौजूद हुआ। ब॒ियनि लाइ शिकारपुर हमेशा वापार जो मर्कज़ रहियो आहे, न कि शिकार गाह। इहा पिण ध्यान में रखण जोग॒ी ग॒ाल्हि आहे त मुसलमान पंहिंजे शहरनि खे आबाद नालो ड॒ींदा हुआ, न कि 'नगर' या 'पुर'। उन्हनि माहिरनि

जो ख़्याल आहे 'शिकारपुर' असुल में 'शिकारपुरी' आहे, जंहिंजी माना आहे ''शाकाउनि (Shakas) खे तबाह कंदड़ सथियुनि (Sythians) जो ब॒धायल शहर।'' इन्हीअ सिलसिले में इहा निशानदेही कनि था त ''कोएटा'' फ़ारसी रिकार्ड में ''शाकारी कोट''- 'शाकाउनि खे तबाह कंदड़नि जो जोड़ायल किलो (सरहद)' आहे। पोइ हिंदुस्तान जे पासे उहो रुगो॒ 'कोट' या 'कोटिया' ज॒ातो वियो, जंहिं खे बर्तानियुनि बिगाड़े 'कोएट' चयो।

कल्होड़नि जे हुकमरानीअ जी ख़ास ग॒ाल्हि हिंदुनि जो उभिरी अचणु हो। सदियुनि खां हेठीं सतह ते रहण खां पोइ हाणे उहे रुगो॒ पंहिंजे ज़हनियत, मुवाफ़कत, साख, ईमानदारी ऐं महिनत सां वरी उसरिया हुआ। गिदूमल ऐं संदसि भाउ जसपत खां सवाइ असां जनरल बालकराम, वकील देवदास, मूलराज, घनश्याम, टोपणदास, करणमल ऐं गुलाबराइ जा नाला बु॒धूं था। महता मोटूमल बर्ख़ुरदार हो, जेको चोटीअ जे सलाहकारनि मां हिकु हो। दीवान चेलाराम सेवहाणी ख़ज़ाने जो संभालींदड़ हो। देहलीअ में कल्होड़नि जा ब॒ वकील- आनंदराम 'मख़लस' ऐं मीर मतारो हुआ। कल्होड़नि जे पहिरिएं हाकिम आदम शाह पंद्रहीं सदीअ में हिंदुनि सां इंसाफ़ पसंदीअ वारो रवइयो अख़्त्यार करण जो मैदान तैयार कयो हो। 1736 ई. में यार मुहम्मद कल्होड़े (आड॒वाणी कुटंब जे वडे॒) आडू॒मल मुलतान वारे खे सिंधु में आबाद थियण जी ख़ास दावत डि॒नी हुई। उन खां पोइ केतिरा ई कच्छ, जैसलमेर ऐं एतिरे कदुरु जो डू॒र प्रयाग खां पिण सिंधु में आया।

पर कल्होड़नि जो दौर घणो करे शाह अब्दुल लतीफ़ जे करे ज॒ातो वेंदो, जीअं एलज़ाबेथ जो दौर शहंशाहियत काइमु कंदड़ जहिड़ोकि रालेफ़ (Raleigh) ऐं ड्रेक (Drake) जे भेट में शेक्सपीअर जे दौर तौर ज॒ातो वञे थो। शाहु न रुगो॒ सभ खां वडो॒ सिंधी शाइर आहे पर दुनिया जे पाए जो शाइर आहे। जेकड॒हिं सिंधु खे शाह ऐं बि॒यनि सभिनी शाइरनि मां चूंड करिणी पवे त इन्हीअ में को शकु नाहे त उहा शाह जी ई चूंड कंदी।

पर सभिनी सुठियुनि शयुनि खे पंहिंजे पुज॒ाणीअ ते पहुचिणो हूंदो आहे, कल्होड़नि जे दौर जो पिण जल्दु ई ख़ातिमो थियो। सूमरनि पंहिंजो पाण खे मात खाईंदो डि॒सी अलाउद्दीन ख़िलाफ़ समनि खे मदद लाइ सडि॒यो। कल्होड़नि वरी मुग़लनि, ईरानियुनि ऐं अफ़ग़ानियुनि सां विढ़ण लाइ बलूचियुनि खे दावत

डि॒नी, जो हुननि पंहिंजे आराम लाइ बलूचियुनि खे डिघे अर्से खां घणो ताकतवर थी थे डि॒ठो। हकीकत में बलूच उन वक्त बलूचिस्तान जे भेट में सिंध में वधीक आबाद हुआ, इन्हीअ गा॒ल्हि कल्होड़नि खे शकी ऐं हासिद वणाए छडि॒यो हो। गिदूमल जी सलाह जे बर्ख़िलाफ़ कल्होड़नि, बलूचनि जे सरदार बेरूम ख़ान ऐं संदसि पुट सूबेदार खे माराए छडि॒यो। मीर बीरम ख़ान जो बि॒यो पुट मीर बहर ख़ान संदसि 30000 लश्कर सां सिंध में लथो त बहर ख़ान 18000 जे सिंधी बलूची लश्कर सां मुकाबिलो करे खेसि सेखत डि॒नी। उन वक्त जे फ़ारसी तहरीर 'फ़तह नामे' में चयल आहे- ''जीअं बलूचियुनि पंहिंजूं तलवारूं लहिरायूं त अफ़ग़ानियुनि जे रत सां ज़मीन गा॒ड़ही थी वेई। के गोडा॒ खोड़े रहम लाइ मिन्थूं (नीज़ारियूं) करण लगा॒ त के वरी उघाड़े मथे ऐं उघाड़े पेरें भजं॒दा पिए विया।''

पर कल्होड़नि बहरख़ान जहिड़े वफ़ादार ऐं काम्याब सिपहसालार ते शक करण शुरू कयो। कल्होड़नि संदसि वफ़ादारीअ जे सबूत में धीणसि जो सङु घुरियो, जेको हुन बलूची रवायत जे बुनियाद ते डि॒यण खां इंकार कयो। कल्होड़नि पोइ जोधपुर जे राजा खे अमरकोट वापसि डि॒यण जे एवज़ि बहरख़ान खे क़तल करण लाइ चयो। जोधपुर जा एलिची हिक तमाम गु॒झो न्यापो डि॒यण जे बहाने बहरख़ान सां मिलिया। कन में गा॒ल्हि बु॒धाइण जे बहाने मथिसि हमलो करे खेसि क़तल करे छडि॒यो। (इन्हीअ करे सिंधीअ में चविणी आहे त कननि जी गा॒ल्हि मीर बहर खे मारायो!) इहा बलूचियुनि सां सलूक (वहिंवार) जी इंतहा हुई। 1782 ई. में बलूचनि ऐं कल्होड़नि जे विच में हालाणीअ जे भरिसां लड़ाई लगी॒, जंहिं में कल्होड़नि खे टालपुर मीरनि शिकस्त डि॒नी।

अफ़ग़ाननि खे इहा पक न हुई त कंहिं जी हुकूमत खे मञिजे। अगु॒ वारनि कल्होड़नि खे या उभिरंदड़ टालपुरनि खे। तंहिं करे उन्हनि चयो त जेका धुरि पहिरीं छह लख रुपया अदा कंदी, उन्हीअ खे हुकुमरान मञियो वेंदो। काबुल में मक़ीम टालपुरनि जे नुमाइंदनि गिदूमल जसपत राइ ऐं आग़ा इब्राहिम शाह ईरानी मुक़ामी वापारियुनि खां रकम वठी खेनि अदा कई ऐं बलूचिस्तान जे टालपुर मीरनि जी हुकूमत काइम करण में काम्याबी हासिल कई।

कल्होड़नि जी हुकूमत थोरी पर यादगार, असी वरिहनि खां पोइ पुजा॒णीअ ते पहुती।

10
शैतान जो भाउ

मीरनि (अमीरनि) टालपुर ख़ानदान कल्होड़नि खां सिंधु जूं वागूं वरितियूं। पर संदनि भाग॒ में डिघो या चङो राज॒ लिखियल न हो। जीअं त संदनि वड॒ा मोरोसी तौर ते रेढार हुआ, पेशे जे तौर ते जंगजू हुआ, इन्हीअ करे पैदावार ऐं खेती-ब॒ारीअ ते ध्यान न ड॒िनाऊं। हुननि पोख करण जोग॒ियुनि (लाइक॒) डिघियुनि एराज़ियुनि खे पिण शिकार लाइ वकुफ़ (कम में आणण) करे छड॒ियो। नतीजे तौर कल्होड़नि जे दौर जी 30 लख आदमशुमारी 1843 ई. में अंग्रेज़नि जे हवाले सिंधु खे करण वक्त अधु वञी बची। पर अनाजु कच्छ, काठियावाड़, मकरान, एतिरे कदुरु जो अरबस्तान ड॒ांहं बि रवानो थियण जारी रहियो।

बर्तानवी एलिची पाटंजर (Pottinger) सिंधु में ''फुरूं, जहालियत ऐं ज॒ुलम ड॒िठो, जेके ए॒डे औज ते हुआ, जंहिंजी दुनिया में बराबरी न हुई।'' बर्टन लिखियो आहे त हुन मुला स्कूलनि में अजब जहिड़ियूं ग॒ाल्हियूं पढ़ंदे ड॒िठियूं, जहिड़ोकि ''मुहम्मद खे 104472 वार हुआ, जंहिं मां टे अछा हुआ'' पर मीरनि ब॒ियनि मामलनि में एतिरो घणो ख़राब न कयो हो। हुननि जोधपुर खां अमरकोट वापसि वरिताऊं। कराचीअ जे नगर सेठ नाऊंमल जे मदद सां कराचीअ जो नंढो सामूंडी बंदर पिण क़लात जे ख़ान खां वापसि वरिताऊं। एस्टिविक (Eastevick) टालपुरनि जी हुकूमत जे सठि वरिह्यनि जी भेट में लाहौर दरब॒ार जे हिक वरिह दौरान वधीक ड॒ोह ड॒िठा। लैमबर्क लिखियो आहे, ''जेकड॒हिं सिंधू ऐं अरफ़ात जे विच वारनि मुल्कनि जी भेट कबी त तहज़ीब में सिंध सभ खां अग॒भरो मुल्क समुझियो वेंदो।'' बर्तानवी एलिची डाक्टर बर्नस (Dr. Burns) जे लफ़्ज़नि में, ''सिंधु जो वज़ीर आज़म वली मुहम्मद ख़ान लग़ारी जाग॒रता जे तरीक़े जो हर्फ़नि मौला ज़हीन शख़्स आहे।'' पर पोइ बि मंझाउनि को बि अण-टिर बर्तानवी चढ़ाईअ जो मुकाबिलो न करे सघियो।

सिंधू, हिंदुस्तान जो सभ खां वड॒ो दरिया आहे, सिकंदर उते पहुतो हो। इहा ग॒ाल्हि बर्तानवी सोच लाइ कशशि जो सबब हुई। उन्हनि ठटे में वधंदड॒ ऐं नफ़े बख़्श वापार कयो हो। खेनि ब॒ुधायो वियो त ''सिंधु हिक शानदार मुल्क आहे'' तंहिं करे उन्हनि सिंधु हासिल करण जो पको पहु कयो।

बर्तानिया हमेशा फ्रांस खां पंहिंजे मुख़ाल्फ़तीअ जे तौर ते कनु थे हंयो। हाणे खेनि रूस खां पिण ख़ौफ़ थियण लगो हो, जेको विच एशिया ऐं हिंदुस्तान जे उत्तर ओलह में अगियां वधी रहियो हो। जडहिं फ्रांस ऐं रूस 1807 ई. में तिलसिट (Tilsit) में एतहाद जो ठाह कयो त बर्तानय खे बे-इंतहा ख़तिरो महसूस थियो। गवर्नर जनरल लार्ड एलेंब्रो (Lord Elonbough) लिखियो आहे, ''डायरेक्टर रूस खां घणो डिनल आहिनि ऐं तंहिं करे मां बि आहियां, मूं खे पक थी लगे त असांखे रूसियुनि सां सिंधूअ ते मुकाबिलो करिणो पवंदो।''

बर्तानिय हिकदम सिंधु, काबुल, ईरान ऐं जोधपुर डांहुं एलिची मोकिलिया। 1819 ई. में उन्हनि कच्छ ते कब्ज़ो कयो। उन्हनि अण-बराबरीअ वारे ठाह खां पोइ मीरनि ते ठाह करण लाइ ज़ोरु आंदो, जंहिं खे उहे टारण जी हैसियत में न हुआ, तंहिं करे हुननि कराचीअ ऐं ठटे ते कब्ज़ो कयो। 1820 ई. जे बिए ठाह मूजिबि मीर बियनि यूरपियुनि ऐं अमेरीकियुनि खे सिंधु मां बाहिरि कढण ते मजबूर थी पिया। अंग्रेज़नि सिंधू दरिया मां जहाज़ रस्ते वञण जो हकु इन्हीअ बहाने सां हासिल कयो त घोड़नि ऐं घोड़े गाडीअ जी बर्तानिवी शाही सूखिड़ी लाहौर डांहं महाराजा रंजीतसिंह लाइ ख़ुश्कीअ रस्ते मोकिले नथी सघिजे। मीरनि सिखनि खे इहो चई ख़ातिरी डियण जी कोशशि कई त हकीकत में उन्हीअ गाडीअ में सैय्यद अहमद बरेलवी लाइ सोन नियो पियो वञे, जेको साणुनि मुकाबिलो करे रहियो आहे। पर रंजीतसिंह ते को बि असरु न थियो ऐं तंहिं करे पंहिंजे फ्रेंच फ़ौजी सलाहकार वेंचूरा (Ventura) खे सिंध सरहद ते फ़ौजी मशकून शुरू करण लाइ चयाईं, जंहिं मीरनि खे बिलकुल डेजारे विधो। उन्हीअ मौके ते अंग्रेज़नि सिंधूअ जे बिन्ही किनारनि ते टालपुरनि जी ख़ुदि-मुख़्तयारीअ खे सम्मान करण जो इकरारु कयो। पर जडहिं वाटरलू जे फ़ातह डियूक ऑफ़ वेलिंगटन (Duke of Wellinton) फ़ैसिलो कयो त जंगी हुकमत अमलीअ जे अहमियत वारे बखर बेट ते बर्तानिवी कब्ज़ो थियण घुरिजे त खिल जहिड़ो इहो दलील डिनो वियो त जीअं त उहो बेटु सिंधूअ जे विच में आहे, तंहिं करे उन्हीअ जे बर्तानिवी कब्ज़े सां बिन्ही किनारनि ते मीरनि जे ख़ुदि-मुख़्तयारीअ जी भञकड़ी नथी थिए।

महाराजा रंजीतसिंह जी सिंधु ते कब्ज़ो करण जी बेहद घणी ख़्वाहिश हुई। 1830 ई. में हुन पंहिंजे फ्रेंच सलाहकार जैकमोनट (Jacquemont) खे चयो त ''मूंखे थुबेट हथि करण सां कहिड़ो फ़ाइदो थींदो? मूंखे त शाहूकार मुल्क घुरिजनि, छा मां सिंधु हासिल करे नथो सघां? उहो शाहूकार मुल्क चयो थो वञे।'' ऐं तड॒हिं अफ़ग़ानस्तान जे शाह शजाअ शिकारपुर सिखनि जे हवाले कयो हो। काबुल खे सिखनि खां पेशावर घुरिबो हो। ईरान अफ़ग़ानस्तान में हरात ते कब्ज़ो कयो। बर्तानिया पाण खे सभिनी जो दोस्त हुअण जो डे॒खाउ करे रहियो हो, उन्हीअ अमल में हुननि सिखनि खे 15 लखनि रुपयनि जे एवज़ि शिकारपुर खे सिंधु जे हुकमराननि जे हवाले करण लाइ आमादह कयो। उन्हीअ सज॒ी ग॒ाल्हि बर्तानिया खे उत्तर-ओलह में घणे असर-रसूख़ लाइ मैदान हमवार करे डि॒नो।

मथां वरी गवर्नर जनरल आकलैंड (Aukland) इहो फ़ैसिलो कयो त सिंध जे मुख़्तलिफ़ हिस्सनि जे मुख़्तलिफ़ टालपुर मुतज़मनि खे 'ख़ुदि-मुख़्तयार हुकमराननि' जे तौर ते समुझियो वञे। इन्हीअ ग॒ाल्हि बिना देर जे टालपुर ख़ानदान खे मुख़्तलिफ़ गिरोहनि में विरहाए छडि॒यो। अहिड़ीअ तरह 'वेढ़ायो ऐं राजु॒ करियो'' जी खेड॒ पंहिंजे वहशतनाक सूरत में ज़ाहिर थी पेई।

अंग्रेज़नि हाणे हैदराबाद जे दरबा॒र में हिक एलिची मुकररु करण ते ज़ोरु डि॒नो। टालपुरनि जी इहा दांहं त असां खे को ठाहु को एतिहाद न घुरिजे, असां खे एलिचीअ जे आजियां करण खां माफ़ रखियो वञे या असां जी दरबा॒र में को अमलदार मोकिलियो वञे, पोइ उहो डाक्टर ई छोन हुजे, अजायो साबित थियो। उन्हनि थुल्हनि मतारनि माण्हुनि जे दरबा॒रुनि में डाक्टरनि खे हमेशा खुशि-आमदीद चयो वेंदो हो। (अंग्रेज़नि महसूस कयो त मीर तमाम थुल्हा मतारा हुआ, जेके आम अंग्रेज़ी कुर्सीअ में मापिजी न सघंदा हुआ) पर हू इहो समझण में नाकाम विया त बर्तानिवी डाक्टरु पिण बर्तानिवी छाड़तो ई हूंदो।

डाक्टर जेम्स बर्नस (Dr. James Burnes) खे कच्छ मां हैदराबाद में मीरनि जो एलिची गोपालदास डा॒ढे शान-मान सां वठी आयो। सिंधी माण्हू अंग्रेज़ी डाक्टर खे डि॒सी एडा॒ वाइड़ा थी विया जो हर बि॒ए शख़्स बीमारीअ जो बहानो करे चयो थे, डाक्टर साहिब मूंखे डि॒सु! (अहिड़ो मंज़र विरहाडे॒ खां हिकदम पोइ वरजायो वियो हो। जड॒हिं इहो पधिरो कयो वियो त गर्भवती

स्त्रियुनि खे तरजीही तौर मुल्क छडुण जो इजाज़त-नामो डि॒नो वेंदो त हिंदुस्तानी हाइ कमिशनर श्री सिरी प्रकास पंहिंजी रिहायश गाह औरतुनि सां भरियल डि॒ठी, जिनि पंहिंजो पाण खे गर्भवती ज़ाहिर करण लाइ पेट ते कपड़ा वेढ़े रखिया हुआ!)

बर्नस खे हैदराबाद जी दरबा॒र पिक-विक ऐं अलफ़-लैला जो हिक अजीब मेलाप डि॒सण में आई। उन्हनि संदनि बूट लाथा, पर हुन पंहिंजो टोपलो न लाथो। इन्हीअ समूरे मंज़र इंग्लैंड जे बादशाह चार्लस बि॒ए जे वेस्ट मिनस्टर स्कूल जे दौरे जो मंज़र याद थे डि॒यारियो। डाक्टर बसबाइ खेसि चकरु लगा॒रायो पर सजो॒ वक्त पंहिंजो टोपलो पाए रखियाईं। हुन अजब खाधल राजा अगि॒यां साफ़ बयान कयो, ''इन्हीअ गा॒ल्हि मां मुंहिंजा शार्गिद इहो न समझंदा त डाक्टर बसबाइ खां बि को वधीक वडो॒ माण्हू मौजूद आहे।'' डाक्टर बर्नस पंहिंजो टोपलो पाए हैदराबाद जे दरबा॒र खे इहो तासिर थे डि॒यण चाहियो त बर्तानिया हाकिम आहिनि। जडुहिं बि बर्नस का गोरी कंहिं टालपुर खे खाइण लाइ डि॒नी थे त हिक गोरी खेसि ख़ुदि खे बि खाइणी थे पेई। ज़ाहिर हो त खेसि मीरनि खे इहा पक डि॒यारिणी थे पेई त उहा गोरी ज़हरीली नाहे। हुन डि॒ठो त ''अंग्रेज़ी नियम तबाबत जे वाध वीझ लाइ सिंध हिक सणाओ मैदान साबित थींदो।''

अवाइली अंग्रेज़नि सिंधी बे॒ड़यातुनि खे ''यहूदयुनि तोड़े रूसियुनि खां बि वडो॒ लगु॒'' हुअण ऐं सिंधियुनि जे गा॒ल्हाइण खे चइनि माण्हुनि जे गडि॒यल ज़ोराइती गा॒ल्हि जे बराबर जा॒तो थे। हालात बिलकुल विचित्र हुई। ईस्टविक लिखियो, ''जेकडुहिं चार्लस (डिकंस) हिते हुजे हा त जल्दी समूरी दुनिया डिकंस जे सिंध बाबत तासिर खे पेई पढ़े हा।''

बर्नस लिखे थो, ''हिंदू बि॒ए दर्जे जा शहरी हुआ, इन करे हिंदू मुअतबर तबिके जे भेट में बि॒ए कंहिं बि बर्तानिया जे झंडे खे हैदराबाद जे बुर्जुनि ते लहिराईंदे डि॒सण जी सची ख़्वाहिश न थे डे॒खारी।'' इहा गा॒ल्हि ख़ास करे कराचीअ जे सेठ नाऊंमल होतचंद भोज॒वाणीअ लाइ दुरस्त हुई, जंहिं जूं 500 वापारी कोठियूं कच्छ खां वठी कंधार ऐं इराक़ में पखिड़ि॒यल हुयूं ऐं जंहिं जे पीउ खां पंहिंजो धर्म छडा॒ए ज़ोरीअ मुसलमान कयो वियो।

इहो सभु इझो हीअं थियो जो साल 1931 ई. में कराचीअ में हिक मज़ूर जे पुट कुंदे (कुंदन) खे संदसि उस्ताद ड॒ाढी मार कढी। हू शहर जे कंहिं घिटीअ में उदास बीठो हो त खेसि धनारी मस्जिद में आंदो वियो ऐं पंहिंजे धर्म सां फेराए मुसलमान कयो वियो। कराचीअ जे हिंदुनि में हिरास छांइजी वियो, हुननि मुसलमाननि खे सामान विकणण खां इंकार कयो। रदि-अमल में मुसलमाननि लियारीअ वटि शहर जे पाणीअ खे गंदो कयो। उन्हीअ मौके ते सैय्यद नूराशाह सिंधियुनि जे इलाकनि मां लघंदे हिंदुनि खे घटि-वधि ग॒ाल्हायो। नाऊंमल जे 24 सालनि जे नंढे भाउ परसराम खेसि इएं करण खां मना कई, पर नूरा चयो त परसराम पैग़म्बर जी बे-इज्ज़ती कई आहे। जीअं मुसलमाननि जा मेड़ वधंदा विया त परसराम जैसलमेर ड॒ांहु भज॒ी वियो। सूरतहाल खे थधो करण लाइ मीरनि परसराम जे पीउ होतचंद खे हैदराबाद सड॒ायो। होतचंद ब॒िनि हज़ार हिंदुनि सां गडि॒जी कराचीअ मां हैदराबाद आयो। रस्ते ते खेसि मुसलमाननि जे मेड़ पकड़े वरितो ऐं खेसि मुसलमान पधिरो कयाऊं ऐं हिक पीर जे घर में नज़रबंद करे छडि॒याऊं। संदसि धार्मिक शुद्धी नथे थी सघी, छाकाणि त संदसि उम्र पंजाह वरिहनि खां मथे हुई। हुन मुसलमाननि जे हथ जो खाधो खाइण खां इंकार करे छडि॒यो ऐं ब॒ारहं ड॒ींहंनि ताईं ओब॒ारियल चणनि ते गुज़ारो करण जो ज़िद कंदो रहियो। कच्छ ऐं जैसलमेर जे राजाउनि मीरनि वटि वञी एतराज़ उथारियो, जिनि होतचंद खे गुजरात में लखपत ड॒ांहं भज॒ी वञण डि॒नो। उते संदसि कुटंब वारनि शुद्धीअ जी रसम वडे॒ धाम धूम सां अदा कई, जंहिं ते लख रुपया ख़र्चु आयो। होतचंद पोइ ड॒ह साल लखपत में गुज़ारिया।

उन में को अजब नाहे त नाऊंमल मुसलमानी ज़ालिम राज॒ जे ख़िलाफ़ थी बीठो ऐं बर्तानिवी फ़तह में हिंदुनि जो छुटिकारो समझियाईं। हुन हर तरह सां बर्तानिया जी मदद कई। आटोरम (Autoram) जे लफ़्ज़नि में पहिरीं अफ़ग़ान जंग जे वक्त नाऊंमल ''कराचीअ खां कंधार ताईं बर्तानिया जो दोस्त'' हो। हुन बर्तानिवे जे अफ़ग़ानस्तान लाइ रवानगीअ जो बंदोबस्त कयो। खेनि हू पाण ऐं शिकारपुर जा सेठ जीतसिंह ऐं चतरूमल रोक ऐं ओधर ते रकमूं ड॒ींदा हुआ। इहा दिलचस्प ग॒ाल्हि आहे त उन वक्त शिकारपुर जो गवर्नर जे॒ठमल हो, जेको हाणे पार्लियामेंट जे मेम्बर राम जे॒ठमलाणीअ जो पड़-ड॒ाडो॒

हो। ज़ेठमल पंहिंजे नाले जो सिक्को हलाईंदो हो। संदसि तस्वीर अजु बि लंदन जे इंडिया ऑफ़ीस लैबररीअ में मौजूद आहे। हेनरी पाटिंजर (Henry Pattinger) चवे थो त "नाऊंमल सिंधु में बर्तानिवी फ़ौजुनि जा हथ ऐं पेर थी पियो।" मीरनि खेसि पाण वटि सड़ायो ऐं चयाऊं, "पंहिंजे दिल जे ख़ुशीअ लाइ तो नेठि पंहिंजे पीउ जे बे-इज़्ज़ीअ जो बदिलो वरितो।" पर उहे वधीक कुझ करे नथे सघिया।

डाक्टर बर्नस वटि सिंधु जा तफ़सीली नक्शा डिसी मीरनि खे सदिमो रसियो। उन्हनि चयो त "बुछिड़ाई थी चुकी आहे, तो असांजो मुल्क डिसी वरितो आहे। 'फ़िरंगियुनि खे सभ कंहिं ग़ाल्हि जी ख़बर आहे।" रंजीतसिंह डांहुं जेके घोड़ा दरिया रस्ते पार कया विया हुआ, उहे सैटलाईट ऐं सियारा (Satellite & Planet) 'नरविजन जा घोड़ा' साबित थिया हुआ। अंग्रेज़नि उन्हीअ दौरे में दरिया जे गहिराईअ जी माप वरिती हुई ऐं पसगरदाईअ जो नक्शो तैयार करे वरितो हो।

ऐं पोइ अफ़ग़ानस्तान में बर्तानिवी घोटालो शुरू थियो। अंग्रेज़ अफ़ग़ानस्तान में सिंधु जे रस्ते विया हुआ, जंहिं में केतिरा ई मकसद समायल हुआ। जहिड़ोकि सिंधु ते असरदार थियणु, सिखनि खे धक हणण, पस-मंज़र मां सिखनि खे हीसाइण लाइ कटर मज़हबी सैय्यद अहमद बरेलवी जी मदद करण, विच एशिया में वधंदड़ रूसी ताकत खे रोकण। पर समूरी अंग्रेज़ी फ़ौज तबाह थी वेई। फ़कति डाक्टर बराइलन (Dr. Barylon) हैरतज़दह दुनिया खे ख़बरूं डियण लाइ वापस ऐबट-आबाद पहुतो। अंग्रेज़ इहा शिकस्त न रुगो हिंदुस्तान पर समूरी दुनिया में पंहिंजी हम-आहंगी करण खां सवाइ बर्दाशित करे न सघिया। तंहिं करे उन्हनि बिए कंहिं हंधि फ़तह जी धाक विहारण सां, अफ़ग़ानस्तान में शिकस्त जे उबतड़ि असर खे रदि करण जो फ़ैसिलो कयो। ज़ाहिर आहे त हाणे उन्हीअ मशक़ जो उम्मीदवार सिंधु हो। एलफ़िन्सटन चयो त अफ़ग़ानस्तान में शिकस्त खां पोइ सिंधु में अहिड़ी कार्यवाही इएं हुई "जीअं को झेड़ाक मुड़िस बाज़ार में मार खाई, घर वञी उहे ख़ार पंहिंजी ज़ाल मां कढंदो आहे।"

नेपीअर नेपोलियाई लड़ायुनि में ड्यूक ऑफ़ वेलंगटन जो पसंदीदह जूनियर आफ़ीसर थी रहियो हो। हाणे खेसि सिंधु फ़तह करण लाइ बम्बई ऐं

बंगाल जे फ़ौजी दस्तनि जे कमांडर जी हैसियत सां मोकिलियो वियो। जीअं त हू सिंधु में पंहिंजे टिनि धीअरुनि जी शादी कराइण लाइ टे लख रुपया मेड़ण आयो हो, तड॒हिं खेसि ड॒ाढी तकड़ि हुई। हथियार पार करण बाबति वेचारनि मीरनि जी दांहं कंहिं बि न बु॒धी ऐं बर्तानिवी पोलेटीकल एजेन्ट, आओटराम जे सबुर करण जी सलाह बि अजाई वेई। नेपीअर चयो, "असांखे सिंधु ते कब्ज़ो करण जो हकु नाहे, पर पोइ बि असां इएं कंदासीं त इहो तमाम फ़ाइदेमंद, काराइतो ऐं छसपाईअ जो वड॒ो इंसानी कारनामो थींदो।"

हुन वधीक चयो, "असां उहा मुंझियल गु॒ंढि कपींदासीं, असां एड॒ा ताकतवार आहियूं जो उहा गु॒ंढि खोलण जी तकलीफ़ वठी सघूं था।" पंहिंजे बीमार तसवर मूजिबि, नेपीअर एतिरे कदुरु अंदेशो ज़ाहिर कयो त सिंधी सिपहसालार होश मुहम्मद हकीकत में फ्रेंच जनरल होशी हो।

मीरनि खे अण-जीतण जोगी॒ जंगि में गिहिल्यो वियो पर पंहिंजी बहादुरीअ सां उन्हनि पिण ड॒ेखारियो त इहा न विढ़ण जोगी॒ जंगि न हुई। पर नेपीअर "उठ जे पुठीअ ते संदनि सौदाई तोबख़ानो" चई ठठोली कई हुई। पर 'थारनस्टिन' ज॒णायो आहे त 17 फ़बरवरी 1843 ई. ते हैदराबाद जे भरियां सबाणीअ जी जंग में "तलवार ऐं ढाल सां बलूचनि हिक खां वधीक फुड़ित हमले में बर्तानिवी सिफ़ खे लरिज़ाए पोइते धिके छड॒ियो।" हिक बि॒ए अखियुनि ड॒िठिए शाहिद 'एस्टोरिक' (Eastarick) लिखियो आहे, "उन्हीअ मौके ते ब्लूचनि जे फ़ैसल किनि बहादुरुनि खां शायद ई को गोइ खणी वियो हो। उन्हीअ लड़ाईअ में असांजो ड॒ाढो नुकसान थियो। 62 ज॒णा मारिजी विया, जिनि मां 6 बर्तानिवी आफ़ीसर हुआ, 194 ज॒णा ज़ख़्मी थिया, जिनि में 13 बर्तानिवी आफ़ीसर हुआ। सिंधी लश्कर में 400 ज॒णा मारिजी विया।" उन खां पोइ दु॒बे-दोआबी वटि हिकु बि॒यो मुकाबिलो थियो, जंहिं जो को चङो नतीजो न निकितो।

सेठ नाऊंमल जे पीउ होतचंद, जेको कराचीअ बंदर में बि॒नि हफ़्तनि लाइ ख़ानदानी जहाज़ 'कोटिया हरीस्पा' (Cotiya Harispa) में इंतज़ार करे रहियो हो, हाणे ख़ुशीअ विचां लथो, जंहिं जी आजियां हिंदुनि तोड़े मुसलमाननि कई। सिंधु में मीरनि जो राज॒ु ख़तम थियो। हुननि पंहिंजूं रुगो॒ टे यादगार शयूं पोयां

छडि॒यूं। हैदराबाद में पंहिंजा कुबा, पंहिंजा (उभी चोटीअ वारा) टोप ऐं पंहिंजे होड॒ जी शोहरत। सिंध में जेकड॒हिं को माण्हू आकड़ि वारे नमूने सलूक कंदो हो त खेसि चइबो आहे, ''तूं समझीं थो त तूं टालपुर आहीं छा?''

चार्लस नेपीअर हिकदम गवर्नर जनरल डा॒हं "I have Si(ne)d" जे बदिरां लातीनी ज़बान जे हिक लफ़्ज़ "Peccavi" में ख़ुशीअ भरियो इतिलाउ मोकिलियो। हू पोइ ख़ज़ाने ऐं महल खे लुटण लाइ अगि॒ते वधियो। पर मीरनि जो ख़ज़ांची, दीवान आवतराइ मलकाणी खेसि आडो॒ आयो। नेपीअर ख़ज़ाने जूं कुंजियूं वठण लाइ आवतराइ जे घर वियो, पर हुन खेसि चयो त हू मीरनि जे हुकुम खां सवाइ कुंजियूं संदनि हवाले न कंदो। नेपीअर खेसि गोली हणण जी धमकी डि॒नी पर आवतराइ पंहिंजी गा॒ल्हि ते अटल रहियो। संदसि छुड़क जवाब ते नेपीअर कंधु झुकाए हलियो वियो।

उन खां पोइ नेपीअर, आवतराइ खे किले मां औरतुनि खे कढण जो इंतज़ाम करण लाइ चयो, जो रुगो॒ आवतराइ ई हरम में वञी सघियो थे। आवतराइ ख़ज़ाने ऐं कीमती शयुनि सां भरियल डो॒लीअ पुठियां डो॒ली मोकिलींदो वियो। जड॒हिं तेरहीं डो॒ली बा॒हिरि अची रही हुई त हवा जे लहुरुनि सां पर्दो पासीरो थी पियो ऐं डो॒लीअ अंदरि को बि वेठल नज़र न आयो। पोइ नेपीअर कुझ अंग्रेज़ औरतुनि खे बेगमुनि खे बा॒हिरि कढण लाइ मोकिलियो, जिनि मां हरहिक खे रुगो॒ टे वगा॒ खणण जी इजाज़त हुई।

आवतराइ ऐं शौंकीराम आड॒वाणी (साधू हीरानंद जो पीउ) जे अगु॒वानीअ में माण्हू हथ में तलवार खणी बा॒हिरि निकिरी आया ऐं चयाऊं त उहे वाजिबी कीमत ते घुरुबल सीधो डीं॒दा, पर फुर-लुट न थियण घुरिजे। इन्हीअ गा॒ल्हि शहर खे फुर-लुट खां बचायो।

घणनि हिंदुनि मीरनि खे रकमूं उधारियूं डि॒नियूं हुयूं। मुखी ताराचंद ऐं बि॒यनि हिंदुनि चाहियो थे त नेपीअर उहे कर्ज़ मुल्की ज़िम्मेवारीअ तौर वापसि करे। पर नेपीअर इंकार कयो। इन्हीअ ते उन्हनि पैसा गडु॒ कया ऐं लहिणेदार खे की-कदुरु कर्ज़ भरे डि॒नाऊं। नेपीअर जे सलूक जे ख़िलाफ़ ऐतिराज़ वठंदे ताराचंद बर्तानिवी जागीर वठण खां इंकार कयो, जेका पोइ हैदराबाद जी हीराबाद थी।

नेपीअर आवतराइ जी चतुराईअ ऐं ईमानदारीअ खां एडो मुतासिर थियो जो खेसि नौकरीअ जी आछ कयाईं, पर आवतराइ इंकार कयो। एतिरे कदुरु जो पेंशन वठण खां बि इंकार कयाईं, पर पोइ हुन मीरनि जे मार्फ़त पेंशन वठणु कबूल कई।

नेपीअर सिंधु हथि कई पर जंहिं उरह-ज़ोरावरीअ सां उन्हीअ ते कब्ज़ो कयो हो, उन्हीअ हिंदुस्तान ऐं इंग्लैंड जे मुइज़ज़ अंग्रेज़नि खे हिक जेतिरो सदिमो रसायो। सिंधियुनि त खेसि ''शैतान जो भाउ'' कोठियो। मीरनि पंहिंजे वकीलनि- आख़ूंद हबीब अल्लाह, दीवान मेठाराम ऐं दीवान दयाराम खे लंडन (वा, वार्ले स्ट्रीट) मोकिलियो। बेगमुनि राणी विक्टोरिया खे दरख़्वासितूं पेश कयूं, पर हिक बि न बु॒धी वेई। खेनि हली वञण ऐं मुकामी अख़्तियारीअ वारनि सां गा॒ल्हाइण लाइ चयो वियो। पर जल्दु ई अंग्रेज़नि जो गु॒स्सो भड़िको खाई ज़ाहिर थी पियो। (The London Times - 6 May' 1843 A. C.) में हिकु मुख्य लेखु शायइ थियो, जंहिं में फुर-लुट ऐं जल्दी कार्यवाहीअ जे क़तई ऐं तय थियल मंसूबे जी निंदा कई। (The Bombay Times) उन्हीअ खे ''ग़ैर अक़ुली जंग'' कोठियो ऐं चयाईं त ''बर्तानिवी आफ़ीसरनि मीरनि जूं बेगमूं खंयूं आहिनि।'' जडु॒हिं 800 सिपाही कराचीअ में वबा (Chobru) में मरी विया त Delhi Gazzet मरी वियलनि जे वडे॒ तादाद, वडे॒ ख़र्च ऐं ''बेहद ख़सीस बे-इज़्ज़तयुनि'' खे सिंध जे बे इंसाख़ाना फ़तह सां लागा॒पो डे॒खारियो।

नेपीअर पंहिंजे ख़सूसी कहर सां बदिलो वरितो। हुन पंहिंजे दोस्त खे ख़त में लिखियो, ''जेसताईं आऊं कंहिं एडीटर खे क़तल न करियां, तेसताईं मूं मां कंहिं बि बहितर मिजाज़ जी उम्मीद न रखिजि।''

पर इन्हीअ हूंदे उन्हीअ मौज़ूअ ते गवर्नमेंट जो 'ब्लू-बुक' 'व्हाईट पेपर' (कचो चिठो) जो पुराणो नमूनो तन्कीद कंदो रहियो। बर्तानिवी वज़ीर-ए-आज़म पील (Peel) ऐं गवर्नर जनरल एलेनबिरो (Ellenbuogh) परेशानी महसूस कई। पील, एलनबिरो (Scincle) खे सिंध जे मामलनि मां पैदा थींदड़ ''सरकार जी बे-इंतहा ऐं वधंदड़ परेशानी ऐं उनजे वजूद ऐं आम ख़लक जे लक़मे खे ख़तिरे'' जे बारे में लिखियो। एलेनबिरो खे सिंधु मीरनि खे वापसि डि॒यण ते ग़ौर करण लाइ चयो वियो। ख़ास करे इन्हीअ हकीकत खे ध्यान में रखंदे त सिंधु में सूबे जे आमदनीअ खां चौणों ख़र्चु अची रहियो हो।

पर डाढो मुड़िस 'डियूक ऑफ़ वेलंगटिन' सिंधु खे अंग्रेज़ी हुकूमत सां गुंढे छडुण जे हक में हो। हुन एलेनबिरो खे 'संभाले रखण' ऐं "वधीक बदिकार प्रेस ऑफ़ इंडिया जे वधाउ कयल बयाननि ते बहस कंदड़ बदिकार लंडन प्रेस" जे बारे में घणी गुणिती न करण लाइ चयो। हुन मसइले ते काबू पातो, जडुहिं चयाईं, छा असांजे आइने-इंतज़ामिय अख़्तियारीअ वारा सिखनि जे मदद लाइ सिंधूअ ते फ्रेंच जांबाज़नि जे शुरू कयल ऐं काइम थियल बैठक डिसण लाइ तैयार आहिनि? "उहे तैयार न हुआ ऐं अहिड़ीअ तरह सिंधु खे अंग्रेज़ी हुकूमत सां मिलायो वियो। बर्तानिया आम ख़ल्क जे राइ खे थधो करण लाइ एलेनबिरो खे वापसि घुराए वरितो। नेपीअर बिल्कुल दुरुस्त चयो हो, "हालतुनि जी फ़ितरत, सिंधु खे वधीक अर्से लाइ ख़ुदि-मुख़्तियार हुकूमत जे हैसियत सां जारी रहण खां रोके रही आहे, जेकडुहिं 1843 ई. में साणुसि लड़ाई न कजे हा त उहा 1854 ई. में कजे हा।" हुन चयो, "बलूच पिण "सिंधु में धारिया" आहिनि। नेपीअर दलील डिनो त जीअं त बर्तानिया हिंदुस्तान में हिक ऑला ताकत आहे, तंहिं करे सिंधु जा माण्हू "पंहिंजे उम्मीदुनि ऐं ख़्वाहिशुनि सां असांजा पंहिंजा" आहिनि।

नेपीअर सही हो, हिंदुस्तान जी ख़ुदि-मुख़्तियारी विरहाइण जोगी न आहे।

11

कराची ओभर जी राणी

जड॒हिं मियाणी ऐं दु॒बे जे लड़ाईअ जी दज़ वेही रही त बर्तानिया जो वज़ीर-ए-आज़म पील (Peel) ऐं मुख़्तलिफ़ धुर जे अगु॒वान लॉर्ड रसेल (Lord Russel), नेपीअर खे बर्तानिवी पार्लियामेंट में यकिराइ शुक्रिया जो वोट डि॒यण लाइ गडु॒ थिया। नेपीअर पिण सतर हज़ार पाऊंड स्टरलिंग जे रोक रकम जो इनाम हासिल करे ख़ुशि थियो। हू हाणे पंजनि सालनि ताईं एलेनबिरो (Lord Elenbruogh) जे इन्हीअ ख़्वाहिश खे अमली जामो पहिराइण लाइ वञी रहियो हो त ''असां खे सिंध में सभु कुझ मुस्तक़बल लाइ करण घुरिजे, असां खे हिक बि॒ए मिस्र खे जनम डि॒यणो आहे।'' नेपीअर चयो, ''जेकड॒हिं कंहिं सभ्य माण्हूअ खां पुछिजे त जेकड॒हिं तूं सिंध जो हाकिम हुजीं त जेकर छा करीं त संदसि जवाब हूंदो त मां दरिया ताईं महसूल जूं चुंगियूं ख़तम कंदुसि। कराचीअ खे फ्री पोर्ट बणाईंदुसि, सखर खे दरिया जी वापारी मंडी बणाईंदुसि। मां दरिया जे बि॒न्ही कपनि खां ट्रकुनि जा रस्ता ठहिराईंदुसि, मां आगबून आणींदुसि'' ऐं हिन दरिया जूं चुंगियूं ख़तम करण जे शुरूआत सां उन्हीअ ते अमल करण शुरू कयो।

हुन हिकदम बलूच जागीरदारनि खे पाण वटि घुराए, संदनि तलवारूं खेनि वापसि कयूं ऐं संदनि जागीरूं बहाल कयाईं। किनि सरदारनि खे राणी विक्टोरिया जी तस्वीर खे सलामी डि॒यण जी ख़ास महरबानीअ जे तौर इजाज़त डि॒नी वेई, जेका हूंअं आम माण्हुनि ऐं नौकरनि चाकरनि जे नज़र खां बचाए पर्दे में ढके रखी हूंदी आहे। नेपीअर खेनि चयो, ''मुंहिंजो हुकुम मञो! अव्हां खे जेकी वणे सो करियो। फुरियो, क़त्ल करियो, जेसताईं मां मना न करियां।'' बर्तानिया जे हुकुम जी पैरवी कंदे हुननि उहो ई कयो, बाकी ग़ाल्हियुनि लाइ कानून संदनि तरफ़दार हो।

आम सिंधी माण्हू हिकदम उन्हीअ रस्ते पइजी वियो। हुन लाइ 'लाट साहिब' (Lord) ऐं 'लेडी साहिब' (Lady) हिकदम वडे॒ अख़्तियार जा मालिक हुआ। जड॒हिं खेनि संदनि अगि॒यां हाज़ुर थियण जो हुकुम मिलंदो हो

त उहे पंहिंजूं जुतियूं ब॒ाहिरि लाहे ईंदा हुआ। कंहिं बि अंग्रेज़ जो पंहिंजे मुलाक़ीअ खां पहिरियों सवाल इहो हूंदो हो त "छा तूं बदिमाश आहीं?" ऐं उहे मुलाक़ी रिढ वांगुरु पंहिंजी बदिमाशी ऐं पंहिंजी अताइत- ब॒ई ग॒ाल्हियूं इएं चई तसलीम कंदो हो, "असां सरकारी बदिमाश आहियूं।" सिंध में 'वड॒ेरे' (वड॒े ज़मींदार) वाणिए पीर ऐं (गोरे या कारे) 'साहिब' जे विच में अख़्तियारियुनि जो चौकुंडो तरतीब ड॒िनो वियो।

नेपीअर बनावटी सूरिह्याईअ सां टिन्ही प्रेज़ीडेंसियुनि मां इंजीनियर घुराइण जो वाइदो कयो हो त जीअं सिंधूअ जो पाणी उभिरंदे नारे मां लंघे, कच्छ जी हिंदू एराज़ीअ में वही वञे पर जल्द ई हुन महसूस कयो त कच्छ जे किस्मत जो फ़ैसिलो कल्होड़नि जे ब॒ुधायल "अल्लह बंद" न, पर ज़िलज़िले खां पोइ सिंधूअ जे ऊनाहे वहकिरे जे करे थी चुको हो। तंहिं करे हुन हिकदम पुराणनि वाहनि खे सुधारण ऐं नवां वाह खोटाइण लाइ 'वाहनि जो खातो' खोलियो।

हिंदुनि खे मुतासिर करण जी कोशशि में हुन जामा मस्जिद ग़ज़नीअ जो दरवाज़ो 'सोमनाथ में खसियल दरवाज़े जे तौर' हिंदुस्तान आंदो। पर जल्द ई हिंदू माहिरनि उन्हीअ खे ग़ैर असुलोको साबित कयो।

नेपीअर हारियुनि खे 1843 ई. खां अग॒ु में ड॒िनल कर्ज़ माफ़ करे छड॒िया। हुन सिंध में 'पुलिस खातो' खोलियो, जेको हिंदुस्तान जे ब॒ियनि सूबनि लाइ मिसालु बणिजी वियो।

नेपीअर ख़ास करे इंसाफ़ जे इंतज़ामी मामले में नालो कढियो। संदसि हिदायतूं हूंदियूं हुयूं, "जंहिं ग॒ाल्हि खे माण्हू इंसाफ़ चवनि, उन्हीअ खे वज़न ड॒ियो, न की उन्हीअ ग॒ाल्हि खे वज़न ड॒ियो, जंहिं खे कानून इंसाफ़ थो कोठे।" हुन हिक दफ़ो मंछर जे मुहाणे जो मुकदमो टे ड॒ींहं हलायो ऐं फ़ैसिलो कयाईं त उहे मछी मारण जो रुग॒ो टे सैकड़ो महसूल ड॒ियनि। हुन हिक भेरे वरी चिताउ ड॒ींदे चयो त "कारदारो ऐं पुलिस वारो, मां दुर्जननि खे भोरा भोरा कंदो आहियां, शाहिदियुनि हूंदे, मां फ़ैसलो ग़रीबनि जे हक़ में कंदो आहियां।"

नएं निज़ाम में जेके ब॒ तबिका नाराज़ ऐं नाख़ुशि हुआ, उहे हुआः अग॒ूणा टालपुर हाकिम ऐं हिंदू आमिल (कायस्थ) मुलाज़िम टालपुरनि पंहिंजी हुकूमत विञाई हुई ऐं अंग्रेज़नि आमलनि खां आइला इंतज़ामी उहिदा खसिया

हुआ, पर टालपुर जल्दी जागीरुनि ऐं पेंशनुनि ते पर्ची विया ऐं इंतज़ामी ऐं माली वाधारे सां आमलनि अगॖे खां बि अगिॖरी तरक्की कई। (विरहाङे खां पोइ सिंध जे अगूॖणे कमिश्नर सर पैट्रिक कोडेल (Sir Patric Codell) पाकिस्तान जे तडॖहोकी सूचना ऐं चौडॖस फैलाव खाते जे वज़ीर पीर अली मुहम्मद राशिदी खे लिखियो हो त आमलनि खे बहतरीनि मुंतज़म समझां थो, जिनि सभिनी मैदाननि में पाणु मोखियो आहे। इन्हीअ में अचरज जी गॻाल्हि नाहे त चोडॖहं सिंधी, जेके समूरा आई.सी.एस. में वेठा, तिनि मां बॿारहां आमिल हुआ)।

इन्हनि सभिनी गॻाल्हियुनि पंजाब खे मुतासिर कयो। इन्हीअ मां मुराद बि पंजाब खे मुतासिर करण जी हुई, जेको उन वक्त सिखा-शाहीअ में पीसिजी रहियो हो ऐं बर्तानिया जे झोलीअ में किरण लाइ तैयार थी रहियो हो।

पर नेपीअर सिंधु जो पहिरियों बर्तानिवी हुकुमरान हुअण खां सवाइ बॿियो बि घणो कुझ हो। हू वडॖी दूरांदेश निगाह वारी सल्तनत जो ठाहींदड़ हो। "हीरनि में जीअं कोहीनूर आहे, कौमुनि में तीअं हिंदुस्तान आहे। जेकडॖहिं मां बॿारहं सालनि लाइ हिंदुस्तान जो शहंशाह हुजां हा त मां मंझिसि रेल्वाईअ जो ॼारु विछाया हां, दरियाहनि ते पुलियूं बॿधायां हा, हुकूमत जी गादी देहली या मेरठ या शिमला या इलाहाबाद मुकररु करियां हा। कंहिं बि हिंदुस्तानी शहज़ादे जो वजूद बि न हुजे हा। 'निज़ाम' जो नालो बि न बॿुधिजे हा। नेपाल असां जो हुजे हा ऐं कुस्तानिय (टर्की) शहंशाही दरबॿारवसीअ जे तप ते वरितल हुजे हा, जडॖहिं त रूस ऐं चीन जे बादशाहनि जी नब्ज़ 100 खां कडॖहिं बि घटि न हुजे हा।"

"जेकडॖहिं मां हिंदुस्तान जो बादशाह हुजां हा त मां मास्को ऐं चीन खे लोडॖे विझां हा। जेकडॖहिं मां इंगलैण्ड जो बादशाह हुजां हा त मां देहलीअ जे महल मां रूस ऐं फ्रांस खे डॖंदनि वारो ठौंशो ठकाउ करायां हा। मुग़रब में सभु कुझु इंगलैण्ड जे आरहार हुअणु घुरिजे ऐं मशरक में सभु कुझु हिंदुस्तानी फ़ौज हुअणु घुरिजे।"

पर इन्हनि सभिनी लियाकतुनि सां नेपीअर हिक मंज़म या अडॖींदड़ खां वधीक़ जंगी जोधो हो। 1850 ई. में संदसि विदाउ थियण खां पोइ सिंध खे बम्बई प्रेज़ीडेंसीअ सां गॻंढियो वियो ऐं बार्टल फ्रेअर खे उनजो पहिरियों

कमिश्नर मुकररु क- ॅ वियो। फ्रेअर खे धधिको रसियो, जड॒हिं हुन ड॒िठो, "हिक मेल डिघो या पुल ज़रीए ग॒ंढियल रस्तो बि न हो, कंहिं बि किस्म जी साफ़ थियल पंजनि मेलनि जी राज़की पुल बि न हुई। कोर्ट, लॉक-अप, पुलिस थाणो या कंहिं बि किस्म जी आफ़ीस बि न हुई, न ज़िले जूं बंदियूं। एतिरे कदुरु जो ग॒ोठनि जी फ़हिरस्त बि न हुई। न सर्वे, न सेटलमेंट, कुझु बि न हो।"

जेतोणीक संदसि उमिरि रुग॒ो 35 वर्हिय हुई, पर पोइ बि फ्रेअर बर्तानिवी सदीअ जो सिंध जो हिकु बहितरीन मुंज़िम (हुकुमरान) साबित थियो। 1850 ई. खां 1859 ई. ताईं नवनि वर्हियनि जे मुख़्तसर अरिसे में हिन सिंध जो मुहांडो ई तब्दील करे छड॒ियो। 1853 ई. में हिन सिंधु खे पहिरियों स्कूल ड॒िनो। 1858 ई. में हिन सिंध रेलवे कम्पनीअ खे कराची-हैदराबाद रेलवे ट्रैक ते कमु शुरू कंदे ड॒िठो। लेफ़टीनंट फाईफ (Lt. Fife) नाले हिक इंजीनियर खे नक्शो ठाहे पेशि कयो। जंहिं आख़िरि में अज़ीम सखर बंद में मकसद ग॒ोल्हे वरितो ऐं सिंध खे हिक काराइते सूबे में तब्दील करे छड॒ियो। बंद ब॒ोड॒ि आणींदड़ वाहनि खे काबू कयो पर उनजे करे आम ख़ुशहाली आई ऐं सूबे में ड॒ोहनि जी रफ़्तार में घटिताई थी।

फ्रेअर कराची मेले में हिक 'तिजारती मेले' जो इंतज़ाम कयो, जंहिं न रुग॒ो समूरे हिंदुस्तान, पर विच एशिया खे पिण पाण ड॒ांहुं छिकियो।

फ्रेअर, वाइसराइ खां इहा ग॒ाल्हि पिण मञाई त इंगलैण्ड खा ध्दड़ जहाज़ बम्बई पहुचण खां अगु कराचीअ में तरसनि। जेका ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनीअ अगु रद्द कई हुई। इन्हीअ सां कराची, जंहिंखे नेपीअर 'ओभर जी राणी' काठियो हो, दुनिया जे हिक हकीकी गादीअ वारे हंध जे सूरत में टिड़ी पेई। अजु कल्ह सिंध में मुहाजिरनि जे ख़िलाफ़ हिकु ऐतराज़ इहो बि आहे त इन्हीअ अज़ीम शहर जे नाले उच्चारण जी बि खेनि सुधि नाहे। उहे 'काराची' या 'करांची' या कुझु बि पर असुलोको नालो 'कराची' नथा कोठीनि।

जनरल जेकब सिंध जे उत्तरिएं हिस्से जो इंतज़ाम एड॒ो सुठो हलायो ऐं तरकी वठाराई, जो उन्हीअ जो नालो संदसि नाले पुठियां 'जेकब आबाद'

ज़िलो रखियो वियो। सागीअ रीति पारकर सिंध जे डखण-ओभर में एड़ो चड़ो कमु कयो जो 'थर' ज़िले जो नालो 'थरपारकर' रखियो वियो। (ताज़ो 1990 ई. खां थरपारकर ज़िले खे बिनि हिस्सनि में विरहाए बराज एराज़ीअ में 'मीरपुर ख़ास' ज़िलो ऐं थर एराज़ीअ में 'थर' ज़िलो तशकील ड्रिना विया आहिनि।)

फ्रेअर सिंधी सूरतख़तीअ जो पिण फ़ैसिलो कयो ऐं पोइ हेठीं सतह ते इंतज़ामिया जी बोलीअ जे तौर मञुता ड्रिनाई। 'सिंध डिस्ट्रिक्ट' डाक (Sindh District Dowk) तहत पहिरीं टपाल टिकिली जारी करण जो शरफ़ बख़्शियाई।

1857 ई. में जडहिं अज़ीम इंकलाब जी बाहि भड़िकी त मीरपुर ख़ास जे मीर शेर मुहम्मद ख़ान अंग्रेज़नि सां मुहाडो अटिकायो ऐं खेसि कराचीअ जे राम बाग़ (हाणे आराम बाग़) में तोप सां उडायो वियो। बियो दरियाख़ान जखराणी, जंहिं खे नेपीअर जागीर अत्ता करे पंहिंजो कयो हो, अज़ीम इंकलाब में पंहिंजो किरादार अदा करण जे एवज़ि अदनि डांहुं जला वतन कयो वियो। पर पोइ जो बाकी अरिसो सिंध में एडो अमन अमान रहियो, जो फ्रेअर समूरियूं बर्तानिवी फौजूं उत्तर में मदद लाइ मोकिले छड्रियूं।

फ्रेअर पोइ बम्बई जे गवर्नर जे उहिदे ते बि रहियो ऐं उन खां पोइ वाइसराइ जे एक्ज़ुक्यूटिव काऊंसिल जो मेम्बरु मुकररु थियो। उन्हीअ हैसियत सां हुन ऑला पालेसी ठाहिण में हिस्सो वरितो। लॉर्ड लरेंस (Lord Lowrance) जो पंजाबी मकतब-फ़िक्र हिंदुस्तान खे यकिसान वहदानी मुल्क में यकजाइ करण जो ख़्वाहिशमंद हो। संदसि नारो हो 'सिंधूअ डांहुं वापसि वञे।'' सर फ्रेअर जे सिंधी मकतब-फ़िक्र, हिंदुस्तान जे गूनागूनियत खे पंसदि थे कयो। हुननि ढिरे ग़ंढियल सिरिश्ते जी हिमायत थे कई, जंहिं खे कंहिं बि कीमत ते, विच एशिया ताईं काराइते नमूने वधाए सघियो, जीअं हिंदुस्तान मज़बूत अमलीअ वारी मज़बूत सरहद काइम करे वठे। पंजाबी मकतब-फ़िक्र इन्हीअ ग़ाल्हि खां ख़बरदार थे कयो, जडहिं त सिंधी मकतब-फ़िक्र फार्वर्ड पालेसीअ जी हिमायत थे कई। 1876 ई. में फ्रेअर कोइटिया ते कब्ज़े करण जो हुकुम ड्रिनो ऐं अफ़ग़ानस्तान जे हरात ऐं कंधार शहरनि में एजेन्ट मुकररु कयाई।

सभेई कमिश्नर, फ्रेअर जहिड़ा लियाकत भरिया न हुआ। मंझाउनि जी. ए. थॉमस (G. A. Thomas) जे कंध में किली लगल हुई। जंहिं लाइ 'सिंध

आबज़र्वर' (Sind Observer) अख़बार 'थामस ख़ुदा' (God Almighty Thomas) लिखियो, पर बर्तानिवी राज॒ इंफ़रादी न, पर उदारयाई हो, जंहिंजे आम रवाजी इंतज़ाम में को बि शकु न हो। सिंधु में हिक सदीअ जे नाख़ुशिगवार अरिसे जे अंग्रेज़ी राज॒ दौरान हुननि सिंधु खे रोड ऐं रेलवायूं, वाह ऐं पुलियूं, स्कूल ऐं अस्पतालूं, सोच ऐं आदर्श ड॒िना, जिनि सूबे जे चहिरे खे विचिएं दौर मां कढी जदीद दौर मां आणे बदिलाए छड॒ियो।

नेपीअर चयो हो, "ए कराची, तूं अञा ओभर जो शान थींदीअं। ए कराची, छा तुंहिंजे शान खे ड॒िसण लाइ मां वरी ज़िंदह थी अची सघंदुसि!" रुग॒ो पंजाह वरिह पोइ कराचीअ जो शान ड॒िसी, नेपीअर सचु पचु ड॒ाढो ख़ुशि थिए हा। सिंधु में पहिरियों कॉलेज कराचीअ में काइम थियो। जेतोणीकि शागिर्दनि जो वड॒ो तादाद हैदराबाद खां आयो हो, छाकाणि त ऋषि ड॒याराम चयो हो, "कराची सिंधु खां वधीक अहम आहे।"

रविंद्र नाथ टैगोर हैदरबाद खे 'हिंदुस्तान जो सभ खां वधीक फैशन वारो शहर" कोठियो। शिकारपुर विच एशिया जो बैंकर थी पियो ऐं जड॒हिं रूस में इंकलाब आयो त उहो ड॒खण एशिया जो पिण बैंकर थी पियो। सखर जो सिंधूअ जो मंज़रु मथां वरी ज़िंदह-पीर जो ब॒ेटु, लैंसडाऊन पुलि जे भरि में बखर जो ब॒ेटु विच में साध ब॒ेले ब॒ेट जो मंदिर ऐं हेठि सतनि वाहनि वारे सखर जी पुल- दुनिया में कुदरती ऐं इंसानी जोड़ियल सूंहं जे ख़ूबसूरत नज़ारनि मां हिक आहे। पैकस ब्रिटेनिका (Pax Britanica) पंहिंजे सभिनी ऊणायुनि जे बावजूद हैदराबाद ऐं शिकारपुर जे वापारियुनि खे सालियानो अढाई करोड़ रुपया सिंध में आणण में मदद कई। जड॒हिं उन वक्त सूबे जी सालियानी बजट रुग॒ो पंज करोड़ रुपया हुई। पीर अली मुहम्मद राशदीअ जे लफ़्ज़नि में "पर नाऊंमल अगर गद्दारी न करे हा त सिंधी मुसलमान अञा ताईं घोड़नि ऐं उठनि ते सवारियूं कनि हा ऐं सिंधी हिंदू गड॒हनि ऐं ख़चरनि ते सवारियूं कनि हा।"

पर अंग्रेज़नि जी ड॒िनल सभ खां वड॒ी सूखिड़ी जदीद तइलीम ऐं सभिनी जी बराबरी हुई, पोइ हिंदू हुजे या मुसलमान। मुसलमाननि जे राज॒ में हिंदुनि लाइ घोड़े जे सवारी, ज़मीन जी मालिकी या लश्कर में भर्तीअ जी मनाही थियल हुई। 1843 ई. में हिंदू जेके कुल आदमशुमारी जो 25 सैकड़ो हुआ, वटिनि ज़मीन जो हिक बि एकड़ कोन हो।

1947 ई. में ज़मीन जे 40 सैकड़ो हिस्से जा मालिक हुआ। एतिरे कदुरु जो शिकारपुर में हिक खीर वारे मथुरादास जो पुट मथुराणी आई.सी.एम. थियो। जडु॒हिं पहिरियों सिंधी एच. के. कृपलाणी आइ.सी.एस. लाइ चूंडियो वियो त संदसि प्राईमरी स्कूल जा उस्ताद संदसि गाडी॒अ खे छिकण लाइ ख़ुशीअ सां अगि॒ते वधी आया हुआ।

पर उहो ख़ुदि बर्तानिवी निज़ाम न हो, जंहिं इहे नतीजा पैदा कया। उहा असल में मकानी माण्हुनि जो मोट हुई, जंहिं उन्हीअ खे हकीकत जो रूप डि॒नो, जेका हूंअं रुगो॒ लिकल हुई।

मुसलमाननि में आग़ा ख़ान, मुहम्मद अली जिन्नाह सिंधु में ज॒ावा, जिनि सियासत में नालो पैदा कयो। मिर्ज़ा कलीच बेग़, तइलीम इंतज़ामिया ऐं अदब जो थंभो बणियो। हुसन अली आफ़ंदी कराचीअ में मदरसो खोलियो, जंहिं मां सिंधी मुसलमाननि जो जेको मुख़्तसिर विचों तबिको उसिरियो, उन्हनि मां जे. एम. परगु॒ड़ी पहिरियों सिंधी बैरेस्टर बणियो।

गिदूमल, आवतराइ ऐं नाऊंमल जे रवायत ते अमल कंदे, हिंदुनि बेशक ऊच शख़्सनि जी हिक मुकमल कहकशां पैदा कई। ही उहे डीं॒हं हुआ, जडु॒हिं कराचीअ खां बम्बई पहुचण में चार महीना लगी॒ वेंदा हुआ। (आगबोट जे दौर खां अगु॒ वारनि डीं॒हंनि में इएं विर्ले थींदो हो। एतिरे कदुरु जो उन्हनि डीं॒हंनि में क्लाईव (Lord Clive) जो जहाज़ हिंदुस्तान जे टिनि सफ़रनि मां बि॒नि सफ़रनि दौरान भुलिजी अमेरीका जे रस्ते डा॒हुं हलियो वियो हो।) मैट्रिक जे पहिरियनि चइनि शागिर्दनि- चूहड़मल पंजाबी, नवलराइ आडु॒वाणी, डु॒याराम जे॒ठमल ऐं कौड़ोमल खिलनाणीअ लाइ इम्तहान पास करण एडो॒ डु॒खियो हो जो रुगो॒ हिकु शागिर्द चूहड़मल पंजाबी इम्तहान पास करे सघियो, पर अंग्रेज़नि संदनि सलाहियतुनि खे ज॒ातो थे, उन्हनि मैट्रिक में नापास थियलनि खे पिण नौकिरियूं डे॒ई संदनि हिमथ अफ़ज़ाई कई ऐं उन्हनि केडो॒ न नालो कढियो! डु॒याराम जे॒ठमल वडो॒ वकील थियो, हुन 'डी. जे. सिंध कॉलेज' जेको संदसि नाले पोयां सडि॒जे थो, जे माली मदद लाइ केतिरनि ई हिंदुनि खां हिक महिने जो पघार चंदे में वरितो। नवलराइ हिक वडे॒ स्कूल 'नवलराइ हीरानंद अकेडमी' जो पायो विधो, जेको संदसि ऐं भाणसि हीरानंद जे नाले पोयां सडि॒जे थो। कौड़ेमल (1844 ई.-1916 ई.) सामीअ जे सलोकनि जी खोजना

करे उ‸ छपाया, जंहिं सामीअ खे शाह ऐं सचल सां गडु, टिएं वडे शाइर जी हैसियत डिनी। कौड़ेमल उस्तादनि जे संख्या जी पिण सदारत कई ऐं सिंध जे विचोले वारे इलाके 'साहितीअ' में नओं रूहु फूकियो।

चूहड़मल पहिरियों सिंधी ग्रज्यूएट थियो ऐं ताराचंद पहिरियों सिंधी डाक्टर थियो। साधू हीरानंद पहिरीं सिंधी अख़बार रसाले 'सिंध टाईम्स' (Sindh Times) ऐं 'सिंध सुधार' जो एडीटर मुकरर थियो ऐं कंवलसिंघ पहिरीं सिंधी रोज़नामा 'सिंध वासी' (1914) जारी कई। पर बर्तानिवी दौर जो सभ खां वडो सिंधी जंहिं खे असां सियासत खां पासीरो रखंदासीं ऋषि डयाराम हो (डयाराम गिदूमल शाहाणीअ खे कल्होड़नि ऐं टालपुरनि जे दौर जी मशहूर शख़सियत गिदूमल जे पोयां सडिजंदड़ गिदावाणी आकहि सां मिलाए मुंझायो न वञे।) हू बेशक 'युग पुरुष' (The Man of the Age) आहे, हुन बर्तानिवी दौर दौरान सिंध जी रोशन ऐं बहितरीन नुमांइदगी कई।

डयाराम (1857-1927) डिस्ट्रक्ट सेशन जज जे उहिदे ते रसियो। पर संदसि असुली कमु कोर्ट खां बाहिरि हो। डी. जे. सिंध कालेज काइमु करण में मदद करण खां सवाइ कराचीअ में हिक वडी हास्टल 'मेठाराम हास्टल' जी अडावत करण लाइ हुन पंहिंजे भाउ मेठाराम खे हिकु हज़ार गिनियूं चंदे में डियण लाइ तैयार कयो। संदसि ट्रस्ट डी. जे. नैशनल कालेज हैदराबाद काइम करण लाइ हिकु लख रुपया चंदे में डिना।

डयाराम नारीशाला काइमु करण में मदद कई, जिते औरतूं पंहिंजो वक्तु गुरू ग्रंथ साहिब पढ़ण में गुज़ारीनि ऐं समाजी कम कनि। हुन "असांञे छोकिरियुनि ख़िलाफ़ सतनि पापनि" ख़िलाफ़ मुहिम हलाई। उहे पाप हुआ- तरोखड़ियुनि लाइ संदनि बांहुंनि ऐं चेहरे में सुयूं टुंबणु, खेनि स्कूल न मोकिलणु या रांदि न खेडाइणु, संदनि बांहुंनि में बांहींअ जो बोझ पाराइणु, नंढपिण में शादी कराइणु, ससुनि तरफ़ां खेनि हीसाइणु, नंढपुणि में बार जमणु, वियम दौरान मौत, उन खां पोइ मर्द जो हिकदम बी शादी करणु। हुन डाज जे रवाज ख़िलाफ़ जंगि जोटी ऐं पंचायत खां वधि में वधि पंज सौ रुपया तय करायाई। जडहिं संदनि धीअ रुकमणीअ जी शादी थी त उन मौके ते हुन पाण रुगो पापड़ खाराए ऐं शरबत पीआरे अहिड़ो मिसाल काइमु कयो। (आगरे जे राधास्वामी पंथ वारनि कोशिश कई ऐं सिंधी औरतुनि खे बिन्हीं बांहुंनि खे

आज जे ॿांहींअ बदिरां रुॻो हिकु या वधीक सोना कंगण पाइण लाइ चयो।) ॾयाराम प्लेग में वरितल बीमारनि जी ख़िज़मत करण लाइ टे महिना मोकल वरिती ऐं उन्हीअ वक्त दौरान ईसाई पादरियुनि जे हथ हेठि फाथल अठ सौ यतीमनि खे बचायाईं।

संदसि पीउ गिदूमल सत साल हरिद्वार में संस्कृत जे अभ्यास में गुज़ारिया हुआ। हुन सिंध में वापस अची ब्रह्मणनि जे छोकिरनि खे संस्कृत ज़बान सेखारी। जॾहिं छोकिरनि साणुसि बहस कयो त खेनि ब्रह्मणनि जे हैसियत में खांउसि मथांहें हंध ते विहारियो वञे, जो हू पाण हिकु मामूली आमिल आहे त हू खिलियो ऐं खेनि मथाहें हंध ते विहारियाईं। हू खेनि वज़ीफो पिण ॾींदो हो। संदसि पुट ॾयाराम इन्हीअ मकसद लाइ 'संस्कृत पाठशाला' जी सुहिणी इमारत जोड़ाई।

ॾयाराम खे माहवार 1120 रुपया मिलंदा हुआ, जिनि मां 150 रुपया पाण ते ख़र्चु करे बाकी समूरा ख़ैराती कमनि में ॾेई छॾींदो हो। एतिरे कदुरु जो हुन आरसी ख़रीद करण ते चंद आना बि ख़र्चु न कया ऐं पंहिंजो पटिको दरीअ जे शीशे अॻियां ॿधंदो हो। हुन इंशोरंस कम्पनी ऐं प्रोवीडंट फंड काइम कया ऐं होम्योपथीअ जो अभ्यास कयाईं ऐं उनखे हथी ॾिनाईं।

जज जे हैसियत में ॾयाराम तमाम ऊची शख़्सियत जो मालिक हो। जॾहिं शिकारपुर जे हिक सेठ मेवलदास ज़ोरी कई त हुन खेसि सत साल जेल जी सज़ा ॾिनी, जेतोणीकि सेठ तमाम मकबूल शख़्स हो। ॿियो मशहूर मुकद्दमो जेको हुन फ़ैसिलो कयो, हुज़ूरीअ जो हो। हुन मज़हबी शख़्स ते क़त्ल जो इलज़ाम हो। हुन पंहिंजे बचाअ में चयो त "मकतूल खे कत्ल करण लाइ मूंखे अल्लाह जो हुकुम (इल्हाम) थियो हो।" ॾोहारीअ जे इल्हाम जे बावजूद ॾयाराम खेसि उमिरि कैद जी सज़ा ॾिनी।

पर हिन सभ खां अहम मुकद्दमो अहमदाबाद जे जामा मस्जिद जो फ़ैसिलो कयो हो। मस्जिद जा अमानतदार मस्जिद जे ज़मीन जा हिस्सा विकिणी पैसा पाण हड़प करे रहिया हुआ। इमाम कोर्ट खे रजूउ कयो। मुकद्दमो ॿारहं सालनि ताईं ईंघींदो रहियो पर जॾहिं ॾयाराम डिस्ट्रिक्ट जज मुकरर थी आयो त हुन उहो मुकद्दमो लाॻीतो ॿारहनि ॾींहंनि ताईं हलायो. सभिनी फ़ारसी दस्तावेज़नि जो अभ्यास कयाईं ऐं विकिरो कयल ज़मीन

मस्जिद खे वापस करण जो हुकुम कयाईं। हुन पंहिंजो हुकुम काग़ज़ ते न पर अर्से ताईं काइमु रहण लाइ कपड़े ते लिखियो।

कएं वर्हियनि पोइ मस्जिद जे इमाम चयो, ''जहिड़ीअ रीत डयाराम मुकद्दमो हलायो, मूं महसूस कयो जणु पैग़म्बरु ख़ुदि जज जी कुर्सीअ ते वेठो आहे।'' लॉर्ड कृष्ण जडहिं डयाराम सां मिलियो त हुन खेसि मुबारक डींदे चयो, ''फ़ाज़िल जज, असांखे अव्हांजे लियाकतुनि जी ख़बर आहे।''

बरख पारसी समाज सुधारक ऐं ख़ल्क जे ख़िज़मतगार, बहराम जी मलबारी डयाराम जे ज़िंदगीअ ते हिकु किताब लिखियो, जंहिं जो पेशि लफ़्ज़ बिए कंहिं न, पर फ्लारेंस नाईटंगेल (Florence Nightangle) लिखियो आहे।

इंतहाई धर्मात्मा शख़्स डयाराम, पंहिंजूं शामूं भाई कलाचंद ऐं भाई मूलचंद ज्ञानीअ वटि गुज़ारींदो हो, जेके बई संत पुरुष हुआ। संदनि बियो दोस्त हैदराबाद जे गुरू मंदिर जो बाओ गुरपत साहिब हो। डयारामु संस्कृत में गीता, अरबीअ में कुरान ऐं ईरानीअ में बाईबल पढ़ी सघंदो हो।

उन वक्त 1878 ई. में सिंधु में हिकु वडो वाकओ थियो। ठारू नाले हिकु हिंदू नौजुवान, ज़ाल ऐं बारनि बचनि वारो हिक मुसलमान छोकिरीअ जे इश्क में फासी साणुसि शादी करण लाइ मुसलमान थियो। जडहिं शेख़ ठारूअ पंहिंजी मुसलमान ज़ाल विञाई त हुन पंहिंजे कुटंब में वापस मोटण चाहियो ऐं हिंदू थी पियो।

शुद्धीअ जी रस्म अदा कई वेई। पर शौकीराम आडवाणी (नवलराइ ऐं हीरानंद जो पीउ) जेको आवतराइ खां पोइ पंचायत जो मुखी थियो हो, खेसि हिंदूअ जे हैसियत में कबूलण खां इंकार कयो। आवतराइ, गिदूमल ऐं भाई गुरपत साहिब साणुसि बहस बि कयो पर सभु अजायो साबित थियो। नतीजो इहो निकितो जो हैदराबाद में डुफेडु पइजी वियो। एतिरे कदुरु जो बिन्हीं धुरियुनि पंहिंजा मसाण जुदा कया। सभेई समझदार हिंदू घबिराइजी विया। शौकीराम खे चार पुट हुआ, मंझांउनि टे बे-औलाद थी मरी विया, चोथों हीरानंद, जंहिं खे टे धीअरूं हुयूं, जिनि मां ब नंढपुणि में ई मरी वेयूं ऐं टीं लछमी बे-औलाद मरी वेई। माण्हुनि शौकीराम जे कुटंब जे ख़ातिमे खे शेख़ ठारूअ जे मामले में भाई गुरपत जी बदि-दुआ सां जोड़ियो।

डयाराम पंहिंजे अवामी कमनि खे सिंध ताईं महदूद न रखियो। हुन शिमल जे भरिसां धर्मपुर में सौ एकड़ ज़मीन हासिल करे उते टी. बी. सैनीटोरियम काइमु कयो। संदसि इन्हीअ कोशिश खे लॉर्ड हारडिंग (Lord Hardinge डाढो साराहियो। हुन बम्बईअ जे बांद्रा इलाके में 'सेवा सदन' जो पाय विधो। 1925 ई. में अमृतसर में 'शांति आश्रम लइब्रेरी' काइमु करे 'शिरोमण गुरुद्वारा प्रबंधक कामेटीअ' जे सुपुर्द कयाईं, जंहिं खे पोइ गुरू रामदास लइब्रेरी जो नालो डिनो वियो।

डयाराम समूरे मुल्क जो सफ़र कयो ऐं बंकिम चंद्र चैटर्जी, देवेंद्रनाथ टैगोर, थियासाफ़ीकल सोसाइटीअ जे कर्नल ओलकाट (Col. Olcott) ऐं लाहौ जे महात्मा हंसराज ऐं दयाल सिंह मजीठा सां ख़त-व-किताबत कयाईं। ह टैगोर जे शांति निकेतन ऐं जगदीश चंद बोस खे संदसि खोजनाई कम ला सांदहि माली मदद कंदो रहियो हो। हुन पंहिंजे वडे भाउ जे नाले पंहिंजी समूर मिलकियत मां 'मेठाराम धर्मादा ट्रस्ट' काइमु कई। पछाड़ीअ में हुन हिक साल जे अरिसे जो मौन व्रत रखियो। उन हिक साल जे अरिसे दौरान गांधी साणुसि मिलण वियो, पर हुन माफ़ी घुरी ऐं खेसि पंहिंजे मौन व्रत काइमु रखण मे मदद करण लाइ चयो। हुन पंहिंजे पुट केवलराम शाहाणीअ खे 11 आक्टोबर 1927 ई. ते लिखियो त संदसि डायरी (Experiments with Truth) सच ज तर्जुबा आहिनि। टे वर्हिय पोइ जडहिं गांधीअ पंहिंजी आत्म कथा लिखी त जयरामदास दौलतराम जे चवण ते हुन पिण उन्हीअ जो उन्वानु (Experimen with Truth) डिनो। डयाराम तडहिं खां ई ऋषीअ जे हैसियत सां ज़ातो वञण लगो।

इहे अहिड़ा माण्हू हुआ, जिनि सिंधु जहिड़े नंढे सूबे खे महान् बणायो सिंध में सकाफ़ती जाग्रता ऐं आज़ादीअ जे हलचल लाइ मैदानु तैयार कयो।

12

ब्रह्मू समाज खां राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ताईं

जड॒हिं 1843 ई. में अंग्रेज़नि सिंध जूं वा॒गूं वरतियूं त दरिया जे बि॒न्हीं किनारनि ते फहिलियल वारीअ खां सवाइ बि॒यो बि घणो कुझु हो, जंहिं में किथे किथे सावक जा टुकरा बि हुआ। कराची हिकु नंढिड़ो वापारी शहर हो ऐं गादीअ जे शहर, हैदराबाद जी सूरत, बदि-हाल मुहं ऐं कखायुनि झूपिड़ियुनि खां थोरो ई का बहितर हुई। का बि डि॒सण जहिड़ी यादगार इमारत न हुई ऐं न ई मीरनि जा महल अहिड़ा आलीशान हुआ। ज़िंदगी ग़रीब ऐं मुख़्तसर हुई, जेतोणीक उहा एतिरी ख़राब ऐं डु॒खी न हुई।

1947 ई. जी सिंधु हिकु तमाम निरालो मामलो हुई। उहा कुझु अहिड़ी हुई, जंहिं खे पुराणे ज़माने जा हिंदू, मुसलमान ऐं अंग्रेज़ सा॒गि॒अ रीत उदासीअ विचां याद कंदा आहिनि। पीर हसामअलद्दीन राशदी चवे थो, उहा ''कुंवारि जहिड़ी सुहिणी हुई।'' उहा रु॒गो॒ व॒ड॒नि माण्हुनि जी करिणी न हुई, पर उहा तब्दीलीअ जे हवाउनि जो मजमूई नतीजो हुई, जेका सभिनी तरफ़नि खां लगि॒ रही हुई।

बदि किस्मतीअ सां सिंधी मुसलमाननि खे सणाई हवा न मिली या उन्हनि पाण न वरिती। मुस्लिम अक्सरियत जो सिंधी सूबो, हिंदू अक्सरियत जे बम्बई प्रेज़ीडेंसीअ जो हिस्सो बणिजी वियो। बम्बईअ जो सरकारी लड॒, पंहिंजे सियारे जे दौरान सिंधु खे शिकारगाह समुझंदो हो।

वहाबी तहरीक पंहिंजे इस्लामी बुनियाद परस्तीअ जे इंतहाई सघ सां, मुख़्तलफ़ मतनि वारी सिंध में घणनि माण्हुनि खे मुतासिर करे न सघी, जेके पीरनि, मकबरनि ऐं तइवीज़नि जे असर हेठि हुआ। वहाबी अगु॒वान सैय्यद अहमद बरेलवी सिंध में आयो ऐं हुरनि खे दीन जे मकसद लाइ, पंहिंजे पीर सां जुनून जे हद ताईं अर्पियल हिमाइत जे तर्ज़ ते, वरी री-आर्गनाईज़ करण में मदद कयाईं। पर सिंध जे मीरनि डि॒ठो त अंग्रेज़ सिखनि खे संदनि पुठीअ में धकु॒ हणी, खेनि हीसाइण लाइ सैय्यद खे इस्तैमाल करे रहिया आहिनि। इहो इलाको अजु॒कल्ह उत्तर ओलह सरहदी सूबो सडि॒जे थो। पर सिखनि सां वहाबी

वेढ़नि रंजीत सिंघ खे सिंध में वञी शिकारपुर ते कब्ज़ो करण खां रोके रखियो हो, जेको खेनि अफ़ग़ानिस्तान खां मिलियो हो।

उणवीहीं सदीअ जे पोएं अध में बर्तानिवी राजु हिंदुस्तान में डाढो मकबूल हो। बनारस में संदनि गाडी काशीअ जे पंडितनि छिकी हुई। समूरे मुल्क में, खेसि पेशि करण लाइ हज़ारें आजियानी तकरीरूं मुख्य शहरी सहियूं करे रहिया हुआ। 1884 ई. में संदसि ख़िज़मतुनि जी मञुता में खेसि अगुवाननि जो सही थियल यादाश्त नामो मोकिलण लाइ सिंध सभा पिण कराचीअ में हिक मीटिंग कोठाई। उन्हीअ मीटिंग में ख़ान बहादुर हसनअली आफ़दी उन्हीअ तजवीज़ जी मुख़ालिफ़त कई ऐं चयाईं त खेसि रुगो ख़तु लिखणु काफ़ी थींदो। डयाराम काविड़िजी पियो ऐं चयाईं त जेकडहिं सिंध बाकी मुल्कनि वांगुरु रिपन खे मानु डियण में नाकाम वेई त उहा लानत थींदी। आफ़दी कावड़ि मां अहतजाच कंदे 'लानत-लानत' चवंदो बाहिरि निकिरी वियो। 'सिंध सभा' जो वफ़द जंहिं में डयाराम, हीरानंद, फ़तह अली ऐं बिया शामिल हुआ, रवानो थियो। जेको बम्बईअ पहुची रिपन जे हिक आम आजियाई जे तकरीब में बियनि वफ़दनि सां वञी गडु न थियो ऐं उन्हीअ जे बिए साल 1885 ई. में मुसलमान शागिर्दनि लाइ सिंध मदरसो काइमु कयाईं। जेतोणीक मदरसे अंग्रेज़नि जे ताबइदारीअ जे ख़िलाफ़ नाराज़पे विचां जनमु वरितो हुओ, पर कंहिं सूबे जे सियासी या अदबी ज़िंदगीअ ते कंहिं ख़ास असर खां सवाइ हिकु आम स्कूल थी उभिरियो। काफ़ी अर्से ताईं, इन्हीअ स्कूल जा हैडमास्तर अंग्रेज़ हुआ। मुसलमान ज़मींदारनि, मुसलमाननि जे तइलीम लाइ मदद करण खां इंकार करे छडियो, जो खेनि डपु हो त जेकडहिं संदनि पोर्हियत हारियुनि जो औलाद स्कूल वञी पढ़ी पियो त उहे संदनि बधा बान्हा थी न गुज़ारींदा।

इहा काफ़ी दिलचस्प गाल्हि आहे त अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी (AMU) पिण सिंध ते को घणो असर न छडियो। मुहम्मद अमीन खोसो अलीगढ़ जो हिकु ई ग्रेज्यूएट (M.L.A.) थियो, जेको कांग्रेस में शामिल थियो।

सिंधु ते ख़िलाफ़त तहिरक घणो असर छडियो। एतिरे कदुरु जो शेख़ अब्दुल मजीद लीलाराम शेख़ अब्दुल रहीम (कृपालाणी) ऐं अब्दुल्लाह सिंधी (सिख जे घर में जनमियल) रेशमी रुमाल मुकद्दमे में मलूस थिया। जंहिं

तख़्त मूजिबु अफ़ग़ान बादशाह खे हिंदुस्तान खे 'आज़ाद कराइण' जी दावत ड॒िनल हुई। पर इन्हीअ ग॒ाल्हि खेनि रुग॒ो डिघी कैद जी सज़ा या जलावतनी ड॒ियारी। हज़ारें मुसलमान हजरत करे अफ़ग़ानिस्तान विया, पर खेनि ओलह एशिया जे मामलनि मुंझाए छड॒ियो। तुरकीअ खे निजात ड॒ींदड़ जे हैसियत सां अमाल भाषा जी आमद मंझिनि ख़ुशीअ जी लहर पैदा करे छड॒ी। पर अमाल भाषा जे मुल्लाउनि अरबी ज़बान ऐं फ़ैज़ टोपीअ ख़िलाफ़ जंगि खेनि थधो करे छड॒ियो। उबतो नतीजो तड॒हिं निकितो, जड॒हिं ईरान, अरबिस्तान ऐं तुरकीअ जे अग॒ुवाननि ख़िलाफ़त तहरक खे खिलणहाब कयो ऐं पाण खे हिंदुस्तान में आज़ादीअ जे हलचल जे हक में ज़ाहिर कयाऊं।

जड॒हिं हिंदुस्तान जा मुसलमान उर्दू ऐं इकबाल खे मथाहों करे पेशि करे रहिया हुआ, तड॒हिं दूरांदेश सिंधी मुसलमाननि उर्दूअ खे 'फुड़दू' चई खिलणहाब करे रद्द कयो। खेनि अचिरजु लग॒ी रहियो हो त इकबाल, अफ़ग़ानिस्तान जे बादशाह, अमान अल्लाह तोड़े खांउसि पोइ जे तख़्त ड॒िए ऐं अंग्रेज़नि जे छाड़िते नादर ख़ान खे साराहे रहियो आहे। उन्हनि समूरी ग॒ाल्हि खे मफ़ाद परस्तीअ जी इंतहा समुझियो।

हिक वक्त में धर्म मटाइण जे वाक़अनि सिंधी मुसलमाननि खे जज़बाती हथी ड॒िनी। पर हिंदू जाग्॒रता ऐं आज़ादीअ जे हलचल जे तेज़ीअ जे करे इन्हनि वाक़अनि खे पिण ब॒ुंजो अची वियो।

केतिरनि वर्हियनि ताईं सिंधी मुसलमाननि ब॒ी हर शइ जे भेट में सिंध खे बम्बईअ खां जुदा करण ते घणो ज़ोरु ड॒िनो। सिंध खे जुदा थिए अञा ब॒ साल मस गुज़िरिया हुआ जो ब॒ीं महाभारी जंग छिड़ी पेई, जंहिं जे दौरान कांग्रेस जो 'हिंदुस्तान छड॒े वञो' (Quit India) ऐं मुस्लिम लीग जो 'सिधो कदम' (Direct Action) जहिड़नि सियासी तूफ़ाननि मुंहुं कढियो। सिंधियुनि खे एतिरो वक्त ई न मिलियो जो हंधाइता थी पंहिंजे मुस्तकबल बाबति सोचीनि। मुसलमाननि हारियुनि पंहिंजो पाण खे 'लीगी' चवाराए, मुस्लिम लीग खे वोट ड॒िना। पर इहा ग॒ाल्हि संदसि दिल वटां न हुई। बुनियादी तौर ते उहे पीर जा पोइलग॒ हुआ ऐं 'वड॒ेरे' सां जुड़ियल हुआ। उन्हनि कर्ज़नि जे सूरत में सोना आना ड॒ींदड़ वाणिए जी हिफ़ाज़त कई ऐं कामिल दीवान जी संदसि काबिलयत करे इज्ज़त हुई। सिंधी मुसलमान दिल जो सच्चो हो, पर फ़र्के वारियुनि

हवाउनि खेसि तब्दील न कयो, जड॒हिं त उन्हनि हवाउनि हिंदुनि खे अहिड़ा तब्दील कयो जो उहे सुञाणप खां ब॒ाहिरि थी विया।

जड॒हिं अंग्रेज़नि सिंध पंहिंजे कब्ज़े में कई त हिंदू निहायत जोखाइती हैसियत में हुआ। हू दीवान हुअण जे हैसियत सां अहम उहिदनि ते हुआ। सेठ हुअण जे हैसियत में ख़ूब धन दौलत मेड़ी हुआऊं पर कंहिं बि वड॒े में वड॒े 'दीवान' ऐं 'सेठ' खे को बि 'मीर' आराम सां ऐं कंहिं बि 'पीर' जे फ़त्वा सां बर्बाद करे सघियो थे। हिंदू धर्म, सनातन धर्म जे हैसियत सां काइम हो। योगियुनि जे सफ़र ऐं गृहस्थियुनि जे तीर्थ यात्राउनि, पुराणी रोशनीअ खे काइम रखियो हो, जेका एतिरी रोशन न हुई। राजा गोपीचंद ऐं गुरू गोरखनाथ जे आखाणियुनि माण्हुनि जे दिलियुनि खे पाण ड॒ांहं छिकियो। एतिरे कदुरु जो शाह अब्दुल लतीफ़ 'विंदुर जे वणनि' (वृंदावन) खे ग॒ातो ऐं गंजे टकर में गुण ड॒िसी चयाईं, ''गंजे में गुण घणा'' जंहिं में आग॒ाटो कालीअ जो मंदिर हो। मठ ऐं मढ़ियूं, तावीज़ ऐं भभूत, एतिरे कदुरु जो ड॒ंद कथाउनि ऐं करामतुनि ज़हन खे काबू करे छड॒ियो हो। रुग॒ो रोहिड़ीअ लाइ चयो वेंदो हो त उन्हीअ सवा लखु संत ड॒िना। उन खां पोइ ब॒िया केतिरा ई मकानी संत जहिड़ोकि भाई कलाचंद, भाई दलपत, भाई वसण, भाई मूलचंद, भाई पारूशाह, स्वामी लीलशाह खां सवाइ महान स्वामी वणखंडी साहिब बि हो, जंहिं 1823 ई. में सखर में साध ब॒ेलो मंदिर काइम कयो। ब॒िया जहिड़ोकि आचार्य जीवतराम कृपलाणीअ जो पीउ काको भग॒वानदास (1922-1942) में उदयपुर जे श्रीनाथ द्वारे जा चेला हुआ। (हिक भेरे कृपलाणी जीवत जे हिक सौट नाथद्वारे जे लड॒ुनि जे प्रसाद खे सख़्त करे कोठियो हो त पवित्र प्रसाद जे राइ ड॒ियण जे उन्हीअ गुस्ताख़ीअ लाइ काको संदसि पुठियां लठि खणी पियो हो।) पर इहा बि हकीकत आहे त जड॒हिं अंग्रेज़नि सिंध जूं वाग॒ूं वरितियूं त हिंदू पंहिंजे मंदरनि में न मूर्तियूं रखी सघिया थे ऐं न ई घिंड वज॒ाए सघिया थे। पंजाब में सिखनि जे राज॒ सिंधी हिंदुनि जे इख़्लाकी हिमथ में वाधारो आंदो, जिनि झटि पटि कुझ गुरुद्वारा काइम कया ऐं बस।

पर अंग्रेज़नि जे अचण सां वसीअ नवां उफ़क खुलिया। बम्बईअ में मर्ज (शामिल) थियण सां सिंध हिंदुस्तान जे हिंदुनि सां सरकारी तौर ते ऐं गहिराईअ सां ग॒ंढिजी वेई। सिंध में वड॒े तादाद में गुजराती, मरहटा ऐं पारसी आफ़ीसर

आया। कराचीअ जो सभ खां वडो॒ स्कूल "एस. जे. वी. गवर्नमेंट हाइ स्कूल" हिक मरहटे तइलीम माहिर नारायण जग॒न्नाथ जे नाले पुठियां काइम थियो ऐं जो सभ खां सुठो स्कूल "शारदा मंदिर" हो, जेको गुजराती ख़ानगी स्कूल हो।

सिंधु जे हिंदुनि लाइ पुराणियूं ललकारूं त हुयूं पर नयूं ललकारूं पिण उभिरी आयूं। इस्लाम हमेशा हिक ललकार रहियो हो ऐं हाणे ईसायत पिण ललकार बणिजी उभिरी आई। (अमां चवंदी आहे त उणवीही सदीअ जे मोड़ ते, मुबलग़ (मिशनरी) आमिलनि जे घरनि में संदनि नंढियुनि छोकिरियुनि खे अंग्रेज़ी पढ़ाइण लाइ अचण लग॒ा। उहे मुबलग़ ड॒ाढा सुठा हुआ पर वड॒िड़नि फ़ैसिलो कयो त संदनि मकसदु खेनि ईसाई मज़हब में आणण जो हो ऐं तंहिं करे संदनि ब॒िटे मकसद खे टारण लाइ छोकिरियूं खटुनि हेठां लिकी वेंदियूं हुयूं।)

'जोत' जो एडीटर ऐं अंग्रेज़ी-सिंधी ऐं सिंधी-अंग्रेज़ी डिक्शिनर्युनि जो मुसंफ़ (एडीटर) परमानंद मेवाराम नाले हिक मुइबतर सिंधी हकीकत में पंहिंजो धर्म छड॒े वञी इसाई थियो।

पर इन्हीअ खां गंभीर मसइलो जदीदियत जी ललकार हो। बम्बई, कलकत्ते ऐं लंडन सां राबते इहो साबित करे ड॒ेखारियो त सिंध हिक बीठल पाणीअ जो दुब॒ो हो। ही उहे ड॒ींहं हुआ, जड॒हिं सिंधी औरतूं पर्दो कंदियूं हुयूं। नौजुवान बिना तइलीम घिटियुनि में धिका खाईंदा हुआ। होलीअ जो ड॒ींहुं शराब पीअण लाइ सुठो हो। जनम अष्टमीअ ते जुआ करणु धर्म ते हलण बराबर हो।

सिख पंथ, जेको इस्लामी राज॒ जे आख़िरीनि ड॒ींहंनि दौरान आथत जो कारण हो, इन्हनि ललकारुनि जो मुकाबिलो करे नथे सघियो। इहो माण्हुनि में ड॒ाढो मकबूल थी जारी रहियो। हज़ारें माण्हू गुरूनानक जे जनम ड॒ींहं ते सारी रात जाग॒ण लग॒ा, जेके जनम अष्टमीअ ते कुझु न कंदा हुआ। उहे गुरु-प्रभ जे ड॒ींहं ते भाज॒ियुनि ते गुज़ारो करण लग॒ा। जड॒हिं त ख़ुदि सिख बि अहिड़ो मौको मल्हाइण लाइ गोश्त वापराईंदा हुआ। त बि सिख पंथ नयुनि ललकारुनि जो जवाब कोन हो। पर जेकड॒हिं समाज खे जीअरो रहिणो हो ऐं उसिरिणो हो त को त जवाब ग॒ोल्हणो हो।

उन्हनि ललकारुनि खे सवाइ हैदराबाद जे मुखी शौंकीराम नंदीराम आड॒वाणीअ जे पुट नवलराइ (1843-1893 ई.) जे, ब॒िए कंहिं बि बहादुरीअ

सां मुंहु न ड॒िनो। हू पंहिंजी लियाकत, साख ऐं डिवोशन सां क्लार्क मां डिप्टी कलेक्टर जे वडे॒ उहिदे ते पहुतो, उन्हनि ड॒ींहंनि में हिक हिंदुस्तानीअ लाइ उहो सभ खां वडो॒ उहिदो हो। नवलराइ सिख सभा जो पायो विधो, जेका गुरूनानक में वेसाह रखंदड़ मुअतबर हिंदुनि जी हिक जमाइत हुई। हू 26 वर्हियनि जी ज॒मार में माठि मीठि में कलकत्ते हलियो वियो ऐं केशव चंद्रसेन सां गडि॒जी, कलकत्ते में जेकी ड॒िठाईं, केशब खां जेकी बु॒धाईं ऐं ब्रह्मू घराणनि पंचायती मर्कज़ 'भारत आश्रम' में जेके आज़मूदा हासिल कयाईं, उन्हनि गा॒ल्हियुनि सिंध जी बी॒हर अडा॒वत बाबत सभिनी सुवालनि जा जवाब ड॒िना। नईं सिंध जो पैग़म्बर नवलराइ, वतन वापस वरण जो नतीजो ऋषी डु॒याराम जे लफ़्ज़नि में 'जदीद सिंधु जो चमत्कार' हो।

नवलराइ ऐं संदसि साथियुनि 'सिख सभा' जो नालो मटाए 'सिंध सभा' रखियो, हू दिल व जान सां छोकिरनि ऐं छोकिरियुनि खे तइलीम ड॒ियण जे कम में काहे पियो। हू ब्रह्मू वारनि जी ज़िंदगी ऐं सिख्याउनि मां एतिरो त उत्साहित हो, जो पंहिंजा पैसा ख़र्चु करे हैदराबाद में हिक बहितरीन 'ब्रह्मू मंदर' जोड़ायाईं (सिविल अस्पताल जे भरिसां, इन्हीअ जाइ ते अजु॒कल्ह हुस्नेन स्कवायर लिबर्टी मार्केट जी इमारत बीठल नज़र अचे थी)। हुन पंहिंजे भाउ हीरानंद (1863 ई.–1893 ई.) खे कलकत्ते मोकलियो, जिते हुन पंहिंजो घणो वक्तु केशबचंद्र सेन सां संदसि घर जे भातियुनि वांगुरु गुज़ारियो।

कलकत्ते में हीरानंद खे श्री रामकृष्ण परमहंस जो पवित्र संग मिलियो, जंहिं संदसि ऐं स्वामी विवेकानंद जे बारे में हिक भेरे चयो हो- ''नरेंद्र तमाम मथीं सतह जो आहे। हीरानंद पिण उन्हीअ सतह जो आहे। संदसि फ़ितरत केतिरी न बा॒रनि जहिड़ी (मासूम) आहे, केडो॒ न सुठो सुभाव आहे संदसि! मां खेसि पिण ड॒िसणु थो चाहियां।'' कंहिं बि॒ए मौके ते चयो हुआईं- ''जेकड॒हिं शादी शुदा माण्हू ईश्वर लाइ प्यार वधाईंदा त उहे दुनिया सां गं॒ढियल न रहंदा। हीरानंद शादी शुदा आहे, पर आहे त छा थियो? हू दुनिया सां घणो गं॒ढियल न रहंदो।''

कलकत्ते में हीरानंद 1883 ई. में पंहिंजी तइलीम पूरी करे वरिती हुई ऐं सिंध डा॒हुं वापस वरियो। पर अप्रेल 1886 ई. में जड॒हिं श्री रामकृष्ण परमहंस सख़्त बीमार थी पियो, संदसि देहांत 15 आगस्ट 1886 ई. ते थियो। हीरानंद

ख़ास तौर ते पंहिंजे गुरूअ खे ड॒िसण लाइ कलकत्ते वियो। रामकृष्ण खेसि ड॒िसी ड॒ाढो ख़ुशि थियो। हुन नरेंद्र खे अंदर सड॒े चयो, ''मां अव्हां ब॒िन्हीं ख़े गुफ़्तगू कंदे ब॒ुधण थो चाहियां।'' संदनि रूहानी गुफ़्तगू जे आख़िर में नरेंद्र हिकु गीत हीरानंद लाइ ग॒ातो, ''हकीकत में धोती पाईंदड़ भाग॒ वारो आहे।''

हिक ड॒ींहुं उन्हीअ आख़िरीनि मुलाकात जे दौरान हीरानंद पंहिंजे गुरूअ खे पेरनि ते ज़ोर ड॒ेई रहियो हो त हुन चयुसि, ''फ़र्ज़ करि त तूं सिंधु नथो वञीं, फ़र्ज़ करि त तूं नौकरी छड॒े थो ड॒ीं, पोइ तूं हिते रही छो नथो पवीं?'' हीरानंद वराणियो, ''पर मुंहिंजो कम करण लाइ उते को बि कोन्हे।'' हीरानंद रामकृष्ण खे सिंधु अचण जी दावत ड॒िनी। रामकृष्ण ख़ुशि थियो, पर चयाईं त, ''मां ड॒ाढो बीमार आहियां ऐं सिंधु तमाम परे।'' पर रामकृष्ण हीरानंद खे याद ड॒ियारींदे कुझु सिंधी पाजामा मोकिलण लाइ चयो, जेके पाइण में सहूलियत भरिया आहिनि, जो संदसि धोती खिसिकी थे वेई।

ब॒िन्हीं भाउरनि नवलराइ ऐं हीरानंद सिंधु में नओं साहु फूकियो। हुननि हैदराबाद में 'यूनियन अकेडमी' शुरू कई, जेका पोइ उन्हनि जे बानीकारनि जे नाले पोयां 'नवलराइ हीरानंद अकेडमी' मशहूरु थी। सोसाइटीअ में गोल बिल्डिंग जे साम्हूं इन्हीअ इमारत में अज॒ुकल्ह गवर्नमेंट हाइ स्कूल ऐं हैदराबाद सिंध लॉ कालेज काइमु आहिनि। उन्हनि छोकिरियुनि जो पहिरियों स्कूल शुरू कयो ऐं खेनि पढ़ाइण लाइ लखनऊ जे ब॒िनि घोष भेनरुनि खे मुकरर कयो। हीरानंदु पंहिंजियुनि ब॒िनि भेनरुनि खे बिहार जे बांकेपुर शहर में अघोर कामनी प्रकाश राइ वटि पढ़ण लाइ वठी वियो, जेका डाक्टर बी. सी. राइ जी माउ हुई, जेको पोइ ओलह बंगाल जे वज़ीर-ए-ऑला जे पद ते पहुतो। संस्कृत जे सिख्या ते ख़सूसी ध्यान ड॒िनो वियो। संदनि संस्कृत जे शागिर्दनि मां हिकु रूपचंद बेलाराम हो, जेको सिंधु जो वाहिद हिंदुस्तानी जुडीशनल कमिशनर जे पद ते पहुतो।

हिननि कराचीअ में हिकु 'कोढ़ घर' ऐं शिकारपुर में हिकु 'यतीम ख़ानो' खोलियो।

नंढपिण जे शादीअ ख़िलाफ़ संदनि मुहिम खेनि मुसीबत में विझी छड॒ियो। नवलराइ हीरानंद अकेडमीअ जो हिक शागिर्द हूंदोमल पंहिंजे सरकारी नौकरीअ वारे चाचे खे चयो त हू इन्हीअ उमिरि में शादी न कंदो, पोइ भली

खणी संदसि पीउ बि खेसि छोन चवे। इन्हीअ बुनियाद ते बम्बईअ जे डाइरेक्टर पब्लिक इंस्ट्रक्शन वटि शिकायत दर्ज कराई वेई त हीरानंद पंहिंजे माउ पीउ जी इज़्ज़त नथो करे। इन्हीअ ते डी. पी. आई. हीरानंद खे सबब पेशि करण लाइ चयो। हीरानंद बम्बईअ पहुतो ऐं सिंधी सरकारी अमलदारनि जे चवण तें हू दॿनामे खां बची वियो!

शराब पीअण, जुआ करण ऐं गारियुनि ॾियण ख़िलाफ़ संदनि मुहिम सिंधी समाज ते पंहिंजो असर छॾियो। बदि किस्मतीअ सां ॿुई भाउर, हिक ॿिए सां थोरनि ई महिननि जे फ़र्क सां जुवानीअ में 1893 ई. गुज़ारे विया। पर उन्हनि समाज में नओं रूहु फूकियो हो ऐं आईंदे लाइ मिसाल काइम करे विया। जॾहिं केशब चंद्रसेन खे सिंधु में अचण लाइ वेनिती कई वेई त हुन चयो त सिंधु जिते नवलराइ जहिड़ो माण्हू आहे, उते ॿिए कंहिं जी बि ज़रूरत नाहे। हैदराबाद जे कलेक्टर कर्नल ट्रेवर (Cornel Traver) चयो हो त ''नवलराइ खे कलेक्टर थियणु घुरिजे ऐं खेसि संदसि क्लार्क!'' सिंध जे हिक ऑला मुसलमान आलिम मिर्ज़ा कलीच बेग, साधू हीरानंद जे बारे में चयो हो, ''हू इंसान न, फ़रिश्तो हो।''

साधू भाउरनि जे देहांत खां पोइ पिण हैदराबाद में ब्रह्मू प्रभदास 'नव विद्यालय हाइ स्कूल' (जंहिं में विरहाङे खां पोइ सिंध यूनीवर्सिटी काइम थी ऐं हाणे ओल्ड कैम्पस ऐं मॉडल स्कूल काइम आहिनि) ऐं ब्रह्मू कुंदनमल, 'कुंदनमल गर्ल्स हाइ स्कूल' (जंहिं में विरहाङे खां पोइ अजु ताईं जामा अरबिया स्कूल काइम आहे), काइम कया। पर सिंधु में नवलराइ ऐं हीरानंद जे ॾींहंनि में ई ब्रह्मू समाज हलचल आम माण्हुनि में कामयाब न वेई। जॾहिं सरकार पंहिंजो हाइ स्कूल हैदराबाद में अकेडमीअ जे मैनेजमेंट में ॾियणु चाहियो त माण्हुनि उन्हीअ बुनियाद ते एतराज़ कयो त ब्रह्मू वारा अधु ईसाई आहिनि। बदि किस्मतीअ सां इन्हीअ तासीर ज़ोरु वरितो। जॾहिं अकेडमीअ जे हिक उस्ताद भवानी चरण बैनर्जी 1892 ई. में ईसाई मज़हब अख़्त्यार कयो।

उन खां अगु 1875 ई. में 'ब्रह्मू मंदर' जे मुहूर्त जे मौके ते साधू नवलराइ मुख़्तलफ़ मज़हबी गिरोहनि जे गॾियल संगीत जो जलूस कढियो हो, जंहिं में ॿियुनि ॻाल्हियुनि सां गॾु 'अल्लाह-अकबर' 'ला अल्लाह-इल अल्लाह'

ग॒ातो वियो हो, जंहिं खे इहो चई नापसंदगीअ जो इज़्हार कयो वियो त इहो समूरो 'मुहर्रम' वांगुरु थो लग॒े।

ब्रह्मू समाज जो प्रार्थना समाज साधारण समाज वग़ैरह में विरहाइजी वञण पिण ब्रह्मू संघ खे उड॒ाए छड॒ियो। पर उन्हनि ऐं हिंदू धर्म जे कुवति ऐं शान खे वधाइण में बि नाकाम वेई हुई, जंहिं ब्रह्मू समाज खे आज़ादी मिलण खां अग॒ु पोइते धिके छड॒ियो।

ब्रह्मू समाज जूं इहे ब॒िटियूं ऊणायूं आर्य समाज पारां दूर कंदे नज़र आयूं। तंहिं करे जड॒हिं मूरजमल ड॒ेऊमल, ठारूमल ऐं ब॒िया केतिरा ई आमिल मुसलमान थिया ऐं ब॒िया घणा धर्म मटाइण लाइ तैयार ड॒िसण में आया त ड॒याराम जे रहनुमाई में सिंधी हिंदू अग॒ुवाननि तुर्त 1893 ई. में लाहौर जे स्वामी श्रद्धानंद खे मदद लाइ सड॒ियो।

पंजाब आर्य समाज तुर्त पंडित लेखराम आर्य मुसाफ़िर ऐं पंडित पूर्णानंद खे सिंधु ड॒ांहु रवानो कयो। उन्हनि ब॒िन्हीं प्रचारकनि न रुग॒ो हिंदू धर्म जे बचाव लाइ पाण पतोड़ियो, पर उन्हनि इस्लांम ऐं ईसायुनि जे बारे में केतिरा ई ऐं सभिनी किस्मनि जा अण विसरंदड़ सुवाल पुछणु शुरू कया। मौलवी मज़हबी दलील बाज़ी 'शास्त्रार्थ' जे सूरतहाल खां ग़ैर मायूस हुआ। कावड़ि में अची उन्हनि लेखराम खे कत्ल करे छड॒ियो, उन खां पोइ ब॒िया केतिरा ई कत्ल थिया। पर आर्य समाज जो पैग़ाम माण्हुनि एड॒ो हियें सां हंडायो, जो इहो फ़ैल थी न सघियो। नतीजो इहो निकितो जो इहा छिकताण रोज़मरह जो हिस्सो बणिजी पेई। केतिरा ई हिंदू जेके कुझु वक्त अग॒ु मुसलमान थी विया हुआ, जिनि में समूरी 'संजोग॒ी' ब्रादरी शामिल हुई, वापस पंहिंजे पुराणे धर्म जे दायरे में आंदा विया। इन्हीअ अमल में घणियुनि मुसलमान छोकिरियुनि पंहिंजे मज़हबनि खे छड॒े हिंदुनि सां शादियूं कयूं।

इन्हीअ नएं माहौल में, हम जिंस परस्तीअ जी पुराणी बुरी इलत ख़िलाफ़ मुहिम शुरू कई वेई। जेकब आबाद जो हिकु बाइज़्ज़त पीर अब्दुल हुसैन, सुग॒ो नाले हिकु नौजुवान ख़ूबसूरत छोकिरे ते चरियो थी पियो, जेको मुकामी नाटकनि में ज़नानो किरदार अदा कंदो हो। पीरु दरीअ मां सुग॒ो-सुग॒ो करे हेठि किरी पियो, जड॒हिं हुन सुग॒ूअ खे नाटक जी रीहर्सल कंदे ड॒िठो। अहिड़ियुनि

हालतुनि हेठि पीर जे मौत मुकामी मुसलमाननि खे एॾो कावड़ि में आणे छड़ियो जो 1 मई 1929 ई. जे शाम जो उन्हनि 12 बोर जी बंदूक सां 10 हिंदू मारे विधा। हिन खां अगु सिंधु में इएं कॾहिं बि न थियो हो। एतिरे कदुरु जो इहा ॻाल्हि ॾिसण लाइ पंडित मदन मोहन मालवीय पाण उते पहुतो। केतिरनि ॾींहंनि ताईं कारोबारु बंद रहियो। हिकु पारसी आफ़ीसरु सुखिया खे मामले जी जाच करण लाइ मोकलियो वियो। (जॾहिं बि सिंध में हिंदू-मुस्लिम मामले जी गंभीर सूरतहाल पैदा थींदी हुई त कंहिं अंग्रेज़ या पारसीअ खे अहिड़े मामले जे बेरिया निबेरे लाइ मोकलियो वेंदो हो।) सुखिया इन्हीअ मामले जी साज़िश पोयां वॾनि ज़मींदारनि ऐं मौलावियुनि खे ॻोल्हे कढियो, पर खेनि हथु बि न लाथो वियो। उन्हनि जे बदिरां जुड़तू जवाबदारनि ते मुकदमो हलायो वियो ऐं पोइ खेनि आज़ाद कयो वियो। हकीकी ॾोहारियुनि खे कॾहिं बि गिरफ़्तार न कयो वियो।

अपर सिंधु में केतिरा मुसलमान हरिजन ज़ालुनि वटि वेंदा हुआ ऐं संदनि कुटंबनि खे कर्ज़ ॾींदा हुआ ऐं पोइ संदनि धर्म बदिलाईंदा हुआ। मुकामी आर्य समाजियुनि हिक नईं तजवीज़ ॻोल्ही। हुननि अहिड़नि हरिजननि खे सूअर भेट कया। सूअरनि जे शिकिल मुसलमाननि खे दूर भॼायो ऐं सूअरनि खां थींदड़ आमदनीअ हरिजननि खे कर्ज़ ॾींदड़नि खां आजो करायो। इन तरह आर्य समाज सिंध में जहिड़े सां तहिड़ो हलण जे उसूल मूजिबु किरदार अदा कयो। आर्य समाजियुनि को बि स्कूल या कालेज बर्पा न कयो पर केतिरा ई अखाड़ा ऐं कन्या संस्कृत पाठशालाऊं खोलियाऊं। उन्हनि हिंदुनि खे नओं फ़ख़ुरु अत्ता कयो। कंहिं तरह आर्य समाज सिंधु जे मुख़तलफ़ तबकनि में कामयाब कोन थी, जेतिरी उहा पंजाब में थी हुई। उन्हीअ जा रोशन सितारा हुआ ताराचंद गाजरा ऐं स्वामी कृष्णानंद। इहा धर्म तबदीलीअ जे मामले में नंढी ॻाल्हि न हुई, पर आर्य समाज सिंधी हिंदू अवाम ते असर कयो। इहा चङीअ तरह अदा कयल सुठी ख़िज़मत हुई।

इन्हीअ विच में ब्रह्मू समाज खे ग्रहण लॻण दौरान सिंधी मथिएं तबिके जी परघोर लहण लाइ हिक ॿी हलचल ज़ोरु पकड़ियो। उहा हुई थियासाफ़ीकल सोसाइटी। उन्हीअ सोसाईटीअ बुनियादी हिंदू सोच खे अंतर्राष्ट्रीय इस्तलाह में नएं सिर पेशि कयो। तइलीम याफ़्ता सिंधी माण्हुनि, जिनि हिंदू धर्म जो कदुरु

कयो थे ऐं ब॒यिनि अंतर्राष्ट्रीय खे घटि नथे ज॒ातो, इन्हीअ सोसइटीअ जी ब॒िटी आजियां कई। ज॒ेठमल परसराम ऐं जमशेद मेहता जहिड़ियूं कदावर शख़्सियतूं सिंध में थियोसाफ़ीअ जा खंभा बणिजी वेयूं। थियासाफ़ीकल लाजिज़ ग़ैर फ़र्के वारनि दानिशवरनि ऐं सकाफ़त जा मर्कज़ काइम थिया। कराचीअ जी थियासाफ़ीकल सोसाइटी समूरी दुनिया में सभ खां चुस्त शाख़ा हुई। ड॒याराम गिदूमल जो पुट केवलराम सरगर्म थियाफ़िस्ट थियो, जंहिं हैदराबाद में 'ड॒याराम गिदूमल नैशनल कालेज' ऐं कराचीअ में 'शरणागति रिसर्च लाइब्रेरी' काइम करण जी मदद कई।

थियासाफ़ीअ जे यूनीवर्सल असर न रुगो॒ पारसी अगु॒वाननि जहिड़ोकि जमशेद ऐं कोटवाल खे पर मुसलमान दानिशवरनि जहिड़ोकि जी. एम. सैय्यद, हैदर बख़्श जतोई ऐं ए. के. बरूच खे पाण ड॒े छिकियो। जेके सभु पाकिस्तानी मंज़र ते वड॒नि किरदारनि जे हैसियत सां छांयल आहिनि।

थियासाफ़ीअ जे पोइलगु॒नि ईसायुनि खे रोकण लाइ हिंदुनि जो साथ ड॒िनो। दीवान ड॒याराम ईसायुनि जे ऊणायुनि ते पंजाहु दानिशवराना लेक्चर ड॒िना ऐं डाक्टर एनी बीसेंत हिंदुनि खे पंहिंजो धर्म तबदील न करण लाइ अपील कई। नव ईसाई परमानंद मेवाराम जे माउ खांउसि उत्साहित थी सुवाल पुछियो, ''तूं हिंदुनि खे सलाह ड॒ीं त ईसाई न थियो। इहो कीअं आहे जो तूं ईसाई धर्म रद्द करे हिंदू थी आहीं?'' बीसेंत ठह-पह वराणियो, ''मूं इएं इनकरे कयो आहे, जो मां अगि॒एं जनम में ब्रह्मण हुयसि।''

इन्हीअ खां पोइ कंहिं बि ब॒ियो को गुफ़्तो न बु॒धो। साधू टी. एल. वासवाणीअ (1879 ई.-1966 ई.) रूहानी जाग्रता जी तमाम नुमायां हलचल जी अगु॒वानी कई। हू वड॒ो विद्वान हो, जंहिं डी. जी. सिंध कालेज कराचीअ, विद्या सागर कालेज कलकत्ते में पढ़ायो। पोइ हू लाहौर में दयाल सिंह कालेज ऐं पटियाला में महेंद्र कालेज जो प्रिंसीपाल थी रहियो। पर विद्वान खां वधीक हू संत हो। हुन 1910 ई. में बर्लिन में कोठायल वर्ल्ड कांग्रेस आफ़ रिलीजन में हिंदुस्तान जी नुमाइंदगी कई। सफ़र तां मोटण ते हुन पंहिंजे बारे में चयल समूरियूं अख़बारी तारीफ़ी कटिंगस् समुंड में उछिलाए छड॒ियूं, जो हुन उन्हनि सभिनी खे बेसूद समुझियो।

संदसि माउ दुनिया त्यागण वारे संदसि ख़्याल खे बर्दाश्त न करे सघी, हूअ रुगो एतिरो करे सघी जो संदसि खे शादीअ लाइ ज़ोरु कोन भरियाईं। पर 1918 ई. में जडहिं संदसि देहांत थियो त साधू रेशमी कपड़ा पाइण छडे खादी पाइण लगो ऐं पटियाला में पंहिंजी शानदार नौकरीअ तां इस्तीफ़ा डेई छडियाईं। पोइ हू माहवार डहनि रुपयनि ते गुज़ारो करण लगो ऐं ख़ास किस्म जे माण्हुनि खे धर्म जे विषय ते लेक्चर डियण लगो। सालनि ताईं दुनिया रुगो टिनि हिंदुस्तानियुनि खे सुञातो थे- गांधी, टैगोर ऐं वासवाणी।

वासवाणी देहरादून भरिसां रायपुर में शक्ति आश्रम, हैदराबाद में छोकिरनि लाइ शक्ति स्कूल ऐं छोकिरियुनि लाइ मीरां स्कूल काइम कया। संदसि शाइराना रचिनाऊं जेके 'नूरी ग्रंथ' में सहेड़ियल आहिनि, पढ़ण जोगियूं आहिनि।

जीअं विरहाङो थियो त हुन शाह अब्दुल लतीफ़ जे दरगाह ते हाज़िरी डिनी। हुन चयो, "हिन वीराने में भिट खां वधीक बी का बि मुकद्दस (पवित्र) जगह नाहे।"

विरहाङे खां पोइ कुझु मुसलमान खेसि दादा दरवेश जे हैसियत सां इज़्ज़त डियण आया। पर के बिया पाकिस्तान में हिक धर्मी मर्कज़ खे बर्दाश्त करे न सघिया। जडहिं काइद आज़म जिन्नाह वफ़ात कई त साधू वासवाणीअ दुआ घुरी, जंहिं जे आख़िर में हमेशह जियां कणाह प्रसाद विरहायो वियो। पर कट्टर पंथियुनि चयो त हिन काइद आज़म जे मौत खे 'मल्हायो' आहे। हैदराबाद जे उन वक्त जे हमदर्द कलेक्टर चयो त संदसि ज़िंदगी एडी त कीमती आहे जो कट्टरपंथियुनि जे झुझकीअ जे रहम ते छडे नथी सघिजे। 10 नवम्बर 1948 ई. ते हुन सिंध खे अलविदा कई। जल्दु ई हुन पूने में मीरां स्कूल ऐं कालेज काइम कया, जंहिंजी महर्षि कार्वे ख़ुदि दिली आजियां कई।

साधू वासवाणीअ ख़ास तौर औरतुनि खे डाढो मुतासिर कयो, जिनि खे हुन सादगी ऐं रूहानियत जो सबक डिनो। अजु कल्ह संदसि कम संदसि भाइटियो दादा जशन वासवाणी ख़ैर-ख़ूबीअ सां सर-अंजाम डेई रहियो आहे।

उणवीहीं सदीअ जे पछाड़ीअ में सिंधु में हिक निराली हलचल, जेका हिंदुस्तान तोड़े जपान जे अख़बारुनि जी शह सुर्ख़ी बणी, 'ओम मंडली' हुई,

जेका हाणे ब्रह्म कुमारियुनि जे संस्था तौर ज़ाती वञे थी। इहा हिक समाजी धर्मी संस्था जेका दादा लेखराज कृपालाणीअ (1876 ई.-1969 ई.) में शुरू कई हुई, जेको कलकत्ते में सर्राफ़को कम कंदो हो।

ओम मंडलीअ घणो करे औरतुनि खे पाण डांहुं छिकियो, जेके रुगो हैदराबाद जे भाईबंद वापारी तबकनि सां वाबस्ता हुयूं। मंझाउनि जेके बि ग़ैर शादी शुदा हुयूं, तिनि शादी करण खां इंकार करे छडियो ऐं शादी शुदा औरतुनि पंहिंजनि मुड़िसनि खे लिखी डिनो त उहे आज़ाद आहिनि, भली वञी बी शादी कनि। उन्हीअ विच में ओम मंडलीअ जे बारे में जादुई ऐं ऐश अशरत करण जूं गाल्हियूं घणियूं मशहूर थी वेयूं ऐं कांग्रेस ऐं आर्य समाज जहिड़ियुनि संस्थाउनि ओम मंडलीअ खे घरू सुकून खे बर्बाद कंदड़ जे हैसियत सां रद्द कयो। हिंदू आम राइ जे दबाव हेठि सिंधु सरकार बे-दिलियो ओम मंडलीअ ते बंदिश विधी। ओम मंडलीअ कोर्ट खे अपील कई, जंहिं बंदिश जो हुकुम रद्द कयो।

वक्त 'ओम मंडलीअ' खे हिक सची पची समाजी संस्था साबित कयो। ज़ाहिर आहे त भाईबंद औरतूं, ख़ास करे धर्म डांहुं लाड़ो हुअण करे, ओम मंडलीअ डांहुं छिकिजी वेयूं हुयूं। उन्हीअ सूरत हाल में बियो सबब इहा हकीकत हुई त संदनि मर्द/मुड़िस टे साल हांगकांग खां वठी समूरी दुनिया जे इर्द-गिर्द होनोलूलू परडेह में गुज़ारण खां पोइ रुगो छह महिना हैदराबाद में गुज़ारींदा हुआ। ओम मंडलीअ उन्हनि जे ज़िंदगीअ में ख़ाल भरियो।

हाणे सिंध हिकु बाग़ हो, जंहिं में केतिरियूं ई लातियूं लवंदड़ पखी हुआ। ब्रह्मू समाज वारनि पंहिंजा राग पंहिंजे 'मंदरनि' में गाता थे। थियासाफ़ीअ जे अकीदतमंदनि 'थुबेट जे स्वामियुनि' (Masters of Tibet) ते व्याख्याण थे कया। सदियुनि जे रत ऐं रख खां पोइ आर्य समाजियुनि 'याजना' (यागना/यज्ञ) जे जोत खे वरी जलायो। साधू वासवाणीअ मीरां हलचल जी अगुवानी कई, जंहिं में फ़ैशनेबल छोकिरियुनि खे खादी पाइण, मास ख़ोरीअ जे बदिरां भाजियूं वापराइण ऐं भगिती भाव डांहुं आमाद कयो। संत कंवरराम नची नची 'ओ नाले अलख जे बेड़ो तारि मुंहिंजो' गाइण लगो। विष्नू डिगम्बरु पंहिंजे सालियाने दौरे दौरान माण्हुनि सां गडिजी 'रघुपति राघव राजा राम' गाए आरती कंदो हो। 'निमाणे फ़कीर' 'सचल' जे प्यार ऐं दुआ जो पैग़ाम फहिलायो।

'ढकीं मुंहिंजा ढोलिणा ऐब न फोलिणा', 'नंगड़ा निमाणी दा, जीवें तीवें पालणा' ऐं राम पंजवाणीअ कालेज हॉल खां वठी सूफ़ियुनि जे दरगाहुनि ताईं माण्हुनि जे मेड़ अगि॒यां घड़े ते राग॒ थे गा॒या।

पर जंहिं हलचल सचु-पचु तूफ़ान खड़ो कयो, उहा हुई, ''राष्ट्रीय सेवक संघ'' (RSS)। उहा हलचल सिंधु में सियालकोट जे रहवासी, राजपाल पुरी (1917 ई.-1977 ई.) शुरू कई, जेको पोइ पोइलगु॒नि पारां 'श्री गुरूजी' जे नाले सां सडि॒जण में आयो। RSS खां अगु॒ 'संघ' 'संगठन' ऐं 'संस्कृति' जहिड़ा लफ़्ज़ सिंधु में अणज॒ातल हुआ। शुरूअ में के माण्हू 'संघ' खे 'संग' उच्चारींदा हुआ, पर 1942 ई. में RSS उहो लफ़्ज़ सिंधु जे कुंड कुड़िछ में पखेड़े छडि॒यो। RSS जे बानी डाक्टर हेडगेवार (Dr. Hadgewar) शहरी मर्कज़नि जे बालिग़ मर्द आदमशुमारीअ जो टे सेकड़ो ऐं देहाती एराज़ियुनि जो हिकु सेकड़ो RSS में भर्ती करण जी हद मुकरर कई ऐं सिंधु उहा हद हासिल करण में लासानी हैसियत हासिल कई।

श्री गुरूजीअ जा सिंधी सालियाना (1943 ई.-1947 ई.) दौरा सूबे जे अवाम जे ज़िंदगीअ में अहम वाक़आ हुआ। हर भेरे हू हैदराबाद ऐं कराची बि॒न्हीं शहरनि जो दौरो कंदो हो। हू हिकु भेरो सखर, शिकारपुर ऐं मीरपुर ख़ास पिण वियो। उन्हनि दौरनि दौरान हू मुख़्तलफ़ मैदाननि जे अगु॒वाननि सां मिलियो, जिनि में धर्मी अगु॒वान साधू वासवाणी ऐं रंगानाथ नंद, कांग्रेस अगु॒वान डाक्टर चोइथराम, प्रोफ़ेसर घनश्याम ऐं प्रोफ़ेसर मलकाणी, अवाम दोस्त वापारी- लालजी महरोत्रा, शिवरत्न मोहिटा, भाई प्रताप, सिंध सरकार जा वज़ीर- निहचलदास वज़ीराणी, डाक्टर हेमनदास वाधवाणी, मुखी गोबिंदराम ऐं बि॒या केतिरा ई वडा॒ वकील ऐं तइलीम माहिर अची वञनि था। पहिरिएं दौर दौरान जड॒हिं सिंधूअ ते ब॒धल कोटड़ी पुल तां रेल गुज़िरी रही हुई त श्री गुरूजी पंहिंजे प्राईवेट सेक्रेट्रीअ डाक्टर अबाथाटे (Dr. Aba Thathe) खे मराठीअ में चयो, ''अबा, पहा सिंधू!'' (अबा, सिंधूअ खे डि॒सु!) इहे लफ़्ज़ त सादा आहिनि, पर इहे अरिसे खां विञायल माउ लाइ अज़ली जज़्बे सां भरियल हुआ।

श्री गुरुमुख सिंह जेकब-आबाद जो हिक स्वयं सेवक हो। हू वडो॒ पटिको ब॒धंदो हो। 1945 ई. में शिकारपुर में हिक सवाल-जवाब जे वेहक

दौरान गुरुमुख सिंह खांउसि पुछियो, ''गुरूजी, अव्हां पंहिंजे मथे ते तमाम गौरो बार खणो था।'' श्री गुरूजीअ ख़ुशि कंदड़ लहिजे़ में वरंदी डिनी त ''अव्हां त मूं खां बि गरो बार पंहिंजे सिर ते खंयो आहे।'' गुरुमुख सिंह ऐं बिया अची खिल में छिटकिया।

श्री गुरूजीअ कराचीअ जो आख़िरी दौरो विरहाङे खां रुगो नव डींहं अगु याने 5 आगस्ट 1947 ई. ते कयो हो। हिक गडिजाणीअ में 'सिंध आबज़रव' (Sind Observer) जे एडीटर, बर्ख शहरी श्री के. पुनीहा (K. Puninah) खांउसि पुछियो, ''जेकडहिं असां ख़ुशीअ सां विरहाङो कबूल कंदासीं त नुकसान किथे आहे? जेकडहिं बीमार उज़्वो कटे छडींदासीं त नुकसान कहिड़ो आहे? माण्हू त पोइ बि ज़िंदह रहे थो।'' गुरूजीअ ठह-पह वराणियो, ''जेकडहिं नकु कपे छडींदासीं त नुकसान किथे आहे? माण्हू त पोइ बि ज़िंदह रहंदो।''

हिक भेरे जडहिं असां गुरूजीअ खां हैदराबाद रेल्वे स्टेशन ते मोकिलाइण वियासीं त असां डिठोसीं त हिकु सिंधी मुसलमानु वज़ीर सागिए गाडे में हो। बिन्ही जो हिक बिए सां तआरुफ़ (वाकिफ़यत / सुञाणप) थियो। वज़ीर चयुसि, शींहुं शींहं सां ई मिलण चाहींदो आहे। तंहिं ते गुरू खिलियो ऐं चयाईं, ''पर मां शींहुं नाहियां।''

RSS आमलनि ऐं भाईबंदनि, हैदराबादियुनि ऐं ग़ैर-हैदराबादियुनि, शहरियुनि ऐं गोठाणनि, सनातियुनि ऐं समाजियुनि ऐं पोइ चाहे उहे आर्य समाजी हुजनि या ब्रह्मू समाजी - जे अगूणे फ़र्क खे दूर कयो। कांग्रेस ऐं महा सभा जे पोइलगु कुटंबनि जा छोकिरा गडु खेडींदे ऐं सागिए ''भगुवा ध्वज'' खे निमंदे डिसण में अचण लगा। RSS सिंधी हिंदुनि खे हिंदू-पणे जो अहसास डियारियो। अगु में 90 सैकिड़ो शागिर्द फ़ारसी पढ़ंदा हुआ, RSS जे अचण खां पोइ 95 सैकिड़ो शागिर्द संस्कृत पढ़ण लगा। एतिरे कदुरु जो घणनि शागिर्दनि सिंधीअ जे बदिरां हिंदी खंई, जो उन्हनि मुताबिक उन्हनि सिंधी अगेई चङीअ तरह ज़ाती थे। RSS सिंधी नौजवाननि खे सलेसत ऐं रेडीक्लज़म डांहं माइल कयो। भारतीय सिंधी सभा जे सदर जे. टी. वाधवाणीअ विवेकानंद एज्यूकेशन सोसायटी बम्बई जे बानी, हशू आडवाणीअ जे प्रेरणा ते अवामी ज़िंदगी अख़्तियार कई। भारतीय मज़दूर संघ जो सदर मनहर मेहता सिंध जे RSS जी

पैदावार आहे। लाल कृष्ण आडुवाणीअ जहिड़ो हीरो सिंध जे RSS जे पारां हिंदुस्तानी अवामी ज़िंदगी खे सूखिड़ी आहे। इहो इएं नाहे जो जनार्दन ठाकुर 1977 ई. में पंहिंजे किताब "All the Janata Men" में संदसि बारे में लिखियो आहे:

जंहिं शख़्स पंहिंजी पज़ेराईअ खां सवाइ जनता पार्टीअ जे हिस्से 'जन-संघ' लाइ घणी इज़्ज़त हासिल कई आहे, उहो आहे लाल कृष्ण आडुवाणी, जेको अजु काल्ह हिंदुस्तानी सियासत में साफ़ सुथिरो ऐं संओं सिधो अगुवान आहे। साफ़, नफ़ीस, कारोबारी, डिसण में नर्म, पर ज़रूरत वक्त सख़्त, हीउ तडहिंको सूचना ऐं चोडुस फहलाअ जो वज़ीर घणो करे अजु जी सियासी दुनिया में पूरालो आहे। जेतोणीकि हू अगीं सिफ़ में न रहियो आहे, पर पोइ बि ऊंदाहे आईने में हू हिक रोशन शमां वांगुरु बीठल आहे।

ब्रह्मू समाज खां वठी RSS ताईं उहे सभु हलचलूं हुयूं, जिनि सिंधु खे हिक नुमायां सूबे में तब्दील कयो ऐं उहे हलचलूं ई हुयूं, जिनि आज़ादीअ जे हलचल खे गर्मी बख़्शी।

13

सिंधु में आज़ादीअ जी हलचल

"नादिरशाह हीउ मुल्क हिक भेरो लुटियो हो, पर अंग्रेज़ असां खे रोज़ लुटीनि था। असां जो रतु चूसे, हर साल 45 लख डालरनि जेतिरी दौलत मुल्क खां बाहिरि मोकिली वञे थी। अंग्रेज़नि खे हिकदम हिंदुस्तान छडे हलियो वञण खपे।" इहे लफ़्ज़ इंडियन नेशनल कांग्रेस जे जनम (1885 ई.) खां हिक वर्हिय अगु ऐं गांधीअ जे "हिंदुस्तान छडे वञो" (Quit India) हलचल जे सोच खां पूरा 58 वर्हिय अगु, 20 मई 1884 ई. ते "सिंध टाईम्स" (Sind Times) अख़बार लिखिया हुआ।

बेंगाल "बंग-भंग" जे विरहाङे स्वदेशी हलचल खे हथी डियण सां मुल्क जे कंहिं बि हिक हंध वांगुरु, सिंध में आज़ादीअ जे हलचल खे वडी मदद कई। जडहिं ख़ुदी राम बोस खे 1908 ई. में फासी डिनी वेई त संदसि तस्वीर सभिनी मुहिब वतननि जे घरनि में पंहिंजो रस्तो गोल्हे वरितो। सागिए साल वीरूमल बेगराज (1874 ई. - 1955 ई.) सखर में, लोकूराम शर्मा हैदराबाद में स्वदेशी स्टोर काइम कया। उन्हनि खां पोइ सखर में आल सिंध पोलीटीकल कांफ्रेंस घुराई।

जडहिं 1907 ई. में कराचीअ जे डी. जे. सिंध कॉलेज जे प्रिंसीपाल जैक्सन (Jackson) चयो, "अव्हीं हिंदुस्तानी कूड़ा आहियो" त मुख्य शागिर्द जहिड़ोकि जीवत, जवाहर ऐं नारायण कॉलेज छडे बड़ौदे ऐं पूने जे कॉलेजनि में हलिया विया, जिनि मां पोइ टिनि जणनि आचार्य जीवतराम भगुवानदास कृपलाणी, स्वामी गोविंद ऐं प्रोफ़ेसर नारायण रतनमल मलकाणीअ वडो नालो कढियो।

1908 ई. में जडहिं बाल गंगाधर तिलक खे छह साल कैद जी सज़ा डिनी वेई त घणनि नौजवाननि फ़र्श ते सुम्हण शुरू कयो। जेका सूबे में ग़ैर-मामूली गाल्हि हुई, जिते फ़कीर बि खटुनि ते सुम्हंदा हुआ।

1888 ई. में शिकारपुर में प्रीतम धर्म सभा काइम थी, जंहिं न रुगो घणा समाजी सुधारा आंदा, पर स्वदेशी खंडु, साबुण ऐं कपड़े जूं मिलूं काइम करण

लाइ हिमथायो। उन्हीअ सभा तर्फां जेको अदब पेश कयो वियो, उहो एतिरे कदुरु इंकलाबी समझियो वियो, जो 1909 ई. में सेठ चेतूमल, वीरूमल बेगराज ऐं गोविंद शर्मा, सभिनी खे पंज साल सख़्त पोर्हिये सां कैद जी सज़ा ॾिनी वेई। जज बुवाइड (Boyde) पंहिंजे फ़ैसिले में चयो, "उहे नौजवान मज़हबी तन्ज़ीम जा मेम्बर आहिनि, तंहिं करे उन्हनि जो माण्हुनि ते वॾो असरु थींदो। संदनि लिखणियूं ऐं सरगर्मियूं एॾियूं राॼ द्रोही आहिनि, जो उहे मौत जे सज़ा लाइक आहिनि, पर संदनि नंढी उम्र जे पेश नज़र सां खेनि निसबतन घटि सज़ा ॾियां थो।"

1910 ई. में आचार्य कृपलाणी, काका कालेलकर, स्वामी गोविंद, डाक्टर चोइथराम ऐं ॿियनि हैदराबाद में "ब्रह्मचर्य आश्रम" काइम कयो। जेको उभिरंदे कचे में डाक्टर ताराचंद जे इस्पताल जे भरिसां हो। उहो आश्रम राॻ, नाटक ऐं वर्ज़िश वसीले न रुॻो मुहिब वतन नौजवान पैदा करण जो इदारो हो, पर ॿियनि मुहब वतन सरगर्मियुनि जो फ़ोरम पिण हो, जंहिं में रूपोश इंकलाबियुनि खे पनाह ॾियण शामिल हो। डाक्टर चोइथराम, स्वामी आलाराम, पंडित दीन दयाल वाचस्पती ऐं स्वामी सत्यदेव "गऊ रक्षा" (ढॻियुनि जे बचाव) मुहिम ते "बैल साहिब को करो सलाम" ॻाईंदा, सिंधु जे दौरे ते "ब्रह्मचर्य आश्रम" लाइ टे हज़ार रुपया गॾु कया।

बाबा गुरुदत्त सिंह जे गिरफ़्तारीअ लाइ चालीह हज़ार रुपयनि जो इनाम मुकररु थियल हो। हुन कैनाडा ॾांहुं लॾे वञण लाइ जापानी जहाज़ "कोमागातामारो" भाड़े ते कयो, पर उते लंगर हणण जी इजाज़त न मिलण सबबि कलकत्ते पहुतो, जिते खेनि ज़मीन ते पेर रखण न ॾिनो वियो। इन्हीअ ॻाल्हि ते गोलीबाज़ी थी, जंहिं में काफ़ी माण्हू मरी विया। गुरुदत्त सिंह खे सिंध में टे साल पनाह ॾिनी वेई। उन्हीअ साॻिए "कोमागातामारो" जहाज़ जे वाकिये में गोविंद आनंद खे पंज साल सख़्त पोर्हिये जी सज़ा ॾिनी वेई।

1913 ई. जी हिक आधी रात जो हिक मंडो मुसलमान पेट जे सूर जी शिकायत सां कोटड़ीअ खां हिक बैल गाॾीअ में हैदराबाद में लोकराम शर्मा जे घर पहुतो। जॾहिं हू अंदरि आयो त ख़बर पेई त हू मशहूर रूपोश इंकलाबी रास बिहारी बोस हो, जंहिं 1912 ई. में देहलीअ जे चांदनी चौक में लार्ड हार्डिंग ते बम उछिलायो हो।

रास बिहारी, लोकराम शर्मा (1890 ई. - 1933 ई.) ऐं संदसि भाउ विष्णु शर्मा बम उछिलाइण वारे डीं॒हुं देहलीअ में साग॒िए ई घर रहियल हुआ। डाक्टर चोइथराम, रास बिहारीअ लाइ पैसनि जो बंदोबस्त करे खेसि अफ़ग़ानस्तान रस्ते जापान वञण लाइ अमृतसर रवानो कयो।

उन खां अग॒ु शिकारपुर वारनि गांधीअ खे संदसि ड॒खण अफ़रीका जे हलचल लाइ ड॒ह हज़ार रुपया मोकिलिया हुआ। हैदराबाद वारनि पंडित मदन मोहन मालविय जो शानदार आदर-भाव कयो ऐं खेसि मान-पत्र संस्कृत में पेश कयो वियो हो।

जड॒हिं डाक्टर ऐनी बेसंट कांग्रेस जी सदर मुकररु थी त हुन सिंध जे कौम-परस्त मुसलमाननि, ग़ुलाम मुहम्मद भरग॒ड़ी (1878 ई. - 1924 ई.) खे कांग्रेस जो जनरल सेक्रेट्री मुकररु कयो।

जड॒हिं कृपलाणी बिहार में मुज़फ़रपुर जे जे. जे. बी. कॉलेज तां इस्तीफ़ा डि॒नी त हुन प्रोफ़ेसर नारायणदास रतनमल मलकाणीअ वटि इंकलाबियुनि जे मदद लाइ ब॒ हज़ार रुपया छडि॒या।

1919 ई. में देश भग॒तीअ लाइ आम खे तेज़ करण ऐं फहिलाअ में आणण लाइ हिक रोज़नामा "हिंदू" शायइ थी।

सिंधु वारा पैरस में उन वक्त हिंदुस्तान जे आज़ादीअ लाइ कम कंदड़ मैडम कामा (Madam Cama) खे मुसलसिल माली मदद कंदा हुआ।

अञा जड॒हिं गांधी जंग खे "जंगी भरतीअ जा मेला" (War Recruitment Mela कोठींदो हो त नवाबशाह जे डाक्टर तुलजाराम खिलनाणीअ खुले आम "वार लोन बांड" (War Loan Bond) जे ख़िलाफ़ मुहिम हलाई, सिंध तड॒हिं बम्बई प्रेज़ीडेंसीअ जो हिस्सो हुई ऐं सिंध कांग्रेस, बम्बई प्रावंशल कांग्रेस कामेटीअ (P.C.C.) जो हिस्सो हुई। जड॒हिं गांधीअ बम्बई P.C.C. तां आल इंडिया कांग्रेस कामेटीअ (A.I.C.C.) जी चूंड हासिल कई त सिंधु जे वफ़द बर्तानिया जे जंग जे कोशशि जी संदसि हिमायत जी पेश नज़र संदसि चूंड जी मुख़ालफ़त कई।

1920 ई. में जड॒हिं लोकमान्य तिलक सिंधु में आयो त नौजवाननि संदसि गाडी॒ छिकी, औरतूं पहिरियों भेरे पंहिंजे घरनि मां ब॒ाहिरि निकिरी आयूं

ऐं खेसि आरती पेश कयाऊं। तिलक डाढो ख़ुशि थियो। हुन पंहिंजी अख़बार "केसिरी" में लिखियो, "जेकडहिं हर सूबे में डाक्टर चोइथराम जहिड़ा माण्हू हुजनि त जेकर असां गुलामीअ जूं ज़ंजीरूं बिना देर टोड़े सघूं था।"

1 आगस्ट 1920 ई. ते जडहिं तिलक जो देहांत थियो त जैरामदास ऐं बियनि सिंधी अगुवाननि पंहिंजे मथे जा वार कूड़ाया हुआ। खेनि डप हो त आज़ादीअ जी हलचल बीही रहंदी। पर खेनि तडहिं ख़ुशी थी, जडहिं उन्हनि "कर्म वीर" गांधीअ खे, जेको तडहिं उन्हीअ नाले जातो वेंदो हो, हलचल खे नयुनि बुलंदियुनि ताईं खणी वेंदे डिठो।

जडहिं गांधीअ रोलट एक्ट (Rowlatt Act) जी मुख़ालिफ़त में सडु डिनो त सरगरम थियासाफ़्ट, जेठमल परसराम माण्हुनि खे मुसीबतुनि ऐं कुर्बानियुनि जे राग 'कलालके हट कुसण जा कोप वहे' में शामिल थियण जी दावत डिनी, जंहिं करे खेसि ब साल सख़्त पोर्हिये सां कैद जी सज़ा डिनी वेई। जडहिं कांग्रेस जो अमृतसर वारो इजलास थियो त सिंधु वारनि पंहिंजा वफ़द जलियांवाला स्पेशल ट्रेन में मोकलिया। जडहिं 17 मार्च 1922 ई. ते प्रिंस ऑफ़ वेल्स कराचीअ आयो त सिंध मां हिकु बि माण्हू संदसि इस्तकबाल लाइ न वियो। उन डींहुं शहर में सिगरेट या चांहिं बि नथे मिली।

कराचीअ पिण पंहिंजी तारीख़ ठाही, जडहिं 26 सेप्टम्बर 1921 ई. खां 4 नवम्बर 1922 ई. जे दौरान पुरीअ जे इंकलाबी शंकराचार्य भारती, कृष्ण तीर्थ जे ख़िलाफ़ मौलाना मुहम्मद अली, मौलाना शौकत अली ऐं कचलू सां गडु कराची साज़िश जो तारीख़ी मुकद्दमो ख़ालिकडिने हाल में हलायो वियो। गांधीअ उन्हीअ मुकद्दमे खे "सभिनी जदीद मुकद्दमनि में सभिनी अहम मुकद्दमनि खां हिकु" कोठियो।

इंतज़ामिया ताकत जे नशे में एडो धुत हुई, जो हुन सरकार जे हिमायती मुल्लाउनि खे पैसनि ते ख़रीद करण शुरू कयो ऐं जडहिं हकीकी मुल्लाउनि खे हासिल करण में कामयाब न थी त उहे पैदा करण में बि न हिबकिया। रांझे ख़ान जमादार खे "अमन-मेडल" जी लालच जे एवज़ि कुझु मुल्लाउनि खे पेशि करण लाइ चयो वियो। नाकाम थी हुन 'पीर-थिगरियल' ऐं 'पीर-ठीकराठो' जा नाला पेशि कया। उन्हनि ख़िज़मतुनि जे एवज़ि खेसि कलेक्टर बोलस (Bolus) अगियां पेशि कयो वियो, जंहिं खेसि सूबेदार जे उहिदे ते तरक्की डिनी!

इंतज़ामिया हिंदुनि खे कांग्रेस जा हिमायती हुअण सबब हिरासां करण लाइ धाड़ेलनि खे पिण नज़र अंदाज़ कयो वियो। जड॒हिं माण्हुनि ऐतराज़ कयो त खेनि चयो वियो त "गांधीअ वटि वञो" ऐं खेसि धाड़ेल पकिड़ण लाइ चओ।

1930-32 ई. जे सत्याग्रह "सत्याग्रह हलचल" सिंधु में वड॒ी कामयाबी हासिल कई। माण्हू शहर शहर वञी विलायती कपड़ो गड॒ु करे गड॒हनि ते ढोए तीली ड॒ींदा हुआ ऐं तमाशबीन पंहिंजा टोपला वग़ैरह लाहे ब॒रंदड़ बाहि में उछिलाईंदा हुआ। जेकब आबाद जे हिक ग़रीब मुसलमान हारीअ वटि ड॒ियण लाइ रुग॒ो हिक सौंटी हुई, जेका 250 रुपयनि में नीलाम कई वेई।

सिंधी औरत पिण वड॒े पैमाने ते जलूस ऐं बहिष्कार टोलीअ में हिस्सो वठण लाइ पहिरियों भेरो घर जे चौदीवारीअ खां ब॒ाहिरि निकिती। उन खां थोरो ई पोइ बम्बई प्रेज़ीडंसीअ में कराची ऐं हैदराबाद वड॒े में वड॒ा तूफ़ानी मर्कज़ थी पिया। तड॒हिं सिंधु जी आदमशुमारी 40 लखनि खां बि घटि हुई, जंहिंजो 30 सेकड़ो हिंदू हुआ, जेके ई हलचल में हिस्सो वठंदा हुआ। उन्हीअ जे बावजूद 1930 ई. में 724 माण्हू जेल विया।

सिंधु में पंहिंजे सरगर्मीअ खे ग़लत समुझंदे कांग्रेस 1931 ई. जे आदमशुमारीअ जे कम जे बहिष्कार करण जो पिण फ़ैसिलो कयो। पर इहा ई उम्मेद हुई त संदसि आदमशुमारीअ वारे बहिष्कार जे प्रोग्राम में घणा माण्हू हिस्सो न वठंदा।

कराचीअ जे फायरिंग में, जंहिं में दतात्रेय माने ऐं मेंघराज रेवाचंद मारिजी विया। जयरामदास जहिड़े अग॒ुवान खे पिण सथर ते गोली लग॒ी। समूरे मुल्क खे सदिमो पहुतो। गांधीअ 20 अप्रेल 1890 ई. ते तार कई। जयरामदास खे ख़ुशि किस्मत समुझो। गोलीअ जो सथर वारो ज़ख़म जेल खां बहितर आहे। अञा बि दिल जो ज़ख़म वधीक बहितर आहे। हुन पोइ लिखियो- "मूंखे इहो ब॒ुधी ख़ुशी थिए हा त जयरामदास जहिड़े साथी कारकुनि खे गोली हणी मारियो वियो। मां जयराम खां साफ़ दिल ब॒िए कंहिं बि शख़्स खे न सुञाणां। अहिड़नि हिंदुस्तानियुनि जे रत मां ई स्वराज जो मंदर अड॒िबो।"

जेल सुप्रिंटंडंट जे हफ़्तेवार चकास जे वक्त जयरामदास जहिड़े शख़्स खां गोडि॒ ब॒धी हाज़िर थियण ऐं 'सरकार-सलाम' चवण जी उम्मेद कई वेंदी हुई। जड॒हिं हुन इएं करण खां इंकार कयो त खेसि ड॒ंडा बे॒ड़ी लग॒ाए, कैद तनहाईअ में रखियो वियो।

जयरामदास खे गोली लग॒ण जो पड़ाड॒ो बर्तानिवी पार्लियामेंट में गूंजियो, जिते हिक मेम्बर पुछियो त आमिल तबको, जेको सरकारी नौकरीअ में वफ़ादार ऐं अग॒भरो आहे, उनजो हिकु रोशन सितारो आज़ादीअ जे हलचल में कीअं घिड़ी पियो आहे। हिंदुस्तान जे स्टेट सेक्रेट्रीअ उन्हीअ ते ड॒ुख जो इज़हार कयो ऐं चयाईं त हू ख़ुदि हैरान आहे। संदसि हैरानी अञा वधी वेई हूंदी, जड॒हिं बी. एछ. शिवदासाणी I.C.S. कौमी हलचल सां हमदर्दीअ में बहिश्त जहिड़ी नौकरीअ तां इस्तीफ़ा डि॒नी हुई।

जेल खां ब॒ाहिरि नंढनि अग॒ुवाननि खे एड॒ो हिरास कयो वियो, जंहिंजी इंतहा नाहे। सरकार इन्हीअ ग॒ाल्हि जो पूरो पूरो ध्यान रखियो त खेनि ग॒ोठनि में वञण लाइ न टांगो मिले, न ई बेल गाड॒ी। संदनि जलसनि में गड़ब॒ड़ कराइण या खेनि माराइण ताईं सरकारी गुंडनि खे मोकलियो वेंदो हो। गांधीअ सिंध में दब॒ाव जे हकीकत खे ध्यान में रखियो। हुन चयो, "तमाम सख़्तगीर हालतुनि हेठि हिमथ ऐं सबुर लाइ मां खेनि वाधायूं डि॒यां थो। जेकड॒हिं उन्हनि धीरज ऐं सूरहियाईअ सां ड॒ुख सहण जारी रखिया त उन्हीअ बेलग़ाम ऐं बे उसूले दब॒ाव जो पाण जल्दी ख़ातिमो थींदो।"

सिंधु में सत्याग्रह जे बारे में ऑल इंडिया कांग्रेस कामेटी (AISS) 1892 ई. में पंहिंजी रिपोर्ट में लिखियो आहे, "डि॒सिजे थो त सूबो पंहिंजे कारकुर्दगीअ में चङो पियो वञे। सिंधु में कैदियुनि जी दर्जे बंदी हिकु कारो दाग़ आहे। एतिरे कदुरु जो ऑल इंडिया कांग्रेस कामेटीअ जे जनरल सेक्रेट्री जयरामदास खे ऐं 40 सत्याग्रही औरतुनि मां 37 खे पिण सी-क्लास में रखियो वियो आहे। घणियुनि सत्याग्रहियुनि खे पथर टोड़ण जे कम ते लग॒ायो वियो आहे। मंझाउनि ब॒ारहं ज॒णियुनि मां हरहिक खे ब॒ारहं फटिका हंया विया आहिनि।"

1930 ई. जे हलचल गांधी इरविन ठाह जे सूरत में ख़तम थियण खां पोइ मार्च 1931 ई. में कांग्रेस जो इजलास कराचीअ में शुरू थियो। उन इजलास जो 90 हज़ार रुपयनि जे लागत सां रुगो टिनि हफ़्तनि में शानदार नमूने बंदोबस्त कयो वियो हो। महादेव देसाई इहो ड्सिी एडो बे अख़्त्यार थी वियो जो चई ड्निाई, "तारीख़ में पहिरियों भेरो सुर्ग जे छठीअ हेठि कांग्रेस जो इजलास थी रहियो आहे।" गांधीअ चयो त "थोराइतो आहियां जो इस्तकबालिया (आजियां) कामेटी (उन्हीअ शामियाने जे) छठीअ खे हेठां खोलियो आहे ऐं असां खे ईश्वर सां सिधीअ तरह जोड़े रखियो आहे।"

उहो शामियानो उन्हीअ टकरीअ ते लगायो वियो हो, जिते जिन्नाह जो मकबरो आहे। उन्हीअ इजलास जो इंतज़ाम तड्होके कराचीअ जे मेयर ऐं आजियां कमेटीअ जे चेयरमन जमशेद मेहता कयो हो। पर कांग्रेस जो उहो तवारीख़ी जलसो बिनि दुर्घटनाउनि जे करे दबिजी वियो। उन्हीअ इजलास जे मौके ते गांधीअ जे इंतहाई कोशिश जे बावजूद अंग्रेज़नि पंहिंजी धाक विहारण लाइ सरदार भगत सिंह ऐं संदसि साथियुनि सुखदेव ऐं राजगुरूअ खे फासीअ ते चाढ़ियो ऐं जड्हिं कानपुर जे मुसलमाननि, भगत सिंह जे मान में पंहिंजा दुकान बंद करण खां इंकार कयो त फ़साद छिड़ी पियो यू.पी. जे प्रावंशल कांग्रेस कामेटीअ जे सदर ऐं 'प्रताब' जे एडीटर गणेश शंकर विद्यार्थीअ जेको फ़साद बंद कराइण लाइ वियो हो, पंहिंजी सूरहियाईअ जे कोशिश में जानि ड्निी। कराचीअ डांहुं वेंदे, गांधीअ जो हर स्टेशन ते कारनि झंडनि, कपड़े जे कारनि गुलनि ऐं 'वापस वञु' जे नारनि सां इस्तकबाल (आजियां) कई वेई। कराची शहर में कावड़ियल भीड़ खां बचण लाइ हकीकत में खेसि ड्रग रोड स्टेशन ते गाडीअ मां लाथो वियो। गांधीअ चयो त हू कारनि झंडनि खे वरिसे आयल शइ तौर तेसताईं पाण वटि रखंदो, जेसताईं नारे बाज़ पंहिंजी ग़लती महसूस न कंदा ऐं खेनि मोटी वञण लाइ चयाईं। हुन खेनि कांग्रेस जे इजलास में गड़बड़ खां पासो करण ऐं "सिंधु जे कारकुननि जे शानदार कमनि खे ज़ाया न करण" लाइ मिंथ कई। उन खां पोइ कराचीअ वारो इजलास सुख शांतीअ सां थी गुज़िरियो। उन्हीअ इजलास जी ख़ास गाल्हि इहा हुई त अब्दुल ग़फ़ार जे अगुवानीअ में 'फ्रंटीयर रेड शर्टस्' वारनि उन्हीअ में पहिरियों भेरो शिरकत कई।

कराचीअ जे इजलास जी सदारत वॾी शख़सियत सरदार वल्लभ भाई पटेल कई। उन्हीअ ई इजलास में कांग्रेस ॿी गोलमेज़ कान्फ्रंस में शिरकत करण जो फ़ैसिलो कयो। उन्हीअ इजलास बुनियादी हकनि ते दारोमदार रखंदड़ 20 सूत्रनि जो ठहिराव पास कयो, जंहिं में आलमग़ीर बालिग़नि लाइ वोट ॾियण, मुफ़्त प्राईमरी तइलीम, हिंदुस्तान जे सभिनी रहाकुनि खे गुज़ारे जेतिरे उजूरे जो वचन कयल हो।

उन्हीअ इजलास में हिक दिलचस्प घटना थी, जॾहिं लाहौर जे अख़बार 'ज़मींदार' जे एडीटर, मौलाना ज़फ़र अली ख़ान नमाज़ लाइ इजलास महमुल करण लाइ ज़ोरु भरियो। गांधीअ नमाज़ जे दौरान रुॻो इहो कबूल कंदे त कांग्रेस घटि अहम इस्मनि जो उकलाउ करे इंकार कयो। कावड़ियल मौलाना ॿाहिरि निकिरी सिधो रेलवे स्टेशन वियो, जितां पहिरीं गाॾीअ में लाहौर रवानो थी वियो।

1930-32 ई. जे हलचल खां अॻु ऐं पोइ कांग्रेस एॾो मकबूल हुई, जो चूंडुनि में मुखीअ जे साम्हूं मोचीअ खे बीहारे खेसि खटाए सघी थे। 1937 ई. जे चूंडुनि में, एवान जे कुल 60 उम्मीदवारनि मां कांग्रेस जा सत M.L.A.s हुआ, जेके बराबरी रखण लाइ काफ़ी हुआ।

1942 ई. जे हलचल जी उन वक्त जी हालत पंजाब ऐं ॿियनि घणनि सूबनि जे भेट में सिंधु में बहितर हुई। उन्हीअ हलचल में कीमती जानियूं कुर्बान थियूं। हेमूं कालाणी रेल जूं पटड़ियूं उखेड़ींदे पकड़ियो वियो ऐं निर्मल जीवताणीअ खे जेको शाइर हो, फटिका हंया विया, जंहिंकरे संदसि जल्दी देहांत थी वियो। वॾो वज़ीर अल्लाह बख़्श सूमरो कांग्रेस सां एतिरो वेझो हो जो हू खादीअ जो कपिड़ो कुल्हे ते खणी हिक घर खां ॿिए घर ताईं होको ॾेई विकणंदो हो। 'हिंदुस्तान छॾे वञो' हलचल दौरान हुन कराचीअ जे ख़ूबसूरत समुंड जे किनारे 'कल्फ़िटन' ते ठहियलु पंहिंजो बंगलो इन्हीअ शर्त ते आछियो त काफ़ी सारियूं औरतूं सत्याग्रह में हिस्सो वठंदियूं। इहा कांग्रेस सां संदसि सुहिबत हुई, जंहिं खेसि पद खां हटारायो ऐं पोइ जल्दु ई गुझ ॻोह में संदसि कत्ल कयो वियो। सिंधु उन्हीअ शोक भरियल वार्ता (Iracoly) मां कॾहिं बि पाण भराए न सघी ऐं उन्हीअ ई विरहाङे लाइ रस्तो हमवार कयो। जेतोणीक 1946 ई. जे चूंडुनि में कांग्रेस 22 सीटूं हासिल कयूं हुयूं।

इहो हो सिंधु में आज़ादीअ जे हलचल जो मुख़्तसर अहिवाल। हितां जा अगुवान लियाकती तौर मुल्क जे बहितरीन अगुवाननि मां हुआ। मंझांउनि चङीअ तरह ज़ातल सुञातल आचार्य कृपालाणीअ (1888 ई. - 1982 ई.) गांधीअ खे शांति निकेतन में डिठो हो ऐं समूरी ज़िंदगीअ लाइ साणुसि गुंढिजी वियो हो। हुन पंहिंजी ज़िंदगी 'चर्ख़ा-संघ' ऐं डिघे अरिसे ताईं कांग्रेस जे जनरल सेक्रेट्रीअ जे हैसियत सां कम कयाईं। हू तारीख़ी सठि सालनि जे अरिसे जे पहिरीं सिफ़ वारनि अगुवाननि जो निरालो मिसाल आहे।

आलिम मां फिरी जोशीलो देश भगत थियल जयरामदास दौलतराम आलिमचंदाणी (1891 ई.-1978 ई.) सिंध जे कांग्रेसियुनि जो वडो गांधी परस्त हो। हुन कुझु वक्त लाइ हिंदुस्तान टाईम्स (The Hindustan Times) जे एडीटर ऐं पोइ कांग्रेस जे जनरल सेक्रेट्रीअ जे हैसियत सां पंहिंजूं शेवाऊं सर अंजाम डिनियूं। आज़ादीअ खां पोइ जयरामदास बिहार जो गवर्नर, यूनियन फुड मिनिस्टर, आसाम जो गवर्नर ऐं गांधीअ जे (Complete Works) 'मुकमल तहरीरूं' जो एडीटर थियो।

डाक्टर चोइथराम (1889 ई.-1957 ई.) समूरी ज़िंदगी अवाम लाइ कम कंदो रहियो, जंहिं मुल्क जी ख़िज़मत करण तडहिं खां शुरू कई हुई, जडहिं कांग्रेस जो नालो बि बुधण में कोन ईंदो हो। बंगाल जे विरहाङे सां शुरू करे, हिंदुस्तान जे विरहाङे खां पोइ बि हिन देस जी सेवा जारी रखी। विरहाङे जे मौके ते हिन सिंध जे माण्हुनि खे सलामती डियण ऐं मदद करण लाइ महाराणा उदयपुर जे मदद सां 40 नौजुवाननि लाइ चित्तौड़ किले में हिक सिख्या कैम्प मंज़म कई। उहो चोइथराम हो, जंहिं होडी-ज़िद्दी जवाहरलाल नेहरूअ खे शरणार्थियुनि जी मदद करे खेनि उजूरो डियण लाइ मञायो, जेके पंहिंजूं मिल्कियतूं लुटाए आया हुआ। संदसि बारे में 1924 ई. में गांधीअ यंग-इंडिया में लिखियो हो- ''पंहिंजे मुल्क जे फ़ाइदे लाइ डाक्टर चोइथराम पंहिंजो सभु कुझु कुर्बान करे फ़कीर बणिजी वियो आहे।''

आचार्य आसूदोमल टेकचंद गिदवाणी (1890 ई.-1935 ई.) पंहिंजे वडे पघार वारे देहलीअ जे राम जस कालेज जे प्रिंसीपाल जे उहिदे तां इस्तीफ़ा डेई, अगूणी पघार जे पंजें हिस्से जेतिरी रकम ते गांधीअ सां गडु कम करण लगो।

जड॒हिं कांग्रेस चोटीअ जे अगु॒वाननि खे सरकारी उहिदनि ते नामज़द करण जो फ़ैसिलो कयो त पंडित नेहरू इलाहबाद म्यूनिस्पालटीअ जो चेयरमन, सरदार पटेल अहमदाबाद म्यूनिस्पालटीअ जो चेयरमन ऐं सुभाषचंद्र बोस कलकत्ते कार्पोरेशन जो चीफ़ आफ़ीसर थिया त गिदवाणी कराची कार्पोरेशन जो चीफ़ एज्यूकेशनल आफ़ीसर थियो। 1935 ई. में संदसि ओचिते मौत संदसि रोशन मुस्तकबल खे रोके छड॒यो।

प्रोफ़ेसर घनश्याम शिवदासाणी जेको समूरी ज़िंदगी अवामी कारकुन थी रहियो ऐं 1937-47 ई. ताईं सिंधु असेंबली कांग्रेस पार्टीअ जो अगु॒वान रहियो, मैथ्यू आर्नोल्ड (Mathew Arnold) जे कल्चर जी वस्फ़ 'मिठास ऐं रोशनीअ जो मुजसिमो' हो।

हरचंदराइ रोशनदास भारवाणी (1862 ई.-1928 ई.) 1913 ई. में कांग्रेस जे कराचीअ वारे इजलास जे आजियां कामेटीअ जो चेयरमन हो। उन्हीअ इजलास में पहिरियों भेरो हिन सिंधु जे बम्बईअ खां अलहदगी ऐं सूबे जे जुदा जुदा विधान जे घुर जो आवाज़ उथारियो हो। हू 1911 ई. खां 1920 ई. जे दौरान कराची कार्पोरेशन जो सदर हो। 1920 ई. में खेसि सेंट्रल लेजसलेटिव असेंबलीअ जो मेम्बर चूंडियो वियो। जलियांवाला बाग़ जे दुखांतिक वारदात जे बारे में गा॒ल्हाईंदे चयाईं, "जेकड॒हिं अव्हांजे अखियुनि में गो॒ढ़ा आहिनि त उहे गा॒ड़ण लाइ तैयार करियो।" जेतोणीक हू मौत जे बिस्तरे ते हो, पर पोइ बि साईमन कमीशन जे ख़िलाफ़ वोट करण लाइ कराचीअ खां देहलीअ वियो। हू पंहिंजो वोट इस्तैमाल करण खां अगु॒ में ई देहलीअ में लाडा॒णो करे वियो, जिते मोतीलाल नेहरू, पंडित मदन मोहन मालवीय, लाला लजपतराइ ऐं वल्लभ भाई पटेलु संदसि कांधी थिया।

जमशेद मेहता जेतोणीक कांग्रेस जी टिकेट ते दादूअ मां चूंडिजी आयो। हू जदीद कराचीअ जो अडीं॒दड़ हो। हू सभिनी झगि॒ड़नि जो, जेके आम ज़िंदगीअ में घणा हुआ, ठाहु कराईंदड़ (मुंसिफ़) थींदो हो।

नारायणदास रतनमल मलकाणी (1890 ई.-1974 ई.) 1917 में, जड॒हिं ज़फ़रपुर जे जे.बी.बी. कालेज जो प्रोफ़ेसर हो त गांधी, चम्पारनि डां॒हुं वेंदे वटिसि कुझु डीं॒हं तरसियो हो। हिक डीं॒हुं शाम जो सैर कंदे गांधीअ खांउसि पुछियो, "प्रोफ़ेसर, हिन खां पोइ छा कंदें?" इन्हीअ गा॒ल्हि मलकाणीअ जी

ज़िंदगीअ में मोड़ आंदो। हुन नौकरीअ तां इस्तीफ़ा ड॒िनी, गुजरात विद्यापीठ में शामिल थियो, पोइ देहलीअ में हरिजन कालोनीअ जी (तामीर करण) वसाइण में मदद कयाईं, ऐं पोइ बि सिंधु में जल्दु अड॒ावत जो कम शुरू कयाईं। हुन अल्लाह बख़्श सूमरे खे कांग्रेस जो हिमायती बणाए खेसि मुतासिर कयो। एतिरे कदुरु जो कांग्रेस खे संदसि चरख़े समेति हुरनि जे पेशवा पीर पाग॒ारे जहिड़ी ग॒ौरी शख़सियत सां वाकुफ़ु करायो।

औरत अगु॒वाननि में आचार्य गिदवाणीअ जी ज़ाल गंगा भेण, कृपालाणीअ जी भेण किकी भेण, कौड़ेमल जी नुंहं अंबी खिलनाणी ऐं कुमारी ज॒ेठी सिपाहीमलाणीअ सिंधु जे सियासी ज़िंदगीअ में नुमायां किरदार अदा कयो।

आज़ादीअ जे हलचल दौरान कौमी अगु॒वाननि जी समूरे मुल्क में इज़्ज़त थियण लग॒ी। गांधी, पंडित नेहरू ऐं सुभाषचंद्र बोस सिंधु में ख़ास करे मशहूरु हुआ। पर पंडित नेहरूअ खे सिंधु लाइ बिल्कुल कशिश न हुई, जेतोणीक सिंध वासी मथिसि मुफ़्तूं हुआ। हुन 16 जुलाई 1936 ई. ते पदम्‌जा नायडूअ खे लिखियो ''मां सिंधु न सुञाणा। मूंखे उन लाइ कशिश महसूस कोन थी थिए।'' हुन 26 जुलाई 1936 ई. ते हिक ब॒िए ख़त में नवाबशाह मां पदम्‌जा खे लिखियो, ''सिंधियुनि में सुठा गुण आहिनि ऐं मां खेनि पसंद करियां थो। पर इहे मुस्लिम जागीरदारी तबके ऐं हिंदू वाणिए तबके जो अजीब मेलाप आहिनि। इहे तबका जीअं आहिनि, घणो करे साराह जोग॒ा नाहिनि। पोइ बि मंझिनि हिमत ऐं कुवत आहे, जेका अहिड़ी ग॒ाल्हि आहे, जंहिं लाइ थोराइतो थियणो पवंदो। मंझिनि शख़्सी तौर को बि फनकाराना अहसास विरले ड॒िसण में थो अचे। पंहिंजे पटापटी पाजामे में जेके रंग पसंद कनि था, खेनि उन्हनि मां परखिजे थो।''

1936 ई. में कंडियारे जी पंचायत पंडित नेहरूअ खे पैसनि जी ग॒ोथिरी पेशि करण खां तड॒हिं इंकारे छड॒ियो, जड॒हिं हुन थक सबबां शहर मां घोड़े ते सवार थी हलण लाइ मजबूरी ड॒ेखारी। पोइ जड॒हिं शाम जो नेहरू ''अछा भाई'' चई हलियो त पोइ पंचायत आदर भाव सां गडु॒ पैसनि जी ग॒ोथिरी पेशि कई।

सुभाषचंद्र बोस जे मामले में ब॒िन्हीं तरफ़नि खां मुहब्बत हुई। 1938 ई. में पटाभि सीतारमैया जे मुकाबिले में सिंधु सुभाष खे कांग्रेस जे सदर जी

हैसियत में ॿीहर चूंडण में यकराइ थी वोट कयो। हिक दफ़े जॾहिं सुभाषचंद्र बोस हैदराबाद मां रेल रस्ते रवानो थी रहियो हो त कंहिं मज़ाक में खेसि सलाह ॾिनी त खेसि कंहिं सिंधी छोकिरीअ सां शादी करणु घुरिजे, इएं करण सां खेसि कौमी मकसद लाइ चङो ॾाजु मिली वेंदो। सुभाष वराणियो त हू इएं करण लाइ तैयार आहे, बशर्ते डाक्टर चोइथराम रहनुमाई करे। पुछा मां पतो पियो त जेके उते उन वक्त मौजूद हुआ, उहे सभु ग़ैर शादीशुदा हुआ। इन्हीअ ते सुभाष चयो, ''अचो त हिंदुस्तान जे कुंवारनि जी हिक पार्टी ठाहियूं, जंहिंजो सदर चोइथराम थिए ऐं सेक्रेट्री मां। असां उन्हीअ पार्टीअ खे 'जय हिंद' पार्टी कोठींदासीं। असांजो मकसद मुल्क जे ख़िज़्मत जे ख़ुशीअ लाइ शादीअ जे मज़नि खे कुर्बान करणु हूंदो।''

ज़ाहिर आहे त इंडियन नेशनल आर्मी (I.N.A.) जी बुनियाद विझण खां घणो अॻु संदसि ज़हन में 'जय हिंद' जी सोच हुई।

जॾहिं सुभाषचंद्र बोस ॾूर ओभर में 'I.N.A.' काइमु कई त संदसि सुठा ऐं वॾा हिमायती उते जा सिंधी वापारी हुआ। सुभाषचंद्र बोस ऐं गांधी, ॿिन्हीं सिंधियुनि खे आलिमी शहरी कोठियो आहे, जो उहे हरहंधि मौजूद मिलनि था।

इन्हीअ में को शक नाहे त गांधीअ जा सिंधु ऐं सिंधियुनि सां तालुकात सभिनी खां वधीक करीबी हुआ। हुन पंहिंजी 27 मई 1943 ई. जे प्रार्थना में चयो हो, ''सिंधु जे हिंदुनि खे छो डिॼणु घुरिजे? खेनि हिरासां छो थियणु घुरिजे? डिॼण जे बदिरां, उहे राम जो नालो छो नथा वठनि? सिंधु जा माण्हू चाहीनि था त मां उते वञां। मां घणनि सालनि खां सिंधु कोन वियो आहियां पर मूं सिंधु जे माण्हुनि सां एतिरा घाटा सम्ॿंध बरकरार रखिया आहिनि जो कंहिं समें मां ख़ुदि लाइ अक्सर चवंदो होसि त मां सिंधी आहियां। गांधीअ सिंधु सां नाता ख़ुदि स्थापित कया हुआ।''

14

मां सिंधी आहियां- गांधी

भारत जी हरिका शइ मूंखे छिकींदी आहे। 1916 ई. में जड॒हिं मां पहिरियों दफ़ो सिंधु में वियुसि त उन ख़ास नमूने मूंखे पाण डा॒हुं छिकियो ऐं सिंधियुनि ऐं मुंहिंजे विच में हिकु रिश्तो काइमु थी वियो ऐं ज॒ाण मिलियमि त ही संत सट खाई बि महकम रहण वारा आहिनि। 1929 ई. में सिंधु मां वापसीअ ते महात्मा गांधीअ लिखियो आहे त मां सिंधियुनि वटि पाण खे ग़लत समुझण खां सवाइ खेनि कौड़ियूं सचायूं पेशि करे सघियो आहियां।

हकीकत में गांधीअ सिंधु खे कौड़ियुनि सचायुनि जे भेट में मिठियूं सचायूं वधीक पेशि कयूं हुयूं ऐं कंहिं बि सूरत में उन्हनि सभिनी सचायुनि सचु पचु गांधीअ ऐं सिंधियुनि विच में हिक गहिराइप जो नातो जोड़ियो हो। हू सिंधु में सत भेरा 1916, 1917, 1920, 1921, 1929, 1931 ऐं 1934 ई. में आयो हो। हू हिकु ''सिंधी दोस्त'' हो, जेको गांधीजी लंडन में जड॒हिं कानूनी तइलीम वठण लाइ महांगीअ होटल में रहियल हो त उन खे किफ़ायती घर में रहण जो बंदोबस्त कराए डि॒नो हो। 1893 ई. में सी. एल. लछीराम नाले हिक सिंधी वापारीअ खेसि नाड॒ल भारतीय कांग्रेस जे इंतज़ाम करण में मदद कई। 1899 ई. में बैरेस्टर गांधीअ सतनि सिंधी वापारियुनि जो मुकद्दमो कामयाबीअ सां लड़ियो, जिनि ते ड॒खण अफ्रीका में दाख़िल थियण ते बंदिश विधी वेई हुई। डरबन जे सिंधी कवि हूंदामल, सिल्क वापारीअ जे मुकद्दमे में भारतीय राइ मूजिबु मदद कई।

जड॒हिं विष्णु शर्मा, गांधीअ जे ड॒खण अफ्रीका जे सत्याग्रह जे बारे में किताब लिखियो ऐं उन जी कापी खेसि मोकिली त हुन थोरा मञींदे उन जी पहुच डि॒नी। 1916 ई. में जड॒हिं महात्मा गांध सिंधु में आयो त खेसि सिंधी तरीके सां निहायत हुनरमंदीअ सां मढ़ियल मान-पत्र डि॒नो वियो, जो हुन खे डा॒ढो पसंद आयो ऐं केतिरनि सालनि ताईं सांढे रखियो ऐं केतिरनि मुलाकातियुनि खे हिन सिंध जे हुनर ऐं बहितरीन फ़न जी साराह करण में ढापंदा ई न हुआ। उहो जयरामदास ई हो, जंहिं 1930 ई. में खेसि सभु कुझु हिक पासे छड॒ण

ऐं पंहिंजी "आत्म जीवनी" सच लाइ मुंहिंजा आज़मूदा (My Experiments with Truth) मुकम्मल करण लाइ आमादा कयो।

कुझु बि हुजे, गांधीजीअ जी ज़िंदगी ऐं कारनामनि में सभिनी खां अहम सिंधी अॻुवान हो आचार्य जीवतराम, भॻवानदास कृपालाणी। 1915 ई. में शांति निकेतन में संदनि पहिरीं मुलाकात एतिरी कामयाब न थी हुई। कुझु वक्त खां पोइ कृपालाणीअ लिखियो, "संदसि बारे में हर ॻाल्हि अजीब ऐं वहमी ॾिसण में आई...." मूं विचें तबके जो अहिड़ो पढ़ियल माण्हू न ॾिठो हो, जेको बादामनि जी ॻोरिड़ी मानी ख़ास करे सणिभनि बादामनि ऐं पिस्तनि जी खाईंदो हुजे! आचार्य अॻिते लिखियो, "हू मूंखे ॼाणण ऐं मुंहिंजी तोर तक करण जी कोशिश करे रहियो हो। मां पिण पंहिंजे लेखे साॻी ॻाल्हि करे रहियो होसि।"

कुझु महिननि खां पोइ गांधीजीअ अहमदाबाद में हिकु आश्रम काइमु कयो ऐं कृपालाणीअ खे उन जे नेमनि जी हिक नकल मोकिले ॾिनी। कृपालाणीअ उन्हनि नेमनि खे "ॾाढो अजीब" समुझियो त ज़ाल, मुड़िस पाण खे भाउ ऐं भेण वांगुरु समुझनि। उन खे वहिंवारिक न समुझी उछिले छॾियाईं।

सन् 1917 ई. में हिक शाम देर सां, मुज़फ़रपुर में कृपालाणीअ खे गांधीजीअ जी तार मिली, जंहिं में चयल हो त हू उन्हीअ रात जो वटिसि पहुची रहियो आहे ऐं अॻिते चम्पारनि वेंदो, जिते हू नीर उपाईंदड़नि जे शोषण ख़िलाफ़ हलचल जी अॻुवानी कंदो। कृपालाणी सोचण लॻो त छा कजे? ग़ैर शादीशुदा प्रोफ़ेसर ऐं जे. बी. बी. कालेज जे हास्टिल जे सुप्रिंटेंडेंट जे हैसियत सां खेसि पंहिंजो घर बि न हो। हुन खेसि पंहिंजे दोस्त प्रोफ़ेसर नारायणदास रधनमल मलकाणीअ वटि रहाइण जा फ़ैसिलो कयो। पर ॾखण अफ्रीका जे जद्दोजहद जे "महान् माण्हू" गांधीजीअ जी आजियां कीअं कजे? हास्टिल जे शागिर्दनि संदसि आदर भाव ऐं आरती उतारण जो फ़ैसिलो कयो। पर रात जो मुनासिब आरतीअ लाइ नारेलु किथां अचे? अञा शागिर्द ॻणॻूत में ई हुआ त कृपालाणी हास्टिल जे हाते में बीठल नारेल जे वण ते चढ़ी वियो ऐं हिक जे बजाइ वधीक नारेलु पटे आयो। गांधीजीअ जी जोॻी आजियां कई वेई। कृपालाणीअ जे ज़मींदार दोस्त जे ॾिनल घोड़े गाॾीअ में गांधीजीअ खे विहारे, संदसि ख़्वाहिश जे ख़िलाफ़, शागिर्दनि छिके घोड़े गाॾीअ खे अची कालेज जे हाते में बीहारियो।

गांधीजीअ पंहिंजी आत्म कथा में लिखियो आहे, ''आचार्य कृपालाणीअ सां जड॒हिं मां 1915 ई. में पहिरियों दफ़ो मिलियुसि त हू अग॒ेई हिकु पक्को सूरमो हो। खेसि तड॒हिं दर महिने चार सौ रुपया मिलंदा हुआ। पर हू ब्रह्मचारी हो ऐं पाण लाइ फ़कति चालीह रुपया रखंदो हो ऐं बाकी डाक्टर चोइथराम खे मोकिलींदो हो, जेको तड॒हिं हैदराबाद सिंध में 'ब्रह्मचर्य आश्रम' हलाईंदो हो।'' सालनि खां पोइ गांधीजीअ मुज़फ़रपुर जी मुलाकात जे बारे में लिखियो, ''जीअं त कृपालाणीअ खे पंहिंजो कमरो न हो, तंहिंकरे प्रोफ़ेसर मलकाणी मुंहिंजो मेज़बान बणियो। उन्हनि डीं॒हंनि में सरकारी प्रोफ़ेसर लाइ मूं जहिड़े शख़्स खे पाण वटि रहाइणु ग़ैर मामूली ग॒ाल्हि हुई।'' हुन अगि॒ते लिखियो त ''कृपालाणी, सिंधी हुअण जे बावजूद असुलोके बिहारीअ खां वधीक बिहारी हो। हू मुंहिंजे दर जो वडो॒ दरबान हो। हुन वक्ती तौर मूंखे मुलाकातियुनि खां बचाइणु पंहिंजी ज़िंदगीअ जो मूल मकसद बणाए छडि॒यो हो। हू कड॒हिं खिल भोग॒ में पंहिंजे मददगार सड॒ण सां, कड॒हिं अण डु॒खोईंदड़ धमकियुनि सां माण्हुनि खे टारींदो हो। रात पवण ते हू पंहिंजे मास्तरीअ वारो पेशो अख़्त्यार कंदो हो ऐं पंहिंजे तवारीख़ी अभ्यास ऐं मुशाहिदे सां पंहिंजनि साथियुनि सां शानाइतो सलूक कंदो हो ऐं कंहिं बि कमज़ोर मुलाकातीअ खे बहादुर में तबदील करे छडीं॒दो हो।

हिन दोस्तानी मुलाकात खां पोइ बि गांधी-कृपालाणी नातनि ख़ुशिगवार, पुख़ताई रफ़्तार पकिड़ण ऐं काइम थियण में कुझु अरिसो वरितो। मिसाल तौर, कृपालाणीअ खे समुझ में न थे आयो त अहिंसा ज़रीए आज़ादी कीअं हासिल थींदी? गांधीअ मुताबिक हिंदुस्तानी तवारीख़ जो रस्तो अहिंसा वारो हो, पर कृपालाणीअ जो ख़्याल उनजे उबतड़ि हो। कुझु वक्त खां पोइ कृपालाणीअ गांधीअ खां सुवाल पुछणु छडे॒ डि॒ना ऐं उन्हनि जा जवाब ख़ुदि ई डि॒यण लग॒ो। पोइ हुन डि॒ठो त हिंदुस्तानी, हकीकत में ब॒ियनि मुल्कनि खां घटि हिंसा पसंद हुआ। रवायती तरह हिंदुस्तान जे पेशेवर सूरमनि वेढ़ि में बराबर हिस्सो वरितो, पर हितां जे ब॒ारनि वणनि ते चढ़ी पखियुनि जा आखेरा तबाह न कया। दुनिया जे कंहिं बि मुल्क जे भेट में हितां जा माण्हू अकीदे जे तौर वेश्नू हुआ। इंकलाबी कृपालाणीअ अहिड़ीअ तरह अहिंसा जो रस्तो अख़्त्यार कयो।

जेतोणीक हिंसा ऐं अहिंसा जे मामले जी छंडछाण थी वेई, पर पोइ बि कृपालाणीअ, गांधीजीअ खे 'महात्मा' जे तौर कबूल न कयो। हुन चयो, ''गांधीअ खां बि बहितर ऐं वड॒ा ब्रह्मचारी मौजूद हुआ। मूं साणुसि कड॒हिं बि रूहानी रम्ज़ वारी गुफ़्तगू न कई हुई। हू मूंखे 'प्रोफ़ेसर' चवंदो हो ऐं मां खेसि 'श्री गांधी' चवंदो होसि। सालनि खां पोइ, मां खेसि या त 'ब॒ापू' चई मुख़ातिब थींदो होसि या 'गांधीजी' चवंदो होसि। मां महात्मा लफ़्ज़ विरले कम आणींदो होसि। हकीकत में मां माण्हुनि खे बि खेसि महात्मा सड॒ण खां मना कंदो होसि। गांधीअ जे गडि॒यल मज़हबी अवामी प्रार्थना खे पिण कृपालाणी पसंद न कंदो हो। हू प्रार्थना खे माण्हूअ ऐं उन जे मालिक जे विच जो निजी मामलो समुझंदो हो।

कृपालाणीअ गांधीअ जे ''ख़िलाफ़त तहिरक'' जी ओसताईं हिमायत कई, जेसताईं अंग्रेज़नि ख़लीफ़े खे काइमु रखण जो वाइदो कयो हो। पर हू गांधीजीअ जे इन्हीअ ग॒ाल्हि सां सहिमत न हो त जेकड॒हिं मुसलमाननि जी नाराज़गी बहिष्कार जे तहिरक में तबदील न थिए हा त उहा घणी हिंसा खे हथी डि॒ए हा। कृपालाणीअ मुसलमाननि जी हिमायत हासिल करण खे, आज़ादीअ जे तहरीक लाइ ख़ुदिग़र्ज़ी थे समुझियो, कृपालाणीअ खे इन्हीअ ग॒ाल्हि जो अफ़सोस हो त 1944 ई. में गांधी, जिन्नाह गडि॒जाणीअ में मुस्लिम लीग जे अगु॒वान ते चिथर कई वेई हुई। हुन महिसूस कयो त दुनिया जे कंहिं बि हिस्से जे मुसलमाननि जे भेट में हिंदुस्तान जा मुसलमान वधीक कट्टर हुआ। छाकाणि त हिंदू पिण घणो मज़हबी हुआ ऐं हुन हिक भेरे मूंखे बु॒धायो त मुसलमाननि जो ज़ुल्म ऐं कट्टरपणो संदनि संगीत, नृत्य, चित्रकारी ऐं शिल्पी फ़न खे ''ग़ैर इस्लामी'' कोठे धिकारण में लिकल आहे।

कुझु सालनि खां पोइ गुजरात विद्यापीठ जो आचार्य कृपालाणी पूरो वक्त सियासत में डि॒यण वारो थियो ऐं ड॒हनि सालनि खां वधीक अरिसे ताईं कांग्रेस जो जनरल सेक्रेट्री थी रहियो। हू इन्हीअ ख़्याल ते पुख़्तो हो त विरहाङो न थिए। जेकड॒हिं असां गांधीजीअ जी पोइलग॒ी कंरियूं हा त गांधी, अखंड हिंदुस्तान लाइ आज़ादीअ जी माना फेराइण लाइ ब॒ी जद्दोजहद शुरू करणु थे घुरी। पर घणा अगु॒वान एतिरा बु॒ढा थी थकिजी पिया हुआ, जो हुकूमत करण लाइ बेताब हुआ। वधीक तरसी नथे सघिया। गांधीअ पोइ सलाह डि॒नी त

बर्तानिवी हुकूमत, मुस्लिम लीग जे भेट में कांग्रेस जी हिमायत करण लाइ वधीक बेचैन थींदी। तंहिंकरे जिन्नाह खे पासीरो करण बहितर थींदो। उन्हीअ ॾुस में कोशिश करियूं। पर वरी बि ॿिया अॻुवान अंग्रेज़नि सां हथ में हथु मिलाइण ते राज़ी न थिया ऐं जिन्नाह खे पंहिंजी ॻाल्हि ते बीठल रखियाऊं।

पंडित नेहरूअ त एतिरे कदुरु सोचियो त विरहाङे जे अमल में ''घटि में घटि ॾह साल'' लॻंदा। हिंदुस्तान खां बर्मा खे जुदा करण में एतिरो ई वक्तु लॻो हो। कृपालाणीअ जो ''माण्हुनि जी ख़ुदि-ब-ख़ुदि मटा सटा'' जो दलील पिण नज़र अंदाज़ कयो वियो।

जॾहिं मार्च 1947 ई. में पंजाब में फ़साद छिड़ी पिया त कांग्रेस चयो त सूबे में ''इंतज़ामी विरछ'' कई वञे याने प्रशासन विरहायो वञे। कृपालाणीअ उन में विरहाङे जो ॿिजु साफ़ ॾिठो; हुन फोन ते उन बाबत गांधीजीअ खे बिहार में ॿुधायो। कृपालाणीअ अफ़सोस कंदे ॿुधायो त ''बदि-किस्मतीअ सां हू उन वक्त अहिंसावादी साधुनि सां घेरियल हो, जिनि सियासत खे बिल्कुल नथे समुझियो। फोनु उन्हनि मां हिक साधूअ खंयो, जो चाहे पियो त मां उन सां ई ॻाल्हायां। पर मां हिन मोॻे सां छा थे ॻाल्हाए सघियुसि।''

मामलो काबूअ में अची वियो। कृपालाणीअ कांग्रेस जे मेरठ वारे इजलास जी सदारत कई। उहो हुकूमत जे बदिलजण जो वक्त हो ऐं गांधीजीअ चयो त कृपालाणीअ खे ''न रुॻो कंडनि जो ताज पाइणो आहे, पर कंडनि जे सेज ते सुम्हिणो पिण आहे। कैबीनेट जा मेम्बर जेका मुश्किल जाइ भरे रहिया आहिनि, उहा इन खां बि वधीक मुश्किल आहे।''

पर थोरनि ई महिननि में कृपालाणीअ इस्तीफ़ा ॾेई छॾी, छाकाणि जो कांग्रेस जा वज़ीर नेहरू ऐं पटेल कांग्रेस जे सदर सां ख़ास मामलनि में पिण सलाह मशवरो न कंदा हुआ।

उन्हीअ मौके ते गांधीअ सुचेता खे चयो त कृपालाणीअ कौमी मामलनि में हिकु वॾो किरदार अदा करण वञी रहियो आहे, हू दोस्त हो। 1947 ई. खां 1977 ई. ताईं कृपालाणी मुल्क जो ज़मीर बणियो।

गांधीअ जा वास्ता आचार्य गिदवाणीअ सां पिण ओतिरा ई प्यार भरिया हुआ। पर गिदवाणीअ जो जल्दु ई 1935 ई. में देहांत थी वियो। गिदवाणीअ

''गुजरात विद्यापीठ'' जो सदर थियण लाइ देहलीअ में राम-जस कालेज जे प्रिंसीपाल जे उहिदे तां इस्तीफ़ा ड॒िनी। संदसि बारे में गांधीअ चयो त ''हू न रुग॒ो स्कालर हो, पर चरित्र (इख़्लाक) में कसौटीअ ते कसियल सोन मिसलि हो।''

नाभा जे मुहिब वतन शहज़ादे खे राज्य गद्दीअ तां लाहिण जे ख़िलाफ़ 1923 ई. में सिख आंदोलन करे रहिया हुआ। नेहरू, आचार्य गिदवाणी ऐं के. संथनाम संदनि मुज़ाहिरो ड॒िसण विया त खेनि गिरफ़्तार कयो वियो ऐं सज़ा ड॒ेई ब॒ाहिरि मोकिलियो वियो। जड॒हिं ज़ुल्म जारी रहिया त मोतीलाल, गिदावाणीअ खे तार कई त नाभा जे सरहद ते वञे ऐं वञी ड॒िसे त छा पियो थिए। हिक मौके ते न रुग॒ो हिक सत्याग्रहीअ खे गोली हणी मारियो वियो, पर संदसि ब॒ार खे, जेको पंहिंजे माउ जी थञु धाए रहियो हो, पिण गोली हणी मारियो वियो। उन्हीअ ते गिदवाणी गोलीबाज़ीअ जे हंध ताईं डोड़ंदो वियो, जेको नाभा रियासत जे सरहद ते अंदर हो। खेसि हिकदम झटु हणी साल खन लाइ जेल में रखियो वियो।

नेहरूअ पंहिंजी आत्म कथा में लिखियो आहे त ''मुंहिंजीअ दिल चाहियो त मां नाभा हलियो वञां त जीअं बर्तानिया इंतज़ामिया मूं सां बि अहिड़ो सलूक करे। साथीअ सां सच्चाईअ जी इहा ई घुर हुई, पर घणनि दोस्तनि जो ख़्याल इन जे उबतड़ि हो ऐं मूंखे मना कयाऊं। मूं दोस्तनि जे सलाह जी ओट वरिती ऐं पंहिंजी कमज़ोरीअ खे लिकाइण लाइ इहो बहानो बणायुमि।''

गांधीअ लिखियो आहे, ''हुन नाभा सरहद पंहिंजी मर्ज़ीअ सां पार न कई, संदसि इंसान परस्ती खेसि ओड॒ाहुं छिके वेई।'' जड॒हिं गांधीजीअ श्रीमती गिदवाणीअ सां मिलण बइदि ब॒ुधो त गिदवाणीअ खे बंद कयो वियो आहे, संदसि कपिड़ा मेरा आहिनि ऐं सतनि ड॒ींहंनि खां व्रत रखण करे हू कमज़ोरु थी वियो आहे त मुंहिंजे अंदर चयो त ''मां जंग जोटण लाइ तैयार थियां। पर मूं पंहिंजी बे हिमथीअ खे महसूस कयो ऐं शर्म विचां पंहिंजो कंधु झुकाए छड॒ियो। पाण में विढ़ंदड़ पार्टियुनि में तकसीम थियल ऐं हिंदू-मुस्लिम फ़सादनि में टुकरा थियल हिंदुस्तान में शहरी एकता हिक अण-थियणी ग॒ाल्हि ड॒िसण में आई। रुग॒ो इन ग॒ाल्हि जी ख़ुशी आहे त आचार्य गिदवाणी हिकु बहादुरु शख़्सु आहे

ऐं खेसि कहिड़ियूं बि तकलीफ़ूं दरपेशि ईंदियूं त बि हू उन्हनि मां पार लंघे ईंदो। शाल ईश्वर खेसि बाहि मां लंघे पार पवण जी सघ बख़्शे।"

जडहिं वक्त खां अगु गिदवाणीअ जो देहांत थियो त गांधीजीअ लिखियो त इंसान परस्तीअ जा हहिड़ा ब्रान्हा कडहिं मरिणा नाहिनि, हू पंहिंजे ख़िज़्मतुनि वसीले ज़िदंह रहनि था। हुन "गिदवाणी यादगार फंद" गडु कयो ऐं संदनि मान में गुजरात जे खेड़ा शहर में "हरिजन हास्टिल" जोड़ायाईं।

हुन गिदवाणीअ जे कुटंब खे पिण न विसारियो। हुन गंगा भेण खे 'बहादुरु मुड़िस जी बहादुरु ज़ाल' कोठियो ऐं खेसि सनमान-पत्र डिनाईं। जंहिं खेसि इंश्योरंस जो कारोबार जमाइण ऐं पंहिंजे औलाद जी परवरिश करण में मदद कई।

कएं वर्हिय अगु गिदवाणीअ गांधीजीअ खे चयो हो त हू ख़सीस निजी गाल्हियुनि लाइ फ़िक्रमंद न थींदो करे। पर गांधीजीअ खेसि चयो हो, "जिनि ज़ाती गाल्हियुनि खे तूं रवाजी थो चवीं, उहे मुंहिंजे लाइ ओतिरो ई दिलचस्पीअ जो कारण आहिनि, जेतिरो बरदोली, जो मूंखे पंहिंजे साथी-कारकुननि जी वाकफ़ियत रखिणी आहे।" हुन अगिते लिखियो हो, "गंगा भेण खे चइजि त हूअ पंहिंजे गुजरातीअ खे न विसारे।"

गांधीजी प्रोफ़ेसर मलकाणीअ खे मुज़फ़रपुर में साणुसि गडु रहण जे वक्त खां सुञाणंदो हो। मलकाणी "गुजरात विद्यापीठ" में पढ़ाईंदो हो त 1927 ई. में पंहिंजीअ ज़ाल जे ज़ोर भरण ते ऐं हैदराबाद सिंध जे डी. जी. नेशनल कालेज जे तडहोके प्रिंसीपाल एन. वी. थधाणीअ जे चवण ते गांधीजीअ सां सलाह करण खां सवाइ अहमदाबाद छडे वियो।

गांधीजीअ खे एडो सदमो पहुतो जो पंहिंजी ज़िंदगीअ जा डाढा दिलसोज़ ख़त खेसि लिखियाईं। हुन 26 जून ते मलकाणीअ खे लिखियो, "मूंखे इन्हीअ जो डुख न आहे त महाविद्यालय जो छाथो थिए? पर मूंखे इन्हीअ गाल्हि जो डुख आहे त हिक शख़्स खे छा थियो आहे? शाल ईश्वर तुंहिंजी ऐं मुंहिंजी मदद करे।"

कृपालाणीअ खे जेको उन वक्त विद्यापीठ जो प्रिंसीपाल हो, गांधीजीअ 10 जुलाई ते लिखियो, "इन्हीअ (ख़बर) मूंखे जणुकि टुकर टुकर करे

छडि॒यो, जो मूं मलकाणीअ खे पंहिंजे अण-छिज॒ंदड़ (जुदा न थींदड़) हिस्सनि मां हिकु समुझियो हो।'' ऐं प्रिंसीपाल थधाणीअ खे पंहिंजे 19 जुलाई वारे लंबे ख़त में हुन लिखियो, ''मलकाणी गुजरात में पंहिंजे बु॒ड॒ंदड़ जहाज़ जे सुखान ते बीठल आहे, हू पाण बुखायल आहे, संदसि ज़ाल ऐं ससु डि॒सनि थियूं त मथिसि ख़ंजरु खजि॒यलु आहे। संदसि दोस्त कावड़ि में अची, संदसि चरियाईअ जे करे मथिसि भौंकी रहिया आहिनि। तुंहिंजे ब॒ारनि ऐं हिंदुस्तान जे शानदार सबक लाइ हू हिकु आदर्शी प्रोफ़ेसर थींदो।''

हुन अगि॒ते लिखियो, ''मुंहिंजी ज़िंदगी अहिड़नि केतिरनि ई (विद्यापीठ जहिड़नि) इदारनि जे ओसरि ऐं ख़ातमे जी शाहिद आहे, जिनि मां किनि सां मां ख़ुदि वेझिड़ाईअ सां वास्तेदार रहियो आहियां। मुंहिंजे लाइ उन्हनि जी अहमियत संदनि नायकनि खे मथे पहुचाइण ऐं अहिड़ीअ तरह पंहिंजो कमु पूरो करण में आहे।'' हुन पछाड़ीअ में लिखियो, ''मां तोखे बु॒धायां थो त मां उन्हीअ सदमे मां लंघे पार न पियो आहियां, मूंखे कडु॒हिं बारदोलीअ हलाख न कयो आहे, पर मलकाणीअ कयो आहे।''

गांधीजीअ मुल्क खे एतिरा साल बहितरीन प्रोफ़ेसर डि॒यण लाइ सिंध खे साराहियो आहे। ''गुजरात-सिंध ठाह'' हेठि गुजरात विद्यापीठ जे सिंधी प्रोफ़ेसर जो हवालो डी॒ंदे हुन गुजरात शागिर्दनि खे चयो त उहे बो॒डि॒ जे सतायलनि जे इमदादी कारकुननि जे हैसियत सां सिंधु में वञनि ऐं 'सिंधु जो कर्ज़ु' अदा कनि।

पर संदसि सभ खां मुहब्बत भरिया नाता जयरामदास सां हुआ। 1919 ई. में कांग्रेस जे अमृतसर वारे इजलास में, हिक पासे गांधीजी ऐं बि॒ए पासे तिलक, सी. आर. दास ऐं मुहम्मद अलीअ जे विच में सुधारनि जे ठहिराव ते थोरा मतभेद थी पिया। केतिरनि सालनि बइदि गांधीजीअ इन गा॒ल्हि खे सारींदे लिखियो, ''थधे दिमाग़ वारो सिंधी शख़्सु जयरामदास मदद लाइ अगि॒ते वधियो। हुन मूं डा॒ंहुं हिक पने टुकरी मोकिली, जंहिं में ठाहु करण लाइ सलाह ऐं ज़ोरु डि॒नल हो। मूं खेसि नथे सुञातो। संदसि अखियुनि ऐं चेहरे में अहिड़ी का कशिश हुई, जंहिं मूंखे हुन डा॒ंहुं छिकियो।'' मूं सलाह पढ़ी, उहा सुठी हुई। मां उहो पने टुकरु देश बं॒धूअ डा॒ंहुं वधायो। हुन वराणियो, ''बेशक।'' बशर्ते मुंहिंजी पार्टी कबूल करे। लोकमान्य तिलक चयो, ''मां इहो डि॒सण नथो

चाहियां। जेकडहिं दास मंज़ूर कयो आहे त उहो मूं लाइ काफ़ी आहे।'' मालवीय (जेको सदारत करे रहियो हो, इंतज़ार करे रहियो हो), मुंहिंजे हथनि मां काग़ज़ खसियाईं ऐं ज़ोरदार ताड़ियुनि जे गूंज में एलान कयाईं त ठाहु थी वियो आहे।

1930 ई. में जडहिं गांधी 'लूण सत्याग्रह' शुरू करे रहियो हो त जयरामदास खे, जेको तडहिं बम्बई लेजसलेटिव काऊंसिल जो मेम्बर हो, लिखियाईं, ''मूं विदेशी कपड़े जे बहिष्कार जे कामेटीअ जी वाग संभाली आहे। जेकडहिं उन्हीअ खे कामयाब बणाइणो आहे त मूंखे हिक पूरे वक्त लाइ सेक्रेट्रीअ जी ज़रूरत पवंदी ऐं मां तो जहिड़े लाइक माण्हूअ खां सवाइ बिए कंहिं जो सोचे बि नथो सघां।'' जयरामदास हिकदम पंहिंजे उहिदे तां इस्तीफ़ा डेई, नईं ज़िम्मेवारी संभाली ऐं विदेशी कपड़े जे बहिष्कार खे हैरत अंगेज़ नमूने कामयाब कयाईं।

जेकडहिं कुझु मुसलमाननि जयरामदास ते फ़र्केपरस्तीअ जो इलज़ाम हंयो त गांधीअ खेनि चयो, ''मूंखे जयरामदास जो कसम आहे, मूंखे हुन खां वधीक सच्चे माण्हूअ सां मिलण जी इज़्ज़त हासिल न थी आहे। हू मुसलमाननि जे मुख़ालिफ़ न आहे। मां हुन या डाक्टर चोइथराम जे बारे में हिंदू-मुस्लिम इतहाद जे हामी हुजण खां सवाइ बियो कुझु बि सोचण खां इंकारी आहियां।''

1941 ई. में जडहिं सिंध प्रावंशल कांग्रेस कामेटीअ जे सदर, डाक्टर चोइ़थराम कंहिं ख़ास मसइले ते गांधीअ सां सलाह मुसलहत कई त गांधीजीअ खेसि चयो, ''जीअं जयरामदास चवे तीअं करि। संदसि डाहप में मुंहिंजो वेसाहु हिकु दाइमी पक्को अनासर आहे।''

गांधीजीअ पंहिंजो पाण खे रुगो अगुवाननि में दिलचस्पी वठण ताईं महदूद न रखियो। हुन कडहिं बि इहो न विसारियो त हुन 1919 ई. में निंड में सुम्ही पवण सां पडईदन जे माण्हुनि खे बज़ास कयो हो। डहनि सालनि खां पोइ जडहिं हू वरी सिंध में आयो त उन्हीअ हंधि वरी वञण लाइ निशानदेही कयाईं, ऐं हुन आनन्द हिंगोराणीअ ऐं संदसि ज़ाल विद्या डांहुं, संदनि बारे में ऐं संदनि सिहत, कम ऐं चङभलाईअ जे सिलसिले में केतिरा ई ख़त लिखिया। जडहिं विद्या जो देहांत थियो ऐं आनन्द खेसि पूजण शुरू कयो त गांधीजीअ खेसि लिखियो, ''विद्या सुठी हुई, पर ईश्वर जी जाइ नथी वठी सघे। मां बुत

शिकन आहियां, तूं जेकॾहिं खेसि आसानीअ सां विसारे सघीं थो त इएं करि। पोइ विद्या मथभरी थींदी ऐं तूं पिण।''

कांग्रेस जूं कारकुनि श्रीमतियूं, गांधीजीअ जे मज़ाक मां मुतासिर थींदियूं हुयूं। गांधीजी हिक भेरे 1939 ई. में गंगा भेण गिदवाणीअ खां जेका इंश्योरेंस जो कारोबार कंदी हुई, चर्चे में पुछियो त मुंहिंजी ज़िंदगीअ जो ''वीमो'' केर कंदो। गंगा भेण चर्चे में वराणियो, ''न, मां अव्हां जहिड़े ॿुढे जो वीमो न कंदियसि।'' हिक भेरे मलकाणीअ सां मानीअ खां पोइ श्रीमती मलकाणीअ खां ''दक्षिणा'' घुरियाईं, जंहिं ते हुन वराणियो, ''मूं अव्हांखे मलकाणी ॾेई छॾियो आहे, अव्हां खे ॿी दक्षिणा कहिड़ी घुरिजे?''

माण्हुनि में संदसि उहे समूरियूं दिलचस्पियूं न रुॻो गहिराईअ सां इंसानी हुयूं, पर उन्हनि मकसदनि खे तरकी वठाइण जी ॻणप कयल हुई, जेके खेसि सभ खां वेझा अज़ीज़ हुआ। स्वराज खां नुक्ते नज़र उहे मकसद 'खादी ऐं हिंदी' हुआ। जॾहिं आचार्य गिदवाणी गुरू ग्रंथ साहिब खे रस्मी तौर रेशमी कपड़े में वेड़हे रखण बदिरां 'खादीअ' में वेड़हे रखियो, तॾहिं गांधीजीअ खे ॾाढी ख़ुशी थी हुई। हुन चयो त उहो उन्हनि माण्हुनि लाइ वॾो मिसाल आहे, जेके पुरीअ जे मूर्तियुनि खे विलायती कपड़े में वेड़हे रखनि था।

1924 ई. में गांधीजीअ ॾिठो त सिंधी खादीअ जे बारे में गंभीर नाहिनि। हुन ॾिठो त सिंध में सुट कतण जे अमल जो विरले को उहिञाणु हो, जेका अफ़सोसनाक सूरतहाल हुई। केतिरा साल पोइ बि हुन लिखियो, ''किनि मइज़ज़ियुनि खां सवाइ बाकी माण्हुनि जी खादीअ में दिलचस्पी विरले आहे। अकीदे जी ज़रूरत केतिरनि ई शक व गुमान खे जनमु ॾिए थी।'' हुन ॾिठो त कोटड़ीअ में कांग्रेस जा 20 मेम्बर हुआ, जिनि जो तादाद घटिजी ॿिनि ताईं पहुचंदो। जेकॾहिं खादी पाइण ते ज़ोरु ॾिनो वियो। खादीअ जे हंडाइण खां पासो करण में, जंहिं ॻाल्हि खेसि वधीक हैरान कयो हो, उहा हुई कपहि जी घणी पैदावार ऐं घणी ग़रीबी। सिंध जे ग़रीबीअ जे सबूत में हुन पायुनि जे घणे तइदाद जो हवालो ॾिनो, जेके खेसि चंदे में मिलियूं हुयूं। उड़ीसा खां सवाइ मूं पंहिंजे चंदे जी वसूलीअ में सिंध जेतिरियूं घणियूं पायूं कॾहिं बि न ॾिठियूं आहिनि। हिक हंधि चंदे में मूंखे कोॾियूं बि मिलियूं। (पुराणे रुपये में 64 पैसा हूंदा हुआ, हिकु पैसो बराबर हूंदो हो टिनि पायुनि जे ऐं 5 कोॾियूं बराबर हुयूं

हिक पाईअ जे)। इहा ग़ाल्हि कंजूसीअ सां मुशाबहित नथी करे सघिजे। मूं सिंध में कडहिं बि कंजूसाई न डिठी आहे। जिनि माण्हुनि (लाला लजपतराइ जे यादगार फंद जे पंज लख रुपयनि लाइ) बारंहनि डींहंनि में सतर हज़ार रुपया डिना हुजनि, उन्हनि खे चंदे डियण में नाख़ुशि हुजनि, चई नथो सघिजे।

गांधीजी ख़ास करे तडहिं परेशान थी वियो, जडहिं कराचीअ जो मेयर ऐं कांग्रेस जो वडो हमदर्द जमशेद मेहता 1928 ई. में कराची कार्पोरेशन जे 1924 ई. जे अगु वारे ठहिराअ खे रद्द करण लाइ ठहिराउ पेशि कयो, जंहिं मूजिबु कार्पोरेशन जे पटेवालनि ऐं हरिजननि लाइ खादीअ जी वर्दी मुकरर कई वेई हुई। जमशेद जो दलील हो त गुज़िरियल टिनि सालनि दौरान कार्पोरेशन खे खादीअ ते हिकु लख रुपया ख़र्चु करिणा पिया हुआ। जंहिंजो 85 सेकड़ो ज़ाया वियो। हुन चयो त खादीअ जो कपड़ो मेरो बि जल्दी थिए थो त फाटे बि जल्दी थो ऐं वेचारनि पटेवालनि ऐं हरिजननि खे साल में रुगो ब वर्दियूं मिलनि थियूं। जमशेद चयो, ''मां अव्हां खे बुधायां थो त इहो ज़ुल्मु आहे। जेका शइ पंहिंजे पटेवालनि खे डियूं था, उहा संदनि अखियुनि में गोड़हा आणण लाइ काफ़ी आहे।''

गांधीजीअ लिखियो, ''जमशेद मेहता कराचीअ जे हिक सच्चे माण्हूअ जी हैसियत सां सही तौर मञियल आहे। घणो करे उतां जी हर सिंधी अवामी तहरीक खेसि पंहिंजो हुअण जी दावा करे थी.... संदसि ईमानदारी ऐं ख़ुदि-मुख़्त्यारी ऐं संदसि वतन परस्तीअ में को शक न आहे।'' पर जमशेद जो खादीअ जे बारे में फ़ैसिलो बिल्कुल उन्हीअ नाज़ुक औरत जे फ़ैसिले जहिड़ो आहे, जेका पंहिंजे मौसम जे सिखयल महिमाननि जे बुख जो अंदाज़ो पंहिंजी बुख सां लगाईंदी आहे।

कार्पोरेशन जे कांग्रेसी मेम्बरनि जे एतराज़ ते वेचारे जमशेद उहो ठहिराउ त अगु में ई वापस वठी छडियो हो, पर कुझु सालनि खां पोइ कराचीअ में हरिजननि जे रहाइश जे सुवाल ते गांधीजीअ ख़ुदि जमशेद वारो दलील डिनो। 1934 ई. में हुन जे स्वागत थियण बइदि भाषण में चयो त ''शहर जे मुखियुनि खे इहो डिसणु घुरिजे त हिकिड़े बि हरिजन खे अहिड़े क्वार्टर में न रहायो वञे, जंहिं में उहे पाण रहण लाइ तैयार न हुजनि।'' पोइ कराचीअ में आम मेड़ में चयाईं, ''इहो सेहरो कराचीअ जे सिर ते नाहे त उन्हीअ जे हदुनि अंदरि

हिक बि अहिड़े हरिजन खे अहिड़े घर में रहण लाइ मजबूर कयो वञे, जंहिं में वड़े खां वड़ो शहरी ख़ुशीअ सां रहण कबूल न करे।''

जमशेद बि संदनि कपड़नि लाइ ब़ी कंहिं मुख़्तलफ़ ग़ाल्हि जी तकाज़ा न करे रहियो हो।

1934 ई. में उन्हीअ साग़िए दौरे दौरान गांधीजी कराचीअ जे प्रेस सां मिलियो। ''सिंध आबज़रवर'' जे एडीटर के. पुनिया खांउसि सिंध जो बम्बईअ खां जुदा थियण जे बारे में पुछियो त गांधीजीअ साफ़गोई कंदे चयो, ''हाणे तूं मूंखे पंहिंजे आपे मां 'ब़ाहिरि कढणु थो चाहीं।''

जड़हिं खांउसि सिंधु जे बारे में संदसि अहसास, तासरात बाबत पुछियो वियो त चयाईं, ''मां सिंधु बाबत ख़ुशि आहियां। मां ख़ुशि थींदुसि, जेकड़हिं मूंखे घणी रकम मिलंदी बि।'' इन्हीअ ग़ाल्हि ते प्रेस वारनि ख़ुशीअ सां उते जो उते 30 रुपया गड़ु करे वरिता। गांधीजीअ चयो, ''अव्हांखे जेकी कुझु मिले थो, मां अव्हां खां उहो फुरण नथो चाहियां। घटि में घटि अव्हां पंहिंजूं पेंसलूं ई खणी मूंखे ड़ियो।'' अहिड़ीअ तरह गांधीजीअ सभिनी जे टहिकनि जी गूंज विच में 30 रुपया ऐं पेंसलूं खांउनि वरितियूं।

गांधीजी वर वर करे अग़ुवाननि, संदनि ज़ालुनि, ब़ारनि ऐं ब़ियो जेको बि संदनि ग़ाल्हि ब़ुधंदो हो, उन्हनि खे हिंदी ज़बान सिखण ऐं कम में आणण लाइ चवंदो हो। हुन 1945 ई. में सुचेता खे पिण लिखियो त हूअ कृपालाणीअ खे चवे त ''हू मूं ड़ांहुं हिंदी या उर्दू या सिंधीअ में लिखंदो करे। हू मूं ड़ांहुं अंग्रेज़ीअ में छो थो लिखे? प्रोफ़ेसर आहे इन करे?....''

हू ख़ास करे आमिलनि में ड़ेती लेतीअ जे सिंधी रस्म खां काफ़ी हिरासियल हो। हुन 1934 ई. में डी. जे. सिंध कालेज कराचीअ जे विद्यार्थियुनि खे चयो, ''हिते हू साहिब लोकनि ऐं पारसियुनि जे नकल करण जी कोशिश कनि था। जड़हिं मूं सिंध जे पहिरिएं दौरे दौरान छोकिरियुनि खे ड़िठो त मां हैरान थी वियुसि त उहे कीअं न पारसी छोकिरियुनि में घेरियल आहिनि। पोइ मूंखे ख़बर पेई त उहे आमिल तबके जूं छोकिरियूं आहिनि। मूंखे ''भाईबंद'' जे बारे में ख़बर हुई। पर अलबति ''आमिल'' नाले खां डिनलु होसि। मूंखे

ताजुब हो त उहे अलाइजे कहिड़े किस्म जा माण्हू हूंदा। जड॒हिं मूं आमिलनि खे डि॒ठो त उहे बिल्कुल साहिब लोकनि जहिड़ा हुआ।

गांधीजीअ वधीक चयो, ''सिंधु जा आमिल घणो करे उन्हीअ सूबे जे सभिनी ज़ातियुनि खां तरकी याफ़्ता आहिनि। पर संदनि समूरी तरकीअ जे बावजूद मंझिनि कुझु अहिड़ियूं गंभीर ख़राबियूं आहिनि, जेके रुगो॒ वटिनि ई डि॒सण में थियूं अचनि।'' उन्हनि ख़राबियुनि में डे॒ती लेतीअ जी रस्म घटि गंभीर नाहे.... माइटनि खे पंहिंजे धीअरुनि खे अहिड़ी तइलीम डि॒यारण घुरिजे जो उहे अहिड़े नौजुवान सां शादी करण खां इंकार कनि, जेको शादी करण जी कीमत वसूल करे ऐं उन्हीअ नीच रस्म में हिस्सेदार थियण बदिरां ग़ैर शादी शुदा रहे।

जड॒हिं मलकाणीअ खेसि इतलाउ कयो त हुन पंहिंजे धीअ मिठीअ जे शादीअ में ब॒ हज़ार रुपया ख़र्चु कया आहिनि त गांधीअ मोट में 4 अक्टूबर 1928 ई. ते खेसि ख़त में लिखियो, ''जेकड॒हिं इहो दुखदायक नाहे त मूंखे तुंहिंजे ब॒ हज़ार रुपयनि जे ख़र्च खे नंढी गा॒ल्हि समुझी, दिल खोले टहिकु डि॒यणु घुरिजे हा। रामदास जे शादीअ जो शायद मूं ते हिकु रुपयो ख़र्चु आयो हो, याने हिकु या ब॒ नारियल। घोट ऐं कुंवारि लाइ ब॒ टिकिलियूं, ''गीता'' जूं ब॒ किताबड़ियूं ऐं ''भज॒नावलीअ'' जूं ब॒ कापियूं। गुजरात में ब॒ हज़ार रुपया आश्रम जे हदुनि ख़्रां बा॒हिरि पिण हिक चङी वडी॒ रकम समुझी वेंदी। मां नथो समुझां त जमनालाल बि कमला जे शादीअ ते ब॒ साल अगु॒ ब॒ हज़ार रुपया ख़र्चु कया हूंदा। पर मूंखे ख़बर आहे त जेकड॒हिं मां सिंध खे गुजरात जे फुट-कथीअ सां मापींदुसि त उहा निरासाईअ जे हद ताईं ग़लत माप थींदी। मां तुंहिंजे लाइ उहा वीहनि हज़ारनि खां बि॒नि हज़ारनि ताईं तरकी समुझां थो। शायद तोखे पंहिंजीअ ससु खे छडि॒णो पवे ऐं पंहिंजीअ ज़ाल खे तलाक डि॒यणो पवे। उन्हीअ नुक्ते खां ग़ौर कंदे बि ब॒ हज़ार रुपयनि में शायद ख़राब सौदो नाहे।''

(समाजिक सुधारक) हासानंद जादूगर खे इहो कमु सौंपियो वियो त हू बग़ैर डे॒ती लेतीअ जे शादीअ जा मिसाल काइमु करे। हुन पंहिंजे धीअरुनि खे फ़कति ५ 'च' डि॒ना- चरख़ो (सुट कतण लाइ ऐटु॒), चाडी॒ (डु॒ध विलोड़ण

लाइ), चकी (अनाज पींहण लाइ जंडु), चुल्हो (बाहि बारण लाइ), चौंरी (पाणीअ जी घाघरि)।

जड्हिं अगूणे वडे वज़ीर अल्लाह बख़्श सूमरे जे कत्ल जो इलज़ाम मुस्लिम लीग जे वज़ीर खहुड़े ते लगो त हुन पंहिंजे बचाव जो वकीलु जिन्नाह खे मुकरर करण जी कोशिश कई। पर जिन्नाह इंकार कयो। 27 मार्च 1983 ई. जे ''इंडियन एक्सप्रेस'' मुताबिक (इत्फ़ाक सां उहो सिंधी वसंत टी. कृपालाणी हो, जंहिं जिन्नाह खे संदसि ज़िंदगीअ जो आख़िरी मुकद्दमो खणण ते आमादा कयो ऐं उहो पिण रुगो आगरे जे सिटी मैजिस्ट्रेट जे कोर्ट में)। खहुड़े पोइ भोला भाई ऐं देसाईअ सां ताल्लुक रखियो, जंहिं संदसि मुकद्दमो हलाइणु कबूल कयो। उन्हीअ ते डाक्टर चोइथराम गांधीजीअ वटि ख़िलाफ़त कई। जंहिं ते गांधीजीअ भोला भाईअ खे लिखियो, ''मूंखे तोखे इहा गुज़ारिश करण में हिबक नथी थिए त खहुड़े जे मुकद्दमे जा काग़ज़ चकासण खां पोइ जेकड्हिं तूं महसूस करीं थो त हू बेगुनाह आहे त पोइ तूं बेशक मूं लाइ मुकद्दमो लडु, पर जेकड्हिं तूं महसूस थो करीं त हू डोहारी आहे त खेसि डोहु कबूलण जी सलाह डे या खेसि तोखे माफ़ करण लाइ चउ (मुकद्दमो न लडु)।'' भोला भाईअ मुकद्दमो छडे डिनो, पर खहुड़े खे डीअल मल नाले हिक हिंदू वकील फासीअ खां बचायो। जल्दु ई सेशन जज वेल्स (Wells) जेको उहो मुकद्दमो हलाए रहियो हो, वक्त खां अगु में पुर-असर हालतुनि हेठि रिटायर कयो ऐं बर्तानिया हलियो वियो।

1920 ई. जे डहाके जे मोट में गांधीजीअ बयान डिनो, ''मूंखे इझो हाणे डाक्टर चोइथराम वटां सिंधु मां हिक हिंदूअ खे ज़ोरीअ मुसलमान करण जे कोशिश जी ख़बर आई आहे। उन्हीअ शख़्स लाइ चयो वञे थो त खेसि संदसि मुसलमान साथियुनि कत्ल करे छडियो, छाकाणि त हू इस्लाम न कबूलींदो। इहे हकीकतूं जेकड्हिं सचियूं आहिनि त भयानक आहिनि।'' गांधीजीअ इन्हीअ गाल्हि जे बारे में सिंधु जे मुसलमान अगुवान सर अब्दुल्लाह हारून खां लिखी पुछियो। हुन उन्हीअ खे ख़ुदिकशी (आत्महत्या) कोठियो ऐं मामले जी पड़ताल करण जो वाइदो कयो, पर पोइ ख़ामोशी अख़्त्यार कयाईं।

जड्हिं 1939 ई. खा वठी सिंध में फ़साद छिड़ी पिया त गांधीजीअ उन्हनि जे ख़िलाफ़ आवाज़ उथारियो। हुन चिताउ डिनो त ''जेकी हिंदुस्तान में

थी रहियो आहे, हिक हिस्से में ई सही, चाहे उहो सुठो आहे या ख़राब, पर हिंदुस्तान ते उनजो असर लाज़मी पवंदो।''

ॾहकाअ जो संदसि ''हकीकी हलु'' इहो हो त कांग्रेस जा एम.एल.ए. (विधायक) पंहिंजनि उहिदनि तां इस्तीफ़ा ॾियनि ऐं अल्लाह बख़्श वज़रात खे इस्तीफ़ा ॾियणु घुरिजे ऐं उन्हनि सभिनी खे ''हिक अमन फ़ौज ठाहे, बिना ख़ौफ़ हुरनि जे विच में आबाद थियणु घुरिजे।'' सिंधियुनि इन्हीअ ॻाल्हि खे बिल्कुल ग़ैर अमली ॼातो, जो सेठ तुलसीदास नाले हिक एम.एल.ए. खे अॻु में कत्ल कयो वियो हो। हिक अख़बारी ख़ातूअ पिण गांधीजीअ खे लिखियो, ''सिंधी एम.एल.एन. खे इस्तीफ़ा ॾेई हुरनि वटि रहण जे चविणीअ बदिरां अव्हीं ख़ुदि पंहिंजे सिख्या वरितल सत्याग्रहयुनि जी 'कम्पनीअ' खे छो नथा मोकिलियो ऐं पंहिंजे उसूलनि खे आज़मायो? या छा इहो अव्हांजो मामलो न आहे त अव्हां जा सत्याग्रही तॾहिं ख़तरे खे मुंहुं ॾींदा, जॾहिं उहो अव्हांजे आश्रम ताईं पहुची वेंदो?''

जॾहिं 1939 ई. में हिंदुनि पंहिंजे ख़िलाफ़ रिथियल हिंसा जी शिकायत कई त हुन खेनि ''पंहिंजो पाण बचाव करण जो फ़न सिखण'' जो चयो ऐं ''जेकॾहिं हू पाण खे महफ़ूज़ नथा समुझनि ऐं एॾा कमज़ोरु आहिनि जो पंहिंजो बचाव करे सघनि त पोइ खेनि इहो हंधु छॾे वञणु घुरिजे, जेको न रहण जोॻो साबित थियो आहे।'' हुन जनवरी 1940 ई. में साॻिए मसौदे ते मोटी लिखियो आहे, ''मूं हिजरत तजवीज़ कई आहे, मां उहा तजवीज़ वरिजायां थो, उहा ग़ैर मामूली न आहे। माण्हू उन जो कदुरु नथा ॼाणनि। अज़ीम ऐं ताकतवर हस्तियुनि इहो रस्तो अॻु में अख़त्यार करण लाइ हाणे ॼातो आहे।'' पुराणे अहदनामे जो ''ॿियो किताब'' जेको एक्सोडस (Exodus) जे तौर ॼातो वञे थो, इज़राईल जे रिथियल लॾपलाण जो हिकु दास्तान आहे। जलावतनीअ में उन्हनि पंहिंजे लाइ फ़ौजी जीवन-मार्ग तैयार कयो, तंहिंकरे उन्हीअ में का ग़ल्ती, बे-इज़्ज़ती या पाण मढ़ियल जलावतनीअ में का बि बुज़िदिली नाहे। हिंदुस्तान वॾो मुल्क आहे। जेतोणीक ग़रीब आहे पर अंदरूनी लॾ-पलाण खे कबूलण लाइकु आहे। ख़ास तौर ते उन्हनि लाइ जेके समर्थ, महिनती ऐं ईमानदार आहिनि।

1947 ई. में जड॒हिं हिंदुनि लड॒णु शुरू कयो त गांधीजीअ लिखियो, ''जेकड॒हिं हिकिड़ो बि सिंधी सिंध मां लडे॒ थो त गवर्नर जनरल जे हैसियत सां मिस्टर जिन्नाह लाइ इहा शर्म जी गा॒ल्हि आहे।'' हुन वरी लिखियो, ''सिंधी हिंदू अवलि दर्जे जा वापारी आहिनि, उहे बम्बई, मद्रास या बि॒यनि हंधनि डां॒हुं छो था भजु॒नि? खेनि को बि नुक्सान न रसंदो, पर सिंधी घाटीअ में रहंदे, छाकाणि त हू किथे बि वेंदा, उते पंहिंजे लाइ पैसा कमाईंदा। सिंधी डु॒खण अफ्रीका में मौजूद आहिनि। दुनिया जो अहिड़ो को हंधु नाहे, जिते सिंधी न हुजनि। हू डु॒खण अफ्रीका में तमाम घणो पैसो कमाईनि था ऐं उन्हीअ मां फ़राख़-दिलीअ सां ग़रीबनि ते बि ख़र्चु कनि था।''

जेतोणीक सिंधी अगु॒वाननि जा गांधीअ सां मुहब्बत भरिया नाता हुआ। पर खेनि उहा मुअतबरी हासिल हुई जो उहे जड॒हिं खेसि ग़ल्तीअ ते डि॒संदा हुआ त खेसि चवण खां न हिब॒कंदा हुआ। जे॒ठमल परसराम 'ख़िलाफ़त' खे 'आफ़त' कोठियो ऐं जड॒हिं 1930 ई. में गांधीजीअ चोइथराम खां पुछियो त रिथियल 'लूण सत्याग्रह' जे बारे में जे॒ठमल छा थो चवे त हुन खेसि चयो, ''जे॒ठमल चवे थो त 1920 ई. में अव्हां सुट जे ढेरनि सां आज़ादी घुरी थे, हाणे उहा अव्हां लूण जे लडु॒नि सां था चाहियो।'' चोइथराम बु॒धायो त इहो जुमलो बु॒धी गांधीजी ज़ाहिरी तरह सुसी वियो।

मिस्टर डी. नाले हिक अंग्रेज़ गोपीनाथ खे गोली हणी मारे विधो। ऑल इंडिया कांग्रेस कामेटीअ जे ठहिराअ जे मसौदे गोपीनाथ जे इन्हीअ अमल जी गिला कई।

गोपीनाथ जी इहा सूरहियाई हिक दुरुस्तीअ ज़रीए साराही वेई। जड॒हिं गांधीजीअ उन दुरुस्तीअ जी मुख़ालिफ़त कई त मोतीलाल नेहरू ऐं चितरंजनदास वॉक आऊट करे विया। गांधीजीअ पंहिंजी गा॒ल्हि मञाई। पर वॉक आऊट जे हवाले सां चयाईं त तरमीम खे मंज़ूर थियल समुझणु घुरिजे। उन्हीअ ते चोइथराम 'पाइंट ऑफ़ ऑर्डर' ते उथी बीठो ऐं चयाईं, हिक रद्द थियल मंज़ूर थियल कीअं समुझी थी सघिजे? गांधीजी कंबी वियो। हुन अखियुनि में पाणी आणे चयो, ''चोइथराम, जेको मूं लाइ बा॒र वांगुरु आहे, मूं सां 'पाइंट ऑफ़ ऑर्डर' थो उथारे! अजु॒ मां अकेलो बीठो आहियां।'' 'पाइंट ऑफ़ ऑर्डर'

गांधीजीअ, चोइथराम ऐं मुहम्मद अली जे लुड़कनि में बुडी वेई, हुननि पंहिंजी टोपी गांधीजीअ जे पेरनि में रखी छडी।

जडहिं लॉर्ड इरविन खे कत्ल करण जी कोशिश कई वेई त गांधीजीअ चाहियो थे त ऑल इंडिया कांग्रेस कामेटी इन जी गिला करे। स्वामी गोविंदानंद मुख़ालिफ़त कई। राइ शुमारीअ में गांधीजीअ 700 जणनि जे सभा में रुगो 38 वोटनि तां खटियो। गांधीजीअ फ़राख़दिलीअ सां कबूल कयो, ''इख़लाकी सोभ स्वामी गोविंदानंद जी थी हुई।''

अक्टूबर 1934 ई. में ऑल इंडिया कांग्रेस कामेटीअ जी मीटिंग में गांधीजीअ ''यूनाईटेड प्रावंसिज़'' (यू.पी.) खे ''हिंद'' ऐं सेंट्रल प्रावंसिज़ (सी.पी.) खे ''महाकौशल'' जा नवां नवां नाला कोठण लाइ कांग्रेस जे सभा में दुरुस्तीअ जी रिथ पेशि कई। डाक्टर चोइथराम इन्हीअ रिथ जी मुख़ालिफ़त कई ऐं चयाईं त ''यू.पी.'' खे ''हिंद'' कोठे नथो सघिजे, जो ''हिंद'' समूरे मुल्क जो नालो आहे। सी. राज गोपाल आचार्य चोइथराम जी हिमायत कई।

गांधीजीअ चयो त हुन इहा तब्दील रुगो इन्हीअ करे कबूल कई हुई, जो माण्हुनि शिकायत कई आहे त ''यू.पी.'' हिंदुस्तानी नालो नाहे। जीअं त इन्हीअ गाल्हि ते एतराज़ उथियो, तंहिंकरे हुन दुरुस्तीअ जी रिथा वापस वरिती। पर मेम्बरनि निशानदेही कई त खेनि ''सी.पी.'' जो नालो ''महाकौशल'' कोठण में को एतराज़ नाहे। गांधीजीअ नईं रिथ कबूल कई ऐं मेड़ जे टहिकनि जे गूंज में चयाईं, ''अव्हांजो ग़रीब जवाहरलाल सां वेरु थो डिसिजे, जेको नैनी जेल में आहे। हुन ई सलाह डिनी हुई त ''यू.पी.'' खे ''हिंद'' कोठणु घुरिजे।''

गांधीजीअ जे आख़िरीनि डींहंनि में नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे जो अगूणो डिप्टी जनरल मैनेजर पी. डी. चांडवाणी बिरला हाऊस में साणुसि गडु रहियल हो। 20 जनवरी 1948 ई. ते प्रार्थना जे दौरान बम फाटो ऐं बिरला हाऊस जे चारदीवारीअ जो हिकु हिस्सो तबाह करे छडियाईं। प्रार्थना जे गडिजाणीअ जे आख़िर में गांधीजीअ चयो त खेसि लगो त परे खां फ़ौजी गोलीमार जो अभ्यास थी रहियो आहे। इन्हीअ ते चांडवाणीअ चयो, ''बापू, इहो न सचु आहे ऐं न अहिंसा।'' शायद आश्रम वासियुनि में उहो सिंधी ई हो, जेको एडो बेबाक हो।

गांधीजीअ जे हूंदे जॾहिं विरहाङो थियो त हुन शरणार्थियुनि लाइ सभु कुझु करण लाइ हिंद सरकार ते ज़ोरु आंदो। हुन कच्छ जे महाराजा सां ॻाल्हायो ऐं सिंधू रीसेटिलमेंट कार्पोरेशन खां कंडला जी ज़मीन वरिताईं। 30 जनवरी 1948 ई. में चोइथराम जी अॻुवानीअ में आयल सिंधी वफ़द खे चयाईं, ''जेकॾहिं कशमीर लाइ जंगि थी सघे थी त पाकिस्तान में रहियल सिंधी हिंदुनि जे हकनि लाइ पिण जंगि थी सघे थी।''

गांधीजीअ खे गोली लॻण खां रुॻो कलाक खनु अॻु प्रोफ़ेसर मलकाणी साणुसि मिलियो हो। मलकाणीअ खे सिंध मां थियल लॾ-पलाण खे ठीक करण लाइ उन वक्त एडीशनल हाइ कमिशनर मुकरर कयो वियो हो। गांधीजीअ आशीर्वाद ॾींदे, पुठी ठपोरींदे चयो, ''सभिनी खे ॿाहिरि कढिजि, इहो ॾिसिजि त ॿाहिरि निकरंदड़नि में तूं आख़िरीनि हुजीं। खहुड़े खे चइजि त अमन जे बहालीअ लाइ मां सिंध अचणु चाहियां थो। हू भली जिन्नाह सां सलाह करे ऐं मूंखे तार रस्ते इतलाउ करे।'' जॾहिं मलकाणीअ खेसि ॿुधायो त सिंध में हिंदू कीअं बचाव लाइ मुसलमाननि वांगुरु ''जिन्नाह टोपी'' पाईनि था ऐं कीअं का उर्दू अख़बार या ''डान'' खणी हलनि था त गांधीजीअ चयुसि त हू शाम जो पंहिंजे प्रार्थना जे गॾिजाणीअ में इन्हीअ ॻाल्हि जो ज़िक्र कंदो। अफ़्सोस, सिंध वञण या उते जे ज़ियादतियुनि खे पधिरो करण खां अॻु संदसि देहांत थी वियो।

———

15

बघड़नि जे विच में

हिंदुस्तान खे आज़ादी मिली, पर उहा ॾार विधल आज़ादी हुई। हिंदुस्तान जे इंसानियत खे विलोड़ण मां असां न रुॻो आज़ादीअ जो आब-हयात पातो, पर विरहाङे जो ज़हर पिण नसीब थियो। छा पाकिस्तान अण-टर हो? अण-टर हो बि ऐं न बि।

कुल मिलाए हिंदुस्तान जे विरहाङे जा कारण चङीअ तरह ॼातल आहिनि। उन्हनि जे तह ताईं वञिबो त उहे (तवारीख़) जो हिस्सो आहिनि। हिंदुस्तान में हिंदुनि खे मुसलमाननि जे तबाह करण जे नमूने लाइ बेहद दुख जो अहसास हो। पर ॿिए पासे मुसलमाननि खे डपु हो त इस्लाम, जेको हरहंधि आहे, हिंदुस्तान में उन खे रोक थाम ॾिनी वेई हुई। उर्दूअ जे मशहूर शाइर हालीअ जे लफ़्ज़नि में-

वह दीन हज़ारे का बेबाक बेड़ा
निशां जिसका इकसाई आलम में पहुचा
किया पार जिसने सातों समंदर
वह डूबा नहाने में गंगा के आकर।

(इस्लाम जो बेडपो ॿेड़ो, जंहिंजो झंडो समूरीअ दुनिया में फड़कियो थे, उहो ॿेड़ो, जेको सत समुंड पार करे हिते पहुतो, गंगा में ॿुडी वियो।)

अरड़हीं सदीअ में हिंदू समाज अटक खां कटक ताईं, देहलीअ खां दखण ताईं गुज़िरियल सदियुनि जो ज़हर "नील कंठ" वांगुरु पी सोभारो थी बीठो। इस्लाम थधो थी वियो हो ऐं हिंदुस्तानी शिकिल अख़्त्यार करे वरिती हुआईं। पोइ साल 1761 ई. आयो ऐं पाणीपट जी टीं लड़ाईअ में मरहटनि जे ख़ुदि मुख़्त्यार हुकूमत जी ज़वालियत हिंदुस्तान में अंग्रेज़ी राॼ लाइ रस्तो खोले छॾियो। इन्हीअ ॻाल्हि वहाबेज़ ऐं वली अल्लाह वारनि खे पिण तवज्जो ॾिनी, जंहिं इस्लाम खे इस्लामी तरीके जे तोफ़ीक में वापस बुनियाद परस्ती ऐं वधीक कट्टरपणे ॾांहुं आंदो।

उन्हनि सभिनी खां वधीक, टर्कीअ जे सुलतान खे दुनिया जे मुसलमाननि जे रूहानी अगुवान जे हैसियत सां वरी ख़लीफ़ो काइम करण लाइ गांधीजीअ जे ख़िलाफ़ आंदोलन शुरू थियो। इन्हीअ ग़ाल्हि सियासत खे फ़र्केवार शिकिल ड्विनी ऐं मज़हबी अगुवाननि खे सियासी अगुवाननि में तबदील करे छडि्यो। रातों रात मुल्लां अगुवान बणिजी विया। सिंध जो जेठमल परसराम इहो चवण में बिल्कुल सही हो त ''ख़िलाफ़त'' आहे ''आफ़त''। हिंदुस्तानी मुसलमाननि जो मज़हबी कट्टरपणो हिकदम घणो वधी वियो हो ऐं संदनि दाइरो मुल्की हदुनि खां ॿाहिरि फहिलिजी वियो हो। इन्हीअ करे ख़िलाफ़त जे आंदोलन, हिंदू मुसलमाननि जे वेछे खे वधीक, वधाए छडि्यो।

गांधीजीअ जी अपील पिण हिंदुनि जे मज़हबी जज़्बनि खे मुतासिर करे मसइलनि खे सुलझाइण में मदद करे न सघी। सच, अहिंसा, ब्रह्मचर्य ऐं राम राज जे बारे में संदसि ग़ाल्हि हिंदुनि जे मोट ड्रींदड़ दिलियुनि ते असर कयो। पर इन्हीअ ग़ाल्हि मुसलमाननि खे थधो करे छडि्यो। कांग्रेस जूं घणियूं गडि्जाणियूं पाड़े वारे गुरुद्वारे में ''कणाह प्रसाद'' विरहाइण सां ख़तम थींदियूं हुयूं। ख़िलाफ़त तहरीक ख़तम थियण खां पोइ कांग्रेस डि्ठो त उन्हीअ जो हिकु ई सरगर्म अगुवान कराचीअ जो मौलवी मुहम्मद सादिक हो। पोइ शिकारपुर में कामरेड ताज मुहम्मदु कांग्रेस में शामिल थियो। कांग्रेस जो रुग़ो हिकु मुसलमान एम.एल.ए. जेकद आबाद जो मुहम्मद अमीन खोसो हो, जेको अलीगढ़ यूनीवर्सिटीअ जो ग्रेज्यूएट हो। पर ज़िला कांग्रेस कामेटीअ में हुन लाइ पाणी पीअण जी घुघी जुदा रखियल हूंदी हुई। इन में अजबु नाहे त सभिनी महसूस कयो त ''कांग्रेस हिक हिंदू हलचल आहे।''

तिलक जेकड्हिं कुझु हो त गांधीजीअ खां वधीक गूढ़े ज्ञान वारो हिंदू हो। पर जद्दोजहद खे सियासी सिक्यूलर रखियो हुआईं ऐं हिंदुनि तोड़े मुसलमाननि खे यकसां मुतासिर कयाईं। गांधीजी जद्दोजहद खे उताहींअ ताईं वठी वियो। पर खेनि विरहाए छडि्याईं। टियों अनासर हो अंग्रेज़नि जी मौजूदगी। उन्हीअ ब्रिन्हीं तरफ़नि खां कमु कयो।

मुसलमाननि जे राज़ दौरान हिंदुनि खे हेठि रखियो वेंदो हो। जड्हिं मुसलमाननि जे हथ जी जाइ बे रिया हथ वरिती त मामला नाटकाई नमूने तबदील थी विया। हिंदू पाण भरा थी पिया। आहिस्ते आहिस्ते ब्रह्मण ऐं वैश्य

इस्लाम अख़्त्यार करण खां पासो करण लॻा। संदनि तइलीम पिराइण ऐं वॾा वापार करण जी सूरत में रंगु लाइण लॻियूं। हिंदू समाज जा वॾा हिस्सा मुसलमाननि खे पोइते छॾे अॻिते वधण लॻा।

सिंधु जे मामले ते नज़र रखंदड़ हिक ॼाणूअ राइज़नी कई, "आफ़ीसूं हिंदुनि सां भरियल आहिनि ऐं जेल मुसलमाननि सां भरियल आहिनि।" विचें दौर में पाड़ूं खुतल मुसलमानु ज़हन ऐं अञां ताईं मुग़ल शहंशाहियत जे लहंदड़ सिज ते हथ सेकींदड़ु, नएं ज़माने जे दौर जे तेज़ रफ़्तार जे शक्तीअ खे समुझी न सघियो। हुन आज़ादीअ जी हलचल में दंगो करण या पानो उछिलाए हड़ताल करण सां नईं सूरतहाल ते पंहिंजो रद्द अमल ज़ाहिर कयो।

ॿिए तरफ़, जॾहिं हिंदुनि आज़ादीअ जी घुर कई त अंग्रेज़नि मुसलमाननि खे नवाज़ण ऐं इनायतुनि जे एवज़ि पंहिंजे पासे कयो ऐं पोइ हिंदुस्तान जे आज़ादीअ खे रोकण लाइ मुसलमानी मतभेद खे वीटो तौर कम आंदो। उन वक्त हिंदुनि मुसलमाननि खे ॿिए जे हथ जो खेॾूणो ऐं ग़द्दार जे रूप में ॾिठो।

उहो हो समूरे हिंदुस्तान जे राॼनीतीअ जो ततु, जंहिंकरे विरहाङो थियो। उन में मकानी सिंधी कारण बि हुआ, जंहिंकरे मामलो बदितर बणियो।

सिंधु में हिंदू मुस्लिम तनाव जो वॾे में वॾो हिकु ई कारण हो धर्म मटाइण जो, जेको अंग्रेज़नि जे राॼ में पिण जारी रहियो। उन्हनि वाक़अनि सूबे जे जीवन खे झिंझोड़े छॾियो ऐं ॿिन्ही फ़िर्क़नि जे नातनि खे ज़हरीलो करे छॾियो। उन्हीअ ॾस में जेको सभ खां सनसनीख़ेज़ वाक़ओ ॼातो वियो ऐं शाया थियो, उहो हो "शेख़ जो मुक़द्दमो" 1891 ई. में, हैदराबाद जे हिंदुनि जे मुखी शौंकीराम आॾवाणीअ जो सौट मूरजमल आॾवाणी मुसलमान थियो। साणुसि गॾु संदसि टे पुट पिण मुसलमान थिया। मंझाउनि हिकिड़े मेवाराम, पंहिंजी ज़ाल मिठी ॿाई, संदसि चइनि ॿारनि समेति ख़ुशहाली, निहाली, परमाननि ऐं हेमीअ खे पाण सां शामिल थियण लाइ चयो, पर हुन इंकार कयो। मेवाराम गार्डेन एण्ड वार्डस् एक्ट हेठि हैदराबाद जे अंग्रेज़ सेशन जज वटि ॿिनि वॾनि ॿारनि जे कब्ज़े लाइ मुक़द्दमो दाख़िल कयो। हिंदुनि इन्हीअ ॻाल्हि खे पंहिंजे लाइ ललकार समुझी। शौंकीराम जे पुटनि नवलराइ ऐं ताराचंद मुक़द्दमे खे खटण लाइ पंजवीह हज़ार रुपयनि जी रकम गॾु कई। चयो वञे थो त मुसलमाननि चालीह हज़ार रुपया कठा कया। हिंदुनि पारां, जयरामदास जे पीउ

दौलतराम मुकद्दमे जी पैरवी कई ऐं मुसलमाननि कराचीअ जे मदरस इस्लाम जे हसन अली आफ़ंदीअ खे वकील कयो। बाहि ते तेल पइजी चुको हो।

ख़ुशहाली जेका उन वक्त अठनि वर्हियनि जी हुई, कोर्ट अॻियां चयो त हुन लाइ संदसि पीउ तॾहिं ई मरी चुको हो, जॾहिं हुन पंहिंजो धर्म मटायो हो। हुन चयो त जेकॾहिं कोर्ट खे खेसि पिणसि जे हवाले करिणो ई आहे त अवलि खेसि फासी ॾियण जी महिरबानी कई वञे। कोर्ट फ़ैसिलो ॾिनो त ॿिन्हीं छोकिरियुनि खे मेवाराम जे हवाले करणु ॾोहु थींदो। मेवाराम हाइ कोर्ट में वियो। पर उन्हीअ विच में ॿिन्हीं छोकिरियुनि जी शादी कराई वेई ऐं कोर्ट अपील रद्द करे छॾी। मेवाराम पोइ चालीहनि उठनि ते हथियारबंद मुसलमान आंदा त जीअं ॿिन्हीं छोकिरियुनि खे ज़ोरीअ खणाए वञी सघे। पर ॿई पुठिएं दरवाज़े मां निकिरी भजी वेयूं। मिठी ॿाई ऐं संदसि ॿार पोइ अमृतसर दरॿार जे संभाल में हलिया विया, जो मुसलमाननि सिखनि खां कनु थे हंयो। संदसि पुटु परमानन्द (P. M. Advani) कराचीअ जे स्कूल जे प्रिंसीपाल जे उहिदे तां कढियो वियो।

जल्दु ई पोइ आचार्य कृपालाणीअ जो वॾो भाउ ॾेऊमल मुसलमान थी शेख़ अब्दुल रहमान थियो। जीअं त हुन पंहिंजे वॾे भाउ ठाकुरदास जे जीअरे मुसलमान थियण जी हिमथ नथे कई, तंहिंकरे हू खेसि पंहिंजनि मुसलमान दोस्तनि सां गॾु फुलेली नाह में तरण लाइ वठी वियो ऐं उते खेसि ॿोड़े मारियाईं। कुझु वक्त खां पोइ जॾहिं संदसि विधवा भॼाईअ पंहिंजीअ माउ सां मिलण जी इच्छा ज़ाहिर कई त खेसि ज़ोरीअ छिके ॿाहिरि आयो ऐं खेसि मुसलमाननि जे पाड़े में वठी वियो। उन खां पोइ संदसि का बि सुधि कान पेई। जल्दु ई पोइ ॾेऊमल पाण मुसलमान थियो। पोइ हुन पंहिंजे ॿारहनि सालनि जे उमिरि वारे नंढे भाउ नानक खे स्कूल मां भॼाए खेसि मुसलमान कराए 'सरहद' ॾांहुं मोकिले छॾियाईं। नानक 1990 ई. में इटलीअ जे ख़िलाफ़ तुर्कनि लाइ विढ़ंदे मारिजी वियो।

उन्हनि नवनि मुसलमाननि लाइ इहो मसइलो हो त हू पुराणनि मुसलमाननि सां शादियूं करणु न पिया चाहीनि, तंहिंकरे उन्हनि घणनि हिंदुनि खे मुसमलान करण जी कोशिश कई त जीअं संदनि मङिणे परिणे जो दाइरो वॾो थिए। 1908 ई. में, ठटे जो रहाकू ॼेठानंद लीलाराम मुसलमान थी शेख़ अब्दुल

मजीद थियो। जीअं त हू उन वक़्त वीहनि वर्हियनि खां मथे थी वियो हो, तंहिंकरे हू मुक़द्दमो खटी वियो। पर मुक़द्दमे जी वकालत गुलाम मुस्तफ़ा भुरगड़ी खे सियासी अगुवान बणाए छड़ियो।

लाड़काणे जे भरिसां अमरोट जो रहाकू मौलाना ताज मुहम्मद अमरोटी, जेको ख़िलाफ़त आंदोलन जो वडो अगुवान हो, बहिराड़ीअ जे सत हज़ार हिंदुनि खे मुसलमान कयो। जिनि जी फ़हिरस्त (सूची) अजु ताईं अमरोट में संभाले रखियल आहे।

1927 ई. में लाड़काणे जी करीमा, पंहिंजनि चइनि बारनि सां हिक हिंदूअ सां भजी वेई ऐं साणुसि हिंदू थी गडु रहण लगी। हुन मुक़द्दमो खटियो। मुसलमाननि दुकाननि में फुर-लुट कई। हिंदुनि 80 मुसलमाननि खे ज़िमेवार ठहिरायो, जिनि में खुहड़ो पिण शामिल हो, जेको पोइ सिंध जो वडो वज़ीर थियो। सभिनी खे आज़ाद कयो वियो, पर तुरशी वधी वेई।

सखर जे भरिसां साध बेले जे संत बाए हरनामदास उहे मिसाल, सूरतहाल पूरीअ तरह जिन्नाह खे बुधाया। जडहिं 1930 ई. में हू उन्हीअ बेटारीअ जे मंदिर में साणुसि मिलण आयो ऐं सौ रुपया भेटा डिनी हुआईं, जिन्नाह खांउसि सिंध में फ़िर्केवार छिकताण जो कारण पुछियो। बाए सिंधीअ में वराणियो, ''शेख़ पुटु शैतान जो, न हिंदूअ न मुसलमान जो।''

वधीक छिकताण, वाद विवाद, तर्क वितर्क करे हिंदू धर्म ते वधंदड़ मुल्लाउनि जे हमलनि जे जवाब में नथूराम ''इस्लाम जो इतिहास'' लिखियो। खेसि 18 महिना जेल जी सज़ा ऐं हिकु हज़ार रुपया डंड विधो वियो। हुन सिंध खे चीन कोर्ट में अपील दाख़िल कई। किनि मुसलमाननि खे डपु हो त खेसि आज़ाद कयो वेंदो, तंहिंकरे अब्दुल कय्यूम खुलीअ कोर्ट में खेसि ख़ंजर हणी कत्ल करे छडियो। जडहिं ओ. सुलीवान (O Sullivan) जज खांउसि उन्हीअ जो कारण पुछियो त अब्दुल कय्यूम वराणियो त इस्लाम जे बे-हरमतीअ जी सज़ा रुगो जेल न, पर मौत हुअणु घुरिजे। कय्यूम खे फासी डिनी वेई। हुकूमत कय्यूम जो लाश मुसलमाननि खे डियण खां इंकार कयो, जिनि इन्हीअ जे बावजूद लाश कब्र मां खोटे कढियो ऐं जलूस कढियाऊं। उहो 1934 ई. जो ज़मानो हो, जडहिं अंग्रेज़ क़ानून सां हथ चुरांद करण बर्दाश्त न कंदा हुआ। तंहिंकरे डुमरियल सिंध जे कमिशनर गिब्सन (Gibson) मशीन गन हलाइण जो हुकुम

ड॒िनो, जंहिं में चोहठ मुसलमान मारिजी विया। इनकरे हिंदू मुस्लिम निफ़ाक वधियो।

बि॒यो अणांगो अनासर सिंधु जे सूरतहाल जो हो। सिंधु बम्बई प्रेज़ीडंटीअ जो हिस्सो हुई। उन्हनि ड॒ींहंनि में वड॒ा सूबा तमाम थोरा हुआ। पर मुख़्तलफ़ जाग्राफ़ियाई ऐं बो॒लीअ जो सूबो हुजण करे सिंधु पाण खे परे, नज़र अंदाज़ महसूस करण लग॒ो। 1913 ई. में हरचंदराइ विशनदास कांग्रेस जे कराचीअ वारे इजलास जे स्वागत कामेटीअ जे चेयरमन जे हैसियत सां सभ खां पहिरियाईं सिंध खे जुदा करण जो सुवाल रखियो। पर जड॒हिं 1925 ई. में मुस्लिम लीग जे अलीगढ़ वारे इजलास में इहो सुवाल खंयो वियो त उन्हीअ ''सिंधी घुर''खे ''मुसलमान घुर'' मञी खंयो वियो। पर जड॒हिं इहा सलाह ड॒िनी वेई त सिंध जे मुस्लिम घणाईअ खे ड॒ूरांहीं बम्बईअ जे हिंदू घणाईअ जे असर खां जुदा करे भरि वारे पंजाब जे मुस्लिम घणाईअ जे असर हेठि ग॒ंढियो वञे त सिंधी मुसलमाननि इंकार कयो, जो हुननि ''वड॒े भाउ'' जे साये हेठि रहणु नथे चाहियो।

शेख़ अब्दलु मजीद सिंधीअ जे अग॒ुवानीअ में मुसलमाननि जे असर वारनि जुदा करण जी हिमायत कई। पर ख़ास वड॒नि अग॒ुवाननि जहड़ोकि सर शाहनवाज़ भुट्टो (ज़ुलफ़कार अली भुट्टो जो पीउ) ऐं सर ग॒ुलाम हुसैन हिदायत अल्लाह मुख़ालिफ़त कई ऐं अहिड़ीअ तरह लंबे अरिसे ताईं ''सिंध मुस्लिम एसोसिएशन'' मुसलमाननि जे रोशन दिमाग़ी तबके जो एवज़ीपिणो कयो। खेनि सूबे जे एराज़ीअ जी पक न हुई। मंझिसि ब॒ करोड़ रुपयनि जी खोटि हुई, इन करे हुननि वड॒ी ख़ुशहाल बम्बई प्रेज़ीडंटीअ जो हिस्सो थी रहणु पसंद थे कयो।

हिंदू जेकड॒हिं हुआ त पाण वधीक विरहायल हुआ। ज॒ेठमल परसराम हमेशा जुदा थियण जो हिमायती हो। जयरामदास दौलतराम हमेशा उन जो मुख़ालिफ़ हो ऐं बि॒या वक्त ऐं हालतुनि अनुसार पंहिंजा राया बदिलाए रहिया हुआ। जुदा सिंध जी माना हुई, मुकम्मल सूबाई ढांचो ऐं नौकरियुनि में वाधारो, जिनि मां घणियूं पक ई पक हिंदुनि खे संदनि तइलीम याफ़्ता हुअण करे मिलणियूं हुयूं। ख़ुदि मुख़्त्यार सिंधु में माली हालतुनि, सामाजिक, सांस्कृतिक ऐं बि॒युनि शयुनि में पंहिंजनि पेरनि ते बीहंदा। पर उहे मुस्लिम घणाईअ जे असर खां पिण डिनल हुआ त पोइ संदनि बचाअ बाबत छा थींदो।

इहा ग़ाल्हि डाढी दिलचस्प आहे त उन्हीअ मसौदे ते बाकी बम्बईअ वारा पिण बिनि ख़्यालनि जा हुआ। हुननि जेकब आबाद खां ख़बले धरवार ताईं फहिलियल डिसणु थे चाहियो। पर उन्हनि सिंधी मुसलमान एम.एल.एज़. खे मुकम्मल तौर नापसंद ई कयो।, जिनि हमेशा अंग्रेज़ नौकर शाहीअ जे इशारनि ते नाच थे कयो। 1925 ई. जे नेहरू रिपोर्ट जुदा थियण जी हिमायत कई।

घणे बहस मुबाहिसे खां पोइ बिन्हीं धुरियुनि जे टिन्हीं अगुवाननि 1928 ई. में ''सिंधु हिंदू मुस्लिम ठाहु'' सही कयो, जंहिं में ज़ाणायल हो-

(1) सिंधु खे जुदा कयो वेंदो।

(2) हिंदुनि खे डह सेकड़ो मिलंदो।

(3) सिंधु में गडियल चूंडूं थींदियूं।

(4) सभिनी सां इंसाफ़ ऐं बराबरीअ वारो वरिताउ कयो वेंदो।

पर अफ़्सोस सां चवणो थो पवे त सखर में ''सिंधु हिंदू कान्फ्रंस'' ठाह खे बरकरार रखण में नाकाम वेई। सखर जे साध बेले वारो बाओ हरनामदास जुदा सिंधु खे कबूलण में मुसलमाननि जे अगिराईअ खां घणो ख़िलाफ़ हो। (जेकडहिं उहा कान्फ्रंस कराचीअ या हैदराबाद में थिए हा त उहा घणो करे ठाह खे बहाल रखे हा)। उन वक्त हिंदुनि चयो त उहे अलहदी सिंधु खे उन हालत में कबूल कंदा, जेकडहिं समूरे मुल्क में गडियल चूंडूं करायूं वेंदियूं त इहा ग़ाल्हि वडे ज़हन वारी, फ़राख़ दिलीअ वारी त हुई पर हकीकत में पसंद ई न हुई।

हिंदुनि जो पंहिंजी ग़ाल्हि तां फिरी वञणु तबाहीअ मिसल हो। साईमन कमीशन में इन्हीअ इस्म ते गंढि बधल हुई, पर 1930 ई. में सिंधु जो अब्दुल हारून, ओटावा इम्पीरियल ट्रेड कन्फ्रंस में अंग्रेज़नि वापारी ग़ाल्हियुनि लाइ वियो, जिनि साणुसि सिंधु जे जुदा थियण जो वाइदो कयो। अहिड़ीअ तरह 1 अप्रेल 1936 ई. ते सिंधु अंग्रेज़नि तरफ़ां मुसलमाननि लाइ इनाम तौर जुदा सूबे जे हैसियत सां वजूद वरितो।

उन्हीअ जे बावजूद सूरतहाल काफ़ी बहितर हुई। हरकंहिं अलहदियतुनि खे पुरि-उम्मेद डिठो थे वियो, जेका ख़ौफ़ मिलियल न हुई। सर शाहनवाज़ भुट्टे मुस्लिम लीग जे नुक्त नज़र खे पेशि कंदड़ मशहूर अख़बार ''अलवहीद'' जे ख़ास अंक 'आज़ाद सिंध' (16 जून 1936 ई.) लाइ पंहिंजे पैग़ाम में चयो-

''सिंधु पंजाब में बंगाल जे सूरतहाल ख़राब सूरत अख़्त्यार करण जो चिताउ ड॒ेई रही आहे। मां चाहियां थो त सिंध बाकी हिंदुस्तान जे अमल करण लाइ हिंदू-मुस्लिम मसइले खे हल करण जो जसु खटे।'' पर पोइ जे असेंबलीअ जो चूंडुनि जे नतीजे उन्हनि उम्मेदुनि ते पाणी फेरे छड॒ियो। चूंडुनि में 24 उम्मेदवार भुट्टे जे पार्टीअ जा, 6 सीटूं गुलाम हुसैन जूं मुस्लिम पोलीटीकल पार्टीअ खे, 5 सीटूं अब्दुल मजीद जे आज़ाद पार्टीअ खे, सभु मुसलमान, 9 सीटूं कांग्रेस खे, 3 अंग्रेज़नि खे, हिक मज़दूर नुमाईंदे (नारायणदास) खे, हिक औरतुनि जी नुमाईंदह (ज॒ेठी सिपाहीमलाणीअ खे) ऐं 11 जायूं आज़ाद उम्मीदवारनि हिंदुनि खे मिलियूं।

पर सर शाहनवाज़ भुट्टो पाण आज़ाद पार्टीअ जे शेख़ अब्दुल मजीद खां हाराए वियो, जंहिं सबूत जे तौर कुरान खे मथे ते खणी मुहिम हलाई हुई त हू बहितर मुसलमान आहे! गवर्नर हुकूमत ठाहिण लाइ इतहाद पार्टीअ जे अगु॒वान खहुड़े खे न, पर अंग्रेज़नि जे पुराणे चाहींदड़ सर गु॒लाम हुसैन (1878 ई.-1948 ई.) खे दावत डि॒नी। जंहिंखे जेतोणीक पंजनि मेम्बरनि जी हिमायत हासिल हुई।

हिकु भेरो कुर्सीअ ते विहण सां सर गु॒लाम हुसैन घणाईअ में हुअण जो इंतज़ाम करे वरितो। हुन आज़ाद हिंदू मेम्बरनि मां हिक खे स्पीकर बणाए पंहिंजो करे वरितो। पर 1938 ई. जे शुरूअ में हुकूमत डही पेई। उन्हीअ विच में खहुरो मुस्लिम लीग में शामिल थी वियो ऐं इतहाद पार्टीअ जो नओं अगु॒वान, 38, अल्लाह बख़्श सूमरो वडो॒ वज़ीर थियो।

अल्लाह बख़्श (1900 ई.-1943 ई.) सिंध जो बहितरीन वडो॒ वज़ीर हो, जंहिं जहिड़ो बि॒यो को विरले थियो हूंदो। जेतोणीक हू ज़मींदार ऐं सरकारी ठेकेदार हो, पर हमेशा खादी पाईंदो हो। हुकूमत जी वाग॒ संभालींदे ई अब्दुल्ला सिंधी (1872 ई.-1944 ई.) तां जलावतनीअ जो हुकुम वापस वरिताईं। हू ओलह एशिया में पंहिंजा जलावतनीअ जा डीं॒हं काटे रहियो हो। (मुस्लिम लीग अब्दुल्लाह सिंधीअ जो स्वागत कयो हो) ही सियालकोट जो सिख हो, मुसलमान थियो हो। हुन खे चयो वियो त ''मुस्लिम हो तो मुस्लिम लीग में आओ।'' ही बख़िलाफ़ थी बा॒हिरि हलियो वियो हो। हू ''सिंध नर्ब॒दा पार्टीअ'' जे बारे में सोचे रहियो हो। अल्लाह बख़्श वडे॒रनि खे डि॒नल मैजिस्ट्रेट जा

अख़्तियार वापस वरिता। हुन कांग्रेसी रुख़ जी तामील कई ऐं वज़ीरनि जो पघार 500 रुपया महिनो मुकरर कयाईं। मकानी इकायुनि में नामज़दगी ख़तम कयाईं। पाण खे आम रवाजी माण्हू समुझंदड़ु अल्लाह बख़्श ड्राईवर भरिसां विहंदो हो। मोटर ते कड़हिं बि सरकारी झंडो न लगाईंदो हो। स्वागत कराइण, पार्टी कबूल करण न कंदो हो। रेल गाडीअ में बियनि खे वधीक सहूलियत डियण लाइ हेठीं जगहि डींदो हो ऐं पाण मथीं बर्थ कम आणींदो हो। हिक भेरे जड़हिं शिकारपुर में बोडि जो ख़तरो थी पियो त वाह खे टुको डियारे पंहिंजीअ ज़मीन खे बोडि हेठि आणे छडियाईं ऐं शहर खे बचायाईं। पर संदसि सभ खां वडी गाल्हि इहा हुई त हू ग़ैर-फ़िर्केपरस्त ऐं देश भगत हो।

फ़िर्केपरस्त मुसलमाननि लाइ खेसि वडे वज़ीर जे उहिदे तां हटाइण लाइ इहो वडो कारण हो। 1937 ई. में कराचीअ में मुस्लिम लीग जी हिक वडी कान्फ्रंस कोठाई वेई, जंहिं में लीग जे अगुवाननि, हिंदुनि, कांग्रेस ऐं अल्लाह बख़्श जी ख़ूब वा-वेला मचाई। उन्हीअ कान्फ्रंस अरबिस्तान जे वारीअ, खजीअ जे वणनि ऐं मथे ते अफ़ाल बधल, अरब घोड़े सुवारनि सां भरियल खिलाईंदड़ मज़ाकी संगीत नाटक जो डेख थे डिनो। उन्हनि लाइ हिकु ठहिराउ बहाल कयो, जेको हिंदुनि ऐं मुसलमाननि जे बिनि कौमुनि जे ख़ुदि इरादे जे बारे में हो। पीर अली मुहम्मद राशदी महसूस कयो त मुहम्मद अली जिन्नाह उन्हीअ ठहिराव खां ग़ैर तरफ़दार हो। हुन असांखे रुगो उहो हिक इशारे, हिक धमकी, हिक राजनीति हथियार बतौर इस्तैमाल करण जी इजाज़त डिनी। उन्हीअ पोयां सचु पचु मकसदु कंहिं तरह अल्लाह बख़्श जे हुकूमत जो तख़्तो उल्टो करणु हो। खेनि 29 मुसलमान मेम्बर लीग में शामिल थियण लाइ मिली विया। उहे 3 यूरपी मेम्बरनि जे मदद सां पंहिंजी हुकूमत ठाहिण में कामयाब थी विया। पर जड़हिं अविश्वास जी रिथ पेशि थी त मंझाउनि फ़कति 7 मेम्बरनि हिमायत में वोट कयो ऐं लीग जो अगुवान हिदायत अल्लाह ख़ुदि उहा पार्टी छडे अल्लाह बख़्श वज़रात में शामिल थियो।

सचु पचु त सिंधु में लीग जूं पाड़ूं मज़बूत कोन हुयूं। जड़हिं लीग जेकब आबाद में जिन्नाह लाइ आम जलसे जो एलान कयो त उन जलसे में को बि हाज़िर न थियो। राशदीअ खे पंहिंजे मकानी हकीम काइमअलद्दीन खे गुज़ारिश करिणी पेई त हू जलसे में माण्हू मुयसर करे डियण लाइ पंहिंजनि हिंदू दोस्तनि

खे चवे। हिंदुनि सां दोस्तनि जे हैसियत में इहा महिरबानी कई। एतिरे कदुरु जो हुननि पंहिंजूं ''गांधी टोपियूं'' पाइण जे बदिरां खणी खीसनि में विधियूं, जीअं जिन्नाह खे का तकलीफ़ न पहुचे। पर उन्हनि ''जिन्नाह जिंदह आबाद'' जे नारे हणण खां इंकार कयो।

पर मुस्लिम लीग पंहिंजी शरारत लाइ ज़िद्द ब॒धी बीठी। बदीन भरिसां हैदराबाद ज़िले में लवारीअ जे पीर उन्हनि माण्हुनि लाइ, जेके अरबिस्तान वञण जो ख़र्चु बर्दाश्त नथे करे सघिया, मकानी तौर हज अदा करण जो इंतज़ाम कयो। उहो सिलसिलो 1934 ई. ताईं जारी रहियो। जायरीन ज़वालहज महिने में गडु थी, दरगाह तां मोटंदे नमाज़ पढ़ी, मकानी खूह ''ज़म-ज़म'' ते वेंदा हुआ ऐं पीर खे ''ख़ुदा'' जे नाले सां सडींदा हुआ ऐं हिक बि॒ए खे ''हाजी'' चई मुबारक डीं॒दा हुआ। उन्हनि वेचारनि खे इन्हीअ मां रूहानी ख़ुशी महसूस थींदी हुई। पर कट्टर मज़हबी माण्हुनि इन्हीअ अमल खे ग़ैर इस्लामी कोठे रद्द कयो। संघर्ष करे ऐं उन ते बंदिश विझण लाइ 1938 ई. में अल्लाह बख़्श ते ज़ोरु विधाऊं।

उन्हीअ कामयाबीअ हासिल थियण करे लीग जी.बुख वधीक तेज़ थी। इन्हीअ विच में हिंदुनि जे दबा॒व हेठि हुकूमत सिंधु सेक्रेट्रेट भरिसां आरटेलरी मैदान ते बेकाइदे ठहिरायल नंढे हनुमान मंदिर खे बहाल कयो ऐं ओम मंडली, जेका तडहिं ब्रह्म कुमारियुनि जो संगठन बणिजी चुकी हुई, ते बंदिश विधी। इन्हनि समूरियुनि ग॒ाल्हियुनि, लीगियनि जे इन्हीअ वेसाह खे हिमथायो त हुकूमत खे हीसाए सघिजे थो। हाणे उन्हनि अल्लाह बख़्श जो तख़्तो उल्टो करण लाइ हिक वडे॒ आंदोलन करण जो इरादो कयो।

सखर में सिंधूअ जे किनारे हिंदुनि जे साध बे॒ले जे बे॒टारीअ जे मंदिर भरिसां कुझ डठल ढांचनि ते मंज़िल गाह जी इमारत हुई। उहा घणे अर्से खां सरकारी गोदाम जे तौर कम ईंदी हुई। मुसलमाननि उन्हीअ लाइ मस्जिद हुअण जी दावा कई। हिंदुनि उन्हीअ दावा खे ग़लत कोठियो, जो खेनि डप हो त साध बे॒ले जे भरिसां मस्जिद हुअणु, बहस-मुबाहिसो ऐं तनाव वधाईंदो।

अल्लाह बख़्श बि॒नि बे॒ड़ियुनि जे विच ते हो, खांउसि अगु॒ गु॒लाम हुसैन मंज़िल गाह खे सरकारी मिल्कियत करार डे॒ई, मुसलमाननि जे हवाले करण

खां इंकार करे छडि॒यो हो। अल्लाह बख़्श मुसलमान आफ़ीसरनि खे मंज़िल गाह जी जाच करण लाइ मोकिलियो। उन्हनि वापस अची बु॒धायो त पत्थर ते उकिरियल पुराणी फ़ारसी लिखित मां पतो थो पवे त उहा हिक सराय हुई ऐं उन में महराबु पोइ जोड़ायो वियो आहे। पर लीगी परेशानी पैदा करण लाइ ज़िद्द ब॒धी बीठा। उन्हनि 3 आक्टोबर खां 19 नवम्बर 1939 ई. ताईं जी. एम. सैय्यद, खुहिड़े ऐं सर अब्दुल्लाह हारून जी अगु॒वानी में मंज़िल गाह ते ज़ोरीअ कब्ज़ो कयो। 1 नवम्बर 1939 ई. ते मशहूर गायक, संत, भगु॒त कंवरराम खे रुक स्टेशन ते बंदूक जी गोली हणी मारियो वियो ऐं को बि माण्हू गिरफ़्तार न कयो वियो। सखर ज़िले में पंद्रहां डीं॒हं मुकम्मल हड़ताल रही। जडु॒हिं सूबाई असेम्बलीअ जे मेम्बर पमनाणीअ चयो त भगु॒त कंवरराम खे पीर भरि - चोंडीअ वारे मारियो आहे (अगु॒ में पीर जे पुटनि खे हिंदू छोकिरियुनि खे भजा॒इण जे करे मार कढी वेई), खेसि बि बंदूक जी गोली हणी मारियो वियो। सिंधी हिंदुनि में हिरास छांइजी वियो।

प॒र ख़राब डीं॒हं त अञा अचिणा हुआ। इहा आम गा॒ल्हि हुई त हिक हिंदूअ खे मारण सत हज अदा करण जे बराबर आहे। सखर जे ब॒हिराड़ियुनि में 64 हिंदुनि खे कत्ल कयो वियो ऐं लखें रुपयनि जी मिल्कियत फुरी, लुटी ऐं साड़ी वेई। अहिड़े हिंसक माहौल में असेम्बली हाल में जी. एम. सैय्यद एलान कयो त हिंदुनि खे सिंधु मां इएं लोधे कढियो वेंदो, जीअं यहूदियुनि खे जर्मनीअ मां कढियो वियो। उन्हीअ बयान ते घणो पोइ जी. एम. सैय्यद खे तमाम घणो अफ़सोस थियो। पर जेको नुकसान थियणो हो सो त थी चुको हो।

उहा डु॒खोईंदड़ सूरतहाल हुई, जंहिं में कांग्रेस खे अल्लाह बख़्श जे मुश्किलात खे समुझणु घुरिजे हा। हीउ उहो शख़्सु हो, जंहिं 1940 ई. में ऑल इंडिया आज़ाद कान्फ्रंस जी सदारत कई ऐं चयो हुआईं, ''हिंदुस्तान में मुसलमान जुदा क़ौम जे हैसियत सां मज़हब जे बुनियाद ते ग़ैर इस्लामी आहिनि।'' ऐं कांग्रेस खे समुझणु घुरिजे हा त हू मंज़िल गााह जे मामले में छो बु॒डतर में हो। गांधीजीअ 'हरिजन' (2 डिसम्बर 1939 ई.) में दुरुस्त चयो हो त बुनियादी मसइलो इहो हो त ख़ुदि इंतज़ामी सिंधु लाइ नईं गा॒ल्हि हुई। ''सिंधु नाले मात्र ख़ुदि मुख़्त्यार आहे ऐं गुज़िरियल हुकूमत जे भेट में जानि ऐं माल जे बचाव डि॒यण जे हद ताईं घटि अहल आहे। छाकाणि जो खेसि

पुलिस या फ़ौजी फ़न में अगु सिख्या मिलियल नाहे।'' पर कांग्रेस अल्लाह बख़्श जे वज़रात खे डाहिण में मुस्लिम लीग जो साथ डिनो (एं जडहिं असेम्बली जे अकेले कांग्रेसी मुसलमान मेम्बर मुहम्मद अमीन खोसे मुख़ालिफ़त कई त खेसि पार्टीअ मां कढियो वियो!) इन्हीअ खां ब डींहं अगु, 25 मार्च 1940 ई. ते उहो सिंध जे कांग्रेस तरफ़ां मुस्लिम लीग लाइ वडो तोहफ़ो हो, जडहिं पार्टीअ जो लाहौर में इजलास थियो एं विरहाङे जो ठहिराउ मंज़ूर थियो। मुसलमान अगुवाननि पोइ कबूल कयो त मंज़िल गाह जो मामलो 'हथरादू' तकरार हो, जेको रुगो अल्लाह बख़्श जो तख़्तो ऊंधो करण लाइ रचायो वियो हो।

हिंदुनि खे सिंधु जे कांग्रेसियुनि जे तंगदिलीअ ते सदमो पहुतो। प्रोफ़ेसर नारायणदास मलकाणीअ सरदार पटेल खे इन्हीअ बारे में कुझु करण लाइ ख़तु लिखियो एं सरदार पटेल खेसि वरंदी मोकिली, ''मूंखे अव्हांजो 1 मार्च 1941 ई. जो लिखियल डुख भरियो ख़तु मिलियो। असांजे सिंधु जे कांग्रेसी असेम्बली पार्टीअ जे दोस्तनि अहिड़ो रस्तो अख़्त्यार कयो आहे, जेको संगठन तोड़े उन्हनि लाइ ख़ुदि बदनामीअ जो कारण बणियो आहे.... डिसिजे थो त सखर जे हिंदू पंचायत खेनि ज़ोरीअ कंहिं हिकमत अमलीअ ते आणण में कामयाब थी आहे। हू इहा अख़्त्यार न कनि हा, जेकडहिं संदनि वस में हुजे हा या कांग्रेस जे उसूलनि जी पेरवी करण लाइ वटिनि घुरबल शक्ति हुजे हा.... हू पंहिंजे उन्हीअ कदम सां वास्तेदार मुल्क ते कुशादी नज़र कनि हा। नंढे मकानी मसइले में न उलझनि हा, फ़राख़दिलीअ जो सबूत डियणु खपंदो हो।''

बिए साल लीग जी वज़रात डही पेई एं अल्लाह बख़्श जी हुकूमत वापस ताकत में आई। पर नुक्सान त थी चुको हो। मुस्लिम लीग जूं शाख़ूं 30 मां 400 ताईं पहुची चुकियूं हुयूं। लीग जे उन्हीअ हिक साल दौरान अंग्रेज़ आफ़ीसरनि फ़िर्केवान जे पद जी पूराई करण लाइ पंहिंजो पाण खे बदनामीअ खां बचाए छडियो।

जस्टिस वेस्टन खे मंज़िल गाह जे फ़सादनि जे मामले जी जाच लाइ मुकरर कयो वियो। जडहिं मुसलमान राहूमन फ़साद करण जो मुस्लिम लीग ते इलज़ाम मढ़ियो त जजु फिरी उन्हनि जो तरफ़दार थी बीठो! जडहिं धुरियूं एं जज मंज़िल गाह जे सर-ज़मीन जो मुआइनो करण लाइ विया, अबख जे

'वकील' पीर अली मुहम्मद राशदी, वेस्टन जा बूट पंहिंजे हथनि सां लाथा ऐं उहे खणी छांव में रखियाईं। जज जे मन में ख़ुशीअ जी लहर डोड़ी वेई। सभु ब॒ाहिरि मोटी आया त राशदीअ वरी बूट खंया ऐं अची वेस्टन जे पेरनि अगि॒यां रखियाईं। जजु ख़ुशीअ में मापी, बुनियादी साञहि पिण विञाए वेठो। जड॒हिं उहो काफ़िलो रोहिड़ीअ ड॒ांहुं रवानो थियो त हू पंहिंजीअ मोटर खे छड॒े, राशदीअ जे मोटर में वेठो। राशदी पंहिंजे यादगीरियुनि में लिखे थो त उन्हनि ड॒ींहंनि मोटर में वेस्टन खांउसि एतिरे कदुरु पुछियो त हाणे मुसलमान साध ब॒ेले ते कड॒हिं था पंहिंजी दावा कनि। इन्हीअ में को अजब नाहे त वेस्टन पंहिंजीअ रिपोर्ट में फ़सादनि लाइ हिंदुनि खे ज़िम्मेवार ठहिरायो आहे। तरफ़दारी कंदड़ उन साग॒िए जज खे पोइ मंज़िल गाह जे मामले जे फ़ैसिले करण लाइ मुकरर कयो वियो, जंहिं फ़ैसिलो डि॒नो त उहा मस्जिद हुई। मंज़िल गाह जो मामलो ख़तम त थियो, पर ख़तम थियण खां अग॒ु में सिंधु में हिंदू मुस्लिम दोस्तीअ खे ज़ोराइतो धकु लग॒ो, दुश्मनी वधी।

अल्लाह बख़्श जी हुकूमत वरी आई, पर अंग्रेज़नि जो लाड़ो हाणे हुन खे हुकूमत खां परे रखण जो हो। जड॒हिं ''हिंदुस्तान छड॒े वञो'' हलचल शुरू थी त हुन पंहिंजो पुराणो 'ख़ान बहादुर' जो ख़िताब OBE (Order of British Empire) वापस कयो। हुन नैशनल डिफ़ेंस काऊंसिल तां पिण इस्तीफ़ा ड॒ेई छड॒ी। तड॒हिं गवर्नर मथिसि विश्वास घात जो इलज़ाम हंयो। असेम्बलीअ जो हुन में विश्वास हूंदे बि खेसि मुअतल कयो वियो। कुझु महिननि खां पोइ जड॒हिं हू पंहिंजे अबाणे शहर शिकारपुर में टांगे में वञी रहियो हो त खेसि ड॒ींहं डि॒ठे कत्ल कयो वियो। लीग जे वज़ीर खुहिड़े ते तुहिमत लग॒ी, पर हू शक जे फ़ाइदे में सज़ा खां बची वियो।

उन्हीअ विच में अंग्रेज़नि जी लीग लाइ तरफ़दारी जारी रही। 1946 ई. जे असेम्बली जे चूंडुनि में 28 लीगी, 22 कांग्रेसी, 7 मुस्लिम लीग जा मुख़ालिफ़ उम्मीदवार चूंडिजी आया ऐं 3 यूरोपी माण्हुनि खे नामज़द कयो वियो। 22 कांग्रेसियुनि ऐं 7 मुस्लिम जे मुख़ालिफ़नि मोर्चो ठाहियो। हुननि खे लीग खां हिकु मेम्बर वधीक हो। पर गवर्नर सर फ्रेनसिज़ मूडीअ मुस्लिम लीग वज़ारत खे नामज़द कयो ऐं टिनि नामज़द यूरोपी मेम्बरनि खे संदनि हिमायत करण लाइ चयाईं।

पोइ बि 40 मेम्बरनि जे हाऊस में हिकु लीगी स्पीकर चूंडिजण ते लीग जा मेम्बर घटिजी 29 जे अंदाज़ ते वञी बीठा। पर गवर्नर असेम्बलीअ जे इजलास खे न कोठायो। उन्हीअ खां वधीक ग़ाल्हि इहा थी जो जडहिं मीर बंदा अली ख़ान टालपुर लीग पार्टी छडी त गनर्वर पंहिंजे सेक्रेट्रीअ खे मोकिलियो त लीग में वरी शामिल न थिए त साणुसि वाइदो कयो वियो त हुन खे वज़रात में खंयो वेंदो। जडहिं असेम्बलीअ खे कांसटीटिव असेम्बलीअ लाइ सिंध जा नुमाईंदा चूंडिणा हुआ त उन्हीअ ई डींहुं गवर्नर इजलास खे इहो चई महिमुल करे छडियो त उहो इजलास फ़कति विश्वास मत हासिल करण लाइ कोठायो वियो हो। संदसि बहानो इहो हो त असेम्बली, जेका कांसटीटियूएंट असेम्बलीअ लाइ मेम्बर चूंडण लाइ घुराई वेई आहे, उहा बियो को मामलो हलाए नथी सघे। इहा ग़ाल्हि दिलचस्प आहे त साग़िए वक्त पंजाब जे अंग्रेज़ गवर्नर पंजाब असेम्बलीअ खे ग़ैर लीगी ख़िज़र हयात हुकूमत जे ख़िलाफ़ विश्वास मत जी तहरीक खणण जी इजाज़त डिनी। जेतोणीक खेसि पिण कांसटियूएंट असेम्बलीअ लाइ नुमाईंदा चूंडण लाइ कोठायो वियो हो।

पोइ जडहिं विधान मूजिबु सिंधु असेम्बलीअ जो इजलास कोठाइणु लाज़िम थियो त गनर्वर उहो न कोठायो, छाकाणि जो लीग मेम्बरनि जो अदद घटिजी वञी 25 बीठो। उन जे बदिरां हुन असेम्बली भंग करे छडी ऐं नयूं चूंडूं कराइण जो एलान कयाईं ऐं लीगियुनि खे "कार्यवाहक हुकूमत" तौर बहाल रखियाईं। पोइ जे चूंडुनि में अंग्रेज़नि ऐं ऑला अमलदारनि जे चुर्च ते मुसलमान ज़मींदारनि ऐं अमलदारनि जे धांधलियुनि जे करे लीग जे 35 सीटुनि जे भेट में कौम परस्त मुसलमाननि फ़कति ब जगहियूं हासिल कयूं। चूंडुनि जे कानूनी अपीलुनि जे शुनवाईअ खां अगु, धांधलियुनि ज़रीए चूंडिजी आयल असेम्बली, पाकिस्तान जे हिमायत में वोट कयो। गनर्वर मूडीअ खे संदसि ख़िज़मतुनि जे एवज़ि सिंधु जे गवर्नरीअ तां पंजाब जे गनर्वर जे उहिदे ते तरकी डिनी वेई। पीर अली अहमद राशदी मूडीअ खे बजा तौर "काटिकू" कोठियो आहे। सिंधु जी तकदीर खे हिक बिए काइदे, मिस्टर जिन्नाह खां बि वधीक "काइदे आज़म मूडीअ" जी मुहिर लगी।

कांग्रेस घटि में घटि सिंधु जो कुझु हिस्सो बचाए सघे हा, पर हुन चेंबरलेन जहिड़ो किरदार अदा कयो, जंहिं 1938 ई. में इहो बयान डेई

चिकोसिलोवीकिया खे हिटलर जे हवाले कयो हो त ''उहो डूरांहों मुल्कु आहे, जंहिंजे बारे में असांखे पूरी सारी ख़बर आहे।''

थरपारकर ज़िले में हिंदू घणाईअ में आहिनि, जंहिंजी कांग्रेस खे घुर करणु घुरिजे हा। हकीकत में उहो सिंधु जे भेट में रवायती (तिजारती) तरह मारवाड़ जो वधीक हिस्सो हो। विरहाङे जे मौके ते हिंदुनि जे घणाईअ खे रद्द करण लाइ सांघर ज़िलो थरपारकर ज़िले में मिलायो वियो हो, पर पोइ बि थरपारकर ज़िले जो मामलो आसाम में सलहट जहिड़ो आहे, जिते लीग राइ दहीअ जे वसीले ज़िले जे हिक हिस्से जी घुर कई ऐं उहो हासिल कयो।

1928 ई. में जडहिं सिंधु जी बम्बईअ खां जुदा थियण जी ग़ाल्हि हली रही हुई त जोधपुर रियासत थरपारकर ज़िले जे अमर कोट वारे हिस्से ते पंहिंजो हकु ज़ाहिर करे घुर कई हुई। जोधपुर वारनि जी इहा घुर इन्हीअ बुनियाद ते हुई त वापारिक तरह अमर कोट मारवाड़ जो हिस्सो रहियो हो। अंग्रेज़नि उहा एराज़ी जोधपुर खां थोरे वक्त लाइ बचाअ (Defence) लाइ वरिती हुई। सिंधु कांग्रेस उन जी मुख़ालिफ़त कई हुई।

बी एराज़ी जेका हिंदुस्तानु हासिल करे सघियो थे, उहा मुकामी ख़ैरपुर रियासत हुई, जेका कंहिं बि ज़िले जेडी वडी हुई। ख़ैरपुर जे वालीअ खे काफ़ी सालनि खां पूने में कैद करे रखियो वियो हो। हलंदड़ सदीअ जे चालीह वारे डहाके में ख़ैरपुर जो दीवान यू.पीअ जो रहाकू एजाज़ अली हो। खांउसि बिए नम्बर ते ख़ज़ाने जो आफ़ीसर मंघाराम वाधवाणी हो। एजाज़ अलीअ मंघाराम खे उतां खां फ़ारिग़ करे छडियो। जडहिं हुकूमत जूं वागूं डियण जो वक्तु आयो त मंघाराम पूने में मीर सां मिलियो ऐं खेसि वापस तख़्त डियारण जो वाइदो इन्हीअ शर्त सां कयाईं त हू एजाज़ अलीअ खे रिहा कंदो ऐं हू हिंदुस्तान सां तइलकु रखंदो। मीर इहो शर्त कूबल कयो। मंघाराम माऊंट बैटन ऐं सरदार पटेल सां मुलाकात कई। मीर खे संदसि रियासत वापस कई वेई। एजाज़ अलीअ खे छडियो वियो। हाणे मीर हिंदुस्तान सां शामिल थियण लाइ तैयार हो, पर पंडित नेहरूअ उहा आछ रद्द करे छडी। एतिरे कदुरु जो हुन बलूचिस्तान जे रियासत कलात जे शामिल थियण जा काग़ज़ पिण वापस करे छडिया।

जेकड॒हिं न्यू देहली सरकार ख़ैरपुर ऐं थरपारकर जे मामले में गंभीर थी खेडे॒ हा त हिंदुस्तान जी सरहद सघारीअ सिंधूअ (Indus) खे वञी छुहे हा।

हकीकत में हिंदुस्तान समूरीअ सिंध में वोटिंग कराइण लाइ चई सघियो थे, जो 1946 ई. जे आम चूंडुनि में सिंधियुनि जे घणाईअ लीग जे मुख़ालिफ़त में वोट डि॒ना। उन्हनि चूंडुनि में सिंधु सूबे जे 71 सेकड़ो मुसलमान आबादीअ मां मुस्लिम लीग रुगो॒ 46.3 सेकड़ो वोट हासिल कया। लीग जे हर चइनि वोटनि पोयां टे वोट जी. एम. सैय्यद ऐं मौला बख़्श जे पोइलग॒ कौम परस्त मुसलमाननि डि॒ना हुआ।

40 मेम्बरनि जे इजलास में 10 असेम्बलीअ जा मेम्बर बिना मुकाबिले चूंडिजी आया। मंझांउनि रुगो॒ हिकु मुसलमान हो। जेकड॒हिं उन्हनि ड॒हनि तकनि में पिण चूंडूं थियनि हा त आम वोट जो लीगी सेकड़ो चालीहनि खां बि घटि बीहे हा!

अहिड़ीअ तरह सिंधु में लीग जे मुख़ालिफ़त में आम वोटनि जी घणाई साफ़ हुई। उन्हनि सभिनी सणायुनि ग॒ाल्हियुनि खे माणण जे नाकामयाबीअ में, कांग्रेस सिंधु सां घटि इंसाफ़ कयो ऐं हिंदुस्तान जे सूरत में त उन खां बि घटि कयो आहे।

ख़ान अब्दुल ग़फ़ार शिकायत कई त कांग्रेस न रुगो॒ उत्तर-ओलह सरहदी सूबे (NWFP) खे बघड़नि जे हवाले कयो आहे पर सिंधु खे पिण बघड़नि जे हवाले कयो आहे।

16
जीए सिंधु

सिंधु जो मुक़द्दर 1947 ई. में मुहिर बंद कयो हो। पर उहा मुहिर पहिरिएं ई ड॒ींहं खां खुली वेई आहे। सिंधी मुसलमान विरहाङे जी घुर कंदा रहिया हुआ, छाकाणि त बि॒या मुसलमान पिण उहो ई करे रहिया हुआ, ऐं छाकाणि त हिंदू इंकार करे रहिया हुआ, उहो हिकु वड॒ो तमाशो ड॒िसण में थे आयो; पर उन्हीअ तमाशे जे नतीजनि बाबत कंहिं सोचियो ई न हो।

इहा हकीकत आहे त तइलीम, नौकरियुनि ऐं वापार में मुसलमान हिंदुनि खां घणो पोइते हुआ, पर उहे आहिस्ते आहिस्ते मथभरो उसिरी रहिया हुआ। उन सां गड॒ु उहे आदमशुमारीअ जो 70 सेकड़ो हुआ ऐं असेम्बलीअ में वड॒ी घणाईअ में हुआ ऐं राज॒नीतीअ में जेका ऊन्हो वढु विझी रही हुई, उहा लाज़मी तरह, नतीजन सभिनी पासनि खां गहिरो वढु विझी रही हुई। तंहिंकरे सिंधी मुसलमाननि जो मुस्तकबल सचु पचु त बहितर थियणो ई हो।

उन्हीअ विच में 1945 ई. में मुसलमानी समाज में अंग्रेज़ नवाज़ रजअत पसंदनि सां जिन्नाह जे तरफ़ वधीक लाड़े हुअण करे, सिंध जे बि॒नि तमाम मुअतबर अगु॒वाननि मुस्लिम-लीग तां अगे॒ई इस्तीफ़ा ड॒ेई छड॒ी हुई। मंझांउनि हिकु शेख़ अब्दुल मजीद सिंधी हो, जेको 1915 ई. में मुस्लिम लीग में शामिल थियो हो ऐं सिंधु में मुस्लिम राइ जो मुख हथियार रोज़ानी अलवहीद जी इदारत संभालींदो हो ऐं यू.पीअ ख़लीक ज़मान ऐं उत्तर-ओलह सरहदी परगि॒णे जे अब्दुलरब नश्तर जहिड़ियुनि कदावर शख़्सियतुनि खे मुस्लिम-लीग में दाख़िल करायो हुआईं। बि॒यो हो जी. एम. सैय्यद, जंहिं सूबाई लीग जे प्रेज़ीडंट जी हैसियत सां लीग जे हिक नंढे संगठन खे आम ताईं पहुचाइण जो कमु कयो।

तंहिंकरे जड॒हिं विरहाङो थियो त मुसलमाननि खे यकीन न हो त ही कमु को ठीक थियो हो। मुहम्मद इब्राहीम जोये खे पक हुई त इहो ग़लत थियो हो। हुन हिकु किताब लिखियो "Save Sindh, Save the Continent) जो असुल अंग्रेज़ीअ में हो (याने ''पाकिस्तान खां सिंध बचायो'') पर तड॒हिं घणी

देर थी चुकी हुई। जडहिं बिहारी शरणार्थी आया ऐं सिंधी हिंदू लडण लगा त महसूस थियण लगो त का ग़लत गाल्हि थी वेई, सिंधु जो माहौल मातमी बणिजी वियो। इएं थे लगो जणु राकासु शिकार ते निकिरी पियो हो ऐं कंहि खे ऐं कुझु बि कंहिं वक्त हड़प करे वेंदो। माण्हुनि थोरो हीसियल लहजे में गाल्हायो थे। मुसलमाननि खे इहो चवंदे बुधो वियो त कयामत (प्रलय) वेझो अचण जा आसार डिसिजनि पिया।

थोरनि ई डींहंनि में जिन्नाह जी तस्वीर सिंधी भितियुनि तां लही वेई। जडहिं मुहाजिर मुसलमाननि हिंदुनि खे कत्ल करण चाहियो त सिंधी मुसलमाननि संदनि साथु डियण खां इंकार कयो। ख़ुदि वडो वज़ीर खुहिड़ो फ़साद टारण लाइ रिवाल्वर खणी बाहिरि निकिरी पियो। सचु पचु त सिंधु हुकूमत ऐं पाकिस्तान हुकूमत जे विच में पहिरियों तकरार तडहिं शुरू थियो, जडहिं 6 जनवरी 1948 ई. ते कराचीअ ते कब्ज़े करण खां पोइ सिंधु हुकूमत मुहाजिर फ़सादियुनि खे गिरफ़्तार कयो ऐं खांउनि लुटियल मिलकियत वापस वरिती ऐं मर्कज़ (पाकिस्तान हुकूमत) फ़सादियुनि जी तरफ़दारी कई। रिफ्यूजिन जे मुंहं मां बुधण में आयो त ''सिंधी मुसलमान डिसण में थो अचे त हिंदुनि जे पेशाब मां पैदा थिया आहिनि।''

जनवरी 1948 ई. में हिंद सरकार सिंधु मां हिंदुनि जे लड–पलाण जे इंतज़ाम करण लाइ नारायणदास रतनमल मलकाणीअ खे पाकिस्तान में एडीशनल डिप्टी कमिशनर मुकरर कयो। पर सिंध जे वडे वज़ीर खुहिड़े खेसि सिंध जो दौरो करण जी इजाज़त न डिनी, जो हुन चयो त मां नथो चाहियां त को हिंदू सिंध मां लडे वञनि ऐं संदसि मुराद बि इहाई हुई। हू हिंदुनि खे तरसाइण लाइ एडो उतावलो हो जो हुन डिठो त आम किस्म जो धाड़ो बि न लगे। इहा गाल्हि पाकिस्तान जे मुहाजिर वज़ीर–ए–आज़म नवाबज़ादे लियाकत अली ख़ान जे बर्दाश्त खां बाहिरि हुई, जल्दु ई खुहिड़े खे लाथो वियो।

''जीए सिंध'' "Long Live Sindh" आंदोलन जो इझो इएं जनमु थियो, जंहिं आगस्ट, सेप्टम्बर 1983 ई. में आम जद्दोजहद जी सूरत अख़्त्यार करण लाइ Movement for Restoration of Democracy [MRD] खे वजूद डिनो, जंहिं में 50 माण्हू मारिजी विया ऐं 150 करोड़ रुपयनि जी रुगो रेलवे जी मिलकियत तबाह थी। उन्हीअ आंदोलन जी मुकम्मल जाण जी. एम. सैय्यद जे

किताबनि ''सिंधु जो माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल''; ''सिंधू देश छो ऐं छा लाइ'' ऐं ''सिंधूअ जी सात्रहि'' में डि॒सी सघिजे थी। उहे किताब पढ़ण सां हकीकत ज़ाहिर थिए थी। सैय्यद 1904 ई. में ज॒ाओ हो। थोरनि ई डीं॒हंनि में हुन महसूस कयो ऐं चवणु चालू कयो त पाकिस्तानु हिक ग़लती ऐं डो॒हु आहे। मुहाजिरनि मुल्क खे तबाह करे छडि॒यो आहे, ओलह पाकिस्तान सिंधु खे थोराईअ में आणे छडि॒यो आहे ऐं पाकिस्तान खे टुटणु घुरिजे त जीअं सिंधु ज़िंदह रही सघे ऐं आज़ादीअ सां खुलियो साहु खणी सघे।

अवलि ''पाकिस्तान जी इस्लामी रियासत'' जा कोठी थी वञे, उहा मुकम्मल तौर ग़ैर इस्लामी आहे। कड॒हिं बि का इस्लामी रियासत न रही आहे ऐं न वरी का थी बि सघे थी। (1) अरब छाप इस्लाम पसंदनि जो इहो चवणु अकुल खां ख़ाली आहे त डा॒हप या इल्म में कुरान ई हर्फ़-आख़िर आहे। (2) कुरान में उहो कुझु नाहे, जंहिं ते अव्हीं अजु॒कल्ह जी राजु॒नीती हलाए सघो या नएं ज़माने जी माली हालत सुधारे सघो। (3) मुसलमान पहिरिएं ई डीं॒हं खां जुदा जुदा फ़िर्कनि में विरहायल आहिनि, इस्लाम में मुख़्तलफ़ 350 फ़िर्का आहिनि। (4) कुरान में ख़लीफ़े जी गुंजाइश ई कान्हे। पर उन्हीअ हूंदे, पोप जे तर्ज़ ते ख़लीफ़ो घड़ियो वियो। विचें दौर वांगुरु वरी मज़हब ऐं सियासत खे इस्लाम में मिलायो वियो। ईसायुनि खे वरी बि अकुल आयो, जो हुननि सदियूं अगु॒ चर्च खे रियासत खां जुदा कयो, पर मुसलमाननि बि॒न्हीं खे गडु॒ जारी रखियो, जेके बु॒ई पुराणा ऐं मेरा आहिनि।

इस्लामी उसूल बहितरीन आहिनि। पर अरब छाप इस्लाम हमेशा कट्टर, अगि॒रो ऐं शहंशाहित परस्त रहियो आहे। अरबनि सिंध खे इस्लाम जे नाले में फ़तह कयो, इस्लाम जे नाले में लुटियो, 20 हज़ार मर्द, ज़ालूं ऐं बा॒र गुलामनि जे तौर इस्लाम जे नाले में विकिरो कया विया। उन्हीअ किस्म जे इस्लाम जी असांखे ज़रूरत न हुई। एतिरे कदुरु जो ज़ालिम हुकमराननि जहिड़ोकि तैमूर-लिंग जे बेहद ख़ूनरेज़ी करण जे बावजूद खेसि ''साहिब कुरान'' जो लकब डि॒नो वियो। औरंगज़ेब जंहिं पीउ खे कैद करे, भाउरनि खे कत्ल करायो, वड॒नि जुल्मनि करण जे बावजूद खेसि वडा॒ इस्लामी ख़िताब डि॒ना विया।

(1) इस्लाम लाइ जेकी मञियल आहे, उन्हीअ जो घणो हिस्सो इस्लाम खां अगु वारियुनि अरबिस्तान जे रस्मुनि ते बधलु आहे। सैय्यद जो चवणु आहे "काबो सचु पचु पुराणो शिव लिंग आहे।" (2) अञा ताईं हाजी अरबिस्तान जे "लाति ऐं मनाति" नाले मुख़ालिफ़ खे मारण लाइ पथरियूं हणंदा आहिनि। उहे बिनि टकिरियुनि मारू ऐं सफ़ा जे विच में डोड़ंदा आहिनि, छाकाणि जो इब्राहिम जी मिस्री बीबी हाजिरां, जडहिं बार ज़णण वारी हुई त पाणीअ जी गोल्हा में उन्हनि ई टकिरियुनि जे विचां डोड़ी हुई। (3) उहे अरबनि जूं पुराणियूं रस्मूं हुयूं, जिनि सां इस्लाम जो को वास्तो कोन आहे। सिंधू नदीअ जो जल, अरब जे ज़म ज़म खूह खां पवित्रता में कंहिं सूरत में घटि न आहे। माण्हू हिते अरबिस्तान में दफ़न थियण चाहींदा आहिनि त जीअं कयामत जे डींहं ते पंहिंजे अल्लाह जे अगियां सुरख़ुरू थियनि। (4) खेनि ख़बर नाहे त दफ़नाइण खां पोइ अरब संदनि लाश कढी कंहिं ग़ार में उछिलाए छडींदा आहिनि। उहे माण्हू कहिड़ा स्कूल कालेज काइमु करे सघंदा, जेके लाइब्रेरियूं साड़ींदा रहिया आहिनि। (5) उहे माण्हू जेके गाने ऐं नाच जे ख़िलाफ़ जंगियूं जोटींदा रहिया आहिनि, रेडियो ऐं टेलीविज़न सां कडहिं इंसाफ़ करे सघंदा? (6) पाकिस्तानु हिंदुस्तान जी तारीख़ ऐं जाग्राफ़ीअ जो इंकार आहे। उहो अशोक ऐं अकबर जे उसूलनि जे बर्ख़िलाफ़ आहे। जंहिं सूरत में अरब जेके सागियूं ज़बानूं गाल्हाईनि था ऐं सागिए अल्लाह जो कसम खणनि था, जुदा रियासतुनि जा शहर थी सघनि था त पोइ सिंधियुनि, पंजाबियुनि, बलोचनि ऐं पुख़्तूननि खे पंहिंजूं ख़ुदि-मुख़्त्यार रियासतूं छो नाहिनि? खेनि संदनि ख़्वाहिश जे ख़िलाफ़ गडु रखणु, खेनि हिक ई कब्र में दफ़नाइण जे बराबर आहे।

पाकिस्तान सभिनी ठोस उसूलनि जे रख जे बुनियाद ते हिक गुनहगार रियासत आहे। उहो "चोरनि" जो रंधिणो आहे, उन्हीअ जी अगुवानी कफ़न चोर कनि था। जीअं "भंगी" खे "महितर" चवण सां पिण का वडुमाण्हपी नथी थिए, तीअं "रंडी ख़ाने" खे पाक नालो डियण सां उहो "पाक" नथो थिए। सिंधी अहिड़ी रियासत सां को बि वास्तो रखणु पसंद नथा कनि।

उन खां पोइ "मुहाजिर" उहे पाकिस्तान में इन्हीअ करे न आया आहिनि, जो उहे हिंदुस्तान में रही न थे सघिया। किरोड़ें मुसलमान हिंदुस्तान में अमन ऐं इज़्ज़त सां रहिया पिया आहिनि। यू.पी. में मुसलमान कुल आबादीअ जो 13 सेकड़ो हुआ, पर खेनि 45 सेकड़ो नौकिरियूं हासिल हुयूं ऐं

पोइ बि उहे वडे तइदाद में हिते आया। हिंदू सिंधु में पंहिंजूं मिल्कियतूं छडे विया, जेके सभु मुहाजिरनि खे मिलियूं। एतिरे कदुरु जो जेके हिंदुनि जूं मिलकियतूं सिंधी मुसलमाननि खे विकिरो कयल हुयूं, उहे छडियल मिल्कियतूं (Avacuee Properties) पधिरियूं कयूं वेयूं ऐं मुहाजिरनि जे हवाले कयूं वेयूं। मंझांउनि घणनि मुहाजिरनि क्लेम दाख़िल कया, पर उहे सभु संदनि साथी मुहाजिरनि जा तसदीक थियल हुआ, जेके अवेक्यू प्रॉपर्टी ऐं आबाद कारीअ जे खातनि में भर्ती थियल हुआ।

उहे मुहाजिर ई हुआ, जिनि 26 डिसम्बर 1947 ई. ते हैदराबाद ऐं 6 जनवरी 1948 ई. ते कराचीअ में हिंदुनि खे कत्ल कयो ऐं लुटियो। जडहिं वडे वज़ीर खुहिड़े फ़सादियुनि जे ख़िलाफ़ कदम खंयो त मुहाजिरनि जो वडो अगुवान लियाकत अली ख़ान संदसि मुख़ालिफ़ थी पियो।

सिंधी अगुवाननि संदनि चङाईअ में पाकिस्तान जे गादीअ जो हंधु कराचीअ में काइमु करण लाइ जिन्नाह खे आछ कई। पर लिकाकत अली ख़ान कराचीअ खे सिंधु खां जुदा कयो ऐं सिंधु हुकूमत खे हैदराबाद में रखण लाइ चयाईं। जडहिं सिंधियुनि खेसि कराचीअ जे नुक्सान लाइ घटि एवज़ो डियण लाइ चयो त खेनि चयो वियो त उहा फ़तह कयल सर-ज़मीन आहे, जंहिं लाइ को बि एवज़ो न थींदो आहे। (1) जडहिं खुहिड़े मुख़ालिफ़त कई त खेसि मुअतल कयो वियो। संदसि जाइ ते बि ग़ैर करंघे वारे पीर इलाही बख़्श खे आंदो वियो। हुन संदनि छाड़ते, हिकदम सिंधीअ जी जाइ ते उर्दूअ खे लाज़मी कयो।

जडहिं सिंधु मुस्लिम लीग जे सदर सैय्यद अली अकबर शाह सिंधी संस्कृतीअ जे बचाइण लाइ लियाकत अली ख़ान डांहुं एवज़ी वठी वियो त हुन फ़रमायो, ''गडह ऐं उठ हकिलण खां सवाइ सिंधी संस्कृती बियो छा आहे।'' (2) ही सागियो लियाकत अली हो, जंहिं हिंदुस्तानी मुसलमाननि खे पाकिस्तान अचण जी दावत डिनी हुई ऐं तडहिं चयो हुआईं त उहो सभिनी डह किरोड़ मुसलमाननि लाइ काराइतो साबित थींदो।

हिंदुस्तान पंहिंजो संविधान टिनि सालनि में तैयार कयो, पर पाकिस्तानु लियाकत अलीअ जे हेठि उहो कमु छहनि सालनि में बि न करे सघियो। संदनि मुहाजिर नवाज़ ऐं मकानी माण्हुनि जे ख़िलाफ़ पालीसियुनि जी पेशि नज़र खेसि हटाइण लाइ कुझु पंजाबी सियासतदान ऐं कामोरा गडु थिया। बिरहाङे

खां हिदकम पोइ पंजाब सरहद ऐं बलूचिस्तान जे सूबनि मुहाजिरनि जे वधीक दाख़िला ते बंदिश विधी। पर सिंधु में मुहाजिरनि जे सैलाब खे मुकम्मल तौर जारी रखियो वियो। उहा हालति बर्दाश्त करण लाइकु न हुई।

एतिरे कदुरु जो बर्तानिवी राजु में सिंधु में मुकरर कयल अमलदारनि खे छहनि महिननि जे अरिसे अंदरि सिंधी सिखिणी पवंदी हुई। पर उहो कानून ख़तम कयो वियो। सिंधु में गनर्वर, वडो वज़ीर, इंस्पेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस ऐं घणो करे बिया बाला आफ़ीसर ग़ैर सिंधी आहिनि, जेके सिंधी सिखण खां नाबुरी वारिनि था। जेकडहिं सिंध में आबाद थियल मुहाजिर सिंधी ज़बान सिखण खां नाबुरी था वारिनि त खेनि नौकरी मिलण जो हकदार न करणु घुरिजे।

सिंधु जे विरहाङे थियण खां अगु में सौ वरह्यिनि जे अरिसे में हिंदू 30 लख एकड़नि ज़मीन जा मालिक बणिया, जंहिंजी सिंधी मुसलमाननि मुख़ालिफ़त कई। पर मुहाजिरनि उन्हीअ अरिसे जे हिक हिस्से दौरान 4 लख एकड़नि ते कब्ज़ो कयो आहे।

मुहाजिरनि खे कारख़ाना लगाइण, वापार करण ऐं घरनि ठहिराइण लाइ सवें किरोड़ रुपया इमदाद या कर्ज़ तौर डिना विया आहिनि, पर इहा महिरबानी सिंधियुनि लाइ मुयसर नाहे। पाकिस्तान जी हुकूमत में सिंधियुनि खे 3 सेकड़ो खां घटि नौकिरियूं हासिल आहिनि। (पाकिस्तान में इहो हिकु मज़ाक आहे त पाकिस्तान सुन्नियुनि काइमु कयो हो त जीअं यू.पीअ वग़ैरह जा शीया कादियान जे अहमदियुनि जे फ़ाइदे में हुकूमत कनि, जिनि खे ग़ैर मुस्लिम करार डिनो वियो आहे।)

मुहाजिर अगुवान पुराणनि सिंधी नालनि खे मेसारे, उन्हनि जे जाइ ते नवां तबदील कंदा रहिया आहिनि। (कराचीअ में 'राम बाग़' जो नालो 'आराम बाग़' ऐं 'अचल सिंह पारक' जो नालो 'इकबाल पार्क' रखियो वियो आहे।) बिए तरफ़ सिंधु में ग़ैर मुल्की नाला तबदील न कया विया आहिनि। मिसाल तौर जेकब जे नाले पोयां, जंहिं नेपीअर सां गडु सिंध फ़तह कई हुई 'जेकब आबाद' जो नालो काइम आहे, पर पंजाब में पंजाबी अज़ब, नफ़्स नएं सिर काइम करण लाइ 'मांटगोमरी' जो नालो 'साहेवाल' ऐं 'लाइलपुर' जो नालो 'फ़ैज़ल आबाद' रखियो वियो आहे।

इहा हिक अण थियणी सूरतहाल आहे। मुहाजिरनि खे पंहिंजूं पाड़ूं कृष्ण ऐं कबीर में ग॒ोल्हणु घुरिजनि ऐं खेनि सिधो थी हलणु घुरिजे। जेकड॒हिं हू सिंध में रहणु घुरनि था। जेतिरे कदुरु पाकिस्तान में पंजाबियुनि जो तालुक आहे, संदनि बारे में जेतिरो चइजे, ओतिरो थोरो। सिंधु में आम चविणी आहे- "पंजाबी हिकु त समुझो ड॒ूं (ब॒), पंजाबी ड॒ूं त झुग॒ाई (घर वग़ैरह) ढूं (तबाह)।" उहे समूरे पाकिस्तान खे पंहिंजी आबादी समुझनि था। पाकिस्तान पंजाबिस्तान बणिजी वियो आहे। सियासत, सिविल ऐं मिल्ट्रिी सर्विसिज़ ते संदनि कब्ज़ो आहे। हू पाकिस्तान में घणी खां घणी ज़मीन, कारख़ाना ऐं वापार हासिल कंदा पिया वञनि। लग॒े थो त अंग्रेज़नि पंजाबी मुसलमाननि खे संदनि ख़िज़मतुनि जे मञुता में हिंदुस्तान जो विरहाङो करे, हीअ सर ज़मीन खेनि शोषण करण लाइ (ड॒ुहण लाइ) ड॒िनी हुई। उहो इस्तैमाल आसान बणाइण लाइ 1954 ई. में उन्हनि चइनी सूबनि खे ज़ोरीअ मिलाए करे 'वन यूनिट' ठाहियो, जीअं त परगि॒णनि जे वड॒नि वज़ीरनि इहो कबूल न कयो, तंहिं करे खेनि मुअतल (बरख़्वास्त) कयो वियो।

जड॒हिं अभागुनि सिंधी आफ़ीसरनि खे हकाले लाहौर ड॒ांहुं नियो पिए वियो त उन्हीअ नज़ारे सभिनी खे यहूदियुनि जी याद ड॒ियारे छड॒ी, जिनि खे जेरोसिलम जी शिकस्त खां पोइ बैबीलान ड॒ांहुं ज़ेर हिरासत नियो पिए वियो। वन यूनिट जे ठहण वक्त, सिंध जे ख़ज़ाने में 33 किरोड़ रुपया हुआ ऐं पंजाब ते 100 किरोड़ रुपयनि जो कर्ज़ हो। उहे सभु माली रकमूं जमा कयूं वेयूं ऐं अहिड़ीअ रीत सिंध खां संदसि माली बचत लुटी वेई।

विरहाङे जे ड॒हनि सालनि खां वधीक अरिसे खां पोइ पाकिस्तान जो संविधान नेठ तैयार थियो। रुगो गवर्नर जनरल खे संविधान ते सही करिणी हुई। पर उन वक्त पंजाबी गवर्नर जनरल ग़ुलाम मुहम्मद संविधान जोड़जकी असेम्बली टोड़े छड॒ी ऐं बेंगाली ख़ुशामंदड़े मुहम्मद अली बोगरा खे पाकिस्तान जो वज़ीर-ए-आज़म मुकरर कयाईं, जेको उन वक्त वाशिंगटन में एम्बेसेडर थी कमु करे रहियो हो।

संविधान जोड़जकी असेम्बलीअ जे टोड़ण वारे अमल खे सिंध हाइ कोर्ट में ललकारियो वियो, जंहिं उन खे विधान जे ख़िलाफ़ फ़ैसिलो ड॒िनो। पर फेडरल कोर्ट, जंहिं ते पंजाबियुनि जो कब्ज़ो हो, असेम्बली टोड़ण जे हुकुम खे बहाल रखियो।

ज़ुल्फ़कार अली भुट्टो सिंधी हो, पर हू पिण पंजाब जो ख़ुशामंदड़ो हो। हू सिकंदर मिर्ज़ा ऐं अय्यूब ख़ान जूं ख़ुशामंदियूं करे मथे उभिरियो। हुन पंहिंजीअ जागीर ते उन्हनि जे शिकार जो बंदोबस्त कयो। हुन अय्यूब खे लिंकन ऐं लेनिन सां भेटियो ऐं चयाईं त जेकड॒हिं अज़ीम सिंधी शाइर शाह अब्दुल लतीफ़ ज़िंदह हुजे हा त हू खेसि ज़रूरु हार (माल्हा) पाराए हा। भुट्टो जड॒हिं हुकूमत में आयो त आतंकी बणिजी आयो। हुन पंहिंजे किनि नुक्तचीनी कंदड़नि खे ततल लोही शीख़ुनि सां डं॒भियो। हुन किनि जा मुंहं कारा करे संदनि जलूस कढियो। हुन हिक डिस्ट्रक्ट एण्ड सेशन जज खे बिना वारंट गिरफ़्तार कयो। जड॒हिं सिंध असेम्बलीअ सिंधी ज़बान खे सिंध में हिक ई सरकारी ब॒ोली तसलीम हुअण जो एलान कयो त भुट्टे सिंध में उर्दूअ खे सरकारी ज़बान जो दर्जो डे॒ई, सूबे खे ब॒ टे ज़बानुनि जे सूबे हुअण जो एलान कयो। हू पंजाबी सिविल ऐं मिल्ट्री आफ़ीसरनि जे हथनि जो खेडू॒णो (बॉल) हो। हुन सिंध ते पंजाबियुनि ऐं मुहाजिरनि जे ज़ुल्म जे ख़ातिमे लाइ कुझु बि न कयो।

1977 ई. खां पोइ फ़ौज सां विढ़ंदे, जेतोणीक भुट्टे पाण खे लोकतंत्र जो हामी करे पेशि कयो, पर हू खुलियो खुलायो साणुनि समूरो वक़्त खीर खंड थियल हो। कनवेंशन मुस्लिम लीग जे सेक्रेट्री जनरल जे हैसियत सां हुन रिथ डि॒नी त डिप्टी कमिशनर ऐं सुप्रीटेंडंट ऑफ पुलिस ज़िला सतह ते पार्टीअ जो सिलसिलेवार सदर ऐं सेक्रेट्री हुअणु घुरिजे। हू हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान जे विच में थियल ताशकंद जे अमन मामले ताईं अय्यूब जो साज॒ो हथु हो, पर जड॒हिं हुन डि॒ठो त इहो मामलो पाकिस्तान जे अवाम में बदनाम थींदो त पाणु बचाइण लाइ हुन खेसि छड॒ण जो फ़ैसिलो कयो। भुट्टे एयर मार्शल असग़रख़ान सां गडि॒जी हुकूमत करण जी तजवीज़ डि॒नी त ''मकसद हुकूमत करण आहे, पब्लिक बेवकूफ़ आहे ऐं मूंखे ख़बर आहे त जनता खे बेवकूफ़ कीअं बणाइजे। मुंहिंजे हथ में डं॒डो हूंदो ऐं वीहनि सालनि ताईं मूंखे को बि हटाए न सघंदो।'' हुन इहा तजवीज़ याइया ख़ान खे डि॒नी त ''ओभर पाकिस्तान को मसइलो नाहे, असांखे उते 20 हज़ार माण्हुनि खे मारिणो पवंदो ऐं सभु ठीक थी वेंदो।''

1977 ई. में भुट्टे पाण खे सचु पचु चीफ़ मार्शल ला एडमिनिस्ट्रेटर बणायो। पोइ पाण खे पाकिस्तान जो कोलोनल-इन-चीफ़, आर्मोड कार्पिस बणायो। इन्हनि ग़ाल्हियुनि खे संदसि कानूनी कत्ल पिण जनता जे ज़हन ताईं मिटाए न सघियो। ज़िया-उल-हक चूंडुनि खे महिमुल करण में कीअं कामयाब थियो, इन्हीअ जो हिकु कारण उहो अहसास हो, जेको ब़ियुनि पार्टियुनि जो बि हो त बे उसूलनि वारे भुट्टे खे वरी वापस हुकूमत में अचण जी इजाज़त ड़ियणु न घुरिजे।

सिंधु ऐं पंजाब जे विच में सिंधू तराखड़ी नदीअ जे विरछ जा उसूल जुदा जुदा कानूननि ऐं मुद्दनि में 1901 ई. खां दर्ज थियल हुआ। इहो तय थियल हो त सिंधु रावी, सतलज ऐं ब्यास जे पाणीअ जो 25 सेकड़ो ऐं सिंधूअ जे पाणीअ जो 75 सेकड़ो खणंदो। इहो फ़ार्मूलो इन्हीअ हकीकत ते ब़धल हो त पंजाब जी 20 इंच ज़मीन सालियानी बरसात जे भेट में, सिंधु में 10 इंच सालियानी बरसात खां बि घटि पवे थी ऐं मंझिसि 2 सेकड़ो ब़ेला मस आहिनि, जेके अरबिस्तान खां बि घटि आहिनि। पर जड़हिं 'वन यूनिट' ठाहियो वियो त इन्हीअ मसौदे जी भञकड़ी कई वेई। रावी, सतलज ऐं ब्यास जे पाणीअ खे हिकु हज़ार किरोड़ रुपयनि में हिंदुस्तान ऐं कुझु ब़ियनि मुल्कनि खे विकिरो कयो वियो ऐं उहो नाणो सिंधु हुकूमत जे अग़ु में तैयार कयल दरज़न सिंचाई योजनाउनि खे अमली जामो पाराइण जे बदिरां पंजाब में पंजाबियुनि जे फ़ाइदे लाइ तरबेला, मंगला, चश्मा ऐं रावल ते पाणीअ जा बंद (डैम) ब़धण में इस्तैमाल कयो वियो।

बलूचिस्तान जी रसोई गैस सिंधु जे भेट में पंजाब खे वधीक सस्ते अघ में विकिरो कई वेई।

पंजाब जी एराज़ी 55 हज़ार चौरस मेल आहे ऐं सिंधु जी 54 हज़ार मेल। 1947 ई. में पंजाब जी फी चौरस मेल 300 आदमशुमारीअ जे भेट में, सिंधु जी 80, सरहद जी 150 ऐं बलूचिस्तान जी 18 फी चौरस आदमशुमारी हुई। पर 1979 ई. में जड़हिं पंजाब जी आदमशुमारी रुग़ो 33 सेकड़े खां 400 ताईं इज़ाफ़ो थियो त सिंधु में 260 फी चौरस मेल खां बि वधीक इज़ाफ़ो थियो आहे। इहो ग़ैर मामूली इज़ाफ़ो सिंधु में पंजाबियुनि ऐं मुहाजिरनि जे आबाद कारीअ जी नुमाइंदगी थो करे।

विरहाङे खां पोइ वारनि बैरेग्स, उत्तर में गिडू ऐं डखण में कोटड़ी- सिंधु जे ज़मीन जी सुपाई कई। उहे ज़मीनूं घणो करे मुहाजिरनि ऐं रिटायर्ड फ़ौजियुनि खे अलाट कयूं वेयूं, जिनि में घणाई वरी बि पंजाबियुनि जी हुई। इन्हीअ समूरी ग़ाल्हि मां मुराद सिंधु ते अंदरूनी कब्ज़ो ऐं फ़तह हुई। जडहिं सिंधु इन्हीअ समूरे अमल ख़िलाफ़ आवाज़ कयो त पंजाब खेसि रुगो धमकियूं ई डिनियूं।

जडहिं टिकाख़ान ओभर पाकिस्तान जो गवर्नर हो त चयो हुआईं, ''पाकिस्तान जी दिलचस्पी रुगो बंगाल जे सर-ज़मीन सां आहे। जेतिरे कदुरु माण्हुनि जो ताल्लुक आहे त उहे आबाद थियण लाइ आणे सघिजनि था।'' पोइ हुन कराचीअ जे भरिसां मलीर में फ़ौजियुनि खे ग़ाल्हाईंदे चयो हो, ''असां ओभर पाकिस्तान में नाकाम थियासूं, छाकाणि जो इलाइको तमाम परे हो ऐं उते तमाम घणा माण्हू हुआ, जिनि जी हिंदुस्तान मदद करे रहियो हो। जेकडहिं 'सिंधू देश' पंहिंजो कंधु मथे खणंदो त असां खेसि आसानीअ सां चीभाटे सघंदासीं, छाकाणि जो उहो तमाम वेझो आहे। एडो घणीअ आदमशुमारीअ वारो नाहे ऐं खेसि कंहिं धारिए मुल्क खां मदद मिलण जी उम्मेद नाहे। असां पोइ पंहिंजे फ़तह जे जशन खे सिंधी पीरनि ऐं ज़मींदारनि जी कुर्बानी डेई मल्हाईंदासीं, जेके हाणे थुल्हा मतारा थी पिया आहिनि।''

पंजाबी तमाम अगिराई कंदड़ थी पिया आहिनि। संदनि 'इकबाल' रुगो संदनि ख़ुदीअ खे बुलंद कयो, जडहिं हुन लिखियो हो-

ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि, हर तकदीर से पहले,
ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है।

सिंधी फ़ेलसूफ़ी बिल्कुल जुदा आहे। शाह अब्दुल लतीफ़ चयो आहे- ''वागु धणीअ जे वसि, आऊं का पाण वहीणी।''

पंजाबी ऐं सिंधी ख़ुदाउनि में एतिरो ई फ़र्क आहे, जेतिरो पंजाबी ऐं सिंधी हिक बिए खां अलहदा आहिनि। ''जेकडहिं पंजाबी पंहिंजो सफ़र पूरो कंदा त असां सिंधी दोज़ख़ में ई तरसण कबूल कंदासीं।''

इहो हमेशह अहिड़ीअ तरह न हो। तारीख़ में पंजाब ऐं सिंधु कडहिं बि हिक बिए ते फ़तह न पाती आहे। इहो इन्हीअ करे जो सूफ़ी संत शाइरनि जहिड़ोकि गुरूनानक, वारसि शाह, बुल्लेशाह तडहिं ई पंजाब जे दिलियुनि खे

फेराए छड॒ियो हो। हाणे पंजाब पंहिंजीअ सचीअ संस्कृतीअ ऐं मंज़िल खे विसारे छड॒ियो आहे। हुन तरकीअ लाइ ड॒ाढियूं मुसीबतूं सठियूं आहिनि। विरहाङे जे करे ब॒ हिंद-पाक जंगियूं पंजाब जी सर-ज़मीन ते विढ़ियूं वेयूं, जिनि पंजाबियुनि खे बेहद ईज़ायो आहे। विरहाङे सां पंजाबी पिण ब॒ियनि पंजाबियुनि खां, जेके हाणे हिंदुस्तान में आबाद आहिनि, कपियल महसूस कनि था। तंहिंकरे सिखनि सां वरी ग॒ंढिजण जी संदनि तिखी ख़्वाहिश आहे। पंजाबी मुसलमाननि खे, पंहिंजे पाण सां ऐं ब॒ियनि सां अमन सां रहण लाइ पंहिंजे नानक-वारिस, बुल्लेशाह जे वरिसे खे वापस हासिल करिणो पवंदो।

जेतिरे कदुरु पाकिस्तान जे रियासत जो सुवाल आहे त सिंधु खेसि मुकम्मल तरह रद्द करे थी। सिंधु हमेशा काइम आहे, जड॒हिं कि पाकिस्तान हलंदड़ ड॒ेखाउ आहे। सिंधु सचु आहे त पाकिस्तान कूड़ आहे। सिंधी हिक कौम आहे, पर मुसलमान हिक कौम नाहे। सिंधी ब॒ हज़ार साल पुराणी ज़बान आहे, पर उर्दू रुग॒ो 250 साल पुराणी आहे। सिंधीअ में 52 हर्फ़ आहिनि, पर उर्दूअ में रुग॒ो 36 हर्फ़ आहिनि। पंजाब पारां 'पाकिस्तान' ऐं 'इस्लाम' जे नाले में सिंधु जी ग़ुलामी हिकु फ़रेब आहे। गुज़िरियल 2 हज़ार सालनि में सिंधु जे तारीख़ में इहो हिकु तमाम वड॒ो कलंक आहे।

सिंधियुनि खे इस्लाम जे नाले में घणे अरिसे खां बेवकूफ़ बणायो वियो आहे। मंझांउनि घणनि पंहिंजनि अबनि ड॒ाड॒नि खे ईरानी, तुर्क ऐं अरब ख़ानदाननि में ग॒ोल्हण जी कोशिश कई। मंझांउनि किनि खे संदनि मक्के जे घिटियुनि में ब॒ुहारी ड॒ियण ऐं मदीने में मरण जी ख़्वाहिश खे ग॒ाईंदे ब॒ुधो आहे- "धारियनि मुस्लिम राज॒ जे असर हेठि सिंधु में धारियनि झिरिकीअ खे बुलबुल कोठियो आहे।" हाणे खेनि अहसास थियो आहे त इहा सभु ग़लती आहे, "रुग॒ो अहमकु ई पराए दुहिलें नचंदो आहे।"

उन्हनि समुझियो हो त "पाकिस्तान जी इस्लामी रियासत संदनि लाइ बहितर साबित थींदी, पर उहा तबाह कुन साबित थी।" इहा ग॒ाल्हि असांखे उन्हीअ जानवर जी याद ड॒ियारे थी, "जेको सिङनि काणि वियो ऐं कन कपाए आयो।"

सिंधु अरबी छाप इस्लाम रद्द करे थी, पाकिस्तान जो पंजाबी रूप रद्द करे थी ऐं हिंदुस्तान जी जोड़ियल उर्दू नथी चाहे। हिंदुस्तानी मुसलमाननि लाइ

चंगेज़ ऐं हलाकूअ जे भेट में इकबाल ऐं जिन्नाह बदितर बर्बादी कंदड़ साबित थिया। सिंधु बिन्हीं खे रद्द थी करे। जडहिं पाकिस्तान जिन्नाह जो सौ साल जनम जो डींहुं मल्हाए रहियो हो त सिंधु में लखें पोस्टर विरहाया विया, जिनि में "काइद आज़म" खे कादो हजाम, कत्ल-ए-आज़म, काफ़री आज़म ऐं ग़द्दारी सिंधु लिखी रद्द कयो वियो हो।[1]

घणा मुसलमान इकबाल खे पाकिस्तान जो पैग़म्बर ऐं शाइर मञीनि था, जंहिं 1930 ई. में मुस्लिम लीग जे इलाहाबाद वारे इजलास में पंहिंजी सदारती तकरीर में विरहाङे जो नज़रियो पेशि कयो हो। पर सिंधी कौम परस्त खेसि पंजाबी चमचो ऐं अंग्रेज़नि जो छाड़तो समुझनि था। उहे साबित कंदे चवनि था त पहिरीं जंग दौरान टर्कीअ ते अंग्रेज़नि जे हमले करण महिल जडहिं मुसलमाननि आंदोलन कयो हो त इकबाल कविता पढ़ी हुई, "मां जंगि लाइ पंहिंजो सिरु पेशि करियां थो, महिरबानी करे हिक वफ़ादार जो हीउ निवड़त भरियो तोहफ़ो कबूल फ़रमायो।" 1933 ई. में अंग्रेज़नि जे डाढायुनि ख़िलाफ़ संघर्ष विचां जडहिं बिया पंहिंजा ख़िताब वापस करे रहिया हुआ त इकबाल "सर" जो ख़िताब वठण कबूल कयो। साइमन कमीशन जे रवैये ते 1928 ई. में मुस्लिम लीग बिनि धड़नि में विरहाइजी वेई, जिन्नाह ऐं सेफ़ अलद्दीन कुचलो जे साये हेठि कौम परस्त धड़े जो मेड़ कलकत्ते में थियो ऐं कमीशन खे रद्द कयो। अंग्रेज़नि जे हिमायती धड़े जो मेडु, जंहिंजी अगिराई मुहम्मद शफ़ी ऐं इकबाल करे रहिया हुआ, लाहौर में थियो ऐं अंग्रेज़ मेम्बर ई साइमन कमीशन जी आजियां कई।

इकबाल अफ़ग़ानिस्तान जे तरकी पसंद बादशाह अमान उल्लाह जो वडो साराह कंदड़ हो, पर जडहिं अंग्रेज़नि अमान उल्लाह खे तख़्त तां लाहे ख़ुशामंदड़े नादिरशाह खे तख़्त ते विहारियो त इकबाल जा समूरा गीत नादिरख़ान जे शान में हुआ।

मक्के जो गवर्नर शेरीफ़ देश भगुत हो। अंग्रेज़नि संदसि जाइ ते इस्लामी पवित्रता जे बचाव जे हैसियत सां पड़मतड़िए सऊद खे तख़्त ते विहारियो। वहाबी बुनियाद परस्तीअ जे असर हेठि हुन इस्लाम जे पैग़म्बर जे घर जे

1. जी. एम. सैय्यदः "पाकिस्तान जे माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल ते हिक ज़ाइराना नज़र", 1971 ई., सुफ़्हा 399-400.

भातियुनि समेति केतिरा ई मकबरा डहिराए छड़िया, समूरी दुनिया जे मुसलमाननि खे सदमो रसियो, पर इकबाल सऊद खे ''एशिया जो बहितरीन हुकमरान'' चई खेसि सलाम पेशि कयो।

जडहिं भोपाल मां इकबाल खे दर महिने पंज सौ रुपयनि जो भत्तो मंज़ूर थियो त उतां जो नवाब ''इस्लाम जो सितारो'' थी पियो। नेहरूअ मुसोलनीअ सां मिलण खां इंकार कयो हो, पर इकबाल न रुगो मुसोलनीअ सां मिलियो, पर ऐलान कयाईं त इस्लाम फ़ासीइज़्म सां मेल खाए थो। इकबाल ख़ुदि तस्लीम कयो त हू पाकिस्तान जे हिमायत लाइ इन्हीअ करे निकितो आहे जो ''हिंदुस्तान लाइ स्टेट जे अंदर सेक्रेट्री लॉर्ड लोथअनि मूंखे पक डिनी आहे त हिंदुस्तान जो विरहाङो थी रहंदो।'' इन्हनि गाल्हियुनि करे सिंधी इकबाल जी मुख़ाल्फ़ित कनि था। तंहिंकरे जडहिं पाकिस्तान इकबाल जो सौ साल जनम डींहुं मल्हायो त सिंधु उनजो मुकाबिलो सूबे जी कुंड कुड़िछ में पंहिंजे सूफ़ी संत लतीफ़ जी सालियानी वर्सी मल्हाइण सां कयो।[1]

सिंधी मञीनि था त बेल्जियम, डेनमार्क ऐं स्वज़रलैंड सभिनी खे गडु कजे, तडहिं बि सिंध उन्हनि खां वडी आहे। सिंधु मुअनि जे दड़े खां, डाहर खां, दोदे सूमरे खां, अल्लाह बख़्श सूमरे ताईं, जिनि खे पाकिस्तान हुकूमत पले रखियो आहे, पंहिंजे वरिसे ते फ़ख़ुरु करे थी। सिंधु खे अजब आहे त इस्लाम खां अगु वारे वरिसे खे हूअ छो नथी साराहे? जडहिं ईरान जे कौमी शाइर फ़िरदोसे ईरानी सूरवीरनि खे साराहियो आहे ऐं अरबनि खे वहिशी चई चिथरूं कयूं आहिनि।[2]

पाकिस्तान ईरान जे इस्लामी दौर खां अगु वारे साइरस जी 2500 साल वर्सी पूरे हफ़्ते ताईं मल्हाई, पोइ हू सिंधु जे इस्लामी दौर खां अगु वारे सूरवीर महाराजा डाहरसेन जी वर्सी छो नथो मल्हाए?[3]

---

1. जी. एम. सैय्यदः ''सिंधूअ जी साञाह'', जुल्दु 2, सुफ़्हो 72.
2. जी. एम. सैय्यदः ''पाकिस्तान जे माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल ते हिक ज़ाइराना नज़र'', 1971 ई., सुफ़्हो 417.
3. जी. एम. सैय्यदः ''पाकिस्तान जे माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल ते हिक ज़ाइराना नज़र'', 1971 ई., सुफ़्हो 417.

नाच ऐं संगीत आम माण्हुनि जे कुदरती शौंक जो हिस्सो आहिनि। मुअनि जे दड़े मां खोटे लधल हिक ई नर्तकीअ जी मूर्ती आहे। सैय्यद जे ख़्याल पटांदर कत्थकली ऐं मणीपुरी नाच पिण सिंधु मां शुरू थिया हुआ। हू चवे थो त नाच खे ग़ैर इस्लामी कोठणु बेवकूफ़ी आहे।[1]

सिंधु में रूहानियत जे ग॒ोल्हाऊ मुसलमाननि सदियुनि ताईं योगियुनि ऐं अवधूतनि सां पोरबंदर ऐं हिंगलाज जूं यात्राऊं कयूं। संदनि दिलचस्पी नफ़रत ऐं हिंसा न, पर सचु ऐं पाण में सुञाणण में हुई। पाकिस्तान में ड॒ियारी, दसहड़े, जनम अष्टमी, नानक जयंती ऐं नाताल जे मोकलुनि खे रद्द करणु बे अकुली आहे।[2]

जीअं त पाकिस्तानु सिंधु ऐं सरहद ऐं बलूचिस्तान खे पंहिंजी ज़िंदगी जीअण ऐं पंहिंजे पाण में रहण जी कड॒हिं बि इजाज़त न ड॒ींदो, तंहिंकरे पाकिस्तान जो ख़ातिमो थींदो। सूफ़ी सिंधु ऐं पाकिस्तान गडु॒ रही नथा सघनि, जीअं अव्हां ब॒ तलवारूं हिक म्याण में रखी नथा सघो। जेकड॒हिं पाकिस्तान रहंदो त सिंधु मरी वेंदी। तंहिंकरे जेकड॒हिं सिंधु खे काइमु रहिणो आहे त पाकिस्तान खे मरणु घुरिजे।[3]

इहा सवली ग॒ाल्हि नाहे। सिंधु में केतिरा ई बुज़दिल ऐं ग़द्दार आहिनि, मंझांउनि किनि सिंधियुनि उर्दू ग॒ाल्हाईंदड़नि सां शादियूं कयूं आहिनि ऐं उहे ख़ुदि पंहिंजे घरनि में उर्दू ग॒ाल्हाईनि था। पर अञा सभु कुझु हथां न वियो आहे। अण जीतियल, जेके कड॒हिं पेशि न पवंदा आहिनि, अञा बचियल आहिनि। सिंधी नौजुवान सुजाग॒ आहिनि, खेनि ख़बर आहे त जेकड॒हिं उहे हींअर अमल न कंदा त सिंधी इएं गुम थी वेंदा, जीअं रेड इंडियन अमेरिका में गुम थी विया आहिनि या जीअं हिंदू समाज में हरिजननि जी बदितर सूरतहाल आहे। फ़ारसीअ में चविणी आहे, तंग आबद, जंग आबद ऐं सिंधु इएं ई कंदी। सिंधु जी ज़ाहिरी माठि जे पोयां ज्वालामुखी दुखी रहियो आहे। बोझु

---

1. जी. एम. सैय्यदः ''सिंधूअ जी साञाह'', जुल्दु 2, सुफ़्हो 81.
2. जी. एम. सैय्यदः ''सिंधूअ जी साञाह'', जुल्दु 2, सुफ़्हो 97.
3. जी. एम. सैय्यदः ''पाकिस्तान जे माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल ते हिक ज़ाइराना नज़र'', 1971 ई., सुफ़्हो 247.

हद खां वधीक वधी वियो आहे, पर सिंधु ईरानियुनि ऐं यूनानियुनि, अरबनि ऐं पठाणनि, मुग़लनि ऐं अंग्रेज़नि जे फ़तहनि खां पोइ बि ज़िंदह रही आहे ऐं हाणे बि ज़िंदह रहंदी। हूअ पाकिस्तान तरफ़ मुंहुं करे चवे थी-

आडो टकर टरु,
मतां रोह रतियूं थिएं।

(ओ रंडक विझंदड़ टकरी, परे हटु, न त ज़रो ज़रो थी रतियूं थी वेंदीअं।)

हू ख़ुदा मां ज़ालिम हाकिम जे ख़ातिमे लाइ आशाऊ आहे-

मुंहिंजी आस इहा,
कडहिं केराईंदी कोट खे।

(मूंखे उन्हीअ कोट जे डहण जो इंतज़ार आहे, मूंखे पक आहे त सिंधु जेकडहिं पंहिंजी मदद पाण कंदी त भगवान जी मदद पिण खेसि मिलंदी।)

पाण्हे ई ईंदो होत,

आऊं पिण अगभरी थियां।

(मुंहिंजो साईं ईंदो, पर मूंखे पिण साणुसि अध रस्ते तां मिलण लाइ पाण अगियां वधिणो आहे।)

ऐं अहिड़ीअ तरह सिंधु, सिंधु जी आगाटी रूहानी रोशनीअ जे मर्कज़, पोरबंदर डांहुं ग़ैबी मदद लाइ वाझाए रही आहे-

पूरब मारेली,
कंहिं दर डींदा दांहंड़ी?

(मां त ओभर जी मारियल आहियां, इन्हीअ गाल्हि जी दांहं मां कंहिंखे डींदियसि?)

सिंधियुनि पाकिस्तान खे पूरीअ तरह रद्द कयो आहे, जीअं जी. एम. सैय्यद मथे बुधायो आहे।

———

17

ख़ुदा खे ख़बर

सिंधियुनि पाकिस्तान खे पूरीअ तरह ख़ारिज (रद्द) कयो आहे। पर पाकिस्तान प्रशासन, जेको अमेरिका जो छाड़तो आहे, इन्हीअ खां दर-गुज़र थियण जो इरादो नथो रखे। हिते हिक अझोल ताकत आहे, जेका अटल शइ जे साम्हूं आहे। अहिड़े धमाके वारी सूरतहाल जो अंत कहिड़ो थी सघे थो? ख़ुदा खे ख़बर। पर इन्सानी तारीख़ जे रोशनीअ में .... ऐं अकुल सां अंदाज़ो लग॒ाए सघिजे थो।

हिन वक्त पाकिस्तान में ऐं ख़ास करे सिंधु में माण्हू आम चूंडूं चाहीनि था। छाकाणि जो अग॒ु में हिंदुस्तानी हुअण जे हैसियत सां हू 1921 ई. खां वठी चूंडूं थींदे डि॒संदा आया आहिनि। हू अरबनि ऐं ईरानियुनि वांगुरु नाहिनि, जिनि खे चूंडुनि जी कड॒हिं बि ख़बर न पेई। विरहाङे खां पोइ हिंदुस्तान वांगुरु वटिनि सत भेरा चूंडूं न थियूं आहिनि। पर वटिनि 1954 ई. में, 1971 ई. में ऐं वरी 1977 ई. (उन खां पोइ 1985 ई., 1988 ई. ऐं 1990 ई. में) चूंडूं थियूं आहिनि। 1954 ई. जे चूंडुनि खां पोइ ओभर बेंगाल (तड॒होके ओभर पाकिस्तान ऐं हाणोके बंगलादेश) जो फ़ज़ल अलहक ओलह बंगाल (हाणे हिंदुस्तान जो सूबो) में वियो ऐं कलकत्ते में चयाईं त ''जिनि माण्हुनि मुल्कनि खे विरहायो आहे, उहे ग़द्दार आहिनि'' (देश विभाजन जरा कोरपछे, तारा, देश द्रोही) संदसि अहिड़े जतन करण करे, खेसि पोइ मुअतल कयो वियो, पर 1971 ई. जे चूंडुनि फ़ज़ल अलहक खे बेडो॒ही हुजण खां वधीक साबित कयो। जड॒हिं मुजीब अलरहमान ओभर पाकिस्तान खे पाकिस्तान जे कालोनीअ मां बंगलादेश जे ख़ुदि-मुख़्त्यार मुल्क में तबदील करे छडि॒यो। हैरत आहे जो पाकिस्तान हुकूमत तड॒हिं बि चूंडूं नथी चाहे।

अज॒ु कुझु फ़ौजी आफ़ीसर गवर्नरनि, खातनि जे मुखियाउनि, कलेक्टरनि, जजनि जे हैसियत सां कम करे रहिया आहिनि। उहे का शइ छड॒ण लाइ तैयार नाहिनि। पोइ चाहे उहे उन्हीअ जो मालिक बि न हुजनि, पर चूंडुनि जे घुर पोयां हिकु बि॒यो वडो॒ कारण आहे, ऐं फ़ौज उन्हीअ खां हिरासियल आहे। अज॒ु

कल्ह पाकिस्तान जे सभिनी सूबनि में इहो यकीन वेठल आहे त खेनि वधीक अख़्तियार हासिल हुअणु घुरिजे। जेका पार्टी सभिनी खां वधीक ख़ुदि-मुख़्त्यारीअ जी घुर कंदी, खेसि ई घणे खां घणा वोट मिलंदा। संदनि असुली घुर इहा आहे त पाकिस्तान जे सूबनि जी कन्फेडरेशन हुअणु घुरिजे ऐं मर्कज़ वटि रुगो बचाव, विदेशी, आमदरफ़्त ऐं नाणे जा खाता हुअणु घुरिजनि। फ़ौज लाइ सूबनि खां नाणो संदनि मंज़ूरीअ सां मिलणु घुरिजे। उहो मुजीब उल रहमान जो पुराणो छह नुक्तनि फ़ार्मूलो आहे, जेको वरी कमु करे रहियो आहे। फ़ौज अहिड़ो को बि मंसूबो नथी चाहे। हुन अमेरिका खे इन्हीअ तक तोर सां डेजारे छड़ियो आहे त पाकिस्तान में जेकडहिं चूंडूं करायूं वेंदियूं त ''खाबी धुरि'' खटी वेंदी। अमेरिका जे नज़र में का बि ''खाबी धुरि'' कम्यूनिज़म आहे, पर हकीकत इहा आहे त पाकिस्तान जा सूबा ''खाबी धुरि'' न बणिबा। उहे कौम परस्त बणिबा। पर अमेरिका टीं दुनिया जे डिप्लोमेसी जे हदुनि में अहिड़े उम्दे फ़र्क मां ठहिकियल नाहे। ज़ाहिरी तरह जेको अमेरीकी इरादनि जे ख़िलाफ़ आहे, उहो आहे ख़राब, उलट पुलट कंदड़ कम्यूनिस्ट। इहा ग़ाल्हि डखण अफ़्रीका खां बिल्कुल मुख़्तलफ़ नाहे, जिते जंहिंखे प्रगतिशील (Aparthied) समुझियो वेंदो आहे, उहो 'कम्यूनिस्ट' कोठियो वेंदो आहे।

हूंअं पिण अमेरिका लोकतंत्र पसंदनि जे भेट में, जिनि जो ज़हन ऐं लाड़ो पंहिंजो हूंदो आहे, डिक्टेटरनि, अहमियत तौर फ़ौजी किस्म जे डिक्टेटरनि सां वास्ते रखण खे अहमियत डींदो आहे।

पाकिस्तान अमेरिका जो बे हयाउ ग्राहक तडहिं खां थी रहियो आहे, जडहिं न्यूयार्क टाईम्स अख़बार लियाकत अलीअ जी अमेरिका में अचण ते संदसि आजियां कंदे पहिरिएं सुफ़्हे ते उर्दूअ में लिखियो हो, भली आया। अय्यूब ख़ान जे भाउ सरदार बहादुर ख़ुदि चयो त 1958 ई. जो फ़ौजी इंकलाब सी.आई.ए. जे चवण ते आंदो वियो हो। जेसताईं अय्यूब ख़ान पाकिस्तान जे जुरियत वारो हो, हुन हर साल अमेरिका जो दौरो कयो ऐं हर भेरे सी.आई.ए. जे वाला रेलन सां मुलाकात कंदो हो। रेलन ख़ुदि तसदीक कई त पाकिस्तान फ़ौजी डिक्टेटरशिप हेठि एशिया में आज़ादीअ जे पनाह वांगुरु आहे। अगूणे अमेरीकी एम्बेसेडर न रुगो 'जिन्नाह टोपी' पाती, पर संदसि धीअ बहादुरु सिकंदर मिर्ज़ा जे पुट सां शादी बि कई। हकीकत में एयर मार्शल असफ़रख़ान

जे लफ़्ज़नि में "सिकंदर मिर्ज़ा जो अमेरिका जे हक में हुजणु घणो करे ख़ुदि अमेरिका खे परेशान करे छड्डींदो हो।" अमेरिका खे ख़ुशि करण लाइ अय्यूब ख़ान मिस्र जे अब्दुल फ़ासिर जी मुख़ालिफ़त कंदो हो ऐं ज़िया-उल-हक वरी ईरान जे इमाम ख़ुमैनी जी मुख़ालिफ़त कंदो आहे। (11 सालनि जी हुकूमत खां पोइ ज़िया-उल-हक आगस्ट 1977 ई. जे हवाई हादसनि में मरी वियो।) पाकिस्तान मां लोकतंत्र जी उम्मेद न रखणु घुरिजे।

तंहिं करे ज़िया-उल-हक जे मर्ज़ीअ खां वधीक अमेरिका कड्हिं बि चूंड्रूं कराइणु नथो चाहे। हकीकत में अमेरिका ज़िया-उल-हक खे उछिले फिटो कंदो, जेकड्हिं गिला घणी थींदी वेंदी। संदसि जाइ ते बियो जनरल थाफियो वेंदो, जीअं हू पेंटीगान जे आराम लाइ कुझु वधीक साल कढी सघे। नईं बुहारीअ मां कुझु वक्त लाइ बहितर सफ़ाईअ जी उम्मेद कबी आहे। पर चङीअ तरह न। नओं डिक्टेटर, पुराणे डिक्टेटर जे कंहिं हिस्से जेतिरो बि जटाउ न कंदो। उन्हीअ विच में लोकतंत्र लाइ जनता जी घुर मुकाबिलो करण लाइ ज़ोरु वठंदी। उन्हीअ वक्त अमेरीकी लोकतंत्र जो विवेक जागी पवंदो। चूंड्रूं कराइण जो फ़ैसिलो थींदो, पोइ चाहे ज़िया इहो चवे त 1978 ई. में अल्लाह खेसि ख़्वाब में चयो हो त "चूंड्रूं ग़ैर इस्लामी" आहिनि। इहा गाल्हि काफ़ो दिलचस्प आहे त जिन्नाह फ़ैसिलो डिनो हो त "मुसलमान जेकी बि करे थो, उहो इस्लामी आहे" ऐं पाकिस्तान जा मुसलमान चूंड्रूं चाहीनि था। थी सघे थो त इहे चूंड्रूं अहिड़ियूं ई तबाह तूफ़ान साबित थियनि, जहिड़ियूं 1971 ई. जूं चूंड्रूं थियूं हुयूं।

हीउ हिकु वाजिबी सुवाल आहे त बियनि टिनि प्रांतनि जे भेट में चूंड्रुनि लाइ वधीक ज़ोरदार घुर सिंधु में छो आहे? हकीकत इहा आहे त सभेई सूबा चूंड्रूं चाहीनि था। पर के परगिणा मकानी सबबनि करे वधीक जल्दी चाहीनि था। पंजाब अजु कल्ह फ़ौज जे ज़रीए समूरे पाकिस्तान ते हुकूमत करे रहियो आहे। तंहिंकरे संदसि जल्दी चूंड्रूं कराइण लाइ मंशा न आहे जो इएं करण सां सूबनि खे वधीक आज़ादी मिलंदी ऐं संदसि रुतबो बि घटिबो।

बिए तरफ़ सिंध, बलूचिस्तान ऐं सरहद जी जनता चूंड्रुनि कराइण लाइ घणी ख़्वाहिशमंद आहे। हू आज़ादीअ खां वधीक ख़ुदि-मुख़्त्यारी चाहीनि था। पर जुदा कौमियतुनि तौर संदनि अंदर में मुख़्तलफ़ भौतिकवादी घड़ियालु

टिक-टिक करे थो। 1970 ई. जे ड॒हाके वारी बलूचिस्तान जे आज़ादीअ जी लड़ाईअ में पाकिस्तान खे सूबे में हिकु लख फ़ौज मोकिलिणी पेई, जंहिंजो रोज़ानो ख़र्चु हिकु किरोड़ रुपया हो। जेको घणो करे शाहु ईरान पंजनि सालनि ताईं भरींदो रहियो। आख़िरि में 5300 बलूच गोरीला ऐं 3300 पाकिस्तानी फ़ौजी मारिजी विया। अजु॒कल्ह जेकड॒हिं को बलूच पुलिस खाते में वडे॒ में वडो॒ उहिदो माणे सघे थो त उहो सब-इंस्पेक्टर जो आहे। मुकरर बलूच वज़ीर ऑला, सरदार मेंगल जे लफ़्ज़नि में- ''कलात स्काऊट में को कलाती नाहे'' ऐं ''मकरान मलेशिया में को मकरानी नाहे।'' अहिड़ीअ हालत में बलूच जनता रुगो॒ चूंडूं नथी चाहे, पर इंकलाब चाहे थी, जेको खेनि आज़ादी डि॒यारे। इहे पंहिंजे तरीके सां मुनासिब वक्त ते हमलो कंदा।

सागी॒ कारि सरहद (NWFP) बि कंदी। हिते लखें अफ़ग़ानी मुहाजिर (शरणार्थी) अगे॒ ई चवनि पिया- ''असां पंहिंजे वतन पुख़्तोनिस्तान में आया आहियूं।'' ऐं इन्हनि वेझिड़ाईअ वारनि सालनि में कंहिं साल खेनि जुदा पुख़्तोनिस्तान जी ख़ुदि-मुख़त्यार रियासत हासिल थींदी। इहो इएं ई नाहे जो वली ख़ान चयो आहे त पठाण कंहिं बि हथियार ठाहिण जी योजना ठाहिनि पिया, ''सवाइ एटम बम जे।'' पर इहे ज़ाहिरी तरह मौकनि जी तलाश में आहिनि। खेनि ख़बर आहे त सर्द जंगि खे गरमाइणु, ख़ास करे संदनि अफ़ग़ान सरहद ते, मामलनि खे गा॒टे भरि केराइण जो वक्तु नाहे।

हकीकत में बु॒ई वडि॒यूं ताकतूं, हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान बि॒न्हीं मुल्कनि में बदिनाम आहिनि। अलबति समूरे हिंदुस्तानी उपबे॒ट जा माण्हू महसूस कनि था त उहे ताकतूं संदनि शोषण करे रहियूं आहिनि ऐं संदनि इख़्तलाफ़नि जो फ़ाइदो वठी इस्तैमाल करे रहियूं आहिनि त जीअं उन्हीअ एराज़ीअ में पंहिंजूं ख़्वाहिशूं अगु॒भरो करे सघनि। यकमुश्ती भारत खे शक्तिशाली बणाईंदी, अमेरिका ऐं सोवियत रूस सां बराबरीअ जो वहिंवार कंदो।

इझो हाणे सरहद जे परींअ भरि सोवियत रूस अफ़ग़ानिस्तान जे सरहदुनि अंदरि वेही रहियो आहे। सरहद या बलूचिस्तान में कंहिं बि जनता जे तहिरक जे करे ज़िया-उल-हक खे वधीक अमेरीकी हथियार हासिल थी वेंदा। जेकड॒हिं इएं थियो त अलासिलवाडोर वांगुरु कुझु हज़ारे अमेरीकी फ़ौजी सलाहकार पिण हासिल थींदा। पाकिस्तान जी जनता अमेरीकी फ़ौज जे

मौजूदगीअ खां जिंद छड॒ाइणु चाहींदी। इहो तरीको रुगो॒ पाकिस्तानी सर-ज़मीन ते रूसी-अमेरीकी तबाहीअ जो भंभट ब॒ारे सघे थो ऐं रूस इहो नथो चाहे, संदसि हथ हद खां वधीक अफ़ग़ानिस्तान में फाथल आहिनि। खेसि ख़बर आहे त पाकिस्तान संदसि ज़ेरदस्त नाहे। ख़ेबर खां अगि॒ते थियण मां मुराद आहे जंगि, जेका टीं महाभारी लड़ाई थी सघे थी। तंहिंकरे सरहद ऐं बलूचिस्तान ज॒ाणी वाणी ढिल डि॒यो वेठा आहिनि, खेनि ख़बर आहे त वक्तु संदनि फ़ाइदे जो आहे।

पर इहा सिंधु लाइ ज़बरदस्ती न आहे, हूअ पंहिंजो पाण खे काबुल में रहियल रूसियुनि खां काफ़ी परे महफ़ूज़ डि॒से थी। बलूचिस्तान जे मुशाबहत सिंधु में नकी पंजाबियुनि जो ग़लबो आहे ऐं न ई उहे वड॒े तादाद में रहनि था। सिंधु पंजाबियुनि ऐं हिंदुस्तानी मुहाजिरनि जे भीड़ हेठि आहे। तंहिंकरे वटिसि का हिकमत-अमलीअ जी रम्ज़ आहे। सचु पचु त हिंदुस्तानी तइलीमी, सांस्कृतिक ऐं शाहूकार कुटंबनि जे घणे तादाद में वसण, सिंधु जे सूरत में हिस्सो वरितो आहे। हूअं बि सरहद ऐं बलूचिस्तान जे भेट में सिंधु सियासी तौर वधीक सुजाग॒ आहे। वधीक सिंधु इहो डि॒से थी त संदसि लंबी चौड़ी सरहद ते हमदर्द हिंदुस्तान आहे। इन्हनि सभिनी ग॒ाल्हियुनि गडि॒जी ज़िया-उल-हक जे ख़िलाफ़ एम. आर. डी. 1 खे बि॒यनि सूबनि जे भेट में सिंधु अंदर वधीक ज़ोरु वठायो। मथां वरी जीए सिंध जो जज़्बो कमु करे रहियो आहे।

हिकु जाइज़ सुवाल उथंदो- जेकड॒हिं हिंदुस्तानी रियासतूं गडु॒ रही सघनि थियूं त पोइ पाकिस्तानी सूबा पाण में छो नथा गडु॒ रही सघनि? नेठि त उहे साग॒ीअ नदीअ जे माथुरीअ में हिक यकसां रियासत आहिनि। उहे गडु॒ नथा रही सघनि, इन्हीअ जा टे ठोस कारण आहिनि। हिंदुस्तान घणनि सूबनि ते बीठल आहे, मंझांउनि कंहिं बि सूबे जो पोंयनि ते ग़लबो नाहे। एतिरे कदुरु जो सभ खां वड॒े सूबनि, उत्तर प्रदेश जूं सीटूं लोक सभा जे जग॒हियुनि जे छहें हिस्से खां बि घटि आहिनि। उन जे मुशाबहत में पाकिस्तान जो पंजाब सूबो बि॒यनि सूबनि जे मिलाइण खां पोइ बि वडो॒ आहे।

पाकिस्तानी फ़ौज जी, जेका बुनियादी तरह पंजाबी आहे, अमेरीकी हिमायत पंजाब खे वडी॒ हथी डि॒ए थी। इहा ग॒ाल्हि सिंधु ऐं बि॒यनि सूबनि लाइ पाण वधीक काबिल कबूल नाहे।

टियों इस्म भौतिकी आहे। हिंदुनि में सहष्णुता जो मादो एड़ो घणो आहे, जो ग़ैर हिंदूअ खे बि बर्दाश्त कनि था। पर मुसलमाननि में सहप नाहे। एतिरे कदुरु जो मुसलमान, मुसलमान खे बि बर्दाश्त नथो करे।

हिक अल्लाह वारे (Monotheistic) इस्लाम जी इहा Wages (पघार-एवज़ो) आहे ऐं घणनि देवताउनि वारे (Polytheistic) हिंदू धर्म जो इहो Bouns (इनाम) आहे। अर्नोल्ड टाइन बी. जपान जे संकागिकाई वारे दाइ सका अकीदा सां पंहिंजे ''डायलॉग'' में चवे थो- ''हिंदुस्तानी ऐं ओभर एशियाई सिद्धांत वहदत Pantheism (अद्वैतवाद- फ़कति हिकु ई) वारो आहे। यहूदी मज़हबनि (जंहिं में यहूदियत, ईसाईयत ऐं इस्लाम अची वञनि था) ख़ुदाई (Divinity) अनासर (तत्व) खे हिक मुफ़रद (Unique) ईश्वर वांगुरु (Omnipotent), सृष्टीअ खां ब़ाहिरि उपाईंदड़ ख़ुदा में यकजा कयो आहे ऐं इन्हीअ ''ख़ुदाईअ'' जी बंदिश, इंसानी सुभाअ सां गडु कुदरत खे उन जे ख़ुदाईअ खां महरूम कयो आहे। उन जे भेट में, नएं ज़माने जे ओलह जे असर खां अगु हिंदुस्तान ऐं ओभर एशिया में समूरी सृष्टी ऐं उन में हर शइ जी मौजूदात, जंहिं में ग़ैर इंसानी कुदरत ऐं इंसान ख़ुदि अची वञनि था, ख़ुदाई हुई ऐं तंहिंकरे इंसानी अखियुनि में हिक सहनशीलता ऐं शानु हो, जंहिं इंसानी उछल खे गैर इंसानी कुदरत ते हिंसा करण खां रोके रखियो हो.... मुंहिंजो वेसाहु आहे त इंसान ज़ात खे अद्वैतवाद (फ़कति हिक ई आहे वहिदत) ड़ांहुं मोटी वञण जी ज़रूरत आहे।'' यहूदी हिक ख़ुदा वारनि मज़हबनि जा हाणोका पोइलगु सभ जा सभु अगूणा वहिदत अलवजूदी (अद्वैतवाद) आहिनि। इहा तारीख़ी हकीकत ब़ुधाए थी त (अद्वैतवाद-वहिदत) जे लाड़े ड़ांहुं संदनि मोटी अचण जी कुझु उम्मेद थी सघे थी। जो हाणे खेनि कुदरत लाइ ख़ुदाई इज़्ज़त जे कमीअ जे नतीजनि जे ख़राबीअ जी ख़बर पेई आहे।

पर इहो सभु कुझु नाहे- पाकिस्तान हिकु बे-दिलियो ऐं ज़ोरीअ मढ़ियल मुल्कु आहे। 1946 ई. जे असेम्बलीअ जे चूंडुनि में पिण सिंधियुनि जी घणाई विरहाङे जे हिमायती उम्मेदवारनि जे हकनि में वोट न ड़िनो। जेतोणीक सिंधु सूबे जी मुसलमान आबादी 70 सेकड़ो हुई। बलूचिस्तान जो चोटीअ जो अगुवान ख़ान बिस्मिल ख़ान विरहाङे जे बर्ख़िलाफ़ हो। कलात जे ख़ान हकीकत में हिंदुस्तान सां मिलण जी दरख़्वास्त ड़िनी। उहे बर्तानिया जा गुलाम कबाइली जरगाई हुआ, जेके पाकिस्तान जे हक में हुआ। सरहद में 1946 ई.

में कांग्रेस जी हुकूमत चूंडिजी आई हुई। उहा पंहिंजे कोताहीअ जे करे पाकिस्तान थियण सां शामिल थी। छो जो ओलह पंजाब विरहाङे लाइ विच में अचण करे सरहद सूबे जो नएं हिंदुस्तान खां ज़मीनी सम्पर्क ख़तम थी वियो हो। अंग्रेज़नि खेसि आज़ादीअ जी ख़्वाहिश करण न ड॒िनी। नफ़रत विचां सरहद सूबे जे कांग्रेस रेफ़्रेन्डम जो बहिष्कार कयो। बुज़ुर्ग ग़फ़ार ख़ान हक ते शिकायत कई त खेनि ''बघड़नि जे हवाले'' कयो वियो आहे।

अहिड़ीअ रीत ड॒िसिबो त सिंधु, सरहद ऐं बलूचिस्तान में हिंदुस्तानी हक में हुजण जूं लोकतंत्री ख़्वाहिशूं नयूं न हुयूं। उहे 1947 ई. में पिण मौजूद हुयूं। मुस्लिम लीग मुसलमाननि जे घणाईअ वारनि सूबनि में अध जेतिरी बि मशहूर न हुई। जेतिरी उहा मुसलमाननि जे थोराईअ वारनि सूबनि में हुई। हकीकत में पाकिस्तानी पंजाब हाणे ई पंहिंजे पंजाबी सुञाणप जी नईं गहिराइप हासिल कई आहे। अजु॒ कल्ह पाकिस्तान में पंजाबी फ़िल्मूं कामयाब आहिनि, जड॒हिं कि उर्दू फ़िल्मूं नाकाम वञनि थियूं।

जीअं त पंजाब में उर्दूअ जी रवायती तरह सरकारी ज़बान जी हैसियत रही आहे, इन्हीअ करे पिण त उर्दू पाकिस्तान जे टिन्हीं सूबनि जे भेट में पंजाबी मुहाजिर (शरणार्थी) जे गठजोड़ खे मज़बूत करे थी ऐं उर्दूअ खे पैन-इंडो-मुस्लिम ज़बान जे हैसियत में ठाहे थी। तंहिंकरे अजु॒ कल्ह पंजाब पाकिस्तान में उर्दूअ जी हिमायत करे थो। बदिलियल हालत में पाकिस्तानी पंजाब उर्दूअ खे पिण विसारे सघे थो। जोश मलीहाबादीअ चयो हो त इन में को वधाउ न आहे त उर्दूअ जो भविष्य हिंदुस्तान में थी सघे थो पर पाकिस्तान में ईंदड़ु वक्तु उन लाइ ऊंदाहो आहे।

विरहाङे खां पोइ कुझु वरिह्य अगु॒ लाहौर में पंजाब यूनीवर्सिटीअ जे मुसलमान शागिर्दनि फ़ैसिलो कयो हो त ताकतवर जानवर भली कमज़ोर जानवरनि जो शिकार कनि। मुसलमाननि खे हिंदुनि सां गड॒िजी रहण जो कुदरती हकु हासिल आहे। पर कुझु वरिह्य अगु॒ सागीअ पंजाब यूनीवर्सिटीअ जे शागिर्दनि फ़ैसिलो कयो त पंजाब कौमी ड॒ींहुं ''वेसाखी'' आहे! ज़ाहिर आहे, खेनि ख़बर न हुई त 'वेसाखी' हिंदुनि जे नएं साल जो पहिरियों ड॒ींहुं आहे। पंजाबी-मुसलमाननि जो इहो कुदरती हिंदूपिणो बि आहे। इहे समूरा ''मुसलमान हिंदुस्तानी'' आहिनि या इएं खणी चइजे त 'मुसलमान हिंदू'

आहिनि ऐं न की 'हिंदुस्तानी मुसलमान'। हू हिंदुस्तानी आहिनि, जेके मुसलमान आहिनि। न की मुसलमान, जेके हिंदुस्तानी आहिनि।

हिक भेरे जड॒हिं अग॒णो गवर्नर ग॒ुलाम मुहम्मद सिंधु जे मंछर ढंढ जो ब॒ेड़ीअ में सैर करे रहियो हो त हिक ब॒ी ब॒ेड़ीअ मां को गीत ग॒ाए रहियो हो-

छडि॒ झगि॒ड़ा मस्जिद मंदिर दा,
घन.... टोर तरीका कलंदर दा।

(मस्जिद ऐं मंदिर ते झगि॒ड़ो न करि ऐं कलंदर जो ब॒ुधायल मुहब्बत जो रस्तो अख़्त्यार करि।)

पंजाबी ग॒ुलाम मुहम्मद रुअण में अची छुटकियो। गवर्नर जनरल खे चुप कराइण लाइ ग॒ाईंदड़नि वारी ब॒ेड़ीअ खे परे हलियो वञिणो पियो।

न, पंजाबी मुसलमान पिण अवलि पंजाबी आहिनि ऐं हिंदुनि खे दलील डि॒यण लाइ या सऊदियुनि खां नौकरी वठण लाइ रुग॒ो मुसलमान आहिनि। के सिंधी मायूसीअ विचां चवंदा आहिनि त जेकड॒हिं खेंनि इस्लाम ऐं सिंधियत मां कहिं हिक जी चूंड करिणी पवे त उहे सिंधियत ई चूंडींदा। (''सिंधियत'' जो लफ़्ज़ ''सिंधी कल्चर'' लाइ आज़ादी/विरहाङे खां पोइ जोड़ियो वियो आहे। उन खां अग॒ इहो लफ़्ज़ फ़ारसीअ में 'सिंधी तहज़ीब' ई थी कम ईंदो हो।) पर इहो मसइलो मौजूद नाहे। पाकिस्तान में माण्हुनि जी बुनियादी देश भगि॒ती पाणमुरादो जाग॒ी आहे। (दावा करे थी)। इस्लाम रुग॒ो संदनि कौम परस्तीअ मथां हिकु सन्हिड़ो तहु आहे। उहे पंहिंजीअ उसूलियत डा॒हुं अचणु चाहीनि था ऐं बि॒ए लाइ मुसीबत जो बाइसु न थींदा। एतिरे कदुरु जो पंजाब इहा ग॒ाल्हि कबूल कंदो त वेदनि जे ज़माने खां वठी सिंधु ऐं पंजाब जुदा जुदा मुल्क हुआ, जिनि खे सिलसिलेवार ''सिंधू'' ऐं ''सिद्ध वीर'' (सौवीर) ज॒ातो वेंदो हो। सिंधूअ जो मर्कज़ ''मुअनि जो दड़ो'' ऐं सिद्ध वीर जो स्थान ''हड़प्पा'' हुआ। पुराणो इतिहास पंहिंजो पाणु दुहिराए थो। (आग॒ाटियूं हकीकतूं पंहिंजो पाण दावा कंदियूं।) सचु पचु जेतिरो असां तब्दील थियूं था, ओतिरो साग॒िया रहूं था। सिंधी सिंधी रहनि था ऐं पंजाबी पंजाबी रहनि था ऐं इस्लाम पिण सभिनी खे 'पाकिस्तानी' नथो ठाहे सघे।

हिन हालति में कान्फीड्रल सिरश्तो, जंहिं में चइनी सूबनि लाइ दोस्ताणनि आज़ादी हुजणु, पाकिस्तानी मसइले लाइ दुरुस्त हलु हुअणु घुरिजे।

पर इन्हीअ ग॒ाल्हि खे अमेरिका कीअं ड॒िसंदो? हू पाकिस्तान खे ओलह एशिया में पंहिंजनि ब॒िनि पुलिस वारनि/चौकीदारनि मां हिक जी हैसियत ड॒िए थो, ब॒ियो पुलिस वारो चौकीदार आहे इज़राईल। इज़राईल अरब मुल्कनि खे ब॒ाहिरां हिक कतार में बीहारे थो। पाकिस्तान मुसलमान हुजण करे खेनि अंदिरां हिक कतार में रखण जी हैसियत में आहे। अमेरिका जे नौकरीअ लाइ पाकिस्तान जे उन्हीअ अंदरूनी पुलिस जे किरदारनि खे थोरो वक्तु जारी रखण जी इजाज़त ड॒िनी वेंदी, जेसताईं पाकिस्तान खे अंदरूनी तौर ते मान्यता हासिल आहे। जेकड॒हिं बर्तानिया काठमंडूअ में पंहिंजी फ़ौज रखी सघे थो त अमेरिका बि पंहिंजूं फ़ौजूं लाहौर में रखी सघे थो। बशर्ते ब॒ई धुरियूं इहो ई चाहींदियूं हुजनि! इन्हीअ उम्मेद सां त जीअं तेल पाणेही ख़तम थींदो त पाकिस्तानी सर-ज़मीन में अमेरिका जी दिलचस्पी घटिजंदड़ हिकमत अमलीअ वारी थींदी।

ओलह एशिया जी सभ खां वड॒ी ताकत, हिंदुस्तान इहा पक ड॒िनी आहे त अमेरीकी हिकमत अमले वारा फ़कति पाकिस्तान में घणो मुतासिर न थींदा। इहा पक अमेरिका खे पाकिस्तानी सर-ज़मीन जी वधीक हकीकत पसंदाने नमूने नएं सिर योजना ड॒ियण में ठहिकाए सघंदी।

हिकु ब॒ियो बि मसइलो आहे। कान्फीडरेशन जो लाड़ो फेडरेशन वणिजण ड॒ांहुं आहे ऐं फेडरेशन जो लाड़ो वफ़ाफ़ी (फेडरल) खां वहदानी (यून्बइरीअ) ड॒ांहुं वधीक आहे। ब॒ीअ सूरत में इन्हीअ जो लाड़ो केतिरनि ई जोड़ींदड़ यूनिटनि में विरहाइजी टुकर टुकर थी वञण ड॒ांहुं आहे। जीअं त पाकिस्तानियुनि यूनीटरी तरीको आज़मायो ऐं रद्द कयो आहे, तंहिंकरे हाणे मुकम्मल आज़ादीअ ड॒ांहुं वधी सघिया आहिनि। जेकड॒हिं इहा संदनि स्वतंत्रता जी भावना आहे त इहा भली हुजे; पर सिंधू नदीअ जो सिरश्तो खेनि माली सहकार में हमेशा ब॒धल रखंदो। पंजाब खे कराची बंदर ताईं मुफ़्त रसाईअ जी ज़मानत ड॒ेई सघिजे थी। हकीकत में जड॒हिं कराची बंदर सिंधु जो सियासी हिस्सो आहे त चारई सूबा गड॒िजी उन्हीअ जो इंतज़ाम हलाए सघनि था। इहा ग॒ाल्हि सभिनी सूबनि लाइ दिलपसंद थींदी।

मुहाजिरनि खे सिंधु में पंहिंजे मुस्तकबल (भविष्य) लाइ डिज॒णु न घुरिजे। कुझु वरिह्य अग॒ु उन्हनि चयो हो त हिंदुस्तानियुनि खे संदनि बारे में

सोचण घुरिजे, जो उहे पिण "हिंदुस्तान जा असुलोका रहाकू" हुआ। पर साज़ सलूक जहिड़ो ॿियो को बचाउ ई नाहे।

ॿी सूरत में सिंधु जे शहरनि में मुहाजिर-ॿेट हमेशा ॾेही सिंधी आबादीअ सां घेरियल रहंदा। पर सिंध में मुहाजिरनि खे अहिड़ो डपु नाहे। सिंधु में हिन खां पोइ को बि खेनि "माकड़ि" न कोठींदो, बशर्ते कि हू सिंधियुनि सां अमन सां रहनि। सिंधु जे बुज़ुर्ग जी. एम. सैय्यद चयो आहे त जेको बि पंहिंजो पाण खे सिंधी ऐं उनजे कल्चर जो सॾाईंदो, खेसि सिंधी तौर कबूल कयो वेंदो। नेठि इहो पहिरियों भेरो नाहे जो धारिया कंहिं एराज़ीअ में अची वसिया आहिनि, जिते उन्हनि हमेशा नईं धरती ऐं नईं हालति सां पाण खे ठहिकायो आहे त जीअं उन्हनि सां ऐं दुनिया सां अमन सां रहनि। "नवां सिंधी" पुराणनि सिंधियुनि सां तालमेल जी शुरूआति करे रहिया आहिनि। हसियत अलउमाउ पाकिस्तान पार्टीअ जो जनरल सेक्रेट्री ऐं मुहाजिरनि जो अॻुवान मौलाना नूरानी खुलियो खुलायो सिंधी हकनि जी हिमायत करे रहियो आहे।

सिंधु में अहिड़ा माण्हू बि आहिनि, जेके चवनि था त हिंदुस्तानु खेनि पाकिस्तान खां निजात ॾियारे ऐं पोइ खेनि हिंदुस्तान में या हिंदुस्तान खां ॿाहिरि रखे। हिंदुस्तान जो अहिड़ी सार संभाल वारो अमल, लोकतंत्र लाइ जद्दोजहद कंदड़ भाउरनि लाइ लोकतंत्र- माण्हुनि तरफ़ां निजात जो जाइज़ अमल थींदो। शेख़ अय्याज़ जेको सिंधु जो नओं मायानाज़ शाइर आहे, चवंदो रहियो आहे, "जय सिंधु! जय हिंद!" इहा ॻाल्हि हिंदुस्तान जे हुकूमत जे फ़ैसिले ते आहे त खेसि पाकिस्तान में लोकतंत्र ॿार खे जनम ॾियारण में मदद करणु घुरिजे या न। पर हू जेकॾहिं मदद नथो करे त उतां जा रहवासी ख़ुदि हालतुनि खे संभाले सघनि था।

पाकिस्तान 1948 ई. में कराचीअ खे सिंधु खां खसियो ऐं 1954 ई. में सिंधु खे ज़ोरीअ 'वन यूनिट' में जज़्ब कयो वियो। पर सिंधी 'वन यूनिट' खे टोड़ण में कामयाब विया ऐं 1971 ई. में कराची वापस वरिताऊं। मंझिनि ख़ुदि मुख़्त्यारी, जेका हू चाहीनि था, हासिल करण जे इरादे जी मुहकमता आहे। एतिरे कदुरु जो हुननि "जीए सिंधु" तहिरक जो निशान "कुहाड़ी" (संस्कृत में "परसो") पाणेही ॾिनो आहे। जंहिं मां को बि शक बाकी नथो रहे त इन्हीअ मां संदनि कहिड़ी मुराद आहे।

इहो सचु आहे त सिंधी पेर खोड़े लड़ायूं नथा लड़नि। हू जडंहिं आज़ाद हुआ त का बि लड़ाई न विढ़िया। हू पंहिंजे लाइ बलूचनि खे विढ़ण लाइ रखंदा हुआ, पोइ दुश्मन भली नादिरशाह हुजे या नेपीअर। पर हुरनि जे हिकिड़े तबेले अंग्रेज़नि खे 1943 ई. में अहिड़ा टोटा चबाया जो खेनि अधु सिंधु में समूरे साल लाइ मार्शल लॉ लागू करण जी ज़रूरत पेशि आई। देर सां सजी सिंधु हथियार खणी उथी बीठी, पोइ खणी उहे हथियार लठियुनि ऐं कुहाड़ियुनि ते बीठल हुआ।

सिंधी किसान अगुवान, रसूल बख़्श पलेजो 1979 ई. खां जेल में आहे। एतिरे कदुर जो सिंधु जे ग्रेज्युएट एसोसिएशन ते बंदिश पियल आहे। का बि हुकूमत जनता जी दलील नथी करे सघे, जेकडहिं उहा हिकु भेरो उथी बीहे थी। तंहिंकरे जेकडहिं हिंदुस्तान जी हुकूमत कार्रवाई नथी करे त पाकिस्तान जे आम जनता खे पाकिस्तान जे बुनियादी हुकूमत ख़्लाफ़ मुकाबिलो करणु घुरिजे। इन्हीअ मां मुराद कुझु देर ऐं कुझु वधीक तकलीफ़ूं सहण बइदि पूरी थींदी, बाकी त बसि....

पाकिस्तान जे चइनी सूबनि जो बाझारे हिंदुस्तानी छटीअ हेठि पंहिंजे मर्ज़ीअ सां अचण में कंहिं खे बि अजब खाइणु न घुरिजे। भारत माता पंहिंजे बिगड़ियल बारनि जी सार संभाल बि त लहे थी। नेठि जिन्नाह हिंद-पाक जे दाइमी बेरुख़ीअ खे त डिठो हो। हुन चयो हो त हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान कंहिं बि धारिएं हमले जो गडिजी मुकाबिलो कंदा। विरहाङे जे तहिरक जे हिक थंभे, ख़लीक अलज़मान 1971 ई. खां पोइ चयो त विरहाङे जी रिथा नाकामयाब थी वेई आहे, तंहिंकरे नएं इंतज़ाम लाइ कम करण जी ज़रूरत आहे।

''हिकु हज़ार साल जंगि'' जोटींदड़ भुट्टे पिण चयो हो त इहो मुम्किन आहे त हू गडियल हिंदुस्तान जो वज़ीर-ए-आज़म न बणिजी सघे, पर उनजो विदेशी मंत्री थियण जी पक सां उम्मेद रखी सघियो थे। पोइ बि जेकडहिं भुट्टे लाइ घणी देर आहे त कंहिं जतोई, कंहिं दौलताना, कंहिं वली ख़ान या कंहिं मेंगल लाइ इहो काफ़ी वक्ताइतो थींदो।

18

सिंधी समाज ऐं संस्कृति

सिंधी समाज सम्पूर्ण हिंदुस्तानी समाज जो अण-छिज़ंदड़ हिस्सो आहे ऐं सिंधी संस्कृति सज़ी हिंदुस्तानी संस्कृतीअ जो अण-छिज़ंदड़ हिस्सो आहे। पर पोइ बि मकानी तत्वनि सबब संदसि पंहिंजो हुग़ाउ आहे। हितां जा माण्हू ब़ियनि जे विश्वास जी पोइवारी करण करे निवड़त वारा, पर वहिंवारिक आहिनि। मज़ाक में चइबो आहे- ''सूराइते आङूठे वांगुरु सिंधी हुकूमत उहो कुझु कंदी, जेकी सवलो ऐं फ़ाइदेमंद हूंदो।'' केतिरनि ई ज़ुग़नि ते फहिलियल संदनि जुदा जुदा आज़मूदनि खेनि अहिड़ी लचक अत्ता कई आहे, जेका संदनि जियापे लाइ त आहे, तोड़े जेको संदनि शान वटां नाहे। जड॒हिं उन्हनि धारियनि जे संघर्षनि खे मुंहुं ड॒िनो ऐं ख़ुदि पाण वापार ख़ातिर ड॒ूरांहां सफ़र कया त संदनि मोरोसी विश्वास जे गहिराईअ में संदनि सुभाअ में कट्टरता काफ़ूर थी वेई। खेनि दुनिया जो नागरिक बणाए छड॒ियो। एछ. टी. लैमबर्क, आई. सी. एस. तसलीम करे थो त ''सिंधु जे हवा में का मिड़ेई अहिड़ी शइ आहे, जेका अलबति बर्ख़िलाफ़ विश्वासनि जे सरहदुनि खे झुकाए छड॒े थी।''

इस्लाम हिंदुस्तान में अचण सां हमेशा वांगुरु कत्ल, लूट मार ऐं बलात्कार जो ड्रामो रचायो। पर इहा शरारत अग॒ु में बि थींदी रहंदी हुई। नवनि मुसलमाननि पंहिंजियुनि कबरुनि ते लंगा लग॒ाया ऐं उन्हनि खे धूप ऐं गुलनि सां वासियाऊं। संदनि पटांदर शादीअ जो ड॒ींहुं हज़ारें सालनि जे रोज़ा ऐं नमाज़ खां बहितर हो। उन्हनि औरतुनि जे तहर जे अरबी रस्म खे छड॒े ड॒िनो ऐं सख़्त कानून खे रद्द कयाऊं। तलाक-तलाक ब॒ दफ़ा चवणु हिकु समुझियो वेंदो हो, न कि ब॒। जेके बि अरब सिंधु में ईंदा हुआ, जंहिंखे उहे ''हिंदु'' करे समुझंदा हुआ- समाजी तरह एड॒ो सिंधी थी वेंदा हुआ, जो वतन वापस मोटण ते खेनि चयो वेंदो हो, ''ए हिंद मां मोटी आयल, पंहिंजो ईमान नएं सिर जीआरि।'' समन ऐं सूमरनि जेके मकानी हाकिम हुआ, पंज सौ वरिह्य हुकमरानी कई। उन्हनि जड॒हिं नओं मज़हब अख़त्यार कयो त उहे मुसलमान हुजण खां सिंधी वधीक हुआ। इन्हीअ में को शक नाहे त कैप्टन हैमिल्टन जेको सिंधु में अरड़हीं सदीअ में आयो हो, लिखियो आहे त हिक सदी अग॒ु हिंदू आबादी,

मुसलमान आबादीअ खां डहूणी वधीक हुई। अजु सिंधी दानिश्वर जी. एम. सैय्यद ''अरब छाप इस्लाम'' खे रद्द थो करे। ज़ाहिर आहे त उहे ''सिंधी छाप इस्लाम'' चाहीनि था, जेको मुग़ल दौर जे पुजाणीअ ताईं मौजूद हो।

इहा डाढी डुख जहिड़ी गाल्हि आहे त हिंदू-दोस्ती वारी उहा सूरत मुग़लनि जे डींहंनि में तब्दील थी, अकबर सहनशीलता वारी नीती बर्पा कई। हुन घणे खां घणा वडा उहिदा हिंदुनि खे डिना। इन्हीअ गाल्हि मुसलमाननि खे नाराज़ करे विधो, जिनि वडनि उहिदनि जी हिक हटी विञाई हुई। जेके अहिड़े नतीजे में महरूम रहिजी विया हुआ, उहे कट्टर मुल्लाउनि सां वञी शामिल थिया। उहो नापाक गंढजोड़ हो, जंहिं औरंगज़ेब खे दारा ते सोभ पाइण में मदद कई। अकबर जे नीतीअ जे करे जीअं हिंदुनि खे वरी हैसियत हासिल थियण लगी, तीअं मुसलमाननि जे संदनि बर्ख़िलाफ़ रद्द अमल, कट्टरपणे जी ताकत खे मज़बूत कयो ऐं वडे पैमाने ते धर्म बदिलाइण जी लहर शुरू थी। ज़ाहिर आहे त इहा हिक तूफ़ानी लहर हुई, जंहिं सिंधु खे पंहिंजीअ लपेट में वरितो ऐं अरबनि जे फ़तह खां हज़ार वरिह्य पोइ मुसलमाननि जे घणाईअ वारे सूबे में तब्दील करे छडियो। तइसबी अलफ़ज़ाली, जंहिं लिबरल सोच रखंदड़ अलफ़ाराबी ऐं अबन सेना ते यारहीं सदीअ में हमलो कयो हो ऐं जंहिं दलील जे उसूल खे तर्क कयो हो ऐं मज़हब खां सांइस जी परवाह न करे, इस्लामी दरबारियुनि में बदले वठण लाइ मौजूद हो। सिंधु में इन्हीअ तरीके जो अगुवान मुहम्मद हाशिम ठटवी हो, संदसि फ़तवा खे कल्होड़े हाकिम गुलाम शाह फ़रमान जे तौर हिन रीति जारी कयो- हुकूमत जे सजीअ जनता खे चिताउ थो डिजे त खेनि जनाब मख़दूम मुहम्मद हाशिम ठटवीअ जे वक्त बि वक्त जारी कयल मज़हबी हिदायतुनि ते अमल कराइण जी हर मुमकिन कोशिश करणु घुरिजे। खेनि (शब्बनि खे) मोहर्रम दौरान हाय हाय करण ऐं ताज़िया कढण खां रोकण घुरिजे। औरतुनि खे बाग़नि ऐं कब्रिस्तान में वञण खां रोकण घुरिजे, माण्हुनि खे सुर्गवासियुनि ते शोक करण खां रोकण घुरिजे, जानवरनि जे जिस्म ते चिटसाली न कई वञे, हिंदुनि खे चोटी रखाइण ऐं धोती बधण या पंहिंजे दुकाननि ते ज़ुघाड़े गोडनि विहण खां मना कई वञे, मुसलमाननि खे चयो त उहे मुछूं न रखाईनि ऐं पंहिंजी डाढ़ी डिघी न रखाईनि, संदनि डाढ़ी मुठि जे माप खां वधणु न घुरिजे। हिंदुनि खे होली मल्हाइण या सरोद, शहनाई, दुहिल ऐं तूतारीअ ते गाइण जी इजाज़त न डिनी वञे। हिंदुनि खे मूर्तियुनि ऐं दरियाह

अगि॒यां झुकण खां मना कई वञे। सरकारी अमलदारनि खे मथियनि हुकमनि खे सख़्तीअ सां लागू॒ कराइणु घुरिजे। उन्हनि हुकमनि जे भञकिड़ीअ जी सूरत में निवारक सज़ा डि॒नी वञे, जीअं को बि इएं करण जी जुरियत न करे। इन्हीअ खां सवाइ माण्हुनि खे रोज़ा-नमाज़ूं काइमु करण ऐं बि॒यूं मज़हबी रस्मूं अदा करण लाइ चयो वञे। मथियनि हुकमनि जे पैरवीअ में कोताही न थियणु घुरिजे। (2 शब्बां, 1072 हिजरी)।

अकबर जे उदार मज़हबी पालेसीअ खां पोइ अहिड़े किस्म जो कट्टरपणो पैदा थियो, जंहिं हिंदुनि खे वधि खां वधि नौकरियूं डि॒यारियूं। पर इन्हीअ गा॒ल्हि जे करे हेठिएं तबिके जा माण्हू सरकारी द॒बा॒व में अची मुसलमान थियण लगा॒। अहिड़ीअ रीत हिक ई वक्त में ब॒ मुख़ालिफ़ सूरतूं उभिरंदे नज़र अचण लगि॒यूं। गिदूमल ऐं बि॒या आमिल सिंधु जे दरबा॒र में वज़ीर थिया, खेनि मुसलमान उमराउनि जहिड़ी पोशाक पाइण जी इजाज़त मिली। मथिनि ढल माफ़ थी ऐं खेनि ''दीवान'' चई सडि॒यो वियो। पर हिंदू पाण वटि न मूर्ति रखी सघियो थे ऐं न पंहिंजनि मंदिरनि में घिंड वज़ाए सघियो थे। उहे विस्पत शाम खां छंछर सुबूह ताईं पंहिंजनि घरनि में बंद रहंदा हुआ, जो खेनि डपु हूंदो हो त मतां को मुसलमान इएं चवे त हुन जुम्मे पाक जे डीं॒हुं ''अल्लाह'' या ''रसूल'' चवंदे बु॒धो हो ऐं तंहिंकरे उहे हाणे मुसलमान आहिनि। हिंदू कंहिं बि अरबी किताब खे इन्हीअ डप खां हथु न लाईंदा हुआ त मतां उहा कुरान शरीफ़ न हुजे, जंहिं खे हथु लाइण सां हू कट्टर पंथियुनि जे नज़र में मुसलमान न थी पवनि। अंग्रेज़ मुलाकाती जहिड़ोकि रिचर्ड बर्टन लिखियो आहे त हिंदू कडु॒हिं बि 'रस्सो' या 'रस्सी' लफ़्ज़ न उचारींदा हुआ, जो खेनि डपु हूंदो हो त मतां को इएं चवे त हुननि 'रसूल' चयो आहे। इन्हीअ करे उहे हमेशा 'रस्सो' या 'रस्सी' जे बदिरां 'नोड़ी' चवंदा हुआ। हिक सिंधी शहज़ादे पंहिंजी घड़ी हिक अंग्रेज़ खे बम्बईअ मां मरम्मत कराए अचण लाइ इहो चई डि॒नी त इहा कंहिं बि बुत-परस्त खे छुहणु बि न डि॒नी वञे।

उन्हीअ अंग्रेज़ खे सौग़ात तौर हिक तलवार डि॒नी वेई, जंहिं ते फ़ारसीअ में उकिरियल हो, ''मां वज़न में हल्की आहियां, पर दुश्मन ते भारी आहियां। सूरमनि मूंखे हिकु लख हिंदुनि खे कत्ल करण में इस्तैमाल कयो आहे।'' एतिरे कदुरु जो आज़मूदगार मुदबर गिदूमल खे जंहिं कारडीनल वोल्ज़े वांगुरु मुल्क खे बहितरीन ख़िज़मतूं सर-अंजाम डि॒नियूं, तडु॒हिं खुलीअ दरबा॒र में

कत्ल कयो वियो, जडिहिं संदसि धीअ द्रोपदीअ मुसलमान शहज़ादे सां शादी करण बदिरां पंहिंजो अंत आंदो।

तंहिंकरे बर्तानिवी ख़ातू अजब में आहिनि त हिंदू अहिड़े हंध छो रहिया पिया आहिनि। डाक्टर जेम्स बर्टन लिखे थो- "इहो सचु पचु समुझणु डुखियो आहे त हिन मुल्क में केतिरनि हिंदुनि रहण जारी रखियो हूंदो। हकीकत में इहो उन्हीअ शख़्स जो संबंध आहे, जेको हू पंहिंजी धरती ऐं उनजे वणिकार सां वंडे थो, जिते हू निपिजे थो।"

इहा हिक तरफ़ जी तस्वीर आहे, बिए तरफ़ उहो आहे, जेको एफ़. बी. ईस्टविक लिखियो आहे- "जडिहिं असां शिकारपुर ऐं हैदराबाद पहुतासीं त उतां जा एतिरा घणा ऐं एतिरा शाहूकार माण्हू मिलिया, जेतिरा असांजे हुकूमत जे घणनि ख़ुशहाल शहरनि में रहंदा हुआ।" हू अगिते लिखे थो- "असां जीअं कराचीअ में घिड़ियासीं त असां हिंगलाज खां मोटंदड़ यात्रियुनि सां मिलियासीं। उहा ओलह तरफ़ डूरांहीं सरहद आहे, जेसताईं हिंदुस्तानी घणनि देवताउनि खे मञण वारो पंथ (Polytheism) फहिलियल आहे।"

हैमिल्टन 1499 ई. में सिंधु में होलीअ जे सुबूह खां शाम ताईं मल्हाइण जो लिखियो आहे- "इन्हीअ मस्तीअ वारे त्यौहार ते हर उमिरि जा मर्द, ज़ालूं ऐं बार घिटियुनि में नचंदा, शरनायूं, दुहिल ऐं झांझियूं वजाईंदा आहिनि।"

सिंधु जे फ़तह खां चार साल अगु 5 नवम्बर 1839 ई. ते एस्टिविक डियारीअ जो ख़ूबसूरत नज़ारो डिठो। हू लिखे थो- "डियारी अजोके डींहं ते थींदी आहे। समूरो दरियाह डियाटियुनि सां रोशन कयल हो, सचु पचु नज़ारो डाढो मोहींदड़ हो। मस्जिदूं ऐं वीरान मकबरा अकीचार रोशनियुनि सां जगमगायल ऐं समूरी शान शौकत सां उन्हनि जो फ़हिलियल वडो वहुकिरो- खजियुनि जो झुगटो ऐं विच दरियाह में बखर जे किले वारी बेटारी- इन्हनि सभिनी गडिजी हिक अजब जहिड़ी तस्वीर जोड़े छडी हुई। जल्दी नित कंहिं श्रद्धालूअ लक्ष्मीअ जी आरती कई थे ऐं बे अंदाज़ डीअड़ा हिक नंढे थाल्ह में रखी, पाणीअ में तारे छडे थे डिना।"

हिते सिंधी मुसलमान हिंदुनि सां गडु डियारी मल्हाईंदा हुआ। ज़ाहिर आहे त सिंधियुनि इस्लाम जी सिंधी सूरत ज़ाहिर कई हुई। ख़ुशि मज़ाकीअ सां

गड्डिजी रहण जो इहो हिकु मिसाल आहे त जडहिं मीर सरफ़राज़ ख़ान गिदूमल जे नंढे कद ते चरिचो कयो त हुन फ़ारसीअ में वराणियो- ''मुड़िस माण्हूअ जी परख लड़ाईअ जे मैदान ते थींदी आहे। आङूठो केतिरो नंढो हूंदो आहे, पर आङुरियुनि खां वधीक अहम आहे।''

हिक भेरे संत कवि शाह अब्दुल लतीफ़ पंहिंजे हिंदू दोस्त मदन खे छेड़ींदे पुछियो, ''हश्र वेल हिसाब में, काफ़िर कंदा कीअं?'' उन वक्त मदन वरंदी न डिनी, पोइ जडहिं उहे दरियाह जे पतण ते पहुता त बेड़ी रवानी थी चुकी हुई। मदन कुझु वधीक पैसा कढी बेड़ीअ वारे खे डेखारिया, जंहिं बेड़ी रोके खेनि पाण सां खंयो। उन वक्त मदन शाह डांहुं मुंहुं करे संदसि सुवाल जो जवाब डींदे चयो, ''हथु जिनीं जो हीअं, से पहिरीं पतण पार कनि।''

घणा सिंधी हिंदू आगाटे ज़माने खां सिंधु में ई हुआ। जडहिं मुहम्मद बिन कासिम सिंधु जे गादीअ वारे हंध अरोड़ ते कब्ज़ो कयो त घणा हिंदू उत्तर में पंजाब डांहुं लडे विया। उहे अञां ताईं अरोड़ चवाईनि था। बाकी बिया पाणु बचाए मुलतान, जैसलमेर ऐं कच्छ डांहुं वञी निकिता। मंझांउनि घणा पोइ मुग़ल कल्होड़ा दौर में वापस मोटी आया। हिते हिक पंजाबी कुमारी विमला सिंधी आहे, जेका इंदिरा गांधीअ जी सेक्रेट्री आहे। उन खां सवाइ के. एल. पंजाबी नाले हिकु सिंधी आई.सी.एस. पिण हो। आडवाणी मुलतान खां, मलकाणी थधाणी ऐं रामचंदाणी जैसलमेर खां, कृपालाणी प्रयाग खां ऐं भागचंदाणी अयोध्या खां आया। इहे सभु दर्जन पीढ़ियूं अगु पंहिंजे वडनि जे नालनि पोयां सुञाता वञनि था। रुगो शाहाणी ब्रियनि खां न्यारा आहिनि, जेके लाड़काणे जे अमीर, शाह बहावर जे नाले पोयां सडिजनि था। हू माण्हुनि में एडो त मशहूर हो, जो संदसि मिट माइट, दोस्त ऐं एतिरे कदुरु जो मुलाज़िम पिण पाण खे ''शाहाणी'' सडींदा हुआ। भागनाणी घणो पोइ बलूचिस्तान मां शिकारपुर में आया। आम ख़्याल जे उबतड़ि आमिल ऐं भाईबंद मुख़्तलफ़ आकहियुनि जे सागिए गिरोह सां तइलकु रखनि था। जेके माण्हू नौकरियुनि में घिड़िया, उहे 'आमिल' चवाइण में आया ऐं जिनि माण्हुनि वापार जो पेशो अख़्तियार कयो, उहे ''भाई बंधू'' (भाईबंद) मशहूर थिया।

भेरूमल महरचंद जो सामाजिक अभ्यास डेखारे थो त लखी, नागराणी, जेठमलाणी, लखाणी, लुला, माटा ऐं छाबड़िया पाण में सौट आहिनि। सागीअ

तरह आडु॒वाणी, सीतलाणी, साधवाणी ऐं शामदासाणी बि पाण में सॾॊट आहिनि। चंदीरामाणी, भंभाणी, करनाणी ऐं कृपालाणी, सभु 'चुघ' आहिनि। थधाणी, राइसिंघाणी, गेहाणी 'खुंघर' आहिनि। चैनाणी, हिंङोराणी ऐं झांगियाणी सभु 'पहूजा' आहिनि। केसवाणी, अम्बवाणी, मूलचंदाणी ऐं भगु॒वानाणी 'कुकरेजा' आहिनि। अजवाणी, भावनाणी, गिदवाणी ऐं जगु॒त्याणी पाण में वेझा मिट आहिनि ऐं मीरचंदाणी, महताणी, मूरजाणी, सदारंगाणी ऐं माखीजा बि सागी॒अ तरह गुं॒ढियल आहिनि। नावाणी, मलकाणी, रामचंदाणी ऐं रामरख्याणी सभु 'दरड़ी' आहिनि।

सिंधी मुस्लिम समाज, हिंदू समाज खां घणो मुख़्तलफ़ आहे। सिंधु जा आगा॒टा रहवासी कोल्ही ऐं संथाल आहिनि, तंहिंकरे असां वटि सिंधु में अञा ताईं के के मुंडा लफ़्ज़ आहिनि। सागि॒ए सबब करे घणनि सिंधियुनि वटि अञा ताईं अंगनि गु॒णण जो विजेसीमल (Vigesimal) सिरश्तो आहे। जडु॒हिं को सिंधी बा॒रु इटी-डु॒करु रांदि कंदो आहे त हू हिकु-ब॒-टे गु॒णण जे बदिरां डु॒खण हिंदुस्तानी अंग 'हिकमत-लेन मून-नाड़' गु॒णींदो आहे।

उन खां पोइ जाट ऐं सैय्यद आहिनि, खांउनि पोइ अरब, तुर्क ऐं अफ़ग़ान आहिनि। हिन वक्त सैय्यद मज़हबी अगु॒वान आहिनि। शेख़ ऊचियुनि ज़ातियुनि मां मुसलमान थियल आहिनि। बलूच बलूचिस्तान जे भेट में सिंधु में वधीक आबाद आहिनि। जीअं गोरखा नेपाल जे भेट में हिंदुस्तान में वधीक आहिनि ऐं पोइ आम तबिके जा माण्हू आहिनि। मारू, सतजर, पंवहर, मल्लाह, मंगता, सोढा, ढाटी, गंदरा, रेबा॒ड़, कच्छी, कोहियारा, ओडु॒, मकरानी, शीदी (हबि॒शी)। असां वटि मातलीअ में हिक मज़ेदार कबाइली कौम 'लुंड' रहे थी, जंहिं लाइ चयो वञे थो त उहे टीं सदीअ में आबाद थियल 'हुण' आहिनि। जडु॒हिं रिचर्ड बर्टिन कंहिं 'अशरफ़' खां पुछियो त बि॒यूं ऊचियूं ज़ातियूं कहिड़ियूं आहिनि? त हुन वराणियो, ''सभिनी खां अवलि असां आहियूं, बि॒ए नम्बर ते सैय्यद आहिनि, पोइ फ़तह अलीअ जी अधु आकहि आहे, बाकी बी॒ सभु [illegible] ख़ल्क आहिनि!''

मुस्लिम दौर में सिंधु में हिंदू वजूद जो मञण लाइक बहितर सूरत में मशहूर अनासर पंजाब में सिख-पंथ जो उभिरण हो। सनातन धर्म डिघे मुस्लिम दौर हेठि मरणींगि हालत में हो, पर सिख-पंथ पारूथे सिंधी वायुमंडल में

ताज़ीअ हवा वांगुरु हो। ॿई सूबा पाड़ेसिरी मुल्क हुआ। संदनि रहाकू पाण में वेझा माइट हुआ ऐं संदनि ज़बानूं हिक ॿिए सां मिलंदड़ ऐं ॻंढियल हुयूं। इन्हीअ हकीकत सिख-पंथ खे चङीअ तरह वधण वीझण जो मौको ॾिनो। चयो वञे थो त गुरू नानकदेव पंहिंजे सैर सफ़र जे दौरान शिकारपुर बि आयो हो। कन्हैयालाल नाले हिकु सिंधी, गोबिंदसिंह सां शामिल थियो। हिन लड़ाईअ में ज़ख़्मियलनि खे पाणी भरण जे ख़िज़्मत जो फ़र्ज़ु पाण ते हमवार कयो। हुन रुॻो ज़ख़्मी हिंदुनि खे न पर ज़ख़्मी मुसलमाननि खे बि पाणी पीआरियो थे। पर किनि सिखनि दुश्मन जे सिपाहियुनि खे पाणी पीआरे जीआरण ते एतराज़ु वरितो। उहे खेसि गुरूअ वटि वठी विया, जंहिं न रुॻो संदसि उन्हीअ अमल खे साराहियो पर खेसि सिंधु में सिख-पंथ जे प्रचार करण लाइ रवानो कयाईं। सिंधु में हू 'खट वारे ॿाए' जे नाले सां मशहूर थियो, छाकाणि जो हू पाण पंहिंजो व्याखान खट ते वेही ॾींदो हो।

भाई दयालसिंघु जडॾहिं गुरूअ जे लश्कर जी ख़िज़्मत कंदे ॿुढो थियो त खेसि हिक तलवार, हिक कृपाण, हिकु चक्र ऐं हिकु नेरो ॾेई इहो चई सिंधु ॾांहुं रवायो कयो वियो त सिंधियुनि में हिमथ पैदा करे।

महाराजा रंजीतसिंह, माणिकसिंह खे हाथीअ जी पुठीअ ते चाढ़े, हथ में गुरू ग्रंथ साहिब ॾेई मोकिलियो त हू उहो वञी हैदराबाद में रखे। उन्हीअ मकसद लाइ मीरनि खेसि ज़मीन ॾिनी। जिते मशहूर 'अकाल भूंगा' जोड़ायो वियो। जडॾहिं गुरुद्वारे में कीर्तन वक्त दुहिल ऐं साज़ वॼण लॻा त मुसलमाननि ऐतराज़ु वरितो ऐं मस्जिद जे भरिसां ॻाइण वॼाइण खां मना कयो, जेका लॻोलॻु हुई। अवलि त मीरनि 'अकाल भूंगा' खे उतां खणी ॿिए हंधि काइम करण जो चयो, पर इहो महसूस कंदे त इहा ॻाल्हि लाहौर दरॿार खे नाराज़ु कंदी, 'अकाल भूंगा' खे उते ई रहण ॾिनो वियो ऐं पोइ उनजे बदिरां उन्हीअ पुराणी मस्जिद खे औरतुनि लाइ महफ़ूज़ कयो वियो। पर उन्हीअ में काबि औरत कडॾहिं नमाज़ पढ़ण न वेई ऐं उहा तालाबंद थी रही।

गुरू नानक जे ॿिनि पुटनि बाबा लखमीचंद ऐं बाबा श्रीचंद प्रचारकनि जे 'जिज्ञासु' ऐं 'उदासी' फ़िर्कनि जी शुरूआत कई, जिनि घणा ई मंदिर काइम कया। मंझाउनि हिकु ॿावा गुरपत साहिब हो, जेको गुरू नानक जी ॿारहीं पीढ़ीअ में पैदा थियो। हुन सिंधी समाज में शानदार कार्य कयो। इन्हीअ में को

शकु नाहे त सिंधी हिंदू सिख-शास्त्रनि सां तमाम घणो मुतासिर आहिनि। अजुकल्ह जी. एम. सैय्यद पारां सिंधी मुसलमान अगुवान पिण महसूस कनि था त सिंधियुनि ऐं पंजाबियुनि लाइ गुरू नानक जूं सिख्याऊं फ़ाइदेमंद साबित थींदियूं।

मुसलमान हुकूमत मुसलमाननि सां पासख़ातिरी कंदी हुई। एतिरे कदुरु जो वटिनि हिंदुनि ऐं मुसलमाननि जे विच में इंसाफ़ जे तोर-माप जूं ताराज़ियूं जुदा हुयूं। पर अंग्रेज़ी राज़ु अचण सां इहो तरीको ख़तम थियो। ब़िन्ही धुरियुनि खे हिक जहिड़ा मौका मिलण सां, हिंदू तइलीम ऐं वापार में दिलचस्पी वठण जे करे मुसलमाननि खां अगु़भरो थियण लगा़। जल्द ई उहे नौकरियुनि, धंधनि, वापार ऐं कारख़ाननि में तरक्की करण लगा़ ऐं मुसलमान ज़मीन ऐं दस्तकारीअ ऐं पोरिह्ये जे कम ताईं महदूद थी विया। एतिरे कदुरु जो जडु़हिं विरहाङो थियो ऐं मुहाजर सिंधु में पहुता त खेनि फ़िकुरु हो त सिंधु में पाकिस्तान कीअं काइम थी सघंदो। उहो चवण लगो़, ''सिंधु जे हैदराबाद ऐं कराचीअ खां त लखनऊ ऐं पटना में मुसलमान वधीक आहिनि।''

सिंधियुनि जा हमेशा विदेशनि सां वापारी नाता हुआ, संदनि चवण हो, ''उत्तम खेती, वधंदड़ वापार, नीच नौकरी ऐं पिनण बेकार।''

हज़ारें वरिह्य अगु़ ''पणी लोकनि'' (Phonenicians) जे हैसियत सां उन्हनि ओभर ऐं भोनोच सां वापार कयो, उते आबाद पिण थिया हुआ। शाह लतीफ़ जो ख़ूबसूरत 'सुर सामूंडी' लंका, जावा ऐं चीन जे सालियाने वापारी तर्ज़ जे बारे में आहे। 1866 ई. में सुइज़ जे खुलण सां वापार जे वाधारे लाइ ज़ु़णु हैरत-अंगेज़ दरु खुली पियो। सिंध में हुनर ऐं कारीगरीअ जे कम जी शुरूआत करण सां खेनि 'सिंधु-वर्की' कोठियो वियो, जिनि जल्द ई सोटी कपड़े, कीमती तौहफ़नि ऐं हीरनि वग़ैरह जे वापार में तरक्की कई।

जडु़हिं अंग्रेज़नि सिंधु जूं वागू़ं वरितियूं त हिंदुनि वटि ज़मीन ज़रो बि न हुई। अंग्रेज़नि रिटायर्ड अमलदारनि खे ज़मीनूं डि़नियूं, जेके घणो करे हिंदू हुआ। शाहूकार माण्हुनि बाज़ार जे अघ सां ज़मीनूं ख़रीद करणु शुरू कयूं। फ़िज़ूल ख़र्च कंदड़ मुसलमान ज़मींदारनि पंहिंजूं ज़मीनूं हिंदू वाणियनि वटि गिरवी रखण शुरू कयूं। गिरवीअ जूं ज़मीनूं वापसि न करण जे कोताहीअ करे

उन्हनि पंहिंजियुनि ज़मीनुनि तां हथु खंयो ऐं हिंदू उन्हनि जा मालिक बणिजी विया। अंग्रेज़ी राॼ जे हिक सदीअ दौरान उन्हनि ज़मीनुनि जो लॻभॻ 40 सैकड़ो हासिल करे वरितो। चयो वञे थो त वधीक 20 सैकड़ो वटिनि गिरवी पियल हुयूं। किनि मुस्लिम लीगी अॻुवाननि ख़ास करे सर अब्दुल-अल्लह हारून इन्हीअ ॻाल्हि खे वॾो मुद्दो बणायो। अब्दु-अल्लाह साइकिलूं मरम्मत कंदड़ जे दुकान ते चार आना ॾिहाड़ीअ ते ज़िंदगीअ जी शुरूआत कई हुई ऐं करोड़पति थियो। खेसि आबादीअ जे 30 सैकड़ो हिंदुनि सां साॾु हो, जेके 40 सैकड़ो ज़मीनुनि जा मालिक थिया हुआ। खेसि आबादीअ जे 30 सैकड़ो हिंदुनि सां बुनियादी कुन्याय ॾिसण में न आयो। ॿियो मुस्लिम नेताउनि ॾिठो त हिंदू ज़मींदारनि मां मुस्लिम हारी ख़ुशि हुआ, मुस्लिम ज़मींदारनि जे भेट में, जिनि वटि मुसलमाननि जे राॼ में ज़मीन जो ज़रो बि न हो। घणनि मुसलमान ज़मींदारनि खे इहा सुधि हुई त मुसलमान ज़मींदारनि न थे चाहियो त तइलीम पखिड़िजी आम थिए, जो खेनि इहो डपु हो त पढ़ियल हारियुनि जो ईंदड़ु नसल वधीक हक़नि जी घुर कंदो।

उन्हीअ ज़मीन जे मालिकीअ जी तब्दीलीअ जा सच्चा ॿ सबब हुआ, हिक त हिंदू जेके सदियुनि खां ज़मीन लाइ बुखायल हुआ, तिनि ज़मीन लाइ कुदरती इंसानी ख़्वाहिश महसूस कई थे ऐं हाणे उन्हनि इएं करण लाइ हथ पेर हंया ऐं ॿियो अय्याशी मुसलमानी आदतूं, हिंदू ॾाहप ऐं होशियारीअ जे मुकाबिले में हुयूं। मुसलमाननि में हूंद खां वधीक ख़र्च करण जी आदत पियल हुई, जॾहिं कि हिंदूअ में बचाइण ऐं सीड़ाइण जो वधीक लाड़ो हो। मशहूर चविणी आहे त ''जॾहिं हिंदूअ वटि नाणो हूंदो त हू जाइ मथां जाइ जोड़ाईंदो ऐं जॾहिं मुसलमान नाणो कमाईंदो त जोइ मथां जोइ आणींदो हो।''

मुसलमान आम तरह वापार में पोइते पियल आहिनि। मुग़लनि तोड़े अंग्रेज़नि ॿिन्ही हिंदुनि खे वापार में भॾु मञियो आहे। अज़ीज़ अहमद जे 'मिर्ज़ा नामे' में 14 सदीअ जे मुसलमान अमीर शाहीअ खे सलाह ॾिनी त ''जेकॾहिं खेसि उधारी रकम जी ज़रूरत आहे त हिंदू 'महाजन' खां वठण घुरिजे। जंहिंखे मुसलमान मुग़ल वापारीअ खे अहमियत ॾियण घुरिजे, पोइ चाहे व्याज खां सवाइ रकम उधारी ॾींदो हुजे। खेसि कंहिं मुग़ल जे दुकान तां ख़रीदारी करण खां पासो करण घुरिजे। न त उन्हीअ जी माना ख़रीद कयल

शइ जी चौणी कीमत अदा करण ऐं वडो नुकसान सहण ऐं आख़िर में विच बाज़ार में उन्हनि दुकानदारनि जी चौणी लबाड़ भरियल बक बुधणु। बिए तरफ़ हिक हिंदु शुक्रगुज़ारी कंदो, पोइ चाहे हू व्याज जी रकम घटि वठंदो हुजे। हू थोरे खटिए घणी बर्कत में य... रखी थोराइतो थींदो।''

रार्बट क्लाइव खे पिण सागियो तर्जुबो थियो। हू लिखे थो, ''उहे वडा हथ फाड़ मुसलमान सरकारी ख़ज़ानो ऐश-आराम ते लुटाइनि था। हकीकत में मुंहिंजे ख़्याल में रकम वसूल करण जो कमु हिंदुनि खां सवाइ बिए कंहिंखे सुपर्द न करण घुरिजे, जो उहे हमेशा पंहिंजी कमाईअ मां घटि ख़र्च कंदा आहिनि ऐं खेनि जडहिं बि चइबो आहे त रकमुनि जे खोट-टोट जो पूराओ करे सघंदा आहिनि।''

किनि अगुवाननि मुसलमाननि जे मामलनि खे सुधारण जी कोशशि बि कई। जी. एम. सैय्यद खेनि शादीअ जे जशन में फ़िज़ूल ख़र्च करण खां मना कई। हुन खेनि सलवार ऐं पटिके जी माप 20 वालनि मां 3-4 वालनि ताईं घटाइण जी सलाह डिनी। एतिरे कदुरु जो हुन खेनि मिंथ कई त साल में रुगो हिक भेरो ई सनान न कनि। सिंध परगणे मुस्लिम लीग जे सदर जी हैसियत सां हुन मुसलमाननि लाइ वापार में जीउ लगाइण जी बाकाइदे मुहिम हलाई, पर उन्हीअ में लंबे अर्से जी दरकार थींदी। मौलाना अबूअल कलाम आज़ाद लिखे थो, ''रुगो चङीअ तरह बूट पाइण जो तरीको जाणण लाइ समूरी उम्र लगी वेंदी आहे।''

पीर हिसाम अलदीन राशदी मुस्लिम समाज में मज़हबी पाबंदियुनि ऐं लुचायुनि जे उसूल ते ठठोली कई आहे। हिक पासे हू एडे सख़्त पर्दे जा पाबंद हुआ जो कंहिं पेट वारीअ औरत खे पिण 'ज़नाने' में इन्हीअ डप खां वञण जी इजाज़त न हुई त मतां संदसि पेट में पुट न हुजे, जेको पर्देदार सूंहं डिसी न वठे। बिए पासे आम तरह डिसिबो आहे त कंहिं मोहींदड़ औरत खे डिसंदे, मंझांउनि केतिरा ई हिक हथ सां मुछुनि खे वटींदा ऐं समझंदा आहिनि त बिए हथ सां उनजा गुप्त अंग महिटे रहिया आहिनि।

मुस्लिम समाज जे पतन (ज़वाल) जी वडी ज़िम्मेदारी मुलाउनि ते मड़िहिजे थी। मंझाउनि घणा जेतिरो जाहिल हुआ, ओतिरो ई तइसबी-मज़हब

जे ज़ाण खां सवाइ, उहे घणो करे बे-वाजिबी मसइले ते जुदा थी विरहाइजी विया। हिकिड़े 'हुके' खे ग़ैर-इस्लामी चयो त बिए 'नास' खे इस्लामी कोठियो। उहे बे-अंदाज़ दलीलनि में उल्झियल रहिया त अछी डाढ़ीअ खे ग़ाढ़ो या कारो रंग हुअण इस्लामी आहे या न। बियनि वरी इन्हीअ मसइले ते दलील-बाज़ी कई त नमाज़ जे वक्त हथ बधल हुअण घुरिजनि या खुलियल, एं जेकडहिं बधल हुजनि त उहे कंधे खां मथे हुजनि या हेठि। प्रोफ़ेसर होतचंद गुरुबक्षाणी ''शाह जे रसाले'' जो बेहतरीनि छापो डिनो आहे, जंहिंखे अजु ताईं क्लासिकी करे मञियो वञे थो। पर मौलाना निज़ामाणी इन्हीअ बुनियाद खे रदि करे थो त घणनि देवताउनि जो मञींदड़ को बि हिंदू कंहिं बि 'तौहीद पसंद' (Monotheist) मुसलमान शाइर जे रूह ताईं पहुची नथो सघे!

घणनि मुलाउनि जी इहा बेवकूफ़ी एं जहालियत आहे, जंहिं सिंधु जे बिनि मायानाज़ शाइरनि शाह एं सचल खां खेनि साफ़ लफ़्ज़नि में कूड़ो चावारियो। शाह चवे थो, ''मुलां न चओसि, उहे वेकू मालु आहिनि- मोटी डेई, ही मास टुकर वठनि था। खुलियल अखियुनि सां ही रेतीअ में टुबियूं हणनि था।''

सुञाणी अल्लाह, टुबी डिनाऊं धूड़ि में- सचल वटि अहिड़नि बदनाम मुलाउनि जो हिकिड़ो ई इलाज हो, ''कुटि मुलाउनि जी ठोढ़ि।'' जी. एम. सैय्यद हाणे मुलाउनि ते कानूनी बंदिश विझण जी सलाह डिनी आहे, जेके फ़िर्केवार फ़साद फहिलाइनि था या अहिड़ी सियासत में हिस्सो वठनि था।

हिंदुनि बर्तानिवी दौर में नाटिकी तरक्की कई। शुरूअ में ब्रह्मणनि, वाणियनि एं आमलनि (कायस्थनि) जूं ऊंच ज़ातियूं हिंदू धर्म में रहियूं एं रुगो ज़मींदार, हारी, कारीगर एं सिपाही मुसलमान थिया। तंहिंकरे अगूणो ज़ातियुनि जो फ़र्कु हाणे विश्वासी उसूलनि जे फ़र्क सां गुंढियो वियो। नवाणि अचण सां ज़ात-पात जे फ़र्क जी जाइ ते तबिकनि जे फ़र्कनि खे लागू कयो वियो। इहा हकीकत आहे त हिंदुनि जे ऊंच जातियुनि जो तबिको शहरनि में आबाद हो, जंहिं रुगो फ़र्क खे वधायो एं वेछे में वाधि आई। इन्हीअ ग़ाल्हि मुसलमाननि खे हसद में आंदो। मुलाउनि खे छडियो, उहे ज़ाए-ज़म खां हिंदू दुश्मन हुआ। पर हिक भेरे खुहिड़े पिण चई डिनो त, ''अजुकल्ह मुसलमान औरतूं हिंदुनि जे घरनि में बर्तन साफ़ कनि थियूं। मूंखे उन्हीअ डींहं जो इंतज़ार आहे जडहिं

हिंदू औरतूं मुसलमाननि जे घरनि में बर्तन साफ़ कंदियूं।'' पर जी. एम. सैय्यद मुस्लिम लीग में पंहिंजे तजुर्बे खां पोइ, जंहिं खेसि डुखोयो ऐं डाहो बि बणायो चयो, ''मुसलमाननि जे पिछेड़पन लाइ हिंदुनि खे छो डोहु डिजे? हर रोज़ सुबूह जो जडहिं हिंदू बार सनान करे स्कूल वञे थो त बिना सनान कए मुसलमानु बारु बिलोरनि सां खेडींदे डिसिबो आहे।'' एतिरे कदुरु जो हिक भेरे सैय्यद सलाह डिनी त सरकारी नौकरियूं रुगो आमिलनि खे डियण घुरिजनि, जिनि खे हुन एडो सुठो समुझियो हो।

वडो वज़ीर अल्लाह बख़्श वाकई कौम परस्त हो, त बियो वडो वज़ीर गुलाम हुसैन हिदायत अल्लाह गै़र-फ़िर्केपरस्त हो। हू शिकारपुर जे दूल्हडिनेमल जो पुट हो, जंहिं हिक पठाण छोकिरीअ हुर बीबीअ सां शादी कई हुई। बिन्ही गडिजी आराम सां ज़िंदगी गुज़ारण थे चाही, पर तंगदिल हिंदू समाज खेनि गडिजी रहणु न डिनो। तंहिं करे उहे बई हरिद्वार डांहं हलिया विया। कुछ वक्त खां पोइ वतन जी छिक खेसि वापसि शिकारपुर आंदो, पर हिंदू सभाज वरी बि खेनि चैन सां विहणु न डिनो। तंहिं करे हिंदुनि जे ज़ुल्मनि खां बचण लाइ दूल्हडिनोमल मुसलमान थियो।

जेतोणीकि सर शहनवाज़ भुटे पंहिंजो पाण खे 1947 ई. में झूनागढ़ जे दीवान जे हैसियत सां बदनाम कयो। जडहिं रियासत पाकिस्तान सां शामिल थियण जो एलान कयो, पर हू सिंधु में कडहिं बि फ़िर्केपरस्त न रहियो, वाकई हिंदुनि डांहुं वधीक लाड़ो होसि। इनकरे चयो वेंदो हो त हुनजो पीउ को हिंदू हो। सर भुटे जी बेगम जंहिं 'ज़ुल्फ़ी' खे जनम डिनो हो, पाण हिंदू हुई। मुसलमान थियण खां अगु संदसि नालो लखां बाई हो, पोइ ख़ुर्शीद सडण में आई। शेख़ अय्याज़ जी माउ पिण शिकारपुर जी हिंदू श्रीमती दादन बाई हुई।

हिंदू ऐं मुसलमान, शिय्या ऐं सुन्नी अमन में रहंदा हुआ। सखर ज़िले खां बाहिरि फ़िर्केवार फ़सादनि जी ज़ाण न हुई। सिंधी मुसलमाननि जेहाद जो नारो 'नारा ऐं तकबीर' 'अल्लाह अकबर' रुगो ख़िलाफ़त तहरीक खां पोइ बुधो। 1943 ई. में मयाणीअ जी जंग में, 'अल्लाह अकबर' जो नारो न बल्कि ब्लूची नारो लगो हो: 'मरसां मरसां, सिंध न डेसां।'' (असां शहीद थींदासूं पर सिंध न डींदासूं।) झेड़ो चङी गाल्हि न समुझियो वेंदो हो, जंहिं लाइ चविणी मशहूर हुई: ''हाहड़ कजे हूहड़ कजे, उहो न पुजे त पाण भजिजे।'' (डपु डिजे,

हकल कजे, इहो बि न थिए त भ<u>ज़ी</u> पाणु बचाइजे।) ज़ुल्म ऐं <u>डा</u>ढ ख़िलाफ़ सिंधी हिंसा न कंदो, पर 'भूंडो' या 'बुजो' <u>डीं</u>दो हो, जंहिं सां ग<u>डु</u> नुकतेदार गारि जो जुमिलो बि चवंदो हो।

सुन्नियुनि जे शरीकी हिदायतुनि जे हूंदे बि सिंधु में शिय्या ऐं सुन्नी ग<u>डि</u>जी, हुसैन ऐं हुसुन जो मातमु कंदा हुआ ऐं पुरी ज<u>गं</u>नाथ जे रथ जी पोइवारी करे ताज़िया कढंदा हुआ। उहे ताज़िया तैयार करण जो कमु व<u>डी</u> मेहनत जो हूंदो हो। उन्हनि खे पाणीअ में लोढ़ियो या दफ़न न कयो वेंदो हो, बल्कि स<u>ज़ी</u> सजावट मथाउनि लाहे छ<u>डि</u>बी हुई ऐं हर साल उहे नएं-सिर सींगारिया बेंदा हुआ। हिंदू ताज़ियनि ते नारेल ऐं पताशा चाढ़ींदा हुआ। मोहरम हिक अहिड़ो <u>डि</u>सण जहिड़ो मौको हूंदो हो, जंहिंजो हिंदू तोड़े मुसलमान इंतज़ार कंदा हुआ, जीअं हाणे असां 'रिपब्लिक डे टैबलो' (झांकियुनि) जो इंतज़ार कंदा आहियूं।

ज़िंदगीअ जे सा<u>गि</u>ए वीचार जे फ़ेलसूफ़ाणे रवैये जो हिक अजूबो कराची गोदीअ-कयामाड़ीअ ते राम दुलारे हूंदो हो। हू भ<u>ग</u>ल ह<u>डी</u> जोड़ण जो ए<u>डो</u> माहिर हूंदो हो, जो कराचीअ जो सिविल सर्जन जानसन पंहिंजे पुट खे वटिसि वठी वियो, जंहिं जूं टे ह<u>डि</u>यूं टुटी पेयूं हुयूं। राम दुलारे फ़ी न वरिती ऐं ग़रीब तोड़े शाहूकार खे सख़्तीअ सां नम्बरवार <u>डि</u>ठाईं। ज<u>ड</u>हिं <u>बि</u>नि महिननि में जॉनसन जो पुटु चाक थियो त अजब में भरियल डाक्टर राम दुलारे खे अस्पताल में 150 रुपयनि ते नौकरीअ जी आछ कई। पर राम दुलारे 30 रुपयनि ते गोदीअ ते चौकीदार थी रहण खे वधीक पसंद कयो।

हिक <u>डीं</u>हुं पीर अली मुहम्मद राशदी पाण सां नवाब शाह जे राइ बहादुरु होतचंद खे राम दुलारे वटि ह<u>डी</u> विहारण लाइ वठी वियो। ज<u>ड</u>हिं राइ बहादुर जो वारो आयो त राम दुलारे संदसि भ<u>ग</u>ल ह<u>डी</u> चाढ़ी ऐं त<u>ड</u>होके हड़ कयल मुस्लिम लीगी राशदीअ खे सुञाताईं। राम दुलारे <u>डां</u>हुंसि <u>डि</u>ठो ऐं चयाईं, "पुट, तूं ख़ुशि गुज़ारींदें, जेक<u>ड</u>हिं हमेशह इहो याद रखंदें त ज़िंदगी पाणीअ में हिक पने टुकर मिसलि आहे। उहा बसि ख़तम थी वेंदी। अ<u>जु</u> न त सुभाणे।" ज़ाहिर आहे त इन्हीअ <u>गा</u>ल्हि राशदीअ खे <u>डा</u>ढो अहसास करायो ऐं हुन इहा <u>गा</u>ल्हि पंहिंजे यादगीरियुनि में लिखी आहे।

तूफ़ान जूं महिरबानियूं थियूं, हिंदुस्तान खे लो<u>डे</u> छ<u>डि</u>यो ऐं सिंधु पाकिस्तान जो हिस्सो बणिजी वेई। घणे अंदाज़ में हिंदू सिंधु छ<u>डे</u> विया। पर तस्सला जी

गा़ल्हि आहे त सभिनी गा़ल्हियुनि खे दर-गुज़र करे घणो नाराज़ न थिया। घणनि सिंधी शरणार्थियुनि पवित्र यादगीरीअ तौर पाण सां 'सिंधू जल' ऐं या कुझु मिट्टी आंदी। मशहूर सिंधी पत्रकार पीर हसामअलदीन राशदी लिखे थो- "हकीकत में उहे हिंदू ई हुआ, जिनि सिंधु खे औज ते आंदो। उन्हनि खेसि सींगारियो। उन्हनि दुनिया जे चइनी कुंडुनि मां दौलत आणे सिंधु में वडा़ घर ठहिराया। पर अजु़ असां उन्हीअ जी सार संभाल बि नथा लही सघूं।" हू अगि़ते लिखे थो- "सिंधु जा असुलोका धणी हिंदू आहिनि। वटिनि तइलीम, नौकरियूं, वापार ऐं ज़मीन हुई।" हू समुझे थो त हिंदुनि मुसलमाननि जे सदगार वडे़ भाउ जे हैसियत सां किरदार अदा न करण जी ग़लती कई। हू दुरुस्त थी सघे थो त हिंदुनि खे मुसलमाननि लाइ घणो कुझु करण घुरिजे हा। पर हिंदुनि जे काइम कयल स्कूलनि, अस्पतालुनि ऐं बि़यनि इदारनि जा दरवाज़ा मुसलमाननि लाइ बि खुलियल हुआ। बि़ए तरफ़ दौलतमंद मुसलमान ज़मींदारनि कंहिं लाइ बि- हिंदू तोड़े मुसलमाननि लाइ कुझु बि न कयो।

जी. एम. सैय्यद खे सिंधी हिंदुनि ख़िलाफ़ टे शिकायतूं आहिनि- उन्हनि हमेशा पूरे भारत जे नुक्ते नज़र खां सोचियो, उन्हनि सिंधीअ में केतिरा ई संस्कृत लफ़्ज़ शामिल कया ऐं उन्हनि सिंधी मुसलमाननि खे चिढ़ मां ज॒टु कोठियो।

सैय्यद बिलकुल दुरुस्त आहे ऐं ग़लत पिण। सभिनी सिंधियुनि आल इंडिया जे मानाउनि में सोचियो, चाहे उहे हिंदू हुआ या मुसलमान। इहो दुरुस्त आहे त किनि बी़अ सिफ़ जे हिंदू लेखकनि सिंधीअ में संस्कृत लफ़्ज़ इस्तैमाल कया। पर उन्हीअ बो़लीअ में जेका अगु़ में ई 70 सेकड़ो संस्कृत हुई, ब॒ सेकड़ो संस्कृत जा वधीक लफ़्ज़ दाख़िल करण को गुनाहु न हो। बि़ए तरफ़ अवलि लाईन जे मुसलमान लेखकनि सिंधीअ खे फ़ारसीअ ऐं अरबी लफ़्ज़नि सां वधीक गौ़रो कयो, जेको असां जे मिठी ज़बान जे बर्दाश्त खां बा़हिरि हो। जेतिरे कदुरु सभिनी मुसलमाननि लाइ, जंहिं में सर ग़ुलाम हुसैन बि शामिल आहे, लफ़्ज़ु 'ज॒टु' इस्तैमाल करण जो ताल्लुक आहे, त इहो बेशक अफ़्सोस लाइक आहे। इहा सदियुनि खां आदत हुई, इहो को वडो़ डो॒हु न आहे। मज़े जी गा़ल्हि आहे त असुल में उहे बलूच हुआ, जेके पाण अण-पढ़ियल हुआ, जिनि सिंधी मुसलमाननि खे 'ज॒टु' याने अण-पढ़ियल कोठियो। हिंदू बा़र खे बि, जेको पढ़ण में डु॒ड॒ हूंदो हो, चइबो हो, "तूं ज॒टु आहीं छा?"

अहिड़ीअ रीति डि॒सिबो त सिंधी समाज जे हिंदू ऐं मुसलमाननि जे तबिकनि जे नातनि विच में तइलीमी ऐं माली फ़र्क हुअण जे बावजूद तइसब न हो। मुसलमाननि पुराणनि देवताउनि खे नवनि पीरनि में तबदील करे छडि॒यो। केतिरनि ई हिंदुनि मुसलमाननि जे दरगाहुनि ते हाज़रियूं डि॒नियूं, जिनि मोट में सुबूह शाम दुहिल ऐं नग़ारा वजा॒ए, हिंदू तरीको अख़्त्यार कयो हो। आम मुसलमाननि पंहिंजे लाइ कंडो, कौड़ो, मिठो, बछो, वरियो, सइमर, अंब नाला चूंडिया ऐं अरब नाला न रखियाऊं। मुसलमाननि साग॒िया पुराणा ताइथ जारी रखिया, जिनि जहिड़ा मुअनि जे दड़े में मिलिया आहिनि।

बा॒रनि जा जनम डीं॒हं मल्हाया वेंदा हुआ। हिंदुनि जे 'मुंडन' (मुनण) वांगुरु मुसलमान 'अकीको' कंदा हुआ। अठनि वर्हियनि जे उमिरि में जडु॒हिं आम हिंदू जणियो पाईंदो हो त मुसलमान छोकिरे जो तहर कयो वेंदो हो ऐं खेसि पाइण लाइ केसरिया रंग जी लूंगी डि॒नी वेंदी हुई। शादीअ जा गीत साग॒िया ठेठि सिंधीअ में हूंदा हुआ। हिंदू घोटु पंहिंजे मर्दांगीअ जो सबूत नारेलु भञण सां डीं॒दो हो त मुसलमान जो घोट ठिकर जी ढकिणी भञण सां डीं॒दो हो। हिंदू जोड़े वांगुरु मुसलमान जोड़े जा मथा मिलाए लांऊं डि॒बियूं हुयूं। बि॒न्हीं फ़िर्कनि में वेझाइप ऐं मुहब्बत पैदा करण लाइ घोट कुंवारि तिरनि जा बु॒क भरे सत भेरा हिक बि॒ए खे डीं॒दा हुआ। मुसलमाननि जो इहो अकीदो हो त आगा॒टे रवाज मूजिब जेके शादियूं सुबूह थियण खां अगु॒ भेजु॒ भिनीअ (असुर) ताईं थींदियूं, उहे वधीक काम्याब थींदियूं। शादीअ जा रसोसाटी रांदीका, हिंदुनि तोड़े मुसलमाननि वटि 'डे॒व' चया वेंदा हुआ। बि॒न्हीं वटि शादीअ खां पोइ सतावड़े ते घोटेतनि ऐं कुंवारेतनि जी दावत थींदी हुई। ''तारीख़ ताहिरी घणो अगे॒ आह भरी, वटिनि हर महिने केतिरियूं ई ईदूं थियनि थियूं।'' एतिरे कदुरु जो हर महिने जो पहिरियों सूमर ऐं पहिरियों जुम्मो डि॒ण में तबदील थी वेंदा हुआ, जेके मेवे ऐं दावत सां भरपूर थींदा हुआ।

आम हालति में सिंधी मुसलमान गांइ जो गोश्त न खाईंदा हुआ ऐं न वरी हिंदू सूअर जो गोश्त। जडु॒हिं राशदी भाउर सखर में खोट टोट में हूंदा हुआ, जीअं आम तरह हूंदा हुआ, पंहिंजी मानी (लंगर) 'हिंदू मंदिर' साध बे॒ला तां हासिल कंदा हुआ। हू लिखनि था त उन्हीअ मानीअ में दाल, पूरी, हलुवो, खिचिणी, आचार, पापड़, बसर ऐं कणाह प्रसाद हूंदो हो।

उहे ब॒ाहिरियां एकता में रवाजी हुआ, पर सभ खां अहम संदनि फ़ेलसूफ़ीअ में एकता हुई। हिंदुनि ऐं मुसलमाननि जे ज़िंदगीअ जा उसूल हिक जहिड़ा हुआ। हिंदुनि पंहिंजे पालणहार खे हर शइ में डि॒ठो थे। सिंधु जे सूफ़ी शाइर-संतनि सां बि साग॒ी ग॒ाल्हि हुई। उहे सभु 'वजूदी' हुआ, जिनि 'ख़ालिक' ऐं संदसि 'जनता' जे विच में फ़र्कु न थे ज॒ातो। पर 'शहूदियुनि' इएं नथे डि॒ठो। वटिनि 'ख़ालकि' ऐं संदसि 'मख़लूक' (प्रजा) जे विच में ऐं 'देवता' ऐं 'देवता' जे विच में ऐं 'माण्हू' ऐं 'माण्हू' जे विच में फ़र्कु हो।

एनामिरे शीमल जे लफ़्ज़नि में- "सिंध में हिंदू धर्म ऐं इस्लाम जे विच में तोर तरीके जूं हदबंदियूं न हुयूं।" इन्हीअ वेझिड़ाईअ जे नाते जो हिकु क्लासीकी मिसालु शाह अब्दुल लतीफ़ जो 'सुर रामकली' आहे, जंहिं में ही सूफ़ी कुरान ऐं हदीस में वरितल माना में जोगि॒युनि खे साराहे थो। सचल सरमस्त ऐं संदसि मुरीद ख़ालिस वजूद जे एकता खे ग॒ाइण खां न हिब॒किया आहिनि, जेको पंहिंजो पाण खे हाणे अबू हनीफ़ में, हाणे हनुमान में, हाणे वेदनि में, हाणे कुरान में ज़ाहिर करे थो।

इस्लामी 'ला-अल्लाह-अल-अल्लाह' (जंहिंजी माना आहे त अल्लाह खां सवाइ बि॒यो को बि अल्लाह नाहे), जी नएं सिर खु॒लासाई कंदे शाइर शाह अब्दुल करीम चयो हो, "जेको विकिरो कंदड़, ख़रीदार ऐं वखर (सामान) खे साग॒ी शइ समुझे थो, उहो ई इन्हीअ जी माना समुझंदो।"

शाह लतीफ़ चयो आहे-

एक कसर दर लख, कोड़ें संदसि गि॒ड़खियूं,
जेड॒ांहुं करियां परख, तेड॒ांहुं सज॒ण साम्हूं।

इन्हीअ में को शक नाहे त हिंदू मुस्लिम संबं॒ध जीअं बि॒यनि सूबनि में ख़राब हुआ, तीअं सिंधु में न हुआ। अञा ताईं सिंधी हिंदू सिंधु खे आलियुनि अखियुनि सां याद कंदा आहिनि ऐं सिंधी मुसलमान वरी हिंदुनि खे ड॒ाढी उकीर मां संभारींदा आहिनि। पीर हसाम अलदीन डु॒ख मां चवे थो, "सखर हलियो वियो, साखरू पिण हलिया विया, असां जा हम-वतन हलिया विया। संदनि घरनि ते हाणे धारियनि जो कब्ज़ो आहे।"

सिंधु जो शेख़ अय्याज़ चवे थो-

शाइरी दरिया आहे
जंहिं जे किनारे ते
मूं ड॒िठियूं आहिनि
सरस्वती एं महाकाली
ब॒ई गड॒िजी
चंड जी चांडाणि पी रहियूं आहिनि
इहे ब॒ई गड॒िजी आयूं आहिनि
डिघे अर्से खां पोइ
बेशक अज॒ु जनमु वठंदो
हिकु महाकवि!

बेशक महा कवि जनमु वठी चुको आहे, उहा सिंधु जी जुवानी आहे एं उन्हीअ जी शाइरी आहे 'जीए सिंधु!' 'जय सिंधू देश!'

19

शाहु, सचल ऐं सामी

ॿोली ऐं साहित- समाज जी ज़िंदगी या आत्मा हूंदा आहिनि। सिंधी ॿोली ऐं अदब, सिंधी ज़िंदगी ऐं वीचारनि जो आईनो मय्यार जो अक्सु आहिनि। सिंधी मछीअ ते जुदा जुदा किस्मनि लाइ 125 नाला आहिनि। हैदराबाद खां समुंड ताईं, सौ मेलनि खां बि घटि मुफ़ासिले में सिंधूअ जा दर्जन खनु नाला आहिनि- सामतो, सीता, मोगरा, पोपट, बानू ऐं हजामड़ो, जेके संदसि घणो पूराले हुजण जो ॾसु ॾियनि था। उठ खे केतिरनि ई नालनि सां सुञातो वेंदो आहे, जेके संदसि उमिरि, रंग, बदिनी बीहक ऐं किरदार ॿुधाईंदा आहिनि।

सिंधी ॿोलीअ जा सत नमूना (लहजा) आहिनि- सिरो (उत्तर) विचोलो, लाड़ (ॾखण), थारेली (थर), लासी (लस ॿेलो), कच्छकी (कच्छ) ऐं ढाटकी (सिंधी-राजस्थानी)।

सिंधी घणो करे अरबी लिपीअ में लिखी वेंदी आहे। इन्हीअ हकीकत मां किनि माण्हुनि ते इहो असर वेठल आहे त सिंधी ॿोली फ़ारसी-अरबी ॿोली आहे। पर अहिड़ी का ॻाल्हि नाहे। सिंधीअ जा 70 सेकड़ो खां बि वधीक लफ़्ज़ संस्कृत मां वरितल आहिनि। 'माण्हू' जहिड़े सिंधी लफ़्ज़ जे आवाज़ जी ख़ासियत संस्कृत जे लफ़्ज़ 'मनुष' मां वरितल आहे। उणवीहीं सदीअ जे विच वारे दौर वारनि अंग्रेज़ तइलीम दाननि सिंधी ॿोली ऐं अदब जे साराह जा ढुक भरिया आहिनि। प्रोफ़ेसर अरनेस्ट ट्रम्प पंहिंजे यादगार किताब 'Alphabet and Grammer' (1812) में लिखियो आहे- सिंधी संस्कृत मां निकितल निजु ॿोली आहे, जेका उत्तर हिंदुस्तान जे ॾेही ॿोलियुनि जे भेट में धारियनि अनासरनि खां घणो आज़ाद आहे।

ग्रीअरसन इन्हीअ ॻाल्हि जी तसदीक करे थो ऐं चवे थो त ''सिंधीअ खां अगु 'अपभ्रंश प्राकृत' ॿोली राइजु हुई, जंहिं खे 'ब्राचड़' चइबो हो।''

जॉन बीम्स लिखे थो, ''इहा हिक अण घड़ियल ज़बान आहे, जंहिंजा पंहिंजा कुंडावां रस्ता आहिनि, पर उन्हीअ जे बारे में मुंहिंजे ज़हन में झंगली गुलनि जे सूंहं जो कुझु कदुरु हिस्सो अटकियो पियो आहे। मंझिसि पंजाब ऐं

सिंधु जे कणिक जे अटे ऐं झूपिड़ीअ मां निकरंदड़ दूंहें जो वास आहे। उहा ॿोली हिंदुस्तान जे ओभर वारियुनि तंगदिल ऐं ग़लबे वारियुनि ॿोलियुनि जे भेट में बेहद घणो कुदरती ऐं मन मोहींदड़ आहे।''

रिचर्ड बर्टन 1851 ई. जे मोट में लिखियो हो, ''जेतिरे कदुरु सिंधी ॿोलीअ ऐं अदब जो तइलकु आहे त इहो सवलाईअ सां चई सघिजे थो त सिंध जूं वाॻूं संभालिण महिल कंहिं बि ॾेही ॿोलीअ में एॾो घणो ऐं थोरियुनि ॿोलियुनि में बि, लिखयत में असुली सामग्री मौजूद न हुई।''

कैप्टन जॉर्ज स्टैक लिखे थो, ''मूंखे हेसताईं अंग्रेज़ी ज़बान ते दुनिया जे वधीक ख़ूबसूरत ऐं वॾे हुअण जे हैसियत सां फ़ख़ुरु हो। पर इहा मुंहिंजी अजाई सोच साबित थी। जॾहिं मां सिंधी सिखियुसि त मूंखे ॿिटा इत्फ़ाकी फ़इल मिलिया ऐं ॿियूं ॻाल्हियूं जेके सिंधी ख़ूबसूरतियुनि खे घणियुनि हिंदुस्तानी ॿोलियुनि खां बहितरीन बणाईनि थियूं।''

हार्वर्ड यूनीवर्सिटीअ जे प्रोफ़ेसर ऐं इस्लामी ॿोलियुनि जे माहिर डाक्टर एनामिरे शीमल लिखे थी, ''जीअं त सिंधीअ जो हर लफ़्ज़ हर्फ़ इलत ते ख़तम थिए थो, तंहिं करे उनजो आवाज़ संगीत मिसल आहे।''

अॼु कल्ह सिंध में सिंधी अरबी-लिपीअ में लिखी वञे थी। हिंदुस्तान में देवनागरी पिण इस्तैमाल थिए थी। हिंद सरकार ॿिन्हीं लिपियुनि खे मंज़ूर कयो आहे। सिंधीअ में असुलोकी लिपी कहिड़ी हुई? बल्कि अरबनि जे फ़तह खां 300 वर्हिय पोइ मुहम्मद ग़ज़नवीअ जे दौर में मशहूर तारीख़दान अल्बेरूनी टे लिपियूं इस्तैमाल थींदे ॾिठियूं। अर्द्ध नागरी, सैंधव ऐं मालवारी जेके देवनागिरीअ जूं जुदा जुदा सूरतूं हुयूं।

जॾहिं अंग्रेज़ आया त उन्हनि पंडितनि खे सिंधी, देवनागरीअ में लिखंदे ॾिठो। वापारी, जिनि में ख़ोजा ऐं मेमण बि अची वञनि था- 'मोॾा' (मोदी) या वाणिका ख़त इस्तैमाल कंदा हुआ, जिनि में हर्फ़ इल्लत न हुआ। हिंदू औरतूं 'गुरुमुखी' इस्तैमाल कंदियूं हुयूं ऐं सरकारी मुलाज़िम हिक किस्म जी अरबी लिपी इस्तैमाल कंदा हुआ।

अंग्रेज़ी आफ़ीसरनि सिंधी ॿोलीअ खे संस्कृत मां निकितल ॼातो ऐं चयाऊं त उन्हीअ लाइ देवनागरी लिपी दुरुस्त थींदी। 1849 ई. में उन्हनि

अंग्रेज़ी-सिंधी डिक्शनरी देवनागरीअ में तैयार कई। हिक साल खां पोइ उन्हनि बाईबल जो तर्जुमो सिंधीअ में कयो, जेको बि देवनागरी लिपीअ में हो। सरकारी मुलाज़िमनि जिनि मां घणा हिंदू हुआ, बेवकूफ़ीअ विचां अरबी लिपीअ खे पसंद कयो, जो उन्हनि देवनागरी न थे ॼाती ऐं खेनि नएं सिर सिखिणी थे पेई। (इन्हीअ साॻिए सबब करे विरहाङे खां पोइ बम्बईअ में सिंधी ॿोलीअ जे उस्तादनि अरबी लिपीअ में सिंधी ॿोली सेखारण लाइ ज़ोरु कयो, जंहिंकरे सरकार सिंधीअ लाइ ॿिन्हीं लिपियुनि जी इजाज़त ॾिनी।) अरबी लिपीअ जे हामी कैप्टन बर्टन ऐं देवनागरीअ जे हामी कैप्टन स्टैक सां हिकु वॾो बहस छिड़ी पियो। सिंधु जे कमिश्नर सर बार्टल फ्रेअर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनीअ जे कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स खे केस मोकिलियो, जंहिं अरबी लिपीअ जे हक में इन्हीअ बुनियाद ते फ़ैसिलो ॾिनो त मुसलमानका नाला देवनागरीअ में नथा लिखी सघिजनि। जीअं त अरबी लिपी सिंधी आवाज़नि जो इज़हार नथी करे सघे, इन्हीअ मकसद लाइ हिक रिथा जोड़ी वेई। नतीजन अॼु सिंधी लिपीअ में न रुॻो सभेई पंहिंजा आवाज़ आहिनि, पर अरबीअ जा चारई 'ज़' उच्चार पिण मौजूद आहिनि। जेतोणीक इहा 'अरबी' सॾिजे थी, पर को बि अरब इहा पढ़ी न सघंदो। गांधीअ महसूस कयो त मुसलमाननि ऐं हिंदुनि खे विरहाइण लाइ सिंधी ॿोलीअ खे अरबी लिपी ॾिनी वेई हुई।

ईस्वी सन् खां 300 वरह्य अॻु में 'महाभारत' जो सिंधी तर्जुमो मौजूद हो। 346 ई. में कुशन राजा वासदेव, सतें सिंधीअ जे समूरी शाइरी ठाहिण जो हुकुम ॾिनो हो। पर अॼु उन्हनि मां का बि शइ मौजूद नाहे। अरबनि सिंधु ते अरबी मढ़ण जी कोशिश कई, पर नाकाम थिया। उन्हनि जे ॾाहनि मकानी ॿोलियुनि में माण्हुनि लाइ घणी कोशिश सां गॾु ॿिया बि गुण ॾिठा। इन्हीअ करे मौलाना जलालअलदीन रोमी (वफ़ात 1273 ई.) पंहिंजे 'मसनवी' में लिखियो-

हिंदयां रा इस्तलाह हिंद मदह
सिंधियां रा इस्तलाह सिंध मदह
(हिंदू- हिंदी पहाका कम आणिनि स्वागत आ,
सिंधी- सिंधी पहाका कम आणिनि स्वागत आ।)

सिंधी जेका अजु कल्ह असीं समुझूं था, लगभग अठ सौ साल पुराणी आहे, पर सभु न। आगाटियूं सिंधी लिखिणियूं रुगो छह सौ साल पुराणियूं आहिनि। ही सतनि फ़कीरनि जूं चयल सत गुझारतूं (मामोई) आहिनि। मंझांउनि बिनि मशहूर गुझारतुनि कंधार जे तरफ़ां जोखे जो चिताउ डिनो ऐं सिंधूअ जे ओभर तरफ़ वहुकिरो बदिलाइण जी दुआ कई।

अटिकल सागिए ज़माने में इस्माईली ख़ोजन जूं मज़हबी लिखिणियूं ज़ाहिर थियूं, जेके 'गनां' जे नाले सां जातियूं वेयूं। उन्हनि आम माण्हुनि सां मज़हबी गुफ़्तगू लाइ मकानी बोलीअ जो सहारो वरितो। संदनि लिखिणी ऐं पहाकनि जो नमूनो घणो करे समूरो हिंदवाणो हो। माण्हुनि खे सुबूह जो सवेर उथण ऐं आराधना करण लाइ 'गनां' में चयल आहे, ''जागो, जागो भाइड़ा, रेण विहाणी (रात ख़तम थी)'', न त अव्हां सां हथु हथ में हूरूं न मिलाईंदियूं।

इहो मशहूर आहे त बिया सिंधी शाइर शेख़ फ़रीद ऐं ख़्वाजा निज़ाम अलदीन ओलिया जे दरबारियुनि में ''सिंधी काफ़ी'' गाईंदा हुआ ऐं अलबति पुश्त बि पुश्त बियूं केतिरियूं ई काफ़ियूं गायूं वेंदियूं हुयूं ऐं परम्परा खां अमल में हूंदियूं हुयूं।

सभिनी में अहम शाइर, बखर जो आलम ऐं मुदबर, **काज़ी कादन** (वफ़ात 1551 ई.) हो। संदसि घणा बैत विरहाङे खां पोइ हरियाणा जे भवानी ज़िले जे राएला गोठ में भगत हरिदास जे मठ मां मिलिया आहिनि। उहे देवनागरीअ में उतारियल हुआ। हू चवे थो त-

कुनरु कदोरे काफ़िया, की कीन पढ़हियाम,
सो डेहु ई को बियो, जां ई पिरीं लधियामि।

हू हिक बिए बैत में चवे थो-

जोगी जागायोसि, सुतो होसि निंड में।

काज़ी कादन हरियाणा जे हिंदू संत दादू दयाल खे मुतासिर कयो, जंहिं ख़ुदि सिंधीअ में शाइरी रची आहे।

उन खां पोइ बियो संत-कवि शाह अब्दुल करीम (1536-1623 ई.) हो। संदसि मुर्शिदु बिहार जो सुलतान इब्राहीम हो, जेको जंगि में इंसानी मौत

ड॒िसी, सदमे खां दुनिया छड॒े, अची सिंधु में निकितो। जड॒हिं हुन पंहिंजे मुरीद शाह करीम खे जुतीअ जो जोड़ो ड॒िनो त हुन उहा पेरनि में पाइण जे बदिरां, मथे में पाइण लाइ उन्हीअ मां नएं सिर टोपी ठहिराई। शाहु करीमु हिकु सादो सूदो हारी हो, पर ईश्वर जो दास हो। हिक भेरे जड॒हिं संदसि भाउ खेसि एकांत में अची नचंदे ड॒िठो त खेसि चमाट हणी कढियाईं ऐं गिहिलींदो पंहिंजीअ माउ वटि वठी वियुसि। माणसि पंहिंजे वड॒े पुट खे छिंभियो ऐं चयाईं त संदसि भाउ रूहानी शख़्सियत वारो आहे। हिक भेरे हिक दोस्त खांउसि पुछियो त हू कुड़मत कंदे, ईश्वर खे कीअं थो याद करे? तंहिं ते अब्दुल करीम खेसि समुझाईंदे चयो त ''जड॒हिं का औरत पंहिंजे मथे ते दिलो खणंदी आहे त हूअ हली या ग॒ाल्हाए न सघंदी आहे छा?'' हुन अगि॒ते चयो, ''ईश्वर तोखे तुंहिंजे दिल खां वेझो आहे, विछोड़ो ऐं मेलाप ब॒ई साग॒ी ग॒ाल्हि आहिनि।''

शाह करीम जा रुग॒ो 93 बैत असांखे मिलिया आहिनि, हू एड॒ो सिंधी हो, जंहिं रुग॒ो 8 फ़ारसी ऐं 30 अरबीअ जा बुनियादी लफ़्ज़ इस्तैमाल कया आहिनि। पर शाह करीम जी सभ खां वड॒ी सूखिड़ी संदसि परपोटो शाहु लतीफ़ भिटाई हो।

शाहु लतीफ़ (1689-1752 ई.) न रुगो सिंधु जो सभ खां वड॒ो शाइर हो, पर तारीख़ में घणो करे सभ खां वड॒ो सिंधी हो। शाइर जे हैसियत सां हू लातमइ सतह जो शाइर हो। संदसि शाइरी ब॒िए समूरे सिंधी अदब जे भेट में वधीक कीमती आहे। हू न रुग॒ो हिकु अज़ीम शाइर हो, पर हू हिकु वड॒ो संत, हिकु वड॒ो कौम परस्त ऐं वड॒ो इंसान परस्त हो ऐं इशारे मिलण ते चर्चाई बि थी वेंदो हो।

हिक फ्रेंच जड॒हिं ''हेमलेटु'' ड॒िठो त चयाईं त नाटक सुठो हो, पर नाटक कार तमाम घणियूं चवणियूं इस्तैमाल कयूं आहिनि। खेसि ख़बर न हुई त 'चवणियूं' ख़ुदि ''हेमलेट'' जूं ई हुयूं, जेके नाटक कार घड़ियूं हुयूं। शाह लतीफ़ सां पिण साग॒ी ग॒ाल्हि हुई। केतिरियूं ई चवणियूं, जेके सिंधीअ में आम आहिनि, शाह जूं रचियल आहिनि।

हीउ ई सैय्यद हो, जंहिं हिंगलाज खां द्वारिका जा तीर्थ स्थान भेटण में टे साल लग॒ाया हुआ। मोहर्रम खे छड॒े, जंहिं दौरान हू कारो वेस कंदो हो, बाकी समूरो वक्तु खेसि गेड़ू कपड़ा पातल हूंदा हुआ। शरीयत ते अमल कंदड़

मुसलमाननि जे नाराज़गीअ जे बावजूद देहलीअ जा ब॒ गा॒इणा, अटल ऐं चंचल संदसि महफ़िल जा साज़िंदा हूंदा हुआ।

संदसि शाइरीअ जो वडो॒ हिस्सो 'वाणी' जे सूरत में ईश्वर जे हासिलाति जे गो॒ल्हा जो इज़हार आहे। इस्लामी रवायत में आशिक ऐं माशूक ब॒ई मर्द आहिनि, पर शाह हिंदुस्तानी रवायत जी पेरवी कई। जंहिं में आशिक औरत आहे। शाह जूं घणियूं सूरमियूं (हीरोइन), सूरमनि जे भेट में हेठिएं तबिके सां वास्तो रखंदड़ आहिनि, पर वधीक रोशन आहिनि। संदसि सुर 'हुसैनी' हसन ऐं हुसैन जे शहादत खे साराहियो आहे।

हसन मीर हुसैन खे, रुनो तिनि टोलनि,
घर माड़हें झंग मिरूएं, उभनि फ़लकनि,
पखियुनि पाण पछाड़ियो, त लड़ि॒यो होत वञनि,
अला! शहज़ादनि, सोभूं डि॒ए सच्चा धणी!

"सुर सामूंडी" में शाह सिंधु जे वापारी रवायुतिनि खे अमर करे छडि॒यो आहे।

डि॒ठी डि॒यारी, सामूंडियुनि सड़ह संबाहिया,
विझियो वरु वंझ खे, रोए वणिजारी,
मारींदइ मारी! पिरिह सूर पिरींअ जा।

पर पोइ हू उन खे रूहानी फेरो डे॒ई चवे थो- "तूं डि॒ए (मालिक) जी पूजा॒ करि, जेकड॒हिं लाल ऐं मोती हासिल करणु चाहीं थी.... जिनि समुंड खे पूजि॒यो, उन्हनि जे मन जूं मुरादूं पूरियूं थींदियूं।"

"सुर राम कली" जोगि॒युनि खे अर्पियल सुर आहे। "उहे पाण सां कुझु कीन खणनि, सचु पचु पंहिंजो पाणु खु़दी बि न.... उन्हनि पंहिंजूं दिलियूं राम सां लगा॒ए छडि॒यूं आहिनि। उन्हनि लाइ ख़ुशी ऐं डु॒खु सागी॒ गा॒ल्हि आहिनि। हू गो॒ड़हनि ऐं रत सां भरियल पंहिंजी आरती पेशि कनि था.... जेकड॒हिं तूं जोगी॒ थियणु चाहीं थो त मुर्शिद जी पेरवी करि। सभु ख़्वाहिशूं विसारे छडि॒ ऐं हिंगलाज डां॒हुं हलियो हलु। जोगी॒ आगा॒टे सड॒ खे मोट डीं॒दा आहिनि, जेको इस्लाम खां बि अगु॒ डि॒नो वियो हो। उन्हनि गोरखनाथ सां हिकु थियण लाइ सभु कुझु त्यागे॒ छडि॒यो आहे।" खु़दि हिक जोगी॒अ जे हैसियत सां शाहु दुनिया

खे हिक नज़र सां डिसे थो- ''डुख सुखनि जी सूंहं, घोरियां सुख डुखनि ते।'' लकीर जा फ़कीर न थियो, बिया शख़्स हेठि बुडनि था, तव्हां मथे तरो।''

शाह जे अगियां रस्मी हिंदू ऐं मुसलमान हुजणु का माना नथो रखे। हू मुनाफ़िक मुसलमान खे चवे थो- ''रुगो कलमो चवण में ईमान नाहे। दिल में कीनो आहे त तूं शैतान आहीं, मुसलमान नाहीं।'' सागीअ तरह हिकु हिंदू मुनाफ़िकनि खे चवे थो- ''पाण खे हिंदू न चवाइ। तूं जणिये जे लाइकु नाहीं। तिलक रुगो उन्हनि खे जुगाए, जेके पंहिंजे मालिक सां सच्चा आहिनि।'' हू चवे थो-

रोज़ा, नमाज़ूं ई पिण चङो कमु,
ऊ को बियो फ़हमु, जंहिं सां पसिजे पिरींअ खे।

हिक भेरे हुन हिक वाणिए खे ज़ोरीअ मुसलमान थियण खां बचायो, जेको रहम जोगे नमूने रड़ियूं करे रहियो हो।

सिंधु में मींहुं एडो छिडो पवंदो आहे, जो शाहु सुर सारंग में हर हर धणीअ दरि बाडाए थो-

वसणु अखड़ियुनि जिअं, जे हूंदं सिखिएं मींहं!
त हूंद रातो डींहं, बसि न बूंदेंऊं करीं।

जडहिं मींहुं पवंदो आहे त उहो ख़ुदि में हिकु आनंद आहे।

अङरा ताज़े, बुहर कंदियूं, पखा पट सहनि,
सुरही सेज पासे पिरीं, मरु पिया मींहं वसनि।
असां ऐं पिरियुनि, शाल होनि बराबर डींहंड़ा।

बिए बैत में शाह इस्तबोल, मग़रब, चीन, समरकंद, काबुल, कंधार, दमली, दखन, जेसलमेर, बीकानेर ऐं गिरनार में, पर सभ खां वधीक सिंधु ते मींहुं वसण जूं दुआऊं थो करे-

''साईंम! सदाईं करीं मथे सिंधु सुकार।''

हिते हू सिंधु जो कौमी शाइर आहे, जेको समूरी दुनिया जो ख़ैर थो घुरे। हू दुरस्त आहे। जडहिं चवे थो-

जे तो बैत भांया, से आयतूं आहीनि,
नियो मन लाईनि, पिरियां संदे पार ड॒े।

हिते हू हिन दौर जो ऋषि आहे।

सिंध जो बि॒यो अमर शाइर अब्दुल वहाब (1739 ई.-1829 ई.) हो, जेको **"सचल सरमस्त"** जे नाले सां ज॒ातो वेंदो आहे। संदसि जनमु ख़ैरपुर जे भरिसां "दराज़नि" में थियो हो ऐं समूरी उमिरि उते गुज़ारियाईं। हू फ़ारसीअ ऐं अरबीअ जो वड॒ो आलिम बि हो, जंहिं फ़ारसीअ में घणी शाइरी कई! ऐं पोइ सरमस्त सूफ़ी बणिजी वियो। हू वैष्णव हो ऐं घणो करे दाल ऐं ड॒हीअ ते गुज़ारो कंदो हो। ही हिंदू मुस्लिम एकता जो हामी हो। वटिसि शरीअत ऐं मज़हबी रस्मुनि जी का अहमियत न हुई। दुहिल जे वज॒त ऐं तार जे छेड़ ते संदसि रोम (रूंइ रूंइ) उभा थी वेंदा हुआ ऐं हू नचण लग॒ंदो हो श्री राम कृष्ण वांगुरु। शाइर बेदिल, जंहिं खेसि ड॒िठो हो। पोइ लिखियो अथसि- "मिरज़ां में मुहब्बत जो रूहानी चिमकंदड़ सितारो हो। सचल मंसूर वांगुरु हो। हू इश्क जो अवतार हो।

सचल कड॒हिं फ़ालतू न विहंदो हो। कलमियुनि ई फ़कति मूंखे मुसलमान न बणायो आहे। नकी मुहम्मद मूंखे अरब मां विश्वास मोकिलियो आहे। मां ई सचु आहियां। जेतोणीक मां माण्हुनि जहिड़ो माण्हू आहियां।" बि॒ए हंधि चवे थो- "जेकड॒हिं मां कलमो पढ़ां त मां काफ़र चवायां। मां मुहम्मद जो पोइलग॒ नाहियां।" बि॒ए हंधि चवे थो- "ही काबा ऐं कबला छो आहिनि? इहे त सभु बहाना आहिनि।" हू चवे थो- "हर कंहिं खे ज्ञानु चित में ग॒ोल्हणु घुरिजे।" मुल्लाउनि ऐं काज़ियुनि लाइ चवे थो- "मां हुननि जी परवाह नथो करियां।" "हुननि खे रूहानी प्रेम जी कहिड़ी ख़बर?" ईश्वर खे हर हंधि ऐं हर शइ में पसंदे हू चवे थो- "जेकड॒हिं तूं पाण खे ईश्वर करे ज॒ाणीं त तूं ख़ुदि ईश्वर आहीं। जेकड॒हिं तूं पाण खे फ़कीर करे समुझीं त तूं फ़कीर आहीं।"

जेतोणीक अंग्रेज़नि जे सिंधु जी फ़तह कुझु ड॒हाका परे हुई, पर सचल इहा तबाही अग॒ुवाट ड॒िठी पिए, जेका उहे करण वारा हुआ। अहिड़ीअ आफ़त खां बचण लाइ हुन हिंदू मुस्लिम एकता चाही थे।

वक्तु इहो थी वेल, दुई दूर करण जो,
कढु मज़ाहब मन मां, साझुर साणु सवेल,
हिंदू मोमिन सां मिली, मुहब्बत जा करि मेल,
मतां थिए अवेल, ओलह सिजु न उलहे।

हू अगि॒ते चवे थो- "जेकड॒हिं वक्ताइतो कदम न खंयो वियो त धारियां पोयां लाशनि जा ढेर छड॒े वेंदा।" सौ सालनि खां बि वधीक अगु॒, 1947 ई. लाइ इहा केड॒ी न सची अग॒कथी कयल हुई!

सचल खे जोगि॒युनि सां मुहब्बत आहे, जिनि "गंगा-जमुना में सच्चो इश्नान कयो आहे। मां उन्हनि जोगि॒युनि जे ज़ात तां सौ भेरा जान ड॒ींदुसि।" हू अगि॒ते चवे थो- "मां न मुल्लां आहियां, न ब्रह्मण, नकी कुरान जो वर्क़ु पिण आहियां। मूं लाइ न गीता जो शास्त्र कुझु आहे। मां न ओभर आहियां, न ओलहु। न धरती, न आकास। मां त जोगी॒ आहियां।"

सचल जो कुझु कलाम संस्कृत सां भरियो पियो आहे। हू चवे थो- "गुरू ऐं गोबिंद में को फ़र्कु न आहे।" हू पंहिंजी दिल 'मंदिर' में लगा॒इण ऐं 'देवीअ' खे पंहिंजे दिल में विहारण लाइ चवे थो। हू चवे थो- "सचू त पोरबंदर जो पूजा॒री आहे।" हू लिखे थो- "ओ साधू, महबूब उहो आहे, जेको सभिनी गुमाननि खां परे आहे। हू हरहंधि हाज़िर नाज़िर आहे ऐं सभिनी हंधनि जो बादशाह आहे। कंहिं महिल हू हिंदू शास्त्र पढ़े थो त कंहिं महिल कुरान। हू ईसा तोड़े अल्लाह थी सघे थो- हनुमान पिण। हू ख़ुदि पंहिंजे ज़ात लाइ, पंहिंजे लीला लाइ हैरानी पैदा करे सघे थो।" इहो हो सचल, सचू, जेको सचार हो। जिते बि सिंधी हिंदू तोड़े मुसलमान संजीदगीअ में रहनि था, उते अजु॒ बि खेसि महफ़िलुनि ऐं मेड़नि में गा॒यो वेंदो आहे।

टियों वड॒ो सिंधी शाइर **चइनराइ 'सामी'** (1743 ई.-1850 ई.) हो। हू शिकारपुर जो कपड़े जो दुकानदार हो, जंहिं पंहिंजी उमिरि जो घणो अर्सो अमृतसर में गुज़ारियो। हू पंहिंजा स्लोक काग़ज़ जे टुकरनि ते लिखी मट में विझंदो वेंदो हो। संदसि देहांत खां घणो पोइ उहे काग़ज़ जा टुकरा सहेड़े छपाया विया। संदसि समूरी कविता धर्मी आहे। हुन वेदनि जी फ़िलासाफ़ी सादीअ सिंधीअ में पेशि कई आहे। "वेदनि जी बा॒णी, सा सिंधीअ में सुणायां।"

शाहु प्रेम ऐं जोड़ण जो सागर हो, सचल हैरत जो समुंडु हो, सामी निज आनंद जो समुंडु हो। उन खां पोइ ॿिया केतिरा ई शाइर थी गुज़िरिया आहिनि- बेदिल, बेकस, दलपत, किशनचंद बेवस वग़ैरह। अंग्रेज़नि जे दौर में मिर्ज़ा कलीच बेग, हकीम फ़तह मुहम्मद सेवहाणी, भेरूमल, लालचंद, अमरॾिनोमल, ॼेठमल परसराम, नारायणदास रतनमल मलकाणी ऐं डाक्टर गुरुबक्षाणीअ हथां सिंधी नसुर वॾियूं ऊचायूं सर अंजाम कयूं।

विरहाङे खां पोइ वारे दौर ॿिनि माय नाज़ शाइरनि खे मथे चाढ़े छॾियो। नारायण श्याम चवे थो-

"गंगा जमना अमृत अमृत,
लेकिन थञु त सिंधू आ।"

ऐं शेख़ अय्याज़ चवे थो-

मां सभिनी माण्हुनि, औरतुनि ऐं ॿारनि जो मज़हब आहियां।
मां सभुकी आहियां।
मां अरोड़ जे टकरियुनि जेतिरो पुराणो आहियां।
मां मदन मस्त ॿूटो आहियां।
जेको उते उभिरियो।
जिते ॾाहर जी ज़ाल लाॾी
बे तरस अरबनि सां विढ़ंदे
रत फुड़ा वहाया।
मां कालीअ जे हज़ार मूर्तियुनि जी गुफ़ा आहियां।
जेके मूं पथर मां टाके ठाहियूं।
ऐं जिनि खे मां सॼी उमिरि पूॼींदो रहियो आहियां।

सिंधी जीअरो आहे, सिंधी हिंदुस्तान तोड़े पाकिस्तान में ज़िंदह आहिनि ऐं सिंधु पिण ज़िंदह आहे।

जीए सिंधू देस।

20

सिंधी जाग्रता

आक्टोबर 1983 ई. में देहलीअ में सिंधी कान्फ्रंस रखी वेई। जंहिंजी ग़ैर मामूली ग़ाल्हि इहा हुई जो हिंदुस्तान जे प्रेज़ीडेंट ऐं वज़ीर-ए-आज़म उन्हीअ कान्फ्रंस में ग़ाल्हाईंदे चयो हो- बिन्हीं सिंधियुनि जी ज़हनियत वापारी तालमेल ऐं हालतुनि सां पाण खे ठहिकाए हलण जी साराह कई। श्रीमती इंदिरा गांधीअ खे याद हो त हुन 1930 ई. जे पछाड़ीअ में ससुईअ जे बेट ते हिक ग़ोठ में पिण हिकु सिंधी दुकानदार डि़ठो हो। बिएं वरी डुखण कुतुब भरिसां फ़िल्कलैंड बेट ते हिक सिंधी दुकानदार डि़ठो हो।

पाकिस्तान जे फ़ौजी हुकमरान ज़िया-उल-हक उन्हीअ कान्फ्रंस खे सिंधु में इंकलाब उथण में मदद करण ऐं सहकार करण जी हिक कोशिश चई रदि कयो। हकीकत इहा आहे त उन्हीअ कान्फ्रंस जो ऐलान पूरो हिकु साल अगु में कयो वियो हो। जडहिं सिंधु में 1983 ई. जे सुजाग़ीअ जो कंहिं सोचियो बि न हो। दुनिया त एतिरे कदुरु चई छडि़यो त हिंदुस्तान जा सिंधी 'सिंधी' नाहिनि। हिकिड़े डींहुं हू इहो बि चवण खां न मुड़ंदो त सिंधु में आबाद सिंधियुनि 'पाकिस्तानी' थियण जी चूंड कई हुई, तंहिंकरे हू 'सिंधी' नाहिनि!

पर हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान जे अगुवाननि जो सिंधियुनि सां हिक जहिड़ो रायो, इन्हीअ हकीकत डांहुं इशारो करे थो त हिकु किरोड़ सिंधी, जंहिंजो चोथों हिस्सो हिंदुस्तान में आबाद आहे, हिंदुस्तान में, पाकिस्तान में ऐं हिंद-पाक तइलकात में पुलि मिसलि आहिनि। लडे आयल सिंधी भारत माता जे हंज में हिक वणंदड़ नंढी सिंधु- सिंधुड़ी आहिनि।

विरहाङे खां हिकदम पोइ सिंधियुनि सोचियो हीउ ग़ैर कुदरती पाकिस्तान को घणो वक्तु काइमु न रहंदो ऐं इन्हीअ मुराद सां रही पिया त उहे जल्दु राजस्थान रस्ते वापस पंहिंजे वतन मोटी ईंदा। उन्हनि बम्बईअ खे तमाम महांगो ऐं तमाम डूर समुझियो।

पर जीअं जल्दी वापस मोटी वञण जो इम्कान घटिबो वियो, तीअं तीअं उन्हनि बिए तरफ़ जी ग़ोल्हा करणु शुरू कई। उन्हनि में हिकु कंडला बंदर हो,

जिते ''सिंधू रीसेटलमेंट कार्पोरेशन'' खे गांधीधाम जो शहर अडु़ण लाइ ज़मीन डि॒नी वेई, पर रोम हिक डीं॒हं में न जुड़िणो हो ऐं न ई गांधीधाम हिक डीं॒हं या हिक साल या घणनि सालनि में जुड़ी सघियो थे। कंगाल शरणार्थियुनि खे तकड़ि हुई, उहे सालनि ताईं तरसण जी हिमथ नथे करे सघिया। तंहिंकरे उहे डी॒हों डीं॒हुं बम्बईअ डां॒हुं छिकिजणु शुरू थिया। बी॒ महाभारी जंग द्वारां इटालियन जंगी कैदियुनि खे रहाइण लाइ, कल्याण कैम्प जो सिपाह ख़ानो, जंहिंखे उल्हास नगर कोठियो थे वियो, मौजूद हो, जिते शरणार्थी किफ़ायत ऐं हिफ़ाज़त सां रही सघिया थे ऐं भरिसां बम्बईअ में पंहिंजो रोज़गार कमाए सघिया थे।

अहिड़ियुनि हालतुनि में उन्हनि जीअं ई पंहिंजो पाण खे पंहिंजे पेरनि ते बीहारण जी कोशिश कई त मंझांउनि घणनि जूं दिलियूं ई टुटी पेयूं। पर जल्दु ई संदनि ज़िंदह रहण जी हिमथ ऐं रोज़गार कमाइण जे उत्साह हणी वञी हंधु कयो। जेकड॒हिं ललकार वडी॒ हुई त उनजे मुकाबिले जी मोट उन खां बि वडी॒ हुई। सिंधु में असां रुगो॒ थोरियुनि कम्पनियुनि जहिड़ोकि केसीतर ब्लयू स्टार, मोटवाणीज़ शिकागो रेडियो ऐं जे. बी. मंघाराम बिस्कूटनि जो बु॒धो हो। हाणे सिंधी वापारियुनि गाजरा गीअर्स, कृष्ना स्टील, आडु॒वणी ओवर लीकान, वेस्टन टी.वी., वेस्टर वर्क्स, स्कवायर ऐं इंडिया बुक हाऊस काइम करे, नवां मैदान मारिया आहिनि ऐं नयूं ऊचायूं छुहियूं आहिनि।

विरहाङे खां अगु॒ असां सिंधी किरोड़पतियुनि खे आङुरियुनि ते मस गु॒णे थे सघियासीं। पर अजु॒ रुगो॒ उल्हास नगर में चालीहनि खां मथे किरोड़पति आहिनि। संदनि मसइलो रुगो॒ इहो आहे त उहे वार्डन रोड या कोलाबा या विले पार्ले वारनि सां माइटियूं नथा करे सघनि।

जेतोणीक बम्बई हिंदुस्तान में सिंधियुनि जो ''गादीअ जो हंधु'' आहे पर उन्हनि पंहिंजो पाण खे कुंड कुड़िछ में फहिलाए छडि॒यो आहे। हिंदुस्तान में मुश्किल सां अहिड़ो को शहर हूंदो, जिते सिंधियुनि जो को पाड़ो न ह्ंदो। मंझांउनि के सब्ज़ी-मंडियुनि ऐं कपड़े जे दुकानदारीअ में हावी आहिनि त के वरी ट्रांसपोर्ट ऐं सिविल ठेकेदारीअ जे कारोबार ते छांयल आहिनि। के सिरुनि जा बठा हलाईनि था त मंझांउनि के वरी उत्तर हिंदुस्तान जे कबाइली एरा़ज़ियुनि ताईं पहुता आहिनि ऐं कबाइली औरतुनि खे ब्लाऊज़ पाइणु

सेखारियो अथनि। एतिरे कदुरु जो डूरांहें हंध जहिड़ो फ़ैज़ाबाद (अयोध्या) में सिंधी एतिरा घणा ऐं ख़ुशहाल आहिनि जो उहे उते सालियानो झूलेलाल जो जलूस 'नंढी रिपब्लिक डे परेड' वांगुरु हिकु ख़ास ड्रिणु मल्हाईंदा आहिनि, जंहिंजो समूरो शहर ख़ुशीअ विचां इंतज़ार कंदो आहे। जीअं ब सौ साल अगु इंगलैंड में ह्यूगनाट्स, फ्रेंच प्राटेस्टंट पनाहगीरनि, बर्तानिवी जे माली हालति खे ज़ोरु वठायो हो, तीअं हिंदुस्तान जे घणियुनि एराज़ियुनि में माली तरकीअ जो सेहरो सिंधी वापारियुनि जे सिर ते आहे।

सिंधी बिज़नेस-हाऊस विलायत में हमेशा मशहूरु रहिया आहिनि। अजुकल्ह त अगे खां बि घणो वधीक मशहूर आहिनि। 1947 ई. में 'पंज वडा' हूंदा हुआ। वसियामल आसूमल, पोहूमल ब्रादर्स, किशनचंद चेलाराम, जे. टी. चइनराम ऐं के. ए. जे. चोटूमल। हाणे 'पंज वडनि' में ढालामल्स ऐं भोज संस वारनि, वसियामल ऐं पोहूमल वारनि जी जाइ वरिती आहे। पर अजुकल्ह सभ खां वधीक दौलतमंद कुटम्ब हिंदूजा ब्रादर्स वारनि जो आहे, जेको अरबपति आसामी आहे। उहे वडनि परडेही वापारी मसइलनि में जनता हुकूमत तोड़े कांग्रेस में हल करण में रहिया आहिनि। हांगकांग जा मूरजाणी सालियानो हिक बिल्यन डालरनि जी वारे-फेरी सां, दुनिया जे जैन मार्केट में बर्ख आहिनि। अमेरिका जी सभ खां पोष रियासत फ्लोरेडा जे म्यामी शहर जा सभ खां वडा बिल्डर मेलवाणी ऐं श्याम साठे आहिनि। राम कृपालाणी पंहिंजे वधंदड़ कारोबार ऐं दानी हुजण करे वेस्टइंडीज़ में त्रिनेडाड जो बेताज बादशाह थियो। त्रिनेडाड रेडियो तां प्रसारित थियल मशहूर हब्शी गीत "Ram the Magician" मकानी मुख्यमंत्री जॉर्ज चेम्बर खे बियुनि गाल्हियुनि सां गडु इझो हीअं बुधाए थो-

Everything Mr. Ram Puts his hand to
turns a shack to a Mension
so George chamber, you should see
Mr. Ram Kripalani
If you can't run the country
Call in Kripalani.

अजुकल्ह सिंधी दान में बि एतिरो ई अगभरो आहिनि, जेतिरो उहे पैसो कमाइण में अगिते आहिनि। पुराणा "वाटूमल फाऊंडेशन" वारा हमेशा वांगुरु

अजु अहिड़ा ई दानी आहिनि, रुगो लागोस जे चैनराइ वारनि बम्बईअ जे ''विवेकानंद एज्यूकेशन सोसाइटीअ'' खे 30 लख रुपया दान डिनो आहे। इंद्रू ऐं लक्ष्मी शिवदासाणीअ जे नाले पुठियां सडिजंदड़ ''अन्न-लक्ष फाऊंडेशन'' वारनि पूने में ''साधू वासवाणी हास्पीटल ऐं रिसर्च सेंटर'' खे हिकु किरोड़ रुपया दान डिनो आहे। उहे सालियानो 200 परडेही स्कालरशिपूं पिण डियनि था। किशनचंद शहाणी हिकु मशहूरु परोपकारी शख़्स आहे, जेको वाजबी घुरजाऊ कमनि में मदद कंदो रहे थो। मतिलब त सिंधी ''शरणार्थी'' मां फिरी ''पुरुषार्थी'' ऐं हाणे ''परमार्थी'' थी पिया आहिनि।

विरहाङे जे लोडींदड़ सदमे खां पोइ सिंधियुनि ऐं पंजाबियुनि जा नाटकाई कामयाबीअ जा कहिड़ा सबब थी सघनि था? उहे सागिया सबब हुआ, जिनि जपान ऐं जर्मनीअ खे बी महाभारी लड़ाईअ जे शिकस्त जे असर खां पोइ मंझिनि जाग्रता पैदा कई हुई। इहो माण्हूअ जो इरादो आहे। घणो अगे मिल्टन इन्हीअ गाल्हि लाइ चयो हो- ''अण फ़तह थियण जोगो मज़बूत इरादो कडहिं बि हार न खाईंदो आहे ऐं न ई पेशि पवंदो आहे।'' सिंधी इन्हीअ खे कामयाबी हासिल करण पंहिंजो बुनियादी हक समुझे थो। अहिड़े ज़हनी लाड़े सां माण्हू धूड़ मां धनु पैदा करे सघे थो।

सिंधियुनि पाण खे रुगो मिलकियतूं ठाहिण ऐं ख़ैराती कम करण ताईं महदूद न रखियो आहे। उन्हनि बम्बई ऐं बियनि हंधनि ते के बहितरीन इंस्टीट्यूट्स पिण काइम कया आहिनि। ''वाटूमल इंस्टीट्यूट ऑफ़ कम्प्यूटर टेकनालॉजी ऐं इंजीनियरिंग'' में बिनि किरोड़ रुपयनि जे लागत सां साज़ो सामान आहे। होतचंद गोपालदास ऐं खुशी कुंदनाणी वारनि न रुगो बम्बईअ में दर्जन कालेज काइमु कया आहिनि, पर जयहिंद कालेज ऐं के. सी. कालेज बई हिंदुस्तान जे सभ खां वडे शहर जा बहितरीन कालेज आहिनि। जसलोक अस्पताल (जेका जसोती ऐं लोकूमल जे नाले पुठियां सडिजे थी), मुल्क जी सभ खां तमाम घणी मशहूर अस्पताल आहे।

बम्बईअ जी ''विवेकानंद एज्यूकेशन सोसाइटी'' ऐं पूने जी ''मीरां एज्यूकेशन सोसाइटी'' बई तइलीमी मैदान में सिंधी ख़िज़मतुनि जूं मशहूर संस्थाऊं आहिनि।

बम्बईअ में मालकाणे हकनि ते फ्लैट्स जो सिरश्तो सिंधियुनि जी ईजाद आहे। उन्हीअ बुनियाद ते रुग॒ो रहेजा ब्रादर्स वारनि हज़ार इमारतूं मुयसर करायूं हाऊसिंग जे मैदान में, माहीम, चेम्बूर ऐं बम्बई सेंट्रल में "ज॒ेठी सिपाहीमलाणीज़ कालोनीज़" सहकारी अजब जो नतीजो आहिनि। पूने जो अतुर संगताणी न रुग॒ो मकाननि ठहिराइण जे कमनि में अग॒भरो आहे पर "दी पूना हेराल्ड" पिण हलाए थो।

पर इन्हनि सभिनी में सभ खां वड॒ो मकाननि ठहिराइण वारो भाई प्रताब हो, जंहिं कंडला बंदर लाइ आदिपुर रिहाइशी ऐं गांधीधाम वापारी ब॒ शहर अड॒ाया। पंजाब जहिड़ी सिंध जे हालत खे मुंहुं ड॒ियण लाइ, राम नागराणी 581 खे नएं जोड़ियल "नेशनल सेक्यूरिटी गार्डस्" जो इंचार्ज मुकरर कयो।

ज़िंदगीअ जे जुदा जुदा मैदाननि में पिण सिंधियुनि शख़्सी तौर नालो कढियो। डाक्टर मेंडा "इंडियन मेडिकल एसोसिएशन" जो सदर हो ऐं प्रोफ़ेसर जे. आर. मलकाणी "इंडियन फ़िलासाफ़ीकल कांग्रेस" जो सदर हो। राम ज॒ेठमलाणीअ "इंडियन बार काऊंसिल' जी वर्हियनि ताईं अगु॒वानी कई। "सर्वन्ट्स ऑफ़ पेनल सोसाइटी" जे जनरल सेक्रेट्रीअ जे हैसियत सां शेवकराम कर्मचंद "सप्त ऋषि" मां हिक ऋषीअ जे तौर मशहूरु थियो। जंहिंखे इमरजेंसीअ जे दौरान 1975 ई. में पिण भीमसेन सुचर सां गडु॒ जेल में उमाणियो वियो। जीवनलाल जयरामदास पंहिंजी ज़िंदगी "हरिजन सेवक संघ" लाइ समर्पित करे छड॒ी आहे। दादा शेवक भोज॒राज "ब॒ालकनि जी ब॒ारी" सां गडु॒ कबाइल्युनि लाइ "ब॒ापू विलेज" जी मशाल रोशन रखियो वेठो आहे।

अजु॒ कल्ह जे. जे. मीरचंदाणी "यूनाईटेड न्यूज़ ऑफ इंडिया" (UNI) जो सरकदो आहे, जेका हिक मुख्य कौमी न्यूज़ एजेंसी आहे। "बिज़नेस इंडिया" अशोक आड॒वाणी हलाए रहियो आहे। प्रोफ़ेसर के. एन. वासवाणी कन्याकुमारीअ में "रॉक मेमोरियल कामेटी" जो सरकदो आहे। हरि आत्माराम "विश्व हिंदू परिषद" जो ट्रस्टी आहे।

जस्टिस नैन "सोनोपोलीज़ ऐं रेस्ट्रक्ट ट्रेड ट्रैक्टस् कमीशन (MRTPC) जो सदर थी रहियो। जस्टिस चैनाणी "बम्बई हाई कोर्ट" जो सदर थी रहियो

ऐं जस्टिस थधाणी ''आसाम हाई कोर्ट'' जो सदर थी रहियो। टी. एम. आडवाणी बम्बई ऐं कश्मीर यूनीवर्सिटियुनि जो वाईस चांसलर थी रहियो। के. एल. पंजाबी महाराष्ट्र जो चीफ़ सेक्रेट्री थी रहियो ऐं साधवाणी गुजरात जो चीफ़ सेक्रेट्री थी रहियो। श्रीमती डाक्टर के. बी. आडवाणी बम्बईअ जे 125 साल पुराणे गवर्नमेंट लॉ कालेज जी प्रिंसीपाल आहे। उहो कालेज एशिया जो सभ खां वडो ऐं बहितरीन कालेज समुझियो वञे थो।

टी. वी. मनसुखाणी ''हिंदुस्तान मशीन टूल्स'' (HMT) जो हर्ता कर्ता आहे। एम. जे. फेरवाणी ''अशोक लीलेंड'' जो सरकरदो आहे। सामत (सामताणी) ''भारत हेवी इलेक्ट्रीकल लिमिटेड'' में बिए नम्बर ते आहे। आर. जे. केसवाणी ''ऑल इंडिया इलेक्ट्रीकल मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन'' जो प्रेज़ीडंट आहे। जे. एस. रामचंद ''इंडियन क्रिकेट'' में अगुवानी कई। एन. टी. ईदनाणी ''सेंट्रल ऑफ वॉटर एंड पॉवर कमीशन'' में 'पॉवर' जो मेम्बर आहे। एम. के. कृपालाणी कैनाडा में, खिलनाणी केनिया में ऐं विष्नू आहूजा रूस में एम्बेसेडर थी रहिया।

न रुगो मेजर जनरल हीरा ऐं वाईस एडमिरल टहिल्याणी, पर बंगलादेश जे वजूद में अचण वक्त 1971 में सामूंडी जंग जो फ़तह कंदड़, एडमिरल नंदा सिंधियुनि सां सिंधीअ में गाल्हाइण पसंद कंदो आहे। जडहिं खांउसि पुछियो वियो त हुन कराचीअ जी नाकाबंदी कीअं कई त वराणियो हुआईं, ''मूंखे कराची बंदर जे चपे चपे जी ज़ाण आहे।''

विरहाङे खां अगु तमाम थोरनि सिंधियुनि- भुडो आडवाणीअ ऐं हरि शिवदासाणीअ फ़िल्मुनि में नालो कढियो हो। अजु जे. पी. सिप्पी फ़िल्म इंडस्ट्रीअ जो अगुवान आहे ऐं खांउसि पोइ एन. सी. सिप्पी ऐं बिया केतिरा ई इन्हीअ मैदान में सरगर्म आहिनि।

फ़िल्मी डाइरेक्टरनि में गोविंद निहालाणी (''आक्रोश'' फ़िल्म वारो), राज सिप्पी, रमेश सिप्पी ऐं कुमार शहाणी अची वञनि था। फ़िल्मी अदाकारनि में सुधीर, मैक मोहन, राजकिरन महताणी, असराणी, शीलारामाणी, बीना ऐं साधना मशहूर आहिनि।

धर्मी मैदान में दादा जशन वासवाणी, संत लीलाशाह, होली गुरू नानक मिशन, दादा चेलाराम जो "Nij Than" ब्रह्माकुमारियूं ऐं ब॒ियूं केतिरियूं ई संस्थाऊं, रूहानी रोशनीअ जा मिनारा आहिनि। देहलीअ में ''मजनू का टीला'' ते हफ़्ते भरि जो जशन सिंधी धर्मी उत्सव जो हिकु नओं माग॒ आहे।

साहित जे दुनिया में कल्याण आड॒वाणी, मंघाराम उधाराम मलकाणी, लेखराज अज़ीज़, तीर्थ बसंत, राम पंजवाणी, हरूमल सदारंगाणी, पोपटी हीरानंदाणी, गाबिंद माल्ही, नाराइण श्याम ऐं ब॒ियनि केतिरनि खे ''साहित्य अकाडमीअ'' जा इनाम मिली चुका आहिनि।

सिंधु में पोकरदास अकीचार किताब छपाए सिंधी साहित जी शेवा कई हुई ऐं विरहाङे खां पोइ ''इंडिया बुक हाऊस'' जे एछ. जे. मीरचंदाणीअ ''अमर चित्र कथा'' छपाए समूरी नईं पीढ़ीअ खे हिंदुस्तानी तारीख़ ऐं कल्चर खां मुतासिर करायो आहे।

कृष्ना कृपालाणी साहित अकाडमीअ जो अध्यक्ष ऐं हींअर नेशनल बुक ट्रस्ट जो मार्गदर्शक आहे। बुलो सी. राणी, शांती हीरानंदाणी, सी. एछ. आत्मा, मास्टर चंद्र, कमला केसवाणी, भग॒वंती नावाणी, दीपिका कृपालाणी, चैनाणी सिस्टिर्स ऐं हूंदराज दुखायल सिंधी संगीत खे नओं रूहु फूकियो आहे।

राज॒नीतीअ में 'आचार्य कृपालाणीअ' खां पोइ जयरामदास पार्लियामेंट जे मेम्बर, कैबीनेट जे वज़ीर ऐं गनर्वर जे हैसियत सां नुमाइंदगी ख़िज़मतूं सर-अंजाम डि॒नियूं। एल. के. आड॒वाणी न रुग॒ो सूचना ऐं प्रसार मंत्रीअ जे हैसियत सां चिमकियो, पर हिंदुस्तानी सियासत में संदसि नालो अवलि कतार में शुमार थिए थो। हशू आड॒वाणी महाराष्ट्र में साग॒ी जाइ वालारे थो। सुचेता कृपालाणी, डाक्टर चोइथराम, प्रोफ़ेसर नारायणदास रतनमल मलकाणी, राम ज॒ेठमलाणी ऐं कृष्न कृपालाणी पार्लियामेंट में पंहिंजो नालो कढियो आहे ऐं भानू कुमार शास्त्री 1977 ई. में लोक सभा में दाख़िल थियण लाइ उदयपुर जे सुखाड़िया जो मुकाबिलो कयो।

ऑस्कर वाईल्ड चयो आहे त ''असां सभिनी खे पंज हवास आहिनि। पर जेकड॒हिं पैसो कमाइण जो छहों हवास न हूंदो त बाकी पंजनि हवासनि खे बहितर तौर ते इस्तैमाल करे न सघंदासीं।'' सिंधियुनि इन्हीअ ड॒स में बहितर प्रदर्शन कयो आहे।

सिंधियुनि नौकरियूं हासिल करण में सुठो हिस्सो न वरितो आहे। इहो फ़र्कु समुझणु (सिंधीअ में चविणी- नीच करे नौकरी) जे करे थी सघे थो। इहो अहसास थी सघे थो त वडियुनि नौकरियुनि में पिण एतिरी दौलत हासिल नथी थिए। पर उन्हनि पाण खे कंहिं हद ताईं ज़रूर तैयार कयो आहे। अहिड़ो को बि सिंधी न मिलंदो, जेको पढ़ी लिखी न सघंदो हुजे। मंझिनि घणा रुगो बिनि बोलियुनि वारा न, पर बाकाइदे चइनि बोलियुनि जाणण वारा मिलंदा। हू पंहिंजी सिंधी तोड़े हिंदी जाणंदा, पर मकानी बोली बि जाणनि, पोइ उहा गुजराती हुजे या मराठी, तमिल हुजे या तेलगू ऐं हू आम तरह अंग्रेज़ी त जाणनि ई जाणनि। इन्हीअ गाल्हि खेनि वापार ऐं समाजी संबंध में हथी डिनी आहे। 1947 ई. जे भाजि खां पोइ, इन्हीअ गाल्हि खेनि वसण में मदद कई आहे। हुननि केतिरनि पहुच वारनि ग़ैर सिंधियुनि सां शादियूं कयूं आहिनि।

सिंधु जे विरहाङे खां अगु आचार्य कृपालाणीअ सुचेता मजूमदार सां, कृष्न कृपालाणीअ टैगोर जे पोटीअ नंदिता सां ऐं गोपी मुखीअ लाहोर जे गाबा सां शादी कई हुई। पोइ सुंदरी भावनाणी (त्रिवेणी कला संगम) कृष्न लाल श्रीधाणी सां शादी कई। कमला मलकाणीअ लोक पतीअ सां शादी करे कमलापति त्रिपाठीअ जी कुंवारि बणी। विष्नू आहूजा, नूर अलदीन जे धीअ आमन सां शादी कई। भाई प्रताब जी धीअ निर्मला, अश्वेत पटवर्धन जे भाउ बालू पटवर्धन सां शादी कई। महात्मा गांधीअ जे पोटे राज मोहन लाड़काणे जी उषा कुकरेजा सां शादी कई। शीरीं आडवाणीअ एम. सी. छागला जे पुट जहांगीर सां शादी कई। ऐं फ़िल्मी दुनिया में साधना शिवदासाणीअ आर. के. नैय्यर सां, बबीता शिवदासाणीअ रणधीर कपूर सां ऐं पूनम चंदीरामाणीअ शत्रुघुन सिन्हा सां शादी कई।

कुझु सिख दानिशवरनि, जहिड़ोकि ख़ुशवंत सिंह जो ख़्याल आहे त विरहाङे खां पोइ सिंधी सिख पंथ डांहुं लाड़ो डेई रहिया आहिनि। इएं आहे बि, त नाहे बि। पंजाब में अकाली, आतंक डांहुं सिंधी रवैयो सचु पचु नाकारी आहे। पर पोइ बि बम्बई, पूने ऐं बियनि हंधनि ते सिंधी गुरू नानक जयंती मल्हाइण में सुठो हिस्सो वठनि था। उन्हनि केतिरा ई सिंधी गुरुद्वारा काइमु कया आहिनि, जिनि में न्यू देहलीअ में पूसा रोड ते ''निज थाउं'' Nij Thaun शामिल आहे। पर इहा बि हकीकत आहे त सिख-पंथ सिंधी धर्मी ज्ञान में

अकेलो जगुह नथो वालारे। विरहाङे खां अगु पिण गुरबाणी पढ़ण ऐं गुरुद्वारनि में वञण दौरान, सिंधी हमेशा हिंदू शास्त्र पढ़ंदा हुआ। सभिनी देवताउनि खे नमस्कार कंदा हुआ ऐं सभिनी तीर्थनि जी यात्रा कंदा हुआ। उहे 'शिष्य' याने गुरूअ जा 'सिख' हुआ। किनि ग़ाल्हियुनि खे छडे उहे ख़ालसा ऐं 'सरदार जी' न हुआ।

विरहाङे खां पोइ सिंधियुनि उन खां बि वधीक पंहिंजी सुञाणप संत झूलेलाल खे नएं सिर ज़ोरु वठायो। अजु गुरू नानक ऐं झूलेलाल जूं तस्वीरूं सिंधी मंदिरनि ऐं घरनि में हिक बिए जे भरिसां रखियल मिलंदियूं।

सिंधी मकानी नुक्ते नज़र सां पाण खे ठहिकाए हलणु चाहीनि था ऐं मकानी माण्हुनि सां खीर खंडु थी वञणु चाहीनि था। उत्तर में हू सींधि में 'सिंदूर' लगाईनि था त बम्बईअ में सिंधी ज़ालूं महाराष्ट्र वारनि जो ''मंगलसूत्र'' पाईनि थियूं। जडहिं त सिंधु में उन जी ज़ाण न हुई। महाराष्ट्र में सिंधी बार ''धन गुरू नानक सारो जगु तारियो'' गाइण सां गडु ''गणपति बाबा मोरिया, भोरचा वर्षे नोकरिया'' (ओ गणपति भगुवान, ईंदड़ साल जल्दु अचिजु) गाईंदा आहिनि। इहा ग़ाल्हि हिकदमु कुदरती ऐं मुनासिब आहे। इहा हिंदुत्व जी निशानी आहे।

हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान में सिंधी अनासर जे ज़ाहिर थियण जो हिक हिस्से जे तौर सिंधी माली बेदारीअ खां वधीक अहम सिंधी जाग्रते ऐं वाधारे जो विवेक आहे। हिंदुस्तान अथाहु शनाख़तुनि जो मुल्कु आहे। सदियूं गुज़िरण खां पोइ बि सिंधी अञा बि सिंधियुनि जे तौर सुञाता वेंदा। जेतोणीक मंझांउनि घणा सिंधी ग़ाल्हाए बि न सघंदा हूंदा। अहिड़ीअ हालति में सिंधी पंहिंजियुनि पाडुनि (Roots) जो सोचे थो ऐं उन्हनि जो विकास करणु चाहे थो।

सभिनी सिंधियुनि जे एकता जो लाड़ो, इन्हीअ सोच मां कुवति हासिल करे थो त सिंधु में हिंदुनि ऐं मुसलमाननि जी पाण में कडहिं अण-बणति न थी हुई। बुई धुरियूं मिठ मुहब्बत में गडु गुज़ारींदियूं हुयूं। एतिरे कदुरु जो आर्य समाज जा वडिड़ा बि सुबूह जो सवेर इहा दुआ घुरंदा हुआ त ''हिंदू मुसलमान जो ख़ैर।''

सभिनी हिंदुस्तानियुनि जे अण टुट हिस्से तौर, सभिनी सिंधियुनि जे एकता जो वधंदड़ अहसास, हिंदुस्तान ऐं पाकिस्तान बिन्हीं में महसूस कयो

पियो वञे। सिंधी मुसलमान, हिंदुनि खे तड़फ विचां याद कंदा आहिनि ऐं हिंदुस्तान में वरी सिंधी हिंदू साॻिए अहसास सां खेनि याद कंदा आहिनि। इन्हीअ जी माना इहा नाहे त सिंधी हिंदू दूरांदेश थी मुस्तकबल में सिंधु ॾांहुं वापस वञण जो सोचीनि था। नांग जो ॾंगियल नोड़ीअ खां डिजे थो। पर इन्हीअ मां हिंदुस्तान जा सिंधु सां तालुकात सुठा थी अचण जी उम्मेद कजे थी। इहा जी. एम. सैय्यद जे कान्फ़ीडरेशन जी रिथा थी सघे थी।

1981 ई. में बम्बईअ में भारतीय सिंधू सभा न रुॻो हेमूं कालाणी ऐं भॻत कंवरराम जूं यादगार टिकलियूं जारी करण जो चयो हो। पर शाह अब्दुल लतीफ़ ऐं शहीद अल्लाह बख़्श जूं बि यादगार टिकलियूं जारी करण जो चयो हो। उन्हनि खोखरा पार रेल जो रस्तो बि वरी खोलण जी घुर कई हुई, जेको सिंधु खे राजस्थान सां ॻंढे थो। घणनि त सिंधु ॾांहुं साध ॿेले ऐं हिंगलाज, देवल ऐं मुअनि जे दड़े ते सैर सपाटे ऐं तीर्थ यात्रा ते वञण जी इजाज़त ॾियण जी घुर कई हुई। (जॾहिं अटल बिहारी बाजपेई विदेश मंत्री हो, तॾहिं हुन पाकिस्तान ते इएं चई ज़ोरु आंदो हो त यात्रियुनि खे सिंधु वञण जी इजाज़त ॾिनी वञे, न त नेहरू-लियाकत पैक्ट ते नएं सिर ग़ौर करण लाइ तैयार थियो।) ॿियनि वरी 'सिंधू जल' ऐं 'सिंधी मिट्टी' पवित्र याद जे तौर आणण ते ज़ोरु ॾिनो हो। अहिड़ीअ नईंअ हालत हेठि घणनि वरी उम्मेदूं रखी करे इएं बि नारो हंयो- ''ईंदड़ साल सिंधु में।''

सिंधु-कहाणी अहिड़ी दिलचस्प आहे ऐं ईंदड़ कुझु सालनि में इहा अञा वधीक दिलचस्प ऐं अहमियत वारी थींदी।

बिबलोग्राफ़ी

(English)

Ahmed Q. : The Wahabi Movement in Sindh
AICC Papers : Jawaharlal Nehru Library
Ajwani L. H. : History of Sindhi Literature
Ali Mohammed Kufi : 'Chachnama'
Andrews W. P. : The Indus and Its Provinces
Asgar Khan : Generals in Pakistan
Baillie A. L. : Kurrachee
Bellasis A. F. : Brahmanabad
Bhikshu Chamanlal : Gypsies
Burnes, Dr. James : A Visit to the Court of Sindh
Burton Richard : Sind 1851
Chablani S. P. : Economic Conditions in Sind, 1592-1843
Choksey and Sastry : The Story of Sindh : An Economic Survry, 1843-1933
Cousens, Sir Henry : Antiquities of Sind
Eastwick, E. B. : Sindh before Napier
Elliott & Dawson : Indian History as Told by Its Historians
Gandhi M. K. : Complete Works
Grierson : The Linguistic Survey of India
Jethmal Parasram : Sindh & Its Sufis
Jotwani Motilal : Sindhi Literature and Society
Khuhro Hamida : Sindh through the Ages
Lambrick H. T. : Introduction to Sindh
Lambrick H. T. : Sindh before Muslim Conquest
Lambrick H. T. : Napier and Sindh
'M' : The Gospel of Sri Ramakrishna
Malhi Govind : Jethmal Parasram
Maqbool Ahmed : Indo-Arab Relations

Marshal, Sir John : Muan-jo-Daro
Mirchandani B. D. : Glimpse of Ancient India
Mitra, Dr. Ram Gopal : Indian Resistence to Early Muslim Invaders
Panhawar M. H. : Sources on Sindh
Pathan Dr. Mumtaz Hasan : Sindh : Arab Period
Pochhammer, Whihelm Von : India's Road to Nationhood
Pococke E. : India in Greece
Rig Veda
Rizvi Syed A. A. : Shah Waliullah
Sen S. P. : Dictionary of National Biography
Schimmel Annemaric : Sindhi Literature
Shukla C. : Incidents of Gandhiji's Life
Siddique : Arghuns and Tarkhans
Soomro Faiz M. : Cultural History of Sind
Sorely H. T. : Shah Abdul Latif of Bhit
Sorely H. T. : Sindh Gazeteer
Tariq Ali : Can Pakistan Survive?
Thomson and Garrett : The Rise and Fulfilment of British Rule in India
Trumpp E. : Grammar of the Sindhi Language

(सिंधी)

आड॒वाणी कल्याण : शाह जो रसालो
आड॒वाणी कल्याण : सचल
अल वाहिद डेली : सिंधु आज़ाद (नम्बर 1936)
बलूच डाक्टर नबी बख़्श : सिंधी ब॒ोली ऐं अदब जी मुख़्तसर तारीख़
भेरूमल महरचंद : कदीम सिंधु
भेरूमल महरचंद : हिस्ट्री ऑफ सिंधी लैंगवेज
भेरूमल महरचंद : सिंधु जे हिंदुनि जी तारीख़
भुट्टो मुहम्मद मूसा : पिरियुनि जी पचार
त्रगती कुर्बान अली : सेण मटाईनि सोन ते

चेलाणी गोबिंद : सिंधु ऐं आर्य समाज
डो॒डे॒जा लोकराम : मुंहिंजो वतन, मुंहिंजा माण्हू
गंगाराम सम्राट : सिंधू सौवीर
गुरुबक्षणी एछ. : शाह जो रसालो
गुरुनाणी एम. एछ. : आज़ादीअ लाइ आंदोलन
गुरुसहाणी सी. टी. : कौड़ोमल चंदनमल खिलनाणी
कौड़ोमल : सामीअ जा स्लोक
खुहिरो एम. ए. : जे जोत जलाए विया
लालचंद आर्य : आग ऐं तूफ़ान
मलकाणी एन. आर. : निराली ज़िंदगी
मलकाणी एन. आर. : मीराणी सिंधुड़ी
मनोहरदास कौड़ोमल : सिंधी लिटरेचर
मेहर गुलाम रसूल : तारीख़ सिंधु : कल्होरास
नाऊमल सेठ : यादगीरियूं (1871)
फेरवाणी, प्रोफ़ेसर एस. एन. : दीवान दयाराम
राशदी पीर अली मुहम्मद : उहे डीं॒हं उहे शींहं (2 भाङा)
राशदी पीर हसीमदीन : हू डो॒थी, हू डीं॒हं
शर्मा विष्नू : डाक्टर चोइथराम
शेख़ अब्दुल मजीद : हूंदा से हयात
शेख़ एम. सूमर : केचियुनि जा क़ौल
सैय्यद जी. एम. : सिंधी कल्चर
सैय्यद जी. एम. : सिंधू देश : छो ऐं छा लाइ
सैय्यद जी. एम. : सिंधु जी कहाणी ऐं सैय्यद जी ज़ुबानी
सैय्यद जी. एम. : नईं सिंधु लाइ जद्दोजहद
सैय्यद जी. एम. : पैग़ाम-ए-लतीफ़ी
सैय्यद जी. एम. : जदीद सियासत जा नव रतन
सैय्यद जी. एम. : सिंधूअ जी साञाह (2 भाङा)
सैय्यद जी. एम. : सिंधु जो माज़ी, हाल ऐं मुस्तकबल

THE SINDH STORY



के. आर. मलकाणी



डॉ. कमला गोकलाणी



नवलराय बच्चाणी